

जाओ और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो

परमेश्वर के राज्य में सेवा करना

द्वारा
डोटा

नियमावली 12
समूह के अगुवों के लिए

चौथा संशोधित संस्करण 2016

प्रस्तावना

राज्य का सुसमाचार क्या है?

राज्य का सुसमाचार, परमेश्वर के राज्य की खुशखबरी है। सामान्य तौर पर यदि देखें तो परमेश्वर के राज्य का अर्थ अनन्तता से अनन्तता तक हर एक सजीव और निर्जीव वस्तु पर परमेश्वर की प्रभुता या अधिकार है (भजन 24:1; 145:13)। खास तौर पर कहें तो, परमेश्वर का राज्य, यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की प्रभुता या अधिकार है (मत्ती 28:18)। यह राज्य मसीह के उद्धार के सम्पूर्ण कार्यों (प्रेरितों 2:36) और पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों के जीवन में उन कार्यों के प्रयोग पर आधारित होता है (रोमियों 14:17)। इस राज्य को विश्वासियों द्वारा मन में स्वीकार किया जाता (लूका 17:20-21) और उनके जीवन में इस्तेमाल किया जाता है। परमेश्वर का राज्य हमारे जीवन में चार प्रत्यक्ष क्षेत्रों में प्रगट हुआ है: प्रारम्भ से लेकर अन्त तक विश्वासियों के सम्पूर्ण उद्धार में (मरकुस 10:25-26), एक कलीसिया के रूप में इस धरती पर पाये जाने वाले विश्वासियों के संविधान में (मत्ती 16:18-19), विश्वासियों के भले कामों (प्रभाव) के द्वारा मानवीय समाज के हर क्षेत्र में (मत्ती 25:34-40), और अन्त में यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर मुक्त जगत या नये स्वर्ग और नयी धरती पर (1कुरिन्थियों 15:24-26)।

राज्य का सुसमाचार कब प्रचार किया गया?

उसके प्रथम आगमन पर, यीशु मसीह ने राज्य का सुसमाचार प्रचार किया (मरकुस 1:14-15; मत्ती 4:23)। यीशु ने करीब पचास दृष्टान्त कहे और वे सभी प्रभु के राज्य से सम्बन्धित थे। इन दृष्टान्तों में, यीशु हमें उनकी विशेषताओं के बारे में बताते हैं और खास तौर पर यह कि परमेश्वर के राज्य की रीतियों के अनुसार हम कैसे उसके राज्य में प्रवेश कर सकते हैं और उसमें किस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए। अन्त में, यीशु ने कहा, “राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा” (मत्ती 24:14)। इस तरह से, धरती पर मसीही कलीसिया की स्थापना करने के बाद, मसीही लोग राज्य का सुसमाचार प्रचार करते हैं (प्रेरितों 8:12; 19:8; 20:24-25; 28:23,31)। सारे मसीहियों का लक्ष्य यीशु मसीह की प्रभुता का प्रचार करना, प्रचार की हुई शिक्षाओं का अभ्यास करना (मत्ती 23:3) और उनके तौर तरीकों को परमेश्वर के राज्य के तौर तरीकों से बदल देना है।

तैयार अगुवों और मजदूरों को बढ़ाना

यीशु के अनुसार परमेश्वर के राज्य में “समय की मांग” तैयार अगुवे व मजदूरों की संख्या है। एक तरफ: “इसलिए खेत के स्वामी से *विनती* करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे” (मत्ती 9:38)। और दूसरी तरफे “ज्यादा से ज्यादा मसीहियों को तैयार करो ताकि वे मसीह की कलीसिया में सेवक बन सकें” (मत्ती 4:19; मत्ती 10:7; इफिसियों 4:12)। उन्हें शिष्यता के समूह के अगुवे रूप में, घरेलू कलीसिया के अगुवे, कलीसिया के प्राचीन के रूप में, दूतों (नयी कलीसिया के रोपणकर्ता के रूप में) ठहरा दें।

**डोटा पाठ्यक्रम समूह के अगुवों को निम्नलिखित घटक उपलब्ध कराने के द्वारा
मसीह की कलीसिया को व्यवहारिक बनाता है:**

1. प्रत्येक मैनुएल में 12 अध्याय दिये गये हैं जिन्हें 3 महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति सप्ताह) या छः महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति 14 दिनों में) मास किया जा सकता है। गहन अध्ययन कार्यक्रम में पाठ्यक्रम को छः दिनों में भी समाप्त किया जा सकता है।
2. महत्वपूर्ण बाइबल के पद विद्यार्थी की मसीह, उसकी कलीसिया और बाइबल को जानने में मदद करते हैं।
3. गहरे शब्दों में लिखे निर्देश जैसे “पढ़ें” “खोजें व चर्चा करें” समूह के अगुवों को अगुवाई करने में सहायता प्रदान करते हैं।
4. “नोट्स” प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का सारांश बताते हैं। यह समूह अगुवे के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में काम करता है।
5. यह पाठ्यक्रम हमें मण्डली का निर्माण करने के लिए व्यवहारिक तरीके व अकेले या छोटे समूह के साथ यूहन्ना की पुस्तक का अध्ययन करने में सहायता करता है।
6. हर एक अध्याय में घर पर तैयारी करने का काम होता है, जिसे अध्याय के अन्त में विद्यार्थियों को दिया जा सकता है।
7. प्रशिक्षण पाठ्यक्रम दूसरों को देने के लिए सहज है। प्रत्येक पाठ्यक्रम के 12 अध्यायों को पूरा करने के बाद, जो विद्यार्थी किसी समूह में दूसरे लोगों को यह शिक्षा देना चाहते हैं वे समूह के अगुवे के लिए एक प्रति या कॉपी प्राप्त कर सकते हैं।

हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर आपके क्षेत्र में तेजी से मण्डलियों की (घरेलू कलीसिया) संख्या को बढ़ाये और ज्यादा से ज्यादा लोग परमेश्वर पर विश्वास करने में आज्ञाकारी बन जाएं (प्रेरितों 6:7)। यीशु ने कहा, मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उसमें प्रबल नहीं होंगे! (मत्ती 16:18)! परमेश्वर को महिमा मिले! क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानयुग होती रहे: आमीन! (रोमियों 11:36)

डोटा (इस नाम की उत्पत्ति 05-10-1993 में हुआ जब यह पाठ्यक्रम पहली विशेष तौर पर रेडियो में प्रसारित किया गया, “Discipleship training On The Air” अर्थात चीन पर रेडियो पर प्रसारण व प्रशिक्षण) **1996** में (प्रथम संस्करण)। **2016** में (चौथा संशोधित संस्करण)।

सर्वाधिकार

मसीह की कलीसिया बनाने पर समूह के अगुवों के लिए तैयार किये गये 4 मैनुएल के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए निःशुल्क नकल किया जा सकता है। लेकिन उन्हें बेचा नहीं जा सकता। उन्हें बिना लिखित अनुमति के दूसरी भाषा में अनुवाद नहीं किया जा सकता।

सिफारिश

इस सामग्री को बहुतायत से इस्तेमाल करने और एक आशीष बनने के लिए तैयार किया गया है। लेकिन मसीह की कलीसिया बनाने के 4 मैनुएल का उद्देश्य समूह के अगुवों या मसीहियों को तैयार करना है इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि केवल समूह के अगुवे ही मैनुएल 4 की नकल या कॉपी करें। एक विद्यार्थी को ठीक मूल पाठ्यक्रम की नकल केवल तभी दी जाये जब उनसे सभी 12 अध्यायों की शिक्षा प्राप्त कर ली हो और वह किसी समूह या किसी व्यक्ति को शिक्षा देने की कामना करता हो।

विषय सूची

समूह के अगुवों के लिए नियमावली 12

परमेश्वर के राज्य में सेवा करना

परिचय व सर्वाधिकार

प्रशिक्षण कार्यक्रम 1

3 माह के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम। सप्ताह में डेढ़ से लेकर 2 घण्टे के लिए। समूह ज्यादा से ज्यादा 8 लोगों तक का ही हो।

प्रत्येक कार्यक्रम प्रार्थना के साथ शुरू होकर गृहकार्य देते हुए प्रार्थना के साथ ही समाप्त होता है।

- अध्याय 37** शान्त समय को साझा करना (यशायाह 48,49,52,53)
स्मरण करना (1. परमेश्वर की उपस्थिति: इब्रानियों 13:5-6)
शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में सेवा: परमेश्वर के राज्य भण्डारीपन में बतानेवाला दृष्टान्त)
एक चतुर प्रबंधक (लूका 16:1-13)
- अध्याय 38** शान्त समय को साझा करना (यशायाह 55,58,59,61)
स्मरण करना (2. परमेश्वर का वचन: भजन. 119:105)
बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों अध्याय 11)
- अध्याय 39** शान्त समय को साझा करना (यिर्मयाह 1,2,4,10)
स्मरण करना (3. परमेश्वर की सामर्थ्य: यशायाह 41:10)
शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में सेवा: परमेश्वर के राज्य में सेवा के बारे में दृष्टान्त)
एक अयोग्य दास (लूका 17:7-10)
- अध्याय 40** शान्त समय को साझा करना (यिर्मयाह 15,17,18,23)
स्मरण करना (4. परमेश्वर की बुद्धि: याकूब 1:5)
बाइबल अध्ययन (रोमियों के पत्री। रोमियों अध्याय 12)
- अध्याय 41** शान्त समय को साझा करना (यिर्मयाह 25,29,30,31)
स्मरण करना (5. परमेश्वर की चंगाई: 2इतिहास 7:14)
शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में सेवा: परमेश्वर के राज्य में पुरस्कार के बारे में दृष्टान्त)
दाख की बारी में मजदूर (मत्ती 20:1-16)
- अध्याय 42** शान्त समय को साझा करना (नीतिवचन 32,33,36,37)
स्मरण करना (श्रृंखला ठ “परमेश्वर के संसाधन” का पुनरावलोकन करें)
बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों अध्याय 13)
- अध्याय 43** शान्त समय को साझा करना (यहेजकेल 2,18,33 और 34)
स्मरण करना (16. रोमियों 12:16)
शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में सेवा: परमेश्वर के राज्य में पुरस्कार के बारे में दृष्टान्त)
तोड़े (मत्ती 25:14-30)

- अध्याय 44** शान्त समय को साझा करना (यहेजकेल 36,37,38,39)
स्मरण करना (17. रोमियों 12:17)
बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों अध्याय 14)
- अध्याय 45** शान्त समय को साझा करना (दानियेल 2,3,4,6)
स्मरण करना (18. रोमियों 13:8)
शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में सेवा: परमेश्वर के राज्य में जागते रहने के बारे में दृष्टान्त)
दस कुंवारियाँ (मत्ती 25:1-13)
- अध्याय 46** शान्त समय को साझा करना (दानियेल 7,8,9,12)
स्मरण करना (19. रोमियों 13:14)
बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों अध्याय 15)
- अध्याय 47** शान्त समय को साझा करना (होशे 2, योएल 2, आमोस 5, योना 1)
स्मरण करना (20. रोमियों 16:17)
शिक्षा देना (परमेश्वर के राज्य में सेवा: परमेश्वर के राज्य में न्याय के बारे में दृष्टान्त) भेड़ और बकरियाँ (मत्ती 25:31-46)
- अध्याय 48** शान्त समय को साझा करना (मीका 5, हागै 2, जकर्याह 14, मलाकी 3)
स्मरण करना (रोमियों के 5 पदों का पुनरावलोकन करें)
बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों अध्याय 16)

बढ़ना जारी है और नये समूह शुरू करें

- परिशिष्ट 14 परमेश्वर के राज्य में सेवा। विश्वासयोग्य दास और दुष्ट दास (मत्ती 24:45-51; लूका 12:42-46)
- परिशिष्ट 15 परमेश्वर के राज्य में सेवा। दस मुहरें (लूका 19:11-27)
- परिशिष्ट 16 परमेश्वर के राज्य में सेवा। अंजीर का पेड़ (मत्ती 24:32-35) + सदा तैयार रहो (लूका 12:35-40)
- परिशिष्ट 17 सेवा। बाइबल में पाई जाने वाली सेवा
- परिशिष्ट 18 यीशु मसीह। यीशु मसीह का दूसरा आगमन
- परिशिष्ट 19 यीशु मसीह। दूसरे आगमन के विषय में वह सिद्धांत जो बाइबल आधारित नहीं हैं
- परिशिष्ट दृष्टान्त की व्याख्या करने का तरीका देखें नियमावली 9, परिशिष्ट 1

प्रशिक्षण कार्यक्रम 2

गहन कार्यक्रम का इस्तेमाल सप्ताह में एक बार पूरे दिन या 6 दिन के गहन प्रशिक्षण सेमीनार के दौरान किया जा सकता है। पूरे समूह को प्रशिक्षित समूह अगुवे के साथ छोटे समूहों में बांट दें। समूह को 3-10 लोगों के बीच ही सीमित रखें।

सुझावित कार्यक्रम

09.00-09.30	आराधना (बड़े समूह के साथ)
09.30-11.00	शिक्षा (बड़े समूह के साथ) अन्तराल
11.30-13.00	बाइबल अध्ययन (छोटे समूह के साथ) अन्तराल
16.00-17.00	शिक्षा या बाइबल अध्ययन को पूरा करने, प्रश्नों के जवाब देने, या अतिरिक्त शिक्षा के लिए (बड़े समूह के साथ) अन्तराल
17.30-17.45	मनन (बड़े समूह के साथ) व वचन याद करना (दो दो के समूह में)
17.45-18.30	बाइबल पठन (अकेले)
18.30-19.00	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करना (दो दो के समूह में)
19.00-19.45	बांटना (बड़े समूह के साथ) और प्रार्थना करना (छोटे समूह के साथ)

दिन 1 (अध्याय 37 + 38) प्रार्थना शिक्षा देना <i>(परमेश्वर के राज्य में सेवा)</i> परमेश्वर के राज्य में भंडारीपन में बतानेवाला दृष्टान्त) बाइबल अध्ययन <i>(रोमियों की पत्री)</i> रोमियों 11:1-36) स्मरण करना (इब्रानियों 13:5-6 + भजन. 119:105) शांत समय के लिए बाइबल पठन (यशायाह 48,49,52,53,55,58,59,61) परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: यशायाह 52:12 – 53:12) बांटना और प्रार्थना करना दिन 2 (अध्याय 39 + 40) प्रार्थना शिक्षा देना <i>(परमेश्वर के राज्य में सेवा)</i> परमेश्वर के राज्य में सेवा के बारे में दृष्टान्त) बाइबल अध्ययन <i>(रोमियों की पत्री)</i> रोमियों 12:1-21) स्मरण करना (यशायाह 41:10 + याकूब 1:5) शांत समय के लिए बाइबल पठन (यिर्मयाह 1,2,4,10,15,17,18,23) परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: यिर्मयाह 23:9-40) बांटना और प्रार्थना करना दिन 3 (अध्याय 41 + 42) प्रार्थना शिक्षा देना <i>(परमेश्वर के राज्य में सेवा)</i> परमेश्वर के राज्य में पुरस्कार के बारे में दृष्टान्त) बाइबल अध्ययन <i>(रोमियों की पत्री)</i> रोमियों 13:1-14) स्मरण करना (2इतिहास 7:14 + श्रृंखला ठ का पुनरावलोकन) शांत समय के लिए बाइबल पठन (यिर्मयाह 25,29,30,31,32,33,36,37) परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: यिर्मयाह 29:1-32) बांटना और प्रार्थना करना	दिन 4 (अध्याय 43 + 44) प्रार्थना शिक्षा देना <i>(परमेश्वर के राज्य में सेवा)</i> परमेश्वर के राज्य में पुरस्कार के बारे में दृष्टान्त) बाइबल अध्ययन <i>(रोमियों की पत्री)</i> रोमियों 14:1-23) स्मरण करना (रोमियों 12:16 + रोमियों 12:17) शांत समय के लिए बाइबल पठन (यहेजकेल 2,18,33,34,36,37,38,39) परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: यहेजकेल 34:1-31) बांटना और प्रार्थना करना दिन 5 (अध्याय 45 + 46) प्रार्थना शिक्षा देना <i>(परमेश्वर के राज्य में सेवा)</i> परमेश्वर के राज्य में जागते रहने के बारे में दृष्टान्त) बाइबल अध्ययन <i>(रोमियों की पत्री)</i> रोमियों 15:1-33) स्मरण करना (रोमियों 13:8 + रोमियों 13:14) शांत समय के लिए बाइबल पठन (दानियेल 2,3,4,6,7,8,9,12) परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: दानियेल 6:1-28) बांटना और प्रार्थना करना दिन 6 (अध्याय 47 + 48) प्रार्थना शिक्षा देना <i>(परमेश्वर के राज्य में सेवा)</i> परमेश्वर के राज्य में न्याय के बारे में दृष्टान्त) बाइबल अध्ययन <i>(रोमियों की पत्री)</i> रोमियों 16:1-27) स्मरण करना (रोमियों 16:17 + पुनरावलोकन) शांत समय के लिए बाइबल पठन (होशे 2, योएल 2, आमोस 5, योना 1, मीका 5, हाग्वै 2, जकर्याह 14, मलाकी 3) परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: मलाकी 3:1-18) बांटना और प्रार्थना करना
--	--

संभावित अतिरिक्त शिक्षाएं : और दृष्टान्त

परिशिष्ट 14	परमेश्वर के राज्य में सेवा॥ विश्वासयोग्य दास और दुष्ट दास (मत्ती 24:45-51; लूका 12:42-46)
परिशिष्ट 15	परमेश्वर के राज्य में सेवा॥ दस मुहरें (लूका 19:11-27)
परिशिष्ट 16	परमेश्वर के राज्य में सेवा॥ अंजीर का पेड़ (मत्ती 24:32-35) + सदा तैयार रहो (लूका 12:35-40)
परिशिष्ट 17	सेवा॥ बाइबल में पाई जाने वाली सेवा
परिशिष्ट 18	यीशु मसीह॥ यीशु मसीह का दूसरा आगमन
परिशिष्ट 19	यीशु मसीह॥ दूसरे आगमन के विषय में वह सिद्धांत जो बाइबल आधारित नहीं हैं

1	प्रार्थना
---	-----------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना करें।** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपे।

2	साझा करें (20 मिनट)	[शांत समय] यशायाह 48, 49, 52 और 53
---	---------------------	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें (या अपने नोट्स से पढ़ें)** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यशायाह 48, 49, 52 और 53) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट)	[परमेश्वर के संसाधन] (1) इब्रानियों 13:5-6
---	---------------------	---

स्मरण वचनों की बारहवीं श्रृंखला ठ “परमेश्वर के संसाधनों” के बारे में बताती है। पांच स्मरण वचन इस प्रकार हैं:

1. परमेश्वर की उपस्थिति। इब्रानियों। 13:5-6
2. परमेश्वर का वचन। भजन संहिता: 119:105
3. परमेश्वर की सामर्थ्य। यशायाह 40:10
4. परमेश्वर की बुद्धि। याकूब 1:5
5. परमेश्वर की चंगाई। 2 इतिहास 7:14

दो-दो करके पुनरावलोकन करें।

(1) परमेश्वर की उपस्थिति। इब्रानियों 13:5ब-6। परमेश्वर ने कहा: “मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी त्यागूंगा।” इसलिये हम निडर होकर कहते हैं, “प्रभु मेरा सहायक है, मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।”

4	शिक्षा देना (85 मिनट)	[यीशु के दृष्टान्त] एक चतुर प्रबंधक
---	-----------------------	--

लूका अध्याय 16:1-13 में “चतुर प्रबंधक का दृष्टान्त”,

परमेश्वर के राज्य में भंडारीपन

में बताने वाला दृष्टान्त है

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों

और रोज़ मर्ग की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों को उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेंगे (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें / लूका 16:1-13।

1. दृष्टान्त की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आत्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

एक धनवान व्यक्ति। वह शायद एक बड़ी संपत्ति का मालिक था। हमें यह मानना चाहिए कि वह ईमानदार आदमी था, क्योंकि वह नहीं, लेकिन उसका प्रबंधक बेईमान था।

एक प्रबंधक। वह एक घरेलू प्रबंधक, अर्थशास्त्री या खजांची था, जिसे संपत्ति के कारोबार की देखभाल करने का ज़िम्मा दिया जाता था। इस प्रबंधक पर अपने स्वामी की संपत्ति बर्बाद करने का आरोप लगाया गया था। हमें यह नहीं बताया गया है कि किसने उस पर आरोप लगाया और उसने अपने मालिक की संपत्ति कैसे बर्बाद की। वह दोषी रहा होगा, क्योंकि प्रबंधक ने उसकी मासूमियत का जोर से विरोध नहीं किया था।

एक भण्डारी। वे शायद संपत्ति के एक टुकड़े के किराएदार थे। उन्होंने मालिक को उनकी वार्षिक उपज की एक निश्चित राशि देकर उनके किराए का भुगतान किया। वे उधार पैसे भी ले सकते थे या मालिक से उधार पर सामान खरीद सकते थे। फिर भी, प्रत्येक देनदार के पास संपत्ति के मालिक के लिए काफी राशि बकाया है।

अपने भण्डारीपन का लेखा देना। मालिक ने भंडारी से मांग की कि वे मालिक के पास अपनी खाता-बही समर्पित करें कि वे संपत्ति के व्यापार मामलों को कैसे प्रबंधित करते हैं। प्रबंधक पर धोखाधड़ी का आरोप नहीं लगाया गया था, लेकिन लगभग निश्चित रूप से कुप्रबंधन हुआ है। वह अपने स्वामी की संपत्ति को बर्बाद कर सकता था, या वह लापरवाह और लापरवाह हो सकता था। संपत्ति का मालिक अपने प्रबंधक की नौकरी को समाप्त करना चाहता था और उसे जाने से पहले खाता-बही देने का एक अवसर देना चाहता था।

प्रबंधक ने क्या किया। निकाले जाने के बाद प्रबंधक चुप रहा। इस प्रकार उसने अपना अपराध स्वीकार किया। सबसे पहले, वह एक नुकसान में था कि क्या करना है। वह शारीरिक श्रम के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं था और उसे अन्य लोगों की दया पर निर्भर होने में शर्म आती थी। तब उसके मन में एक उज्ज्वल विचार आया और उसने एक योजना तैयार की। वह कुछ खास लोगों पर उपकार करेगा, ताकि बाद में वे इस उपकार का बदला चूका सकें। वह मालिक के वित्तीय ऋण को कम करेगा, ताकि बाद में वे उसे आर्थिक रूप से मदद करें।

उनके बिलों पर राशियों को बदलना। इन “कागजातों में” में देनदारों द्वारा हस्ताक्षरित ऋणों की स्वीकृति को लिखा गया

था। उस में आधुनिक बैंक कार्यवाही के समान देनदारों द्वारा “मैं आपका देनदार हूँ” लिखकर हस्ताक्षर किए गए थे। जिस समय उसने कर्ज लिया, देनदार ने एक लिखित बयान दिया कि उस पर मालिक की एक निश्चित राशि बकाया है और वह उसका भुगतान करने के लिए बाध्य है। बेईमान प्रबंधक ने अपने मालिक के कर्जदारों को एक-एक करके बुलाया और उनके बिलों को अपने फायदे के लिए और अपने मालिक के नुकसान के लिए बदल दिया। यह कैसे किया गया, कहा नहीं गया है। मूल लिखित कथन संभवतः मोम की पट्टियों पर रहे होंगे, ताकि मोम को पिघलाया और फिर से लिखा जा सके। यदि वे कागज पर लिखे गए थे, तो पुराने को पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया होगा और नए बिल, जिसमें ऋणों की मात्रा काफी कम हो गई थी, को बनाया गया होगा जिससे उस पर हस्ताक्षर किए जा सकते थे।

देनदार शायद नहीं जानते होंगे कि यह बेईमानी थी। फसलों को प्रभावित करने वाले प्रतिकूल मौसम की स्थिति के कारण, ऋण को कम करना एक संपत्ति के मालिक के लिए असामान्य नहीं था। इसके अलावा, देनदारों ने सोचा होगा कि प्रबंधक मालिक के निर्देशों का पालन कर रहा है।

स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी की सराहना की। “स्वामी” ने प्रबंधक की प्रशंसा की, इसलिए नहीं कि वह बेईमान था, बल्कि इसलिए कि उसने चतुराई से काम लिया था। स्वामी” संपत्ति के मालिक (वचन 3 और 5) को दर्शाता है, यीशु को नहीं। यीशु कहानी कह रहे थे और उन्होंने कहा कि मालिक या स्वामी ने अपने बेईमान प्रबंधक की प्रशंसा की क्योंकि वह बहुत चतुर था और दूरदर्शिता के साथ काम करता था। उसने अपने भविष्य के लिए आगे की योजना बनाई थी। यह एक बहुत ही चतुर, कुशल या बुद्धिमानी का काम था! मालिक वास्तव में कागजातों को अपनी मूल स्थिति में वापस नहीं बदल सकता था, क्योंकि उस समय तक हर कोई यह सोचता था कि मालिक अपने देनदारों के प्रति बहुत दयालु था।

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टान्त की “कहानी” का संदर्भ “स्थान” और “दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग” से मिलकर हो सकता है। दृष्टान्त का स्थान दृष्टान्त को बताने के अवसर को बता सकती है, या दृष्टान्त को बताने के समय परिस्थितियों का वर्णन कर सकती है। स्थान आम तौर पर दृष्टान्त की कहानी से पहले पाया जाता है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी के बाद पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की संरचना, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त का स्थान लूका अध्याय 15 और 16 में शामिल है।

लूका अध्याय 15 में, यीशु ने खोई हुई भेड़, खोए हुए सिक्के और खोए हुए बेटे के बारे में तीन दृष्टान्तों को बताया, जिसमें उन्होंने संसार में भटके हुए लोगों के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के बारे में सिखाया। यह चुंगी लेने वालों और पापियों के प्रति व्यवस्था के फरीसियों और शिक्षकों के बुरे रवैये के जवाब में था। इन तीन दृष्टान्तों में, यीशु ने लोगों के प्रति गलत रवैये को उजागर किया!

लूका अध्याय 16 में, यीशु ने दो दृष्टान्त बताए। कुशल प्रबंधक के दृष्टान्त में, यीशु ने भौतिक संपत्ति के पापपूर्ण उपयोग को उजागर किया। लूका 16:1 के अनुसार, इस दृष्टान्त से यीशु ने शिष्यों के बड़े समूह को संबोधित किया था, हालांकि यह निश्चित

रूप से सुना गया था और फरीसियों के लिए भी था (लूका 16:14)।

लूका 16 के तीन संबंधित भाग हैं।

- वचन 1-13 भौतिक संपत्ति के पापपूर्ण उपयोग को उजागर करता है।
- वचन 14-18 पैसे के प्रेमियों के पाखंड को उजागर करता है।
- वचन 19-31 लोगों और धन दोनों के गलत उपयोग के भयानक परिणाम सिखाता है, इस प्रकार, लूका अध्याय 15 और 16 के विषयों का एक संयुक्त रूप है।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 16: 1-8अ में निहित है।

(3) स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग लूका 16:8ब-13 में निहित है।

“ संसार की संतान ” और “ज्योति की संतान ” (लूका 16:8) शब्दों की व्याख्या। ये यहूदी (इब्रानी और अरबी) मुहावरेदार अभिव्यक्तियां हैं। वे इशारा करती हैं कि व्यक्ति या वर्णित *वस्तुएं* “के बेटे” या “की बेटी” के बाद बताई गई वस्तु के निकट संबंध में है। यह संबंध उदाहरण के लिए “सम्बन्ध” या “सदृश” में से एक हो सकता है:

- “सिख्योन की बेटी” = सिख्योन (इब्रानी: बैट त्सिजोन) (यशायाह 1:8)
- “यरूशलेम की बेटी” (इब्रानी: बैट जेरुशलजिम) = यरूशलेम (यशायाह 37:37)
- “बेबीलोन की बेटी/कसदियों” (इब्रानी: बैट बैबेल/कासिम) = बेबीलोन वासी (यशायाह 47:1)
- “मनुष्य का पुत्र” (इब्रानी: बेन एडम) = पुरुष (यहेजकेल 2:3)।
- “मनुष्य के पुत्र सा = एक मानव/मनुष्य” (अरामी: बार एनश) (दानियेल 7:13)।
- “मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बाहर बुलाया” (इब्रानी: बेनी) = यशायाह (होश में 11:1)।

और उदाहरण के लिए :

- “संसार की संतानें” (ग्रीक: होइ हुइवी तो आइओनोस) गैर-मसीहियों को संदर्भित करता है जो पापी और अंधेरी दुनिया से संबंधित हैं
- “ज्योति की संतानें” (ग्रीक: टॉस हुइओस तो फोटोस) उन मसीहियों को संदर्भित करता है जो ज्योति (यीशु मसीह) से संबंधित हैं और देखने में यीशु मसीह के समान हैं। उनके पास ज्ञान, पवित्रता, आनंद आदि का प्रकाश होता है (लूका 16:8ब; 1थिस्सलुनीकियों 5:5)। वे “इस युग के पुत्रों” जो इस संसार के लोग हैं, के साथ एक तीव्र अंतर बनाते हैं (लूका 16:8अ)। इस प्रकार, यीशु का कहना है कि अक्सर गैर-मसीही लोग मसीही की तुलना में अधिक दूरदर्शिता के साथ कार्य करते हैं।

“अधर्म के प्रबंधक” शब्द की व्याख्या (लूका 16:8)। यह बेईमान प्रबंधक को संदर्भित करता है। तथ्य यह है कि यीशु ने प्रबंधक को अपनी कहानी में अधर्मी या बेईमान कहा है, यह साबित करता है कि यीशु ने सांसारिक धन का उपयोग करने में बेईमानी की सराहना नहीं की है! इसके अलावा 10-12 साबित करते हैं कि यीशु बेईमानी की तारीफ नहीं करते हैं।

“अधर्म की दौलत” शब्द की व्याख्या (लूका 16:9)। यह सांसारिक धन, संपत्ति या धन का व्यक्तिकरण है। यीशु यह नहीं कहते हैं कि धन, संपत्ति और धन अपने आप में अधर्मी या बुरे हैं, लेकिन उनका यह कहना है कि अक्सर धन और धन के संचय में और बहुत से अधर्म का उपयोग होता है (1थिस्सुनीकियों 6:9-10)! इसलिए, इस शब्द का अनुवाद सांसारिक धन

के साथ किया जाता है ताकि यह दिखाया जा सके कि यह अस्थायी भौतिक धन को संदर्भित करता है जो कि शाश्वत और सच्चे स्वर्गीय धन (लूका 16:11) के विपरीत है।

“कि वे आपका अनन्त आवासों में स्वागत कर सकते हैं (वशीभूत, अदृष्टिकालीन मध्य)” अभिव्यक्ति की व्याख्या (लूका 16: 9)। अभिव्यक्ति का अर्थ है कि वे लोग जो धरती पर आपके धन के निवेश से लाभान्वित हुए हैं वे भविष्य में स्वर्ग में आपका स्वागत या सत्कार कर सकते हैं (तुलना करें, 2 कुरिन्थियों 5:1)। यह वचन 4 के विपरीत है, जहां वे लोग बेईमान प्रबंधक की धोखाधड़ी से लाभान्वित हुए हैं, जो बेघर होने पर इस प्रबंधक को अपने सांसारिक घरों में बुला या स्वागत कर सकते हैं।

यह शब्द या गद्यांश यह नहीं सिखाता है और न ही सुझाव देता है कि कुछ लोगों के शरीर को फिर से जीवित किया जाएगा और दूसरों के सामने स्वर्ग में ले जाया जाएगा (कलीसिया के तथा कथित ‘रैप्चर’)। ज्यादातर यह उन लोगों की आत्माओं की बात करता है, जिन्हें धरती पर आपके धन के निवेश से लाभ हुआ है, स्वर्ग में परमेश्वर के सामने वह पृथ्वी पर आपके अच्छे कर्मों को स्वीकार करेंगे। उसी संदर्भ में अगर हम देखें तो, लाजर की आत्मा अमीर आदमी का स्वर्ग में ऐसा स्वागत नहीं कर सकती थी, क्योंकि अमीर आदमी ने पृथ्वी पर गरीब लाजर के जीवन में अपने धन का कोई भी निवेश नहीं किया था (लूका 16:23-25)।

अनुप्रयोग। दुनिया के लोगों के समान चतुर बनो। लूका 16:8 में, यीशु ने कहा, “क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ (रीति-व्यवहारों में) ज्योति के लोगों से अधिक चतुर हैं।” स्वामी ने अपने बेईमान प्रबंधक की प्रशंसा की क्योंकि उसने चतुराई से काम लिया था। यीशु बेईमान प्रबंधक की प्रशंसा करने में सहमत थे, उसकी बेईमानी की नहीं, उसने भविष्य के लिए योजना बनाने में उसकी चतुराई की प्रशंसा की। यीशु ने कहा कि मसीहियों को भी ऐसा ही करना चाहिए: दूरदर्शिता के साथ अपने भविष्य के लिए अच्छी योजनाएँ बनाना चाहिए !

इस प्रकार, यीशु अपने शिष्यों को दुनिया में गैर-मसीहियों के समान चतुर (चतुर, तेज, बुद्धिमान) होना सिखा रहे थे। उन्हें आज भी और भविष्य में भी चतुर होना चाहिए। हालांकि एक अंतर है: मसीही और गैर-मसीही के बीच गैर-मसीही अपना भविष्य कुटिलता (बेईमानी) से तय करते हैं, जबकि मसीही अपने भविष्य की योजना ईमानदारी (न्याय) (परमेश्वर के राज्य के मानदंड और मूल्य) के साथ बनाते हैं।

अनुप्रयोग। मित्रों को पाने के लिए सांसारिक धन का उपयोग करें। लूका 16:9 में यीशु ने कहा, “मैं तुम से कहता हूँ कि अधर्म के धन से अपने लिए (मित्र बना लो), इसलिए जब वह जाता रहे तो वे तुम्हें अन्नत निवासों में ले लें।” यीशु ने अपने शिष्यों को अपने भविष्य को देखने, योजना बनाने और कार्य करने की शिक्षा दी। सांसारिक धन, संपत्ति और धन के माध्यम से, दुनिया के लोग दोस्त बनाते हैं। यही है, जिससे वे खुद के लिए संपर्कों का एक जाल बनाते हैं जिनके माध्यम से वे इस दुनिया में लाभ कमा सकते हैं या सफल हो सकते हैं। लेकिन अक्सर उनके दोस्त केवल तभी तक टिकते हैं जब तक उनके पास पैसा होता है (नीतिवचन 19:4)। और क्योंकि वे अक्सर बेईमानी से व्यापार करते हैं, जैसे रिश्तत और धोखा, जिसके कारण उनके बहुत सारे दुश्मन भी बन जाते हैं। इसके अलावा, उनके सभी प्रयासों का केवल अस्थायी मूल्य होता है, क्योंकि उनके संपर्क, मुनाफे और सफलता केवल उनकी मृत्यु तक होती है। उनके पास स्वर्ग में कोई अनंत निवास नहीं होगा और उनका स्वागत करने के लिए स्वर्ग में कोई भी नहीं होगा।

इसके विपरीत, उनके सांसारिक धन, संपत्ति या धन के माध्यम से, मसीहियों को भी वास्तविक दोस्त बनाना चाहिए। जब तक वे धरती पर रहते हैं, उन्हें अपने सांसारिक धन का उपयोग परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए करना चाहिए। जब वे मर जाते हैं, तो वे सभी लोग जो धरती पर आपकी कृपा से लाभान्वित हुए थे, स्वर्ग में आने पर उनका बड़ा स्वागत करेंगे! मसीहियों को अपने अनंत भविष्य के लिए आगे की योजना बनानी चाहिए और अपने वर्तमान संसाधनों को अनंत काल तक देखना चाहिए! इस प्रकार, यीशु ने अपने शिष्यों को परमेश्वर के राज्य के लिए लोगों को जीतने, परमेश्वर के राज्य में लोगों का निर्माण करने, परमेश्वर के राज्य में जरूरतमंदों की मदद करने, संक्षेप में, कुछ भी करने के लिए सिखाया जो कि परमेश्वर के राज्य और महिमा को पृथ्वी पर आगे बढ़ाएगा। मसीही वास्तव में इस तरह से पृथ्वी पर अपने धन (संपत्ति) का प्रबंधन करके स्वर्ग में अपने धन का निवेश करते हैं (तुलना करें, सभोपदेशक 11:1; मत्ती 6: 19-21; 1तीमुथियुस 6:17-19)।

अनुप्रयोग। थोड़े में और बहुत में भरोसेमंद बनो। यह संपत्ति और जिम्मेदारियों को संदर्भित करता है। लूका 16: 10-12 में, यीशु छोटे मामलों में, अर्थात् सांसारिक संपत्ति और धन में भरोसेमंद और ईमानदार होने पर जोर देते हैं। लूका 16:10 में उन्होंने कहा, “जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है(वस्तुतः एक बहुत छोटी, महत्वहीन या अभिप्रायहीन बात में), वह बहुत में भी सच्चा है ”, ठीक इसी प्रकार बड़ी, महत्वपूर्ण और सार्थक बातों के साथ भी है। अस्थायी सांसारिक धन, संपत्ति और धन तुलनात्मक रूप से तुच्छ और निरर्थक होते हैं अर्थात् जब उनकी तुलना अनन्त स्वर्गीय संपत्ति से की जाती है। छोटे मामलों में भरोसेमंद होने से बड़े मामलों में विश्वासयोग्यता आएगी। परमेश्वर द्वारा एक मसीही को सौंपी गयी सांसारिक संपत्ति का बुद्धिमानी और व्यावहारिक तरीके से उपयोग करने से ,परमेश्वर अपने राज्य में इससे कहीं अधिक स्वर्गीय संपत्ति के लिए उस पर विश्वास करेंगे। परमेश्वर द्वारा एक मसीही को सौंपी गयी सांसारिक संपत्ति और धन के प्रबंधन में जिम्मेदार और प्रभावी होने पर, परमेश्वर उसे अपने राज्य में स्वर्गीय संपत्ति के प्रबंधन की बड़ी जिम्मेदारी सौंपेगे।

वचन 11-12 में, इस प्रकार से समानता है: “अधर्म की धन-संपत्ति” (सांसारिक धन) “किसी और की संपत्ति” के समानांतर है और *सांसारिक संपत्ति* और धन को संदर्भित करती है, जो हमेशा परमेश्वर का है, भले ही वह इसे बुद्धिमानी और जिम्मेदारी से उपयोग करने के लिए हमें सौंपता है। और “सच्चा धन” “अपनी खुद की संपत्ति” के साथ समानांतर है, और *स्वर्गीय संपत्ति* को संदर्भित करता है, जो कि परमेश्वर का राज्य है जो परमेश्वर विश्वासियों को उनकी विरासत के रूप में देता है (मत्ती 25:34; इब्रानियों 12:28)।

जब एक मसीही दिखाता है कि वह भरोसेमंद है, अर्थात्, वह सांसारिक संपत्ति और धन का बुद्धिमानी और जिम्मेदारी से उपयोग करता है, तो परमेश्वर भी उसे सच्चा धन सौंप देते हैं, जिसमें परमेश्वर का राज्य है, जो पृथ्वी की रचना के साथ मसीहियों के लिए तैयार किया गया है और इस प्रकार उस पर उनका अधिकार है! इस प्रकार, यीशु अपने शिष्यों को सिखाते हैं कि वे जो उनको पृथ्वी पर दिया गया है वे उसका प्रबंधन कैसे करते हैं और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में उनको प्रबंधन के लिए क्या सौंपा जाएगा,इन दोनों बातों के बीच घनिष्ठ संबंध है। एक निश्चित सीमा तक यह सच है कि, परमेश्वर के राज्य की विरासत तब शुरू होती है जब कोई व्यक्ति मसीह में विश्वास करता है (यूहन्ना 3:3-8), और इस प्रकार एक भरोसेमंद मसीही को यहां पहले से ही वर्तमान काल में पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य में अनेकों मामलों, या कलीसिया में मसीहियों और मसीही गतिविधियों के प्रबंधन के का काम सौंपा जाएगा। लेकिन जोर इसके अंतिम चरण, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में परमेश्वर के राज्य की विरासत पर दिया गया है। मसीहियों के लिए नियम दृश्यमान वस्तुओं (जो कि अस्थायी है) पर अपनी आँखें टिकना नहीं है, लेकिन अदृश्य वास्तविकता पर (जो शाश्वत है) (2 कुरिन्थियों 4:18; 5:7)।

अनुप्रयोग। आप एक ही समय में परमेश्वर और संपत्ति (धन) की सेवा नहीं कर सकते। लूका 16:13 में, यीशु ने जोर दिया कि एक मसीही एक ही समय में परमेश्वर और धन की सेवा नहीं कर सकता। जो व्यक्ति थोड़ी देर के लिए कल्पना करता है कि वह परमेश्वर और धन दोनों की स्वामी के रूप में सेवा करने में सक्षम है उसका मनोवैज्ञानिक तनाव जो उस व्यक्ति की आत्मा में बनता है, इतना गंभीर और असहनीय हो जाता है, कि वह जल्द ही या बाद में उसके स्वभाव, बातों और व्यवहार में दिखने लगता है की उसकी असली असली निष्ठा कहाँ है। कुछ लोग सोचते हैं कि वे ऐसे बनाने के लिए परमेश्वर का उपयोग कर सकते हैं या वे अमीर बनने के लिए परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं (1तीमुथियुस 6:5)। लेकिन यीशु अपने शिष्यों को सिखाया कि वे परमेश्वर को प्रेम करने और उनकी सेवा करने के लिए चुनें, जिसमें परमेश्वर के कामों को पूरा करने के लिए इस संसार में उनकी सांसारिक संपत्ति और धन का उपयोग करना भी शामिल है।

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने कुछ आध्यात्मिक महत्व रखने के दृष्टान्त की कहानी में हर विवरण का को देने का इरादा नहीं किया है। दृष्टांत रूपक नहीं हैं। प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वतंत्र आध्यात्मिक महत्व का वर्णन नहीं करना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें। यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। इस दृष्टांत में कई विवरण हैं जिन्हें कोई विशेष अर्थ नहीं दिया जाना चाहिए।

एक धनवान व्यक्ति। यह एक प्रासंगिक विवरण नहीं है। धनी व्यक्ति को यीशु मसीह या धन-संपत्ति या किसी और का प्रतिनिधित्व करने के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए।

एक प्रबंधक। यह प्रासंगिक है, क्योंकि वह इस दृष्टांत में केंद्रीय व्यक्ति है। हालाँकि, वह मसीही का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, क्योंकि एक मसीही बेईमान नहीं हो सकता है। बल्कि “बेईमान प्रबंधक” उसके विपरीत है जैसा की एक मसीही को होना चाहिए !

स्वामी ने उस अधर्मी भंडारी को सराहा कि उसने चतुराई से काम किया है। यह प्रासंगिक है। न तो प्रबंधक और और न उसके बेईमान होने की विशेषता, प्रासंगिक है। जो प्रासंगिक है वह चतुर होने की उसकी विशेषता है। उनकी दूरदर्शिता, तेज विवेक और अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए सांसारिक संपत्ति और धन का उपयोग करने में व्यावहारिक ज्ञान, इस दृष्टान्त का केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश है और इस प्रकार बहुत प्रासंगिक है। जिस प्रकार सांसारिक स्वामी ने पृथ्वी पर इस प्रबंधक के व्यावहारिक ज्ञान की प्रशंसा की, उसी प्रकार हमारे स्वर्गीय पिता अपनी सांसारिक संपत्ति और धन का उपयोग करके धरती पर परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए मसीहियों के व्यावहारिक ज्ञान की सराहना करते हैं।

ऋणी और उनके ऋण। यह प्रासंगिक नहीं है। अमीर आदमी के ऋणी और उनके ऋण की राशियों का कोई खास मतलब नहीं है। ये केवल विवरण हैं जो दृष्टांत की सुंदरता को बढ़ाते हैं।

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या कहानी से ही मिला है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टान्तों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टान्त में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ होता है, बनाने के लिए एक केंद्रीय बिंदु। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आध्यात्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 16:1-13 में चतुर प्रबंधक का दृष्टान्त “परमेश्वर के राज्य में प्रबंधन” के बारे में सिखाता है।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। “मसीहियों को अनंतकाल के लिए खुद के दोस्त बनाने के लिए अपनी सांसारिक संपत्ति का उपयोग करने में समझदार (चतुर, तेज) होना चाहिए।” चतुर होने का मतलब है “दूरदर्शिता (दृष्टि) विवेक और व्यावहारिक ज्ञान के साथ परमेश्वर के राज्य के लिए अपने आप को समर्पित करना।

प्रबंधक होना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग अपनी सांसारिक संपत्ति और धन का उपयोग वर्तमान समय में परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने और परमेश्वर के राज्य के लिए लोगों को जीतने के लिए करते हैं। सांसारिक संपत्ति के बुद्धिमानी और ज़िम्मेदार तरीके से उपयोग को निश्चित रूप से पुरस्कृत किया जाएगा। सभी लोग, जो परमेश्वर के राज्य में जीते गए हैं या जिन्होंने मसीहियों की सांसारिक संपत्ति के बुद्धिमानी और ज़िम्मेदार उपयोग के कारण आध्यात्मिक रूप से लाभ उठाया है, स्वर्ग में आने पर इन मसीहियों का स्वागत करेंगे।

एक निश्चित सीमा तक, एक भरोसेमंद मसीही को इस संसार में पहले से ही परमेश्वर के राज्य के मामलों का प्रबंधन या कलीसिया में मसीहियों की देखभाल का काम सौंपा गया है। फिर भी, अपने अंतिम चरण, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में परमेश्वर के राज्य की विरासत पर जोर दिया गया है। परमेश्वर के राज्य के लोग अपनी आंखों को चीजों पर नहीं बल्कि अप्रत्यक्ष चीजों पर लगाते हैं। जो प्रत्यक्ष है वह अस्थायी होता है, लेकिन जो अप्रत्यक्ष है वह अनंत है।

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत मार्गों के साथ दृष्टान्त की तुलना करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टान्तों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य अंशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण सम्बंधित-संदर्भ खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टान्त की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल में से दिए गए प्रत्येक अनुच्छेद की शिक्षाओं की तुलना चतुर प्रबंधक के दृष्टान्त की शिक्षाओं से कैसे की जा सकती है?

(1) चतुर प्रबंधक का दृष्टान्त (लूका 16: 1-13)।

चतुर प्रबंधक का दृष्टान्त सिखाता है कि एक मसीही को चतुर होना चाहिए। मसीहियों को दूरदर्शिता, विवेक और व्यावहारिक ज्ञान के साथ अपनी संपत्ति और धन का उपयोग करना चाहिए। एक मसीही आध्यात्मिक वास्तविकता पर लगातार ध्यान केंद्रित करने के लिए ज़िम्मेदार है, हालांकि जो दिखता नहीं वह एक अनंत वास्तविकता है (2कुरिन्थियों 4:18; 5:7)।

मत्ती 6:19-24 इससे संबंधित ज़िम्मेदारी को सिखाता है। उसे लगातार धरती पर नहीं वरन स्वर्ग में खजाना जमा करना चाहिए। स्वर्ग में उसके खजाने को कोई भी नष्ट नहीं कर सकता। बेशक, मसीही को यह काम एक ईमानदार, बुद्धिमान और ज़िम्मेदार तरीके से करना चाहिए। सच्ची व मूल्यवान संपत्ति को बढ़ाने का तरीका यह है कि आप सांसारिक वस्तुओं को मसीह और उसके राज्य की खातिर और उचित कारणों के लिए दे दें।

(2) धनवान मूर्ख का दृष्टांत (लूका 12:13-21)।

धनवान मूर्ख का दृष्टांत सिखाता है कि एक मसीही को अपने धन, संपत्ति या वस्तुओं के संबंध में *निःस्वार्थ* होना चाहिए। उसे अपने लिए नहीं जीना चाहिए, लेकिन अपने जीवन के हर पहलू में परमेश्वर के साथ सम्मिलित होना चाहिए। उसे परमेश्वर पर अपनी निर्भरता के प्रति पूरी तरह सचेत होना चाहिए।

(3) धनवान मनुष्य और निर्धन लाजर का दृष्टांत (लूका 16:19-31)।

दिखावा करने वाले अमीर और भिखारी लाजर का दृष्टांत सिखाता है कि एक मसीही को सतर्क व ज़िम्मेदार होना चाहिए कि वह *दुनिया में गरीबों और सुविधाओं से वंचित लोगों के साथ कैसे व्यवहार करता है* और वह अपने धन, संपत्ति या धन का उपयोग कैसे करता है। मृत्यु से पहले पृथ्वी पर उसकी जीवन-शैली के संबंध में उसकी ज़िम्मेदारी या ज़िम्मेदारी की कमी के परिणाम मौत के बाद अपरिवर्तनीय हैं! एक मसीही इस दुनिया के खोए हुए, वंचित और तिरस्कृत लोगों के साथ दोस्ती करने के लिए ज़िम्मेदार है।

(4) प्रतिभाओं का दृष्टान्त (मत्ती 25: 14-30)।

प्रतिभाओं अर्थात् तोड़ो का दृष्टांत सिखाता है कि एक मसीही को संपत्ति, रिश्ते, योग्यता या अवसरों का उपयोग करने में *विश्वासयोग्य होना चाहिए*, जिसे परमेश्वर ने उसे सौंपा है, भले ही उसे एक प्रतिभा दी गयी हो!

6. दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में नेतृत्व के बारे में दृष्टांत के मुख्य उपदेश या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और उसने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर कैसा है।

परमेश्वर ने लोगों को पृथ्वी पर अपनी ज़िम्मेदारी सौंपी है ताकि वे पृथ्वी के व जो कुछ उस पर है उसके अच्छे प्रबंधक बन सकें। संबंधित दृष्टांतों के द्वारा, यह सिखाता गया है कि परमेश्वर इस दुनिया के सभी मामलों को लेकर बहुत चिंता करते और और स्वयं शामिल हैं। संसार में की साड़ी चीजों को परमेश्वर द्वारा बनाया गया है और उसे परमेश्वर द्वारा मनुष्य की देखभाल या नेतृत्व में सौंपा गया है (उत्पत्ति 1:28)। परमेश्वर निश्चित रूप से सभी लोगों को ज़िम्मेदार ठहराएंगे कि उन्होंने परमेश्वर की धरती को और जो कुछ परमेश्वर की धरती पर है उस सब को कैसे प्रबंधित किया है।

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें क्या होना है।

परमेश्वर न केवल यह मांग करते हैं कि लोग *निःस्वार्थ* जीवन जिएं, बल्कि वह यह भी चाहते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें जो कुछ भी सौंपा है, उसके संबंध में भी वे *विश्वासयोग्य और विश्वसनीय* बने रहें। यह ये भी सिखाता है कि परमेश्वर यह मांग करते हैं

कि मसीहियों के पास दूरदर्शिता, तेज विवेक और व्यावहारिक ज्ञान है कि वे धन, संपत्ति या धन का उपयोग कैसे करते हैं, जो आखिरकार परमेश्वर का है और जो परमेश्वर ने उन्हें सौंपा है, ताकि वे वर्तमान पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के हितों की सेवा कर सकें।

कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता है कि उसके पास जो कुछ है उस पर उसका विशेष अधिकार है। मनुष्य स्वामी नहीं है, वरन वह तो परमेश्वर की संपत्ति का एक भंडारी है! उसके पास जो कुछ है वह उसे परमेश्वर की ओर से एक विश्वास के रूप में दिया गया है। परमेश्वर उसे जिम्मेदार ठहराता है और उसे जो कुछ सौंपा गया है उसे उसका लेखा देने की आवश्यकता होगी।

कोई भी राष्ट्र या संस्था या व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता है कि भूमि का कच्चा माल विशेष रूप से उसका है। वे इन कच्चे माल के केवल भंडारी हैं। किसी भी संस्था को वर्षावन, प्रदूषित नदियों को नष्ट करने, मछली पकड़कर समुद्र को खाली करने या पृथ्वी पर सभी जंगली जानवरों को मारने आदि का अधिकार नहीं है। पृथ्वी पर सब कुछ परमेश्वर का है और प्रत्येक सरकार, संस्था या व्यक्ति को परमेश्वर के भरोसे के प्रबंधन का एक लेखा देना होगा। अंतिम न्याय में, परमेश्वर सभी को जिम्मेदार और जवाबदेह ठहराएंगे कि कैसे वे पृथ्वी पर परमेश्वर की संपत्ति के भंडारी रहे हैं!

5	प्रार्थना (8 मिनट) <i>[प्रतिक्रियाएँ]</i> परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना
---	--

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से **छोटी-छोटी प्रार्थना** करने के लिए समूह में **बारियाँ लें**। या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	तैयारी करें (2 मिनट) <i>[निर्धारित कार्य]</i> अगले अध्याय के लिए
---	---

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को इस तैयारी को लिखित रूप में घर ले जाने दें या उन्हें इसकी नकल करने दें।)

1. **समर्पण।** चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर “एक चतुर प्रबन्धक” का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **यशायाह 55, 58, 59 और 61** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना। (2) परमेश्वर का वचन. भजन संहिता 119:105।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **बाइबल अध्ययन।** घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 11:1-36।**
बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. परमेश्वर के राज्य पर प्रचार करने के लिए **अपनी नोटबुक का अद्यतन करें।** शांत समय में अपने नोट्स, अपने स्मरण किए हुए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना
---	-----------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना करें।** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपे।

2	साझा करें (20 मिनट) [शांत समय] यशायाह 55, 58, 59 और 61
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें (या** अपने नोट्स से **पढ़ें)** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यशायाह 55,58,59 और 61) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट) [परमेश्वर के संसाधन] (2) भजन. 119:105
---	--

दो-दो करके पुनरावलोकन करें।

(2) परमेश्वर का वचन: भजन 119:105. “तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है।”

4	बाइबल अध्ययन (85 मिनट) [रोमियों की पत्री] रोमियों 11:1-36
---	--

परिचय। एक साथ मिलकर रोमियों 11:1-36 का अध्ययन करने के लिये बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों वाली विधि का प्रयोग करें।

रोमियों 9 हमें शिक्षा देता है की यह परमेश्वर की योजना कभी नहीं थी की वह प्राकृतिक रूप में इस्राइल के हर एक जन को बचाए या उद्धार करे। (रोमियों 9:6; तुलना करें व्यवस्थाविवरण 7:6-10) परमेश्वर की सिद्ध योजना यह रही है कि जिसे उसने अपनी योजना के तहत चुना है उनका वह उद्धार करे, अर्थात उनका जो उस पर विश्वास करते हैं (रोमियों 9:11; तुलना करें प्रेरितों. 13:48, 2तीमुथियुस 1:9-10) (रोमियों 9:11; तुलना करें प्रेरितों 13:48; 2तीमुथियुस 1:9-10)।

रोमियों 10 में वर्णन किया गया है की एक राष्ट्र के रूप में इस्राइल क्यों विफल हुआ। यहूदियों ने यीशु मसीह और उसके द्वारा किये गए उद्धार के सम्पूर्ण कामों पर विश्वास करने की बजाय व्यवस्था के कामों को पूरा करके उद्धार पाने का प्रयास किया।

रोमियों 11 सिखाता है कि चुने हुए इस्राएलियों और चुने हुए गैर यहूदियों के साथ परमेश्वर की सिद्ध योजना जरूर पूरी होगी। इस्राएलियों की परिपूर्णता और गैर यहूदियों की परिपूर्णता जरूर उद्धार पाएगी।

कदम 1. पढ़ें।

परमेश्वर का वचन

आइये एक साथ मिलकर रोमियों 11:1-36 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें।

अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छूआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

11:1.24

खोज 1. परमेश्वर के उद्धार की योजना के अन्तर्गत इस्राएल के राष्ट्र और गैर यहूदी राष्ट्रों के बीच एक अद्भुत बातचीत है।

(1) रोमियों 11:1-10 में इस्राएल के छुड़ाए गये लोगों के चनाव (पद 5) तथा बाकि लोगों के हृदय कठोर रहने (पद 7) का वर्णन किया गया है।

इस्राएल राष्ट्र की अधूरी तस्वीर। पौलुस के समय में इस्राएल राष्ट्र की तस्वीर यही थी कि वह एक अनाज्ञाकारी और हठीला देख है। इसलिए बहुत से लोगों को मानना है कि परमेश्वर ने हमेशा हमेशा के लिए इस्राएल को त्याग दिया है (ग्रीक: apóthéó) (वचन 1) और अब गैर यहूदी देशों ने इस्राएल की जगह ले ली है। लेकिन पौलुस दिखाता है कि यह तस्वीर अधूरी है।

परमेश्वर ने अपने लोगों को कभी नहीं त्यागा है। पौलुस कहता है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को कभी नहीं छोड़ा। “अपने लोगों” से परमेश्वर का मतलब इस्राएल का हर एक नागरिक नहीं है, वरन वहां के उन लोगों से है, जिन्होंने प्रभु पर और मसीह पर विश्वास किया है। इस बात का प्रमाण निम्नलिखित है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को नहीं त्यागा है:

- पौलुस स्वयं भी एक इस्राएली था
- इस्राएल के इतिहास में सदैव परमेश्वर ने अपने “अपने छुड़ाए हुए” लोगों को अलग किया है जिन्होंने कभी मूर्तियों के सामने कभी दण्डवत नहीं किया। (रोमियों 11:1-4; तुलना करें यशायाह 1:9; जकर्याह 13:7-9; इब्रानियों 3:11-12, 18-19)
- इसी प्रकार से प्रथम शताब्दी में भी ऐसे लोग थे जिन्हें “अनुग्रह से चुना गया था” (रोमियों 11:5)। (उदारहरण के लिए, प्रेरितों की पुस्तक में ऐसे बहुत से यहूदी हैं जिन्होंने मसीह पर भरोसा किया था)।

ये सभी “छुड़ाए गये लोग” मिलकर हर एक काल में ऐसे इस्राएल का निर्माण करते हैं जिनको उद्धार दिया जाएगा। (रोमियों 11:26)। इसके अलावा भविष्य में भी परमेश्वर लगातार यहूदियों का उद्धार करते रहेंगे। हर एक काल में उसने अपने

“छुड़ाए गये लोगों” को बचाकर रखा है। ये बचे हुए लोग एक साथ मिलकर “इस्राएल की परिपूर्णता” का निर्माण करते हैं। (रोमियों 11:12)।

पहले ही नये नियम में प्रथम शताब्दी के दौरान बहुत बड़ी संख्या में यीशु मसीह में विश्वास कर लिया था। (प्रेरितों 2:14,47; 4:4; 5:14; 6:1,7; 9:31,35,42; 14:1; 17:12) (तुलना करें रोमियों 1:16; 3:30; 4:12; 5:18,19; 7:4; 9:6,24,27,29; 10:1,11-13,16)।

हर एक काल में इस्राएल देश के नागरिकों में से “छुड़ाए हुए लोग” होंगे जिनका उद्धार होगा। जितनी आशा अन्यजातियों में से लोगों के बचने या उद्धार पाने की है उन्ती ही आशा यहूदियों की भी है। “चाहे इस्राएलियों की संख्या चाहे समुद्र के बालू के किनको के बराबर ही क्यों न हो जाए, उद्धार या छुटकारा केवल “छुड़ाये गये” लोगों का ही होगा। (रोमियों 9:27)। केवल संसार के इतिहास के अन्त में जाकर ही परमेश्वर के उद्धार की तस्वीर की योजना पूर्ण होगी।

परमेश्वर ने प्रत्येक यहूदी को उसके लोग होने के लिये नहीं चुना। इसलिये यह बात भी सत्य है कि इस्राएल के सम्पूर्ण इतिहास में, बहुत से यहूदियों ने बाइबल के परमेश्वर के प्रति अपने हृदय को कठोर कर रखा है। परिणाम स्वरूप परमेश्वर ने उनके मनो को कठोर कर दिया है। (रोमियों 11:7-10)। यह काम पहले ही हो चुका है:

- मूसा भविष्यद्वक्ता के दिनों में (1527-1407 ई.पू.) (व्यवस्थाविवरण 29:2-4)
- एलिय्याह भविष्यद्वक्ता के दिनों में (845 ई.पू.) (1राजाओं 18:81-21)
- होशे भविष्यद्वक्ता के दिनों में (754-714 ई.पू.) (होशे 1:6,9)
- याशायाह भविष्यद्वक्ता के दिनों में (740-680 ई.पू.) (यशायाह 1:9; 6:9-10; 8:14; 10:22)
- यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के दिनों में (627-550 ई. पू.) (यिर्मयाह 5:19,30-31)
- जक़र्याह भविष्यद्वक्ता के दिनों में (520-518 ई.पू.) (जक़र्याह 13:7-9)
- यीशु मसीह के दिनों में (पहली शताब्दी ई.पू.) (यूहन्ना 1:11; 5:39-40)
- प्रेरितों के दिनों में (प्रेरितों 7:51-53)
- और “वर्तमान समय में भी” ऐसा ही हो रहा है (रोमियों 11:8ब)

हर युग में ऐसे यहूदी पाए जाते हैं जो यीशु मसीह और उसकी धार्मिकता का इन्कार करते हैं।

रोमियों 11:9-10 उन लोगों के उस दंड के बारे में बताता है जिन्होंने परमेश्वर व् उसके सन्देश के प्रति अपने आप को कठोर बना लिया है।

ऐसे लोगों की कठोरता को समझ पाना आसन नहीं है।

एक तरफ तो “कठोरता” का अर्थ है:

- कि परमेश्वर अद्भुत तरीके से कुछ विशेष लोगों से अपने अनुग्रह को हटा लेता है। (रोमियों 9:18)
- लोग “परमेश्वर के अनुग्रह से दूर हो जाते हैं” (गलातियों 5:4)
- लोग “परमेश्वर के अनुग्रह को गवा देते हैं” (इब्रानियों 12:15-16)

दूसरी तरफ “कठोरता” का अर्थ होता है :

- कि परमेश्वर अद्भुत तरीके से लोगो को उनका हृदय कठोर करने के कारण (उनके अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के कारण) उन्हें दंड देता है। (रोमियों रोमियों 1:18,25,28; इब्रानियों 4:2,6)

पुराने नियम में बहुत से यहूदियों ने अपने हृदयों को न केवल भविष्यद्वक्ताओं के प्रति (रोमियों 10:21; इब्रानियों 3:7-11; मत्ती 21:34-36) वरन नये नियम में यीशु मसीह व उसके संदेशों और उसके सहकर्मियों के प्रति भी कठोर किया (मत्ती 12:2,7,10,14,24; 13:11-15; 21:43-45; प्रेरितों 7:51)। ये यहूदी लोग व्यवस्था के कामों से धार्मिकता को कमाने का प्रयास करते थे, वे यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा धार्मिकता मिलने पर विश्वास नहीं करते थे (रोमियों 9:30-33; इफिसियों 2:8-9) इसलिए उसने उनके मनों को कठोर करके उन्हें अपने शक्ति और क्रोध दिखाने का निर्णय लिया (रोमियों 9:22,18)।

(2) रोमियों 11:11-15 यहूदियों और गैरयहूदी देशों के बीच में वर्तमान बातचीत को दर्शाता है।

पौलुस “अस्थायी कठोरता” के बारे में ही नहीं, वरन “आंशिक कठोरता” के बारे में भी लिखता (रोमियों 11:26)। यहूदियों के ठोकर खाने को (ग्रीक: ptaió) (ग्रीक: piptó) (पतन) की संज्ञा नहीं दी जा सकती (अर्थात एक ऐसा स्थान जहाँ उन पर अनुग्रह न हो सके) (ग्रीक: piptó) (aorist, subjunctive), लेकिन यहूदियों के “अपराधों” (ग्रीक: paraptóma) (अविश्वास) के कारण अन्यजातियों को उद्धार प्राप्त हो गया। गैर यहूदियों की बातचीत ने इस्राएलियों के मन में डाह उत्पन्न की (रोमियों 11:11)।

पौलुस :

- एक यहूदी राष्ट्र के रूप में इस्राएल की *अटल या स्थायी* कठोरता के बारे में बात नहीं करता है (रोमियों 11:11)
- और वह न ही यहूदी राष्ट्र के रूप में इस्राएल की अस्थायी कठोरता के बारे में बोलता है (रोमियों 11:25)
- परन्तु वह यहूदी राष्ट्र के रूप में इस्राएल की *आंशिक* कठोरता (ग्रीक: pórósis apo merous) के बारे में बात करता है।

इस अभिव्यक्ति का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने इस्राएल को हमेशा के लिए अपने दिल से उतार दिया है और उसके लिए अब कोई मौका¹ नहीं है (ग्रीक: apótheó) (रोमियों 11:1)।

और न ही इस अभिव्यक्ति का यह अर्थ है कि परमेश्वर ने कुछ समय के लिए अपने मन को कठोर कर लिया है (अर्थात यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहले के “महाकलेश के समय में”) लेकिन इस्राएल (यहूदियों के राष्ट्र के रूप में) फिर से बन कर खड़ा हो जाएगा।²

इस्राएल का पतन (अनुग्रह से वंचित) “स्थायी” और न ही “अस्थायी” है वरन वह “आंशिक” है। विश्वास करने वाले विश्वासी

¹ कुछ लोगों के द्वारा सिखाया जाता है कि यहूदियों का मन हमेशा के लिए कठोर हो चुका है। उनका कहना होता है कि “इस्राएल” को कलीसिया से प्रतिस्थापित कर दिया गया है। लेकिन यह प्रतिस्थापित करने वाला सिद्धान्त बाइबल आधारित नहीं है। न तो “इस्राएल” को *त्यागा* गया है और न ही उन्हें *प्रतिस्थापित* किया गया है, (यह कोई परछाई होने की बजाय वास्तविकता है कुलुस्सियों 2:16-17; इब्रानियों 9:8-10) वरन उनके आकार में वृद्धि की गयी है अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले गैर मसीहियों को भी उनमें मिला दिया गया। इसके अलावा यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक वास्तविक यहूदी भी उस पर विश्वास करते रहेंगे। (मत्ती 24:34)।

² “इस्राएल देश के अस्थायी रूप में कठोर होने” की शिक्षा भी समयवादी लोगों के द्वारा सिखायी जाती है।

5वां युग (“व्यवस्था का युग”) यह मूसा और यीशु के बीच का युग था। युगवादियों के अनुसार यहूदियों को व्यवस्था का पालन करने के कारण धर्मी कहा जा सकता है।

6वां युग (“अनुग्रह का युग या कलीसिया का युग”) यह यीशु मसीह के प्रथम आगमन और उसकी प्रथम वापसी कहे जाने वाले युग का समय है। (पारोडसिया या कलीसिया के उठाये जाने का समय)।¹ इसके बाद गैर यहूदी लोग यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा अनुग्रह से धर्मी ठहरे, लेकिन ज्यादातर यहूदियों का हृदय फिर भी कठोर बना रहा (अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के कारण)।

7वां युग (सहस्राब्दी राज्य का युग) यह काल यीशु के दूसरे आगमन (अपोकलिपसिस या प्रकाशितवाक्य) से “श्वेत सिंहासन क सामने न्याय” के काल के बीच का समय है।

फिर सारा यहूदी राष्ट्र इस्राएल उद्धार पायेगा और वह यरूशलेम से लेकर जगत के छोर तक राज्य करेगा। युगवाद बाइबल आधारित नहीं है।

या बाकि के इस्राएलियों (परमेश्वर के लोगों को) (रोमियों 9:6ब) को परमेश्वर ने त्यागा नहीं है।

बाइबल का पिछला खण्ड (रोमियों 11:1-10) “परमेश्वर द्वारा विश्वासियों के चुने जाने” के बारे में बताता है (रोमियों 11:5) (ग्रीक: leimma, limmatos, सीमा से तुलना करें)। “बाकि के” इस्राएलियों को (ग्रीक: loipos) के हृदय को कठोर कर दिया गया है (रोमियों 11:7) और “बाकि बचे” का अर्थ है कि इस्राएलियों में से सभी रह गये लोग। ठीक इसी प्रकार से गैर यहूदियों में भी कुछ देशों को चुना गया है जबकि बाकि का भाग या देशों को नहीं चुना गया है (यूहन्ना 13:18; रोमियों 8:29-30,33; 2थिस्सलुनीकियों 2:13-14; 2तीमुथियुस 1:9,10; 2तीमुथियुस 2:19)।

बाइबल का यह खण्ड न ही यहूदी राष्ट्र के सम्पूर्ण अस्वीकार किये जाने को दर्शाता है और न ही स्वीकार किये जाने के बारे में वरन यह आंशिक तौर पर अस्वीकार और स्वीकार किये जाने के बारे में दर्शाता है। इसका अभिप्राय अस्थायी या स्थायी पतन से नहीं, वरन आंशिक पतन से है। यहूदियों को “अपराध” (ग्रीक: paraptóma) के कारण “उद्धार” गैर यहूदियों को भी प्राप्त हो गया है ताकि यहूदियों में जलन (रोमियों 11:11) पैदा की जा सके। यदि यहूदियों के आंशिक “अपराध” (पतन) और “पराजय” (ग्रीक: héttéma) गैर यहूदियों के लिए आशीष ठहर सकती है तो (मृतकों में से जी उठने की आशीष) चुने हुए यहूदियों की परिपूर्णता (ग्रीक: to pléróma) कितनी बड़ी आशीष ठहरेगी (रोमियों 11:12)? यदि आंशिक तौर पर यहूदियों का “अस्वीकार किया जाना” (ग्रीक: to apobolé) अन्यजातियों के लिए “मेल मिलाप” (ग्रीक: katallagé) ठहर सकता है तो फिर चुने हुएों को “ग्रहण किया जाना” (ग्रीक: proslémpsis) “मृतकों में से जी उठने के बराबर” क्यों न ठहरेगा। (यहेजकेल 36:25-27; 37:14; लूका 15:24,32 और इफिसियों 2:1,5; 5:14)।

अगला बाइबल खण्ड (रोमियों 11:17-24) केवल विश्वास करने वाले यहूदियों (गैर यहूदियों) के जड़ (जो कि यीशु मसीह है) और जैतून के वृक्ष (जिसका अर्थ उसके लोग व कलीसिया है) (1कुरिन्थियों 12:13) से जोड़े जाने अर्थात कलम लगाये जाने के बारे में बात करता है, लेकिन विश्वास न करने वाले यहूदी जैतून के पेड़ से अलग रहते हैं।

आंशिक अस्विकृति और आंशिक स्वीकृति में अन्तर (रोमियों 11:12,15)। 12 से लेकर 15 वें पद के बीच में किसी भी क्रिया का इस्तेमाल नहीं किया गया है जिससे हम वर्तमान और भविष्य काल में अन्तर बता सकें। लोग अन्दाज़ा नहीं लगा सकते कि यह भविष्य के बारे में बात की जा रही है। क्योंकि विषय वस्तु वर्तमान की बात करती है भविष्य की नहीं।

पहले का सन्दर्भ (रोमियों 11:1-10) और बाद का सन्दर्भ (रोमियों 11:17-24) यह दर्शाता है कि पौलुस अन्य समय में होने वाली किसी घटना के बारे में बातें नहीं कर रहा है, वरन वह उन घटनाओं के बारे में बातें कर रहा है जो वर्तमान में हो रही हैं, अर्थात यीशु के प्रथम आगमन के समय की बातें से लेकर (पौलुस का समयकाल था) मसीह के दूसरे आगमन तक के बीच की बातें (अन्त समय की बातें), जब इस्राएल के चुने हुएों में से उद्धार पाये (रोमियों 11:12, 26) तथा गैर यहूदियों में से बचें हुएों के परिपूर्ण होने (या उनकी संख्या के पूरे हाने का समय) का समय आ जाएगा (रोमियों 11:26)।

रोमियों 11:25-26 हमें स्पष्ट तौर पर बताते हैं कि सारे देशों के उद्धार पाये हुए लोगों की संख्या जिसमें इस्राएल के लोग भी शामिल हैं एक साथ ही पूरी होगी। ग्रीक शब्दकोष के अनुसार ग्रीक शब्द “काई आउटोस”(रोमियों 11:26) का अनुवाद “और तब “ (जिसमें समय की ओर संकेत किया गया हो) के रूप में नहीं वरन उसका अनुवाद एक शब्द के रूप में किया गया हो “ और फिर (इस तरीके से) (जो एक व्यवहार की ओर संकेत करता है)। जिस प्रकार से 7000 छुड़ाये हुए लोगों में से एलिय्याह भविष्यद्वक्ता (रोमियों 11:4) “एक अलग किया हुआ” था ठीक उसी प्रकार से (ग्रीक: outós) उनका छुटकारा

देना वाला सिय्योन (इस्त्राएल) से आया ताकि वह अपने पहले आगमन पर (यूहन्ना 4:22) याकूब से अपनी कृपा को दूर कर दे। केवल विश्वासी लोगों को ही उद्धार हुआ था - लेकिन बाकि लोगों के हृदय कठोर ही बने रहे थे। अतः प्रेरित पौलुस के समय में भी बहुत से अलग किये हुई लोग (यूनानी: outós) थे। इसलिए हर एक काल में यहूदियों में छुड़ाये और अलग किये हुए लोग होते हैं और यह तब तक होता रहेगा जब तक कि उनकी गिनती पूरी न हो जाए और ठीक इसी प्रकार से उसी समय में अन्यजातियों में से विश्वास में आने वाले लोगों की गिनती पूरी हो जाएगी। इस तरीके से (यूनानी: outós) “सारा इस्त्राएल” उद्धार पाया हुआ है।

यहां पर “सब” का अर्थ धरती पर पैदा हुए हर एक यहूदी से नहीं है, वरन यहूदियों में से वे सभी लोग जिन्होंने याकूब की बजाय यीशु को (तुलना करें रोमियों 5:15.19) अपना प्रतिनिधि माना है।

अन्यजातियों के विश्वास करने के द्वारा यहूदियों में जलन पैदा होगी (रोमियों 11:13-14)। पौलुस “अन्यजातियों का प्रेरित “में उसकी वर्तमान सेवाकाई को लेकर बहुत गर्व महसूस करता है, जिसके द्वारा वह यहूदियों में जलन को उत्पन्न करता है और उम्मीद करता है कि इसका परिणाम यहूदियों को उद्धार होगा (रोमियों 11:13; तुलना करें 1कुरिन्थियों 9:19-22)। अगर यहूदी लोग अपने अविश्वास से अफर जाएं तो सारे जगत और सारे इतिहास के यहूदियों को उद्धार हो जाएगा (रोमियों 11:23)। पौलुस स्पष्ट तौर पर कहता है कि इस्त्राएल में रहने वाले यहूदियों को “अब” अर्थात् पौलुस के जीवन काल में परमेश्वर की ओर से अनुग्रह प्राप्त हो रहा है (रोमियों 11:30-31)।

परमेश्वर के उद्धार की अद्भुत योजना यह है कि यहूदियों के विश्वास किये बिना गैर यहूदियों को उद्धार नहीं होगा और गैर यहूदियों के विश्वास किये बिना यहूदियों का उद्धार नहीं होगा (रोमियों 11:15)! जिसका अर्थ यह है कि, “यदि उनके अस्वीकृत होने की वजह से सारे संसार का परमेश्वर से मिलाप हो गया है तो उनके स्वीकार किये जाने का परिणाम मृतकों में से जी उठना क्यों न होगा? भौतिक रूप में इस्त्राएल के आंशिक अस्वीकृत होने के कारण सम्पूर्ण भौतिक देशों को परमेश्वर के साथ “मेल” करने का अवसर मिल गया है। यीशु मसीह अपने पहले आगमन से ही “संसार का उद्धारकर्ता है” (यूहन्ना 4:42) यहां पर “संसार” का अभिप्राय जगत में पैदा हुए हर एक मनुष्य से नहीं है, लेकिन उनमें सारे चुने हुए यहूदी (पूरे यहूदी), चुने हुए सामरी (आधे यहूदी) और सारे अन्यजातियों (गैर-यहूदी) के लोग शामिल हैं।

जैसा कि हम देख सकते हैं कि प्रेरितों 13:44-48, 18:6 और 28:23-28 में देखा जा सकता है, यहूदी राष्ट्र के एक भाग की अनाज्ञाकारिता ने समय समय पर संसार भर के अन्य यहूदियों (उदाहरण के लिए, प्रेरितों ने) द्वारा सुसमाचार प्रचार को बढ़ावा दिया है। जिसका परिणाम यह हुआ कि संसार भर में अन्यजातियों (गैर यहूदियों) (सारे अन्यजाति लोग नहीं) में से बहुत से लोगों को यीशु मसीह पर विश्वास करने लगा। विश्वास करने के द्वारा उनका मेल प्रभु से और प्रेम के कारण उनका मेल इस्त्राएल में रहने वाले विश्वासी यहूदियों से हो गया है (इफिसियों 2:11-22; 3:2-6)।

परमेश्वर की सुन्दर योजना में, अन्यजातियों का उद्धार हमेशा यहूदियों में जलन को उत्पन्न करेगा (रोमियों 11:13-14) और इस तरह से बहुत से यहूदी लोग भी यीशु मसीह पर विश्वास करके उद्धार प्राप्त कर लेंगे (रोमियों 11:31)।³ परमेश्वर के उद्धार की योजना अन्त समय तक भी स्थगित नहीं की गयी है, वरन यह योजना यीशु मसीह के प्रथम से ही सक्रिय है। रोमियों 11:12 और 15 में लिखा गया अब अर्थात् वर्तमान काल को दर्शाता है तब अर्थात् भविष्य को नहीं। जैसा कि रोमियों 11:30-31 में

³ अतः, यीशु मसीह का “प्रकाशितवाक्य” कही जाने वाली पुस्तक उसकी दूसरी आमद पर यहूदियों को यीशु के पास लेकर नहीं आयेगी वरन इस काल व आने वाले कालों में सुसमाचार का प्रचार यहूदियों में जलन को उत्पन्न करेगा और उन्हें यीशु मसीह के पास में खींच लाएगा (रोमियों 11:11,13-14)!

लिखा है कि मसीह पर विश्वास करने वाले गैर यहूदियों और मसीह पर विश्वास करने वाले मसीहियों के बीच वार्ता अभी अर्थात होगी।

जब यहूदियों के मन उनके पापों के द्वारा कठोर होने के कारण अन्यजातियों में बड़ा बदलाव आयेगा अर्थात वे मसीह पर विश्वास करने लगेंगे, तब इन यहूदियों में जलन पैदा होगी और ये भी यीशु मसीह पर विश्वास करने लगेंगे। यहजेकेल भविष्यद्वक्ता (यहेजेकेल 36:25-27; 37:14), प्रभु यीशु मसीह (लूका 15:24, 32) और प्रेरित पौलुस (इफिसियों 2:1,5; 5:14) पापों के कारण अपने मनों को कठोर करने वाले यहूदियों में इस बदलाव को “मृतकों में से जी उठने” से कम नहीं बताते हैं (रोमियों 11:15)!

अतः गैर यहूदियों का उद्धार यहूदियों के विश्वास के बिना नहीं होगा (उनमें से कुछ भविष्यद्वक्ताओं को अर्थात यशायाह 49:22 और 66:18-19 प्रेरित पौलुस द्वारा नये नियम में लिखा गया है) और यहूदियों का उद्धार भी बिना गैर यहूदियों द्वारा विश्वास किये बगैर नहीं होगा (जिसे हम मिशन के सम्पूर्ण इतिहास में देख सकते हैं) (उदारहण के लिए यशायाह 66:20-21 और जिसकी वास्तविकता को हम रोमियों 11:31 और प्रकाशितवाक्य 3:9 में पाते हैं)।

(3) रोमियों 11:16-24 में वर्णन किया गया है कि जड़ के साथ जुड़ना केवल विश्वास के द्वारा ही सम्भव है।

बाइबल के अनुच्छेद में पौलुस विशेष तौर पर गैर मसीहियों को सम्बोधित करता है (तुलना करें वचन 13), ताकि वे यहूदियों (परमेश्वर के निज लोगों) का उद्धार करने के प्रति परमेश्वर की योजना को गलत न समझें या उसे न भूलें (तुलना करें वचन 14)।

परमेश्वर ने कुलपति अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ वाचा बांधी। उसने कहा कि मैं “तुम्हारा परमेश्वर” होऊंगा और तुम “सदा तक मेरे लोग ठहरोगे”। यहूदी राष्ट्र में कुछ लोगों के आंशिक तौर पर कठोर होने के कारण परमेश्वर ने इस्राएल के बाकि विश्वासियों (अर्थात कुलपतियों की वंशजों के साथ) के साथ अपनी वाचा को तोड़ नहीं दिया।

उसकी पूर्णता के पवित्र प्रतिनिधित्व का पहला फल (रोमियों 11:16)। अनुवाद: यदि आटे की पहला पेड़ा पवित्र है, तो फिर पूरा गुथा हुआ आटा ही पवित्र है। यदि जड़ (ग्रीक: रीज़ा) पवित्र है तो फिर उसकी डालियां भी पवित्र हैं। दोनो ही तस्वीरें एक ही शिक्षा प्रदान करती हैं: अर्थात पवित्रता का प्रतिनिधित्व करने वाला हर एक पवित्र करता है। (तुलना करें। रोमियों 5:17-19 में यीशु मसीह पवित्रता का प्रतिनिधि है)

इस्राएल के लोग अनाज की पहली फसल का आटा गुंथकर, उसी आटे से वे रोटी बनाया करते थे और उसे वे परमेश्वर के सम्मुख उठाई हुई भेंट के रूप में चढ़ाया करते थे (गिनती 15:17-21)। इस तरह से वे अपनी सम्पूर्ण अनाज की फसल को परमेश्वर के लिए चढ़ा दिया करते थे। “पवित्र” का अर्थ “संसार के सामान्य इस्तेमाल से अलग करके परमेश्वर के कार्यों के लिए समर्पित करना”। ऐसा करने के द्वारा वे अपनी सम्पूर्ण फसल का परमेश्वर के लिए समर्पित कर दिया करते थे और वे मानते थे कि परमेश्वर ने उन्हें यह यषस्वी उपहार उन्हें अपने हाथों से दिया है।

उस जड़ के रूप में जो सम्पूर्ण वृक्ष को पवित्र ठहराती है (रोमियों 11:17-21)। जिस प्रकार से आदम सम्पूर्ण मानव वंशजों के प्राकृतिक मूल हैं उसी तरह से यीशु मसीह भी सभी आत्मिक वंशजों अर्थात विश्वासियों के मूल या प्रतिनिधि हैं (रोमियों 5:15-19)। ठीक इसी प्रकार से जड़ उससे जुड़ी हुई हर एक डाली को प्रगट करती है। वृक्ष की सभी डालियों में वृक्ष

का जीवन और उसकी पवित्रता निहित होती है (तुलना करें 1कुरिन्थियों 1:30)।

एक बाग में लगा हुआ जैतून का पेड़ अति उत्पादक होता है और यह परमेश्वर की वाचा के उन लोगों को दर्शाता है, जिनके द्वारा विश्वास करने वाले यहूदी केवल शुरूआत को रचा (यिर्मयाह 11:16-17) और विश्वास करने वाले गैर यहूदियों ने विस्तार किया और चीजों को आगे बढ़ाया (रोमियों 11:24)। लेकिन जंगली जैतून सबसे बेकार पेड़ है जो कि गैर यहूदी या अन्यजातिय देशों को प्रगट करता है। एक घरेलू जैतून का वृक्ष स्वाभाविक इस्राएल देश के रहने वाले बाइबल के परमेश्वर पर विश्वास करने वाले हर एक विश्वासी को प्रगट करता है। लेकिन जंगली जैतून की डालियां गैर यहूदी देशों रहने वाले विश्वासियों को प्रगट करता है। जैतून की जड़ विश्वास करने वाले कुलपतियों को दर्शाती है जिनके साथ में परमेश्वर ने वाचा बांधी थी (रोमियों 11:28) और अगर हम अन्तिम निचोड़ पर पहुंचें तो यह प्रभु यीशु मसीह को प्रगट करता है, जो स्वयं वाचा की “जड़” है (प्रकाशितवाक्य 22:16)।

- यीशु मसीह भेड़ों से मिलकर बने झुण्ड का एक मात्र चरवाहा है जिनमें से कुछ यहूदियों की भेड़शाला में से आयी है और कुछ अन्यजातियों में की भेड़शाला में से (यूहन्ना 10:16)
- यीशु मसीह की कलीसिया की एकमात्र बुनियाद है (1कुरिन्थियों 3:10-11; तुलना करें 1कुरिन्थियों 12:13)।
- यीशु मसीह (वाचा) का बीज है (गलातियों 3:16)
- यीशु मसीह वह मेल कराने वाला है जिसने उस दिवार को तोड़ दिया है जिससे यहूदी विश्वासियों और गैर- यहूदी विश्वासियों के बीच में मतभेद और बैर उत्पन्न होता है (अर्थात अनुष्ठानिक नियम), जो एक देह अर्थात कलीसिया में विश्वासियों के दो समूहों को उत्पन्न कर देते हैं। इफिसियों 2:11-22)
- यीशु मसीह (वाचा का जामिन) है। (इब्रानियों 7:22)
- यीशु मसीह (वाचा का) मध्यस्थ भी है (इब्रानियों 8:6)

यह जड़ न केवल विश्वास करने वाले यहूदियों को ही नहीं वरन, विश्वास करने वाले गैर यहूदियों को भी सम्भालती है।

जितनी भी शाखाएं इस पवित्र जड़ से जुड़ी हुई हैं वे सभी सच्चे विश्वासी हैं। उन सभी का संसार से अलग किया गया और परमेश्वर के लिए समर्पित किया गया है (1पतरस 2:9-10), चाहे वे घरेलू जैतून से आये हो या फिर जंगली जैतून के वृक्ष से। प्रत्येक गैर मसीही विश्वासी जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है हमेशा हमेशा के लिए उन यहूदी विश्वासियों के साथ “जुड़ जाते हैं” जो मसीह यीशु पर विश्वास करते हैं।⁴ विश्वास के द्वारा “उन्हें जैतून की जड़ से लगातार पोषण मिलता रहता है” (रोमियों 11:17)।⁵ विश्वास के द्वारा वे यीशु मसीह की देह अर्थात सिर के साथ जुड़ गये हैं और वे भी परमेश्वर की चुने हुए लोगों के

साथ बराबर के भागीदार हैं। लेकिन जो यहूदी और गैर यहूदी प्रभु यीशु पर विश्वास नहीं करते हैं उन्हें प्रभु के द्वारा चुने जाने

⁴ ग्रीक: egkentrizó en autois. “उनके स्थान में” नहीं (वैकल्पिक सिद्धान्त), वरन “उनके बीच में”, इस तरह से उन्हें वह स्थान मिला है जिसकी तुलना हम जैतून के वृक्ष (परमेश्वर की वाचा के लोगों) और उसकी जड़ (यीशु मसीह) से की जा सकती है (इफिसियों 2:11-22; 3:2-6)। The Greek -English Lexicon, page 215.

⁵ इतिहासकार बताते हैं कि कलीसिया को यहूदी राष्ट्र इस्राएल के साथ जोड़ दिया गया है और यहूदी राष्ट्र वास्तव में परमेश्वर की निज प्रजा है। लेकिन रोमियों 11 स्पष्ट रूप में यह सिखाता है कि विश्वास करने वाली अन्यजातियां (गैर यहूदी) जिन्हें जैतून के वृक्ष में जोड़ा गया है वे उसकी जड़ के द्वारा पोषक तत्वों को भी पाते हैं। जैतून का वृक्ष यहूदी राष्ट्र इस्राएल को प्रगट नहीं करता है, वरन यह परमेश्वर के चुने हुए लोगों की तस्वीर है जिसमें यहूदी और गैर यहूदी दोनों ही प्रकार के लोग शामिल हैं। और जड़ कुलपति याकूब को नहीं वरन प्रभु यीशु का प्रकट करती है, जो कि विश्वास करने वाले यहूदी और यूनानी दोनों का ही प्रभु है। इस तरह से नये नियम की कलीसिया को यहूदी राष्ट्र में नहीं वरन मसीह अर्थात यीशु मसीह में जोड़ा गया है। यहूदी और गैर यहूदी विश्वासी दोनों ही एक ही आत्मा में होकर (अर्थात मसीह की आत्मा में) एक देह में (अर्थात मसीह की देह में) बपतिस्मा लेते हैं। (1कुरिन्थियों 12:13)। इसलिए कभी भी इस बात को न भूलें कि सच्चे इस्राएली यहूदी लोग नहीं हैं, वरन वह “परमेश्वर के दास” अर्थात प्रभु यीशु मसीह हैं। (यशायाह 49:3,6)। जितने भी लोग यीशु मसीह के क्रूस पर गर्व करते हैं वे सभी नयी सृष्टि हैं, वे सभी “परमेश्वर के लिए इस्राएल हैं”। (इसके विपरीत गलातियों 6:14-16 में अविश्वासी यहूदी हैं जिन्हें “देह के अनुसार इस्राएल कहा गया है”) (ग्रीक: इस्राएल काटा सार्का) (1कुरिन्थियों 10:18)।

वाले लोगों से अलग फेंक दिया गया है (मत्ती 8:11-12; 21:42 तथा यूहन्ना 15:6)।

यीशु मसीह में विश्वास करने वाले यहूदी और गैर यहूदी पूरी तरह से एक समान रूप में जड़ अर्थात्, यीशु मसीह से जुड़ गये हैं, “यहूदियों और गैर यहूदियों में कोई अन्तर नहीं है।” (रोमियों 10:12-13; गलातियों 3:28; इफिसियों 2:14-18; 3:2-6; कुलुस्सियों 3:11-12)। विश्वास करने वाले यहूदियों और गैर यहूदियों ने एक ही आत्मा से मसीह की देह (कलीसिया) में बपतिस्मा प्राप्त किया है। (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 12:12-13; इफिसियों 1:13; 2:11-22; 3:2-6)।

पुराने नियम के समय में परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा में पहले तो इस्राएल देश के रहने वाले यहूदी विश्वासी और कुछ गैर यहूदी विश्वासी शामिल थे (यशायाह 56:3-8)। लेकिन नये नियम के समय में परमेश्वर के चुने हुए लोगों में संसार भर के देशों में रहने वाले लोग आते हैं, जिनमें कुछ यहूदी लोग भी शामिल हैं। (रोमियों 1:16; गलातियों 3:26-29; 1 पतरस 2:9-10)। नये नियम में परमेश्वर के चुने हुए लोगों को “परमेश्वर का राज्य” या “मसीह की देह” के नाम से जाना जाता है (जो कि एक सार्वभौमिक कलीसिया है)।

परमेश्वर की कठोरता और परमेश्वर की कृपा (रोमियों 11:22-24)। जितने यहूदी स्वाभाविक तौर पर इस्राएल देश के वासी हैं, लेकिन वे वाचा की मांग को पूरा नहीं करते अर्थात् यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते, वे न तो वर्तमान काल में उद्धार पाएंगे और न ही भविष्य में अर्थात् अन्त के दिनों में उद्धार पाएंगे! यही परमेश्वर की कठोरता है। लेकिन जो यहूदी अपने अविश्वास से फिर जाते हैं वे हमेशा के लिए बच जाएंगे। यह परमेश्वर की कृपा है। इस्राएलियों के प्रति परमेश्वर की कठोरता और कृपा (तुलना करें यिर्मयाह 18:5-12) संसार भर के गैर यहूदी राष्ट्रों में रहने वाले विश्वासियों के प्रति दिखाई जाने वाली कठोरता और कृपा के समा नहीं है। (यूहन्ना 3:16-18,36)।

गैर यहूदी लोगों को यह नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर की निज प्रजा कहलाने वाले लोगों का प्रारम्भ इस्राएलियों में वास करने वाले विश्वासियों के साथ ही हुआ था (रोमियों 1:16; तुलना करें मत्ती 10:5-6)। लेकिन यीशु मसीह के प्रथम आगमन के बाद से उसने अपनी वाचा शामिल किये जाने वाले लोगों का दायरा बढ़ाकर यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले संसार के सारे देशों के लोगों तक कर दिया। (तुलना करें मत्ती 28:19)।

वह दृढ़ सिद्धान्त जिसके द्वारा लोग परमेश्वर के राज्य में भागीदार बनते हैं, वह प्रभु यीशु पर विश्वास करना है।⁶ केवल प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ही यहूदी और गैर यहूदी लोग परमेश्वर की निज प्रजा, कुलपतियों तथा वाचा की आशीषों का हिस्सा हो पाते हैं (गलातियों 3:26-29; इब्रानियों 11:6)।

अतः, “यहूदियों और यूनानियों में कोई अन्तर नहीं है।”....जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।” (रोमियों 10:12.13)!

11:25-32

खोज 2. परमेश्वर के उद्धार की योजना में चुने हुए गैर यहूदियों की तथा चुने हुए यहूदियों की संख्या एक ही साथ

⁶ इब्रानियों 11:6-8, 21-27। गैर यहूदियों (नूह और अब्राहम) और यहूदियों ने (याकूब, यूसुफ और मूसा) यीशु मसीह पर विश्वास करने के कारण ही उद्धार पाया था। यहूदियों ने यीशु मसीह के दूसरे आगमन उसके प्रकाशन के कारण उद्धार नहीं पाया है। इब्रानियों की पत्री विशेष तौर पर यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले यहूदियों के लिए लिखी गयी है।

परी होगी।

रोमियों 11:25.32 में “अन्याजियों के गिनती के पूरे होने” और “इस्राएल के लोगों की गिनती के पूरे होने” के बीच सम्बन्ध को प्रगट किया गया है। “भेद” का अर्थ उन बातों से हैं जो पुराने नियम के समय में गुप्त रखी गयी थीं, लेकिन उन्ही बातों को नये नियम में खोल कर बता दिया गया है। वह भेद यह है कि यहूदियों और गैर यहूदियों दोनों ही परमेश्वर के वारिस हैं, और

यहूदियों और गैर यहूदियों का उद्धार आपस में एक दूसरे पर निर्भर है, तथा अन्यजातियों में से चुने हुए विश्वासियों की संख्या और यहूदियों में से चुने हुए विश्वासियों की संख्या यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर एक ही साथ पूरी होगी।

(1) भेद की बात यह है कि गैर यहूदी विश्वासी भी यहूदी विश्वासियों के समान ही वारिस हैं।

जिस भेद की बात पौलुस 25 वें वचन में कर रहा है वह नये नियम में परमेश्वर की योजना को प्रगट करता है। उद्धार की इस योजना में यहूदियों और अन्यजातियों के बीच नये रिश्ते के बारे में बताया गया है।

रोमियों 11:25 में दर्शाया गया यह भेद इफिसियों 3:2-6 में लिखे भेद से सम्बन्ध रखता है। जिन बातों को पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता नहीं जानते थे, उन बातों को नये नियम के प्रेरितों पर प्रगट कर दिया गया। परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया कि उद्धार की इस योजना में न केवल विश्वासियों को वरन, गैर यहूदी विश्वासियों को भी शामिल किया गया है (देखें प्रेरितों के काम 10:24-25)। गैर यहूदी विश्वासी और यहूदी विश्वासी एक साथ मिलकरः।

- “एक ही चरवाहे के भेड़ें होंगे” अर्थात् यीशु के (यूहन्ना 10:16)
- मसीह की एक ही देह के सदस्य होंगे” (1कुरिन्थियों 12:13)
- “परमेश्वर का मन्दिर होंगे” (2कुरिन्थियों 6:16)
- “परमेश्वर के चुने हुएों के वारिस होंगे” (गलातियों 3:27-29)
- “परमेश्वर के इस्राएल होंगे” (गलातियों 6:14-16)
- यीशु मसीह में “एक नयी सृष्टि” होंगे (इफिसियों 2:14-18)
- “बाइबल में लिखी प्रतिज्ञाओं के भागिदार होंगे” (इफिसियों 3:2-6; तुलना करें. 2कुरिन्थियों 1:20)
- “परमेश्वर के लोग” होंगे (1पतरस 2:9-10)।

डोटा 11 के अध्याय 34 में रोमियों 9:4-9 में दिये गये प्रश्न में “पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के इस्तेमाल किये गये सम्बोधन और नये नियम में परमेश्वर के लोगों के लिए इस्तेमाल किये गये सम्बोधन की तुलना” को देखें।

(1) यह भेद यहूदियों और गैर यहूदियों के उद्धार के लिए आपसी निर्भरता है।

रोमियों 11:11-15 इस ईश्वरीय भेद के सार पर जोर डालती है, विशेषतौर पर “यहूदियों और गैर यहूदियों के उद्धार के निमित्त आपस में एक दूसरे पर निर्भर होने पर”। यह घटनाओं की ऐसी श्रृंखला का हवाला देते हैं जिनके परिणाम स्वरूप यहूदियों और यूनानियों का उद्धार हुआ था। रोमियों 11:26 में “सच्चे इस्राएलियों” में यीशु मसीह में विश्वास करने वाले ऐसे विश्वासी शामिल हैं जिन्हें परमेश्वर द्वारा अस्विकृत नहीं किया गया है।

(2) भेद की बात यह है कि अन्यजातियों में से उद्धार पाने वालों की गिनती और यहूदियों में से उद्धार पाने वालों की गिनती साथ-साथ पूरी होगी।

रोमियों 11:25-26 में पौलुस जोर देते हुए बताता है कि भेद यह है कि विश्वास करने वाले अन्यजातियों की गिनती और विश्वास करने वाले इस्राएली यहूदियों की गिनती एक साथ इतिहास के अन्त में अर्थात् यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर पूरी होगी। “परमेश्वर ने हमारे लिए (अर्थात् नये नियम के विश्वासियों के लिए) कुछ उत्तम बातों को चुन रखा है, कि वे (अर्थात् पुराने नियम के विश्वासी) (इब्रानियों 11:40)

“सारे इस्राएली” (रोमियों 11:26) या “इस्राएलियों की परिपूर्णता को” (रोमियों 11:12) “अन्यजातियों की परिपूर्णता” का इन्तज़ार करना होगा (रोमियों 11:25), इससे पहले कि इस्राएल (विश्वास करने वाले यहूदियों का देश) एक बार फिर से परमेश्वर की निज प्रजा के रूप में प्रगट होगा (तुलना करें प्रकाशितवाक्य 21:3, “वे उसके लोग ठहरेगें” - बहुवचन)। इस समय पर इस्राएल की तस्वीर (यहूदी राष्ट्र) की तस्वीर धुंधली है, क्योंकि इस्राएल बंटा हुआ है (विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच में) और ऐसा प्रतीत होता है कि उसे अस्विकार किया गया है। पौलुस कहता है कि इस्राएल की यह तस्वीर (यहूदी लोगों के रूप में) “आंशिक” और “अस्थायी” दोनों है।

जब “अन्यजातियां परिपूर्ण हो जाएंगी” (अन्यजातियों में से चुने हुए विश्वासियों की गिनती) पूरी हो जाएगी, “तब इस्राएल की परिपूर्णता” भी (यहूदियों में से चुने हुए विश्वासियों की गिनती) प्रगट कर दी जाएगी। भेद की बात यह है कि इस्राएल के लोग (यहूदी लोग) अन्त समय तक आंशिक तौर पर कठोर बने रहेंगे। केवल अन्त के समय में जाकर परमेश्वर की निज प्रजा के रूप में इस्राएली लोग (अर्थात् वे यहूदी जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं) जिनमें इस्राएल देश में से विश्वास करने वाले लोगों की पूर्ण गिनती शामिल होगी (रोमियों 9:6), पूरी तरह से प्रगट की जाएगी। यह अन्यजातियों में से विश्वासियों की गिनती के पूरा होने के साथ होगा, जिनमें गैर यहूदी राष्ट्रों में से चुने गये विश्वासी शामिल होंगे।

कदम 3. प्रश्न

व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आइये रोमियों 1:1-17 में पायी जाने वाली सच्चाइयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होने दें कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

11:26

प्रश्न 1. “सारे इस्राएली” का अर्थ क्या है?

ध्यान दें।

(1) रोमियों 11:25 और रोमियों 11:26 के बीच में सम्बन्ध।

“इस्राएलियों का उद्धार” कोई “भेद” नहीं है वरन यह तो उस “भेद” का परिणाम है। भेद प्रगट करता है कि इस्राएल के स्वाभाविक लोगों अर्थात् यहूदियों का आंशिक रूप में अस्विकार किया जाना और अन्यजातियों में से विश्वासियों के उद्धार प्राप्त करने की गिनती की परिपूर्णता वह तरीका वह आपसी निर्भरता है जिसके द्वारा “सारे इस्राएलियों” का उद्धार (ग्रीक: पास

इस्राएल) या इस्राएल की “परिपूर्णता” (ग्रीक: प्लीरोमा”) (रोमियों 11:12) अपना अस्तित्व में आयेगी। यह दृष्टिकोण या नज़रिया कि यह “भेद” है कि सारे इस्राएलियों का (स्वाभाविक) उद्धार होगा, गलत है।

(2) “सारे इस्राएली” अभिव्यक्ति इस बात को नहीं दर्शाती है कि

सदियों से इस्राएल के अन्दर जितने भी लोग स्वाभाविक तौर पर पैदा हुए हैं वे सभी इस्राएली है।

यह (गलत) धारणा मानती है कि “सारे” (ग्रीक: पास) का अर्थ हमेशा सारे लोग होता है अर्थात् उसमें कोई नहीं छूटता। इसलिए वे सिखाते हैं कि जितने भी यहूदी आज तक इस धरती पर जन्में हैं उनका उद्धार तो तय है। यह दृष्टिकोण रोमियों 5:17-19 में लिखी बातों से मेल नहीं खाता है जिसमें लिखा गया है कि शब्द “पास” केवल उन लोगों के बारे में बात करता है “जो लोग अपने प्रतिनिधी से जुड़े हैं” न कि “जिनते लोगों ने इस धरती पर जन्म लिया है! परमेश्वर अविश्वासी यहूदियों के बारे में कहते हैं कि,” तुम मेरे लोग नहीं हो (इब्रानियों: लो अम्मी) और न ही मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ” (होशे 1:9)!

नये नियम और पुराने नियम में परमेश्वर ने अविश्वासी और अनाज्ञाकारी यहूदियों (और गैर यहूदियों) को अस्विकार किया है (दानियेल 12:2; मत्ती 8:12; इब्रानियों 4:2, 6)। एक जन (यहूदी) केवल तब ही (बना रहता है) (निश्चित काल) यीशु मसीह या पवित्र आत्मा का “भागीदार” (ग्रीक: metochos) (इब्रानियों 3:14) (इब्रानियों 6:4) बनता है “यदि” (ग्रीक: katechó) (आत्मपरक, अनिर्दिष्ट काल) उसके बोध (आत्म विश्वास या निश्चय) (ग्रीक: arché tés hupostaseós) अन्त तक दृढ़ बना रहे (इब्रानियों 3:14)। एक मानवीय दृष्टिकोण से देखें तो, एक विश्वासी की दृढ़ता उसकी प्रबल विश्वासयोग्यता से प्रगट होती है। अविश्वासी लोग हमेशा के लिए भटक चुके हैं (यूहन्ना 3:16)। रोमियों 9:27 में पौलुस निश्चित तौर पर सार्वभौमिक उद्धार की बात नहीं करता है: “चाहे इस्राएलियों की गिनती बालू के किनकों के समान ही क्यों न हो लेकिन केवल छुड़ाये गये लोग ही उद्धार पाएंगे।”

(3) यह सोच कि “सारे इस्राएल” का अर्थ आज तक जन्मे हुए सारे यहूदी हैं, बिल्कुल गलत है।

अन्त समय में “सारे इस्राएल” की अभिव्यक्ति केवल इस्राएल के लोगों तक ही सीमित नहीं है।

यह सोच (गलत) यह सोचती है कि “आंशिक कठोरता” यहूदी राष्ट्र के रूप में सम्पूर्ण इस्राएल पर यीशु मसीह के प्रथम आगमन से लेकर यीशु मसीह के पुनःआगमन से कुछ समय पहले तक आ पड़ी है (अर्थात् छठे काल का सबसे बड़ा हिस्सा, जिसे कलीसियाई काल भी कहा जाता है)। आंशिक रूप से कठोर होने का यह काल “अन्तराल” या “अन्तरिम काल” कहलाता है जिसे दानियेल 9:24-27 में 69वां और 70वां सप्ताह कहते हैं। लेकिन आप दानियेल की पुस्तक की व्याख्या www.deltacourse.org Delta Plus study 15 में देखें। केवल महान क्लेश (जिसे दानियेल का 70वां हफ्ता भी कहा जाता है) के प्रारम्भ होने से पहले या मध्य में होने वाले मसीह की “कलीसिया के रैप्चर” (ग्रीक: parousia)⁷ जो कि मसीह के “प्रकाशन” से पहले होगा, परमेश्वर इस्राएल के उद्धार अर्थात् “सम्पूर्ण यहूदी राष्ट्र का उद्धार” के उस उद्धार के काम को जिसमें उसने थोड़ा विलम्ब कर दिया था फिर से प्रारम्भ कर देगा (ग्रीक: pas Israel)।

यह दृष्टिकोण इस बारे में कोई बात नहीं करता कि पुराने नियम में भी बहुत से यहूदियों ने पहले ही विश्वास कर लिया था: अर्थात् अब्राहम के अलावा, कई इब्रियों (उत्पत्ति 14:13; 15:6), अरामियों (यहेजकेल 16:3,45), पुराने नियम के समय में

⁷ मत्ती 24:29-31 में शब्द “पारोउसिया” और लूका 17:30-35 में “अपोकालुपिस” स्पष्ट तौर पर बताते हैं कि दूसरा आगमन दो बार नहीं (एक कलसिया को ले जाने के लिए और एक कलीसिया के साथ में) (जिनके बीच का अन्तराल 3) या 7 वर्ष) का होगा, वरन एक ही दूसरा आगमन होगा। बाइबल के दोनों अनुच्छेद बताते हैं कि मसीहियों को महाक्लेश से होकर गुजरना ही पड़ेगा।

यहूदियों कमें से पाये जाने वाले विश्वास के वीरों ने (इब्रानियों 11:1-40), मूसा के समय में मन फिराने वाले यहूदियों ने (व्यवस्थाविवरण 31:2,6), एलिय्याह भविष्यद्वक्ता के समय में 7000 लोगों ने जिन्होंने बाल के सामने कभी घुटने नहीं टेके थे (1राजा 19:18) और यशायाह नबी के समय में छुड़ाये गये लोगों ने (यशायाह 1:9; 28:16)।

यह विचार धारा इस बात का भी उल्लेख नहीं करती है कि यीशु मसीह और प्रेरितों के समय में भी बहुत से यहूदियों ने विश्वास किया था: उदाहरण के लिए, प्रभु यीशु मसीह के चेले (प्रेरितों. 1:15), पिन्तेकुस्त के दिन विश्वास करने वाले 3000 लोग (प्रेरितों 2:41), 5000 वे लोग जिन्होंने संदेश के बाद विश्वास किया (प्रेरितों 4:4), वे यहूदी जो रोज “कलीसिया में जुड़ रहे थे” (प्रेरितों 2:47; 6:7), हजारों वे लोग जिन्होंने यरूशलेम पर विश्वास किया (प्रेरितों 21:20) और वर्तमान समय में विश्वास करने वाले लोग (57 ई.पू. जब पौलुस ने रोमियों को अपनी पत्री लिखी रोमियों) “ऐसे लोगों का समूह जिन्हें परमेश्वर द्वारा चुना गया” (रोमियों 11:5), गलातियों में (गलातियों 3:28), कुरिन्थियों में (1कुरिन्थियों 12:13), रोम में (रोमियों 1:16), इफिसुस में (इफिसियों 2:11-22; 3:2-6), कुलुस्से में (कुलुस्सियों 3:11), तथा अन्य लोगों ने (प्रकाशितवाक्य 1:12-13)। यह सोच कि “सारे इस्राएल” का अर्थ *अन्त समय में यहूदी राष्ट्र* को दर्शाता है गलत है।

(4) “सम्पूर्ण इस्राएल” अभिव्यक्ति इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र को नहीं दर्शाती है, इसका अर्थ है कि पौलुस कोई यहूदी वादी वाक्य नहीं बोलता है।

रोमियों 9:6 में हमें बताया गया है कि “जो सारे लोग इस्राएल के वंश है, वे सब इस्राएली नहीं हैं।” पूरे अध्याय 9 में पौलुस इस्राएल राष्ट्र को सर्वोच्च स्थान या प्राथमिकता देने वाली तस्वीर का विरोध करता है। यहूदी माता पिता द्वारा या यहूदी वंश में पैदा होने के कारण सभी लोग “यहूदी” या “परमेश्वर की सन्तान” नहीं हैं। यहूदी (गैर यहूदी) केवल नये जन्म (रोमियों 2:28-29), परमेश्वर की श्रेष्ठ प्रतिज्ञा, चुनाव, बुलाहट, प्रेम और दया (रोमियों 9:6-18) के द्वारा “परमेश्वर की सन्तान” या “इस्राएल के सच्चे नागरिक बनते हैं। यीशु मसीह ने यहूदियों से कहा, “जब तक तुम नये सिरे से जन्म न लो, तुम परमेश्वर के राज्य को देख नहीं सकते हो,” और उसमें “प्रवेश नहीं कर सकते हो।” (यूहन्ना 3:3,5)। यीशु द्वारा यह कहे जाने पर कि, “तुम्हें नया जन्म लेना अवश्य है” यहूदियों को अचम्भित नहीं होना चाहिए था। (यूहन्ना 3:8)।

यह सोच कि “सारा इस्राएली” *उन प्राकृतिक यहूदियों को दर्शाता है जो आज तक धरती पर पैदा हुए हैं*, गलत है।

(5) “सारा इस्राएल” अभिव्यक्ति उद्धार के इतिहास में यहूदियों में से चुने हुए यहूदियों की “पूरी गिनती” या “परिपूर्णता” को दर्शाती है।

यह उन यहूदियों की ओर ईशारा नहीं करती है जो अन्त के समय में परमेश्वर की धार्मिकता की उस मांग को किसी न किसी तरीके से “पूरा” करेंगे, जो बीते समय में (रोमियों 11:11-16) उनके “अपराधों” (ग्रीक: परासोमा) (अविश्वास) और “पराजय” (असफलता) (ग्रीक: हेटेमा) के विपरीत है।

यह यहूदियों को “उस संख्या को दर्शाते हैं” जिनका उद्धार होगा। यह संख्या हर काल में छुड़ाए गये यहूदियों की संख्या को जोड़ने के द्वारा प्राप्त होती है, उदाहरण के लिए:

- एलिय्याह के समय में “छुड़ाए गये लोग” (1राजाओं 19:18)
- यशायाह के समय में “छुड़ाए गये लोग” (यशायाह 1:9; 2:4; रोमियों 9:27)
- यीशु मसीह के समय में चेलों का “छोटा झुण्ड” (लूका 12:32)

- निश्चय तौर पर उनमें “बहुत से इस्राएली होंगे” (लूका 2:34; तुलना करें. प्रेरितों. 2:41,47; 4:4; 6:7; 9:31)
- पौलुस के समय में “छुड़ाए गए लोग” (रोमियों 11:5)
- और आने वाले कालों में अर्थात् यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक (मत्ती 10:23) “बचाये जाने वाले लोग”।

पौलुस को इस बात की कोई परवाह नहीं है कि कितने अधिक यहूदियों को उद्धार होगा, परन्तु उसे इस बात की अधिक खुशी है कि हर काल में परमेश्वर की वाचा से जुड़े हुए लोगों में हमेशा यहूदी भी शामिल होंगे। लेकिन प्रकाशितवाक्य 7:9 बताता है, “ एक बड़ी भीड़ के बारे में जिसमें हर जाति, हर भाषा, गोत्र और वर्ग के लोग शामिल होंगे, जिनकी गिनती कोई नहीं कर सकता और इसे यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले यहूदी भी शामिल होंगे।

11:26

प्रश्न 2. “सारे इस्राएलियों” का उद्धार कब होगा?⁸

ध्यान दें।

(1) रोमियों 11:23 कोई भविष्यसूचक कथन नहीं है कि

सारे (प्राकृतिक) यहूदी उद्धार पाएंगे।

रोमियों 11:11-12 में पौलुस अन्त के समय में इस्राएल में पैदा हुए सभी यहूदियों के उद्धार की बात नहीं कर रहा है, लेकिन वह अन्त समय तक उद्धार के इतिहास में चुने हुए यहूदियों के उद्धार की बात कर रहा है।

रोमियों 11:11,14 में लिखा है कि वर्तमान काल में पाये जाने वाले इस्राएल में रहने वाले यहूदियों में (अर्थात् मसीह के पहले आगमन से लेकर अब तक) जलन उत्पन्न कराई जानी चाहिए, ताकि चुने हुए यहूदियों में से बचे गये लोगों का अब (अर्थात् यीशु के प्रथम आगमन के बाद से) उद्धार हो जाए। प्रेरित पौलुस वास्तव में यही काम गैर यहूदियों के बीच में कर रहा था (रोमियों 11:20-31)

अतः, जो चीज “सम्पूर्ण इस्राएल” को मसीह के दूसरे आगमन पर प्राप्त होगी, वही चीज अर्थात् उद्धार युगों से गैर यहूदियों (अन्यजातियों) और विश्वासी यहूदियों को सुसमाचार प्रचार किये जाने के द्वारा प्राप्त हो रही है।” सुसमाचार हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहले तो यहूदी यूनानी के लिए, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है (रोमियों 1:16)। इस संसार में रहते हुए यीशु द्वारा अपने प्रेरितों को अपनी सेवकाई के प्रारम्भ में दी जाने वाली आज्ञा को देखें: पहले तो यहूदियों के लिए (मत्ती 10:5-6) और बाद में उसने प्रेरितों को अपनी सेवकाई के अन्त में एक आज्ञा दी: अन्यजातियों के लिए (मत्ती 28:19)!

क्योंकि पुराने नियम के समय से लेकर यीशु मसीह के प्रथम आगमन तक बहुत से यहूदियों का “त्याग दिया जाना” (ग्रीक: apobolé) जगत में रहने वाली अन्यजातियों के “मिलाप” (ग्रीक: katallagé) का कारण हुआ, तो यीशु मसीह के दूसरे

⁸ रोमियों 11:25-26 का अनुवाद, “एक आंशिक कठोरता (ग्रीक: pórōsis apo merous) इस्राएल पर तब तक आ पड़ी है (ग्रीक: ginomai) (निश्चित काल) जब तक कि अन्यजातियों की ठहराई हुई गिनती पूरी नहीं हो जाती, और इस तरह से (ग्रीक: kai houtós) सारे इस्राएलियों को उद्धार हो जाएगा, यह बिल्कुल सत्य है: मूल ग्रीक लेख, इंग्लिश अनुवाद (KJV, NASB, NIV), डच अनुवाद (SV, BBG, KBS, HSV), दक्षिण अफ्रिका को अनुवाद (NAV), डैनिश और अन्य अनुवाद (ग्रीक: Lexicon of Bauer, Arndt en Gingrich.)

लेकिन यह अनुवाद कि, “एक अस्थायी कठोरता इस्राएल पर आ गयी है, जिससे की अन्यजातियों की गिनती पूरी हो जाएगी, और तब सारे इस्राएलियों को उद्धार हो जाएगा, ठीक नहीं है। यह अनुवाद युगवाद से लिया गया है और यह अनुवाद कुछ अमेरिकन बाइबलों में पाया जाता है (लिविंग बाइबल और गुड न्यूज़ फॉर मॉर्डन मैन)।

आगमन तक बहुत से यहूदियों में सुसमाचार प्रचार के माध्यम से “ग्रहण किया जाना” (ग्रीक: proslémpsis) “मृतकों में से जीवित होने के बराबर” (ग्रीक: zóé ek nekrón) क्यों न ठहरेगा। यह वचन बहुत से ऐसे यहूदियों के लिए है जो आत्मिक तौर पर मृतक हैं लेकिन वे अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे। यहजेकेल नबी (यहेजेकेल 36:25-27; 37:14), प्रभु यीशु मसीह (लूका 15:24,32) और प्रेरित पौलुस (इफिसियों 2:1,5; 5:14) यहूदियों की कठोरता में इस रूपान्तरण को “मृतकों में से जीवन उठने” के बराबर बताते हैं (रोमियों 11:15)!

यह हवाला “संसार में अब तक जन्म यहूदियों के रूपान्तरण के लिए” नहीं हो सकता और न ही हम इसे “ मिलेनियल किंगडम अर्थात् सहस्राब्दिक राज्य” से जोड़कर नहीं देख सकते, जिसमें यहूदियों को अगुवाई प्राप्त होगी, यहूदी मिश्ररी ही बहुत से गैर यहूदी लोगों को मसीह पर विश्वास करने में अगुवाई करेंगे, और उन्हीं के द्वारा धरती पर सम्भवतः सबसे बड़ी आशीष आयेगी।”, क्योंकि यदि हम युगों के आधार पर देखें, यह घटना (इस्राएल की परिपूर्णता) “अन्यजातियों की गिनती की पूर्ति” के बाद ही घटेगी और तब उसके बाद अन्यजातियों में से कोई भी जन विश्वास में नहीं आयेगा।

रोमियों 11:23 कहता है, “वे भी यदि अविश्वास में न रहे तो साँटे जाएँगे” क्योंकि परमेश्वर उन्हें फिर साट सकता है (जो यहूदी हैं)” यह वचन कोई भविष्यसूचक वाक्य नहीं है कि “अन्त के समय में इस्राएल का सम्पूर्ण प्राकृतिक राष्ट्र” लगातार अविश्वास नहीं करेगा!

पौलुस यहां पर जो कहने की कोशिश करता है वह यह है कि यहूदी और गैर यहूदी सभी लोग यीशु मसीह विश्वास करने की व्यक्तिगत मांग को पूरा कर देंगे तो यीशु मसीह में कलम लगा दिये जाएँगे। इस तरह से यहूदी और गैर यहूदी जैतून के पेड़ में सांटे जाकर एक परमेश्वर के लोग बन (यूहन्ना 10:16द्वा या कलीसिया बन रहे हैं)(1 कुरिन्थियों 12:13द्वा यह सिद्धान्त कि, लोग सुसमाचार सुनने के बाद विश्वास के द्वारा ही उद्धार पाते हैं सभी कालों में सत्य है। इसे रोमियों 10:14-17 और इफिसियों 1:13 में स्पष्ट तौर पर बताया गया है। पौलुस को वर्तमान काल में सुसमाचार प्रचार किये जाने और यहूदियों द्वारा उसको विश्वास के साथ प्रतिउत्तर देने के अलावा कोई ऐसा तरीका दिखाई नहीं देता जिसके द्वारा यहूदियों को उद्धार हो सकता है।

(2) रोमियों 11:26 का अर्थ यह नहीं है कि इस्राएल “अस्थायी रूप में कठोर किया जाएगा और फिर सारे इस्राएल का उद्धार हो जाएगा।”

25 व 26 पद में पौलुस यह नहीं कह रहा है कि “अन्यजातियों के उद्धार पाने तक इस्राएल का एक भाग अस्थायी तौर पर कठोर बना रहेगा और फिर सारे इस्राएल का उद्धार हो जाएगा। पौलुस इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंचता है कि अन्यजातियों के परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के बाद, एक अन्तरिम काल होगा (उदाहरण के लिए, “महाक्लेश का समय”) जिसमें यहूदी राष्ट्र का उद्धार हो जाएगा। बाइबल में कहीं पर भी यह नहीं बताया गया है कि अन्यजातियों के प्रवेश करने और संसार के अन्त के बीच में ऐसा कोई अन्तरिम काल होगा। इसके अलावा यह भी कहीं नहीं लिखा हुआ है कि सम्पूर्ण यहूदी राष्ट्र यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर विश्वास में आ जाएगा। यहूदियों को अन्यजातियों को वह नियम अन्त समय एक साथ आ जाएगा। (मत्ती 13:37-43; 24:21-31; 25:31-33; 2पतरस 3:7-13; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)!

(3) रोमियों 11:26 का अर्थ है “इस्राएल का आंशिक रूप में कठोर होना और (इस तरह से) सारे इस्राएल का उद्धार होना।

पद 25 के मूल लेख का अनुवाद केवल यह किया सकता है कि इस्राएल को “आंशिक रूप से” कठोर किया गया है (और

आज भी कठोर है।) (ग्रीक: *tó Israel gegonen*) (सिद्ध काल)। यह सिद्ध काल इस बात को प्रगट करता है कि यीशु के दूसरे आगमन तक यहूदियों का हृदय इस क्षेत्र में कठोर बना रहेगा।

पद 26 के दिये गये शब्दों का अर्थ केवल यह निकाला जा सकता है कि “अतः, (इस तरह से)” (ग्रीक: *kai houtós*) “और उसके बाद नहीं”। क्योंकि यहूदियों ने मसीह के प्रति अपने मन को कठोर कर लिया था, इसलिए मसीह गैर यहूदियों (अन्यजातियों) के पास गया (उदारहण के लिए, प्रेरितों 13:45-51); और गैर यहूदियों के विश्वास में आने के कारण, यहूदियों में जलन उत्पन्न हो गयी और इस तरीके से उनमें से बहुत लोग मसीह पर विश्वास करने लगे।

इस्राएलियों का मन उस समय अन्तराल में आंशिक रूप से (स्थायी तौर पर नहीं) कठोर रहता है जिस समय में बहुत से गैर-यहूदी (इसका अर्थ है कि सारे गैर यहूदी नहीं) लोग विश्वास करके परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। इसी समय में यहूदियों में से एक भाग (बचे हुए लोग) ऐसा रहेगा जिन्होंने अपने मन को कठोर नहीं किया और वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं! पौलुस उस क्षण या समय की बात नहीं करता जिस में यहूदियों को उद्धार होता है, परन्तु वे उस तरीके की बात करते हैं जिससे यहूदियों को उद्धार प्राप्त हो रहा है। यहूदी आज भी उद्धार पर रहे हैं (अर्थात्, मसीह के प्रथम आगमन से लेकर) यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक उद्धार पाते रहेंगे।

वह यह कहता है कि इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र की आंशिक कठोरता और अन्यजातियों में से विश्वास करने वालों की संख्या के बीच पारस्परिक निर्भरता वह तरीका या उपाय है जिसके द्वारा परमेश्वर इस्राएल में से विश्वास करने वालों की नियत संख्या को पूरा करेगा! जिस क्षण यहूदियों में से विश्वास करने वालों की यह संख्या पूरी हो जाएगी उसी क्षण अपने आप अन्यजातियों में से उद्धार पाने वाले विश्वासियों की संख्या भी पूरी हो जाएगी। यह घटना आगे पीछे नहीं घटेगी।

मसीह के प्रथम आगमन और उसके दूसरे आगमन के बीच में उद्धार का इतिहास यहूदियों और गैर यहूदियों के लिए समान है। यहूदियों और गैर यहूदियों के लिए उद्धार का मार्ग बिल्कुल एक समान है। (रोमियों 10:12-13)। पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा बांधी गयी वाचा में पहले से ही गैर यहूदियों को शामिल किया गया था (उत्प.12:3; देखें यशायाह 56:3-8)। लेकिन परमेश्वर की वाचा यहूदियों और गैर यहूदियों दोनों से ही विश्वास की मांग करती है (रोमियों 1:16; 11:23)। बाइबल स्पष्ट रूप से बताती है कि सभी कालों में अगर यहूदियों और गैर यहूदियों में से कोई भी जन विश्वास नहीं करेगा, तो उनका उद्धार नहीं होगा (रोमियों 2:9 य मत्ती 8:11. 12 य 21:42. 44)। और बाइबल स्पष्ट तौर पर यह भी शिक्षा देती है कि सभी युगों व कालों में चाहे यहूदियों में से हों या गैर यहूदियों में से यदि कोई भी जन यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं वे मिलकर एक जीव का निर्माण करते हैं, जिन्हें कई रूपकों से दर्शाया गया है।

- मसीह का एक झुण्ड (यूहन्ना 10:16)
- परमेश्वर का एक परिवार (गलातियों 3:26-29)
- एक नया मनुष्य, परमेश्वर का घराना, परमेश्वर की आत्मा का वास स्थान (इफिसियों 2:11-22)
- मसीह की एक देह (1 कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 3:6)
- एक जैतून का पेड़ (यिर्मयाह 11:16-17; रोमियों 11:17-24)
- परमेश्वर द्वारा चुने हुए और पवित्र लोग (1 पतरस 2:9-10).
- एक नया यरूशलेम, मसीह की दुल्हन (प्रकाशितवाक्य 21:9-14, तुलना करें इब्रानियों 12:22-24 यहूदियों के लिए, गलातियों 4:21-31 गैर यहूदियों के लिए)

यहूदियों और गैर यहूदियों का उद्धार आंशिक तौर पर मसीह की दूसरी आमद तक जगत के इतिहास के कालों में चलता रहेगा। केवल मसीह के दूसरे आगमन पर ही यहूदियों में से उद्धार पाने वालों की गिनती और अन्यजातियों में से विश्वास करने वालों की गिनती साथ साथ पूरी हो जाएगी।

इसके अलावा यहूदियों और गैर यहूदियों के लिए उद्धार पाने का अवसर भी यीशु मसीह के दूसरे आगमन के साथ समाप्त हो जाएगा। मसीह के दूसरे आगमन पर किसी को भी विश्वास करने का या उसे स्वीकार करने का अवसर नहीं प्राप्त होगा, क्योंकि उसके दूसरे आगमन पर दरवाजा बन्द हो जाएगा, और उसके बाद कोई भी जन परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएगा (मत्ती 25:10-13)।

मसीह के दूसरे आगमन पर प्राकृतिक इस्राएल राष्ट्र (यहूदी राष्ट्र) रूपान्तरित नहीं होगा, क्योंकि पुराने नियम में की गयी भविष्यवाणी (जकर्याह 12:10) मसीह के दूसरे आगमन पर पूरी नहीं होगी, वरन वह तो नये नियम के प्रकाशन के अनुसार (यूहन्ना 19:18,37) पहले ही यीशु मसीह के प्रथम आगमन पर पूरी हो चुकी है।

फिर भी, यीशु यहूदियों से कहते हैं कि उनके पास विश्वास में आने का उस तरीके को छोड़ और कोई तरीका नहीं है जिससे गैर यहूदी विश्वास में आते हैं। “अचम्भा न कर कि मैं ने तुझ से कहा, ‘तुझे नये सिरे से जन्म लेने की आवश्यकता है’। क्योंकि जो कोई विश्वास नहीं करता है वह पहले ही दोषी ठहर चुका है....जो कोई पुत्र को ग्रहण नहीं करता, वह कभी जीवन को देख नहीं पाएगा, क्योंकि वह परमेश्वर के क्रोध का सामना करेगा।” (यूहन्ना 3:7,18,36)!

11:26-27

प्रश्न 3. रोमियों 11: 26-27 में भविष्यवाणियों को कैसे देखा जाना चाहिए?

ध्यान दें।

(1) पुराने नियम में ये भविष्यवाणियाँ यीशु मसीह के प्रथम आगमन का उल्लेख करती हैं।

लिखित पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ जो रोमियों 11:26-27 में उद्धृत की गई हैं, पहली बार मसीह के आने पर इस्राएल में विश्वासियों के उद्धार का उल्लेख करती हैं। मसीहा-उद्धारकर्ता का कार्य नास्तिकता को याकूब से दूर करना होगा। रोमियों 11:26 में पौलुस पुराने नियम से एक विशिष्ट बाइबल वचन उद्धृत नहीं करता है, लेकिन कुछ पुराने नियम बाइबल के वचनों का एक सारांश उद्धरण बनाता है।

मसीहा-उद्धारकर्ता के सपने पहले आगमन के दौरान:

- सिय्योन से आया हुआ (यूनानी: इक सियोन) (जो यहूदा से है) (मीका 5:2; मत्ती 2:6)।
- सिय्योन में आना (यशायाह 59:20 से इब्रानियों का पाठ; तुलना करें. मत्ती 10:5-8)।
- सिय्योन (सिय्योन के लिए) के लिए आया और याकूब से नास्तिकता को दूर किया।
- उनके साथ एक वाचा बाँधो। “यह उनके साथ मेरी वाचा है” (यशायाह 59:21)।

(2) ये भविष्यवाणी यीशु के प्रथम आगमन के दौरान पहले ही पूरी हो चुकी थीं।

पुराने नियम के उद्धरणों में जो भविष्यवाणी की गई थी, वह अंत समय में पूरी नहीं होगी, क्योंकि यह मसीह के आने से पहले पूरी हो चुकी है। मसीहा-उद्धारकर्ता:

- बैतलहम में पैदा हुआ था और इसलिए सिय्योन (इस्त्राएल) से आया (मत्ती 2:6; यूहन्ना 4:22)।
- इस्त्राएल की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया था, लेकिन उन्होंने (स्वागत) उसका अभिवादन नहीं किया (मत्ती 15:24; यूहन्ना 1:11)।
- इस्त्राएल के लिए आया, “अपने लोगों को उनके पापों से बचाने के लिए” (मत्ती 1:21; 10:6; लूका 19:10; गलातियों 4:4-5), लेकिन बहुत से “पीछे हट गए और अब उसका अनुसरण नहीं करते” (यूहन्ना 6:66)।
- उसने इस्त्राएल के घराने और यहूदा के घर के साथ एक नई वाचा बांधी (यिर्मयाह 31:31-34; मत्ती 26:28; इब्रानियों 8:6-13), लेकिन इस्त्राएल का घर वाचा में नहीं रहा, “इसलिए वह उनसे दूर हो गया” (इब्रानियों 8:9)।

ये भविष्यवाणियाँ बताती हैं कि इस्त्राएल का उद्धार एक या दूसरे सांसारिक शत्रु से मुक्ति या उद्धार नहीं होगा (उदाहरण के लिए, यीशु के समय में रोमियों, या अंत समय में विरोधी या उसकी सेना) (प्रकाशितवाक्य 19:19)), लेकिन उनकी नास्तिकता और पापों से मुक्ति या उद्धार है! इन भविष्यवाणियों में पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने इस बारे में सोचा था कि यीशु मसीह अपने पहले आगमन पर क्या करेगा (1 पतरस 1:9-12) और न कि यीशु मसीह अपने दूसरे आगमन पर क्या करेगा!

अपने दूसरे आगमन पर यीशु मसीह “सिय्योन से धरती पर नहीं आएगा वरन स्वर्ग से आएगा” (यूनानी: एपी 'आउरनौ) (1थिस्सलुनीकियों 4:16; प्रकाशितवाक्य 19:11)। और उसके दूसरे आगमन पर नास्तिकता से मुक्ति और पापों से क्षमा संभव नहीं होगा! “पृथ्वी के सभी राष्ट्र शोक करेंगे” क्योंकि वे अब परिवर्तित नहीं हो पाएंगे (मत्ती 24:30,39-41,50-51; मत्ती 25:10-13, 30, 41-46; प्रकाशितवाक्य 6:12-17)।

पौलुस रोमियों के अपने पत्र में विषय से विचलित नहीं होते हैं, अर्थात्, “केवल विश्वास द्वारा न्यायसंगतता”। रोमियों अध्याय 9-11 में वह बताते हैं कि विश्वास द्वारा न्यायसंगतता ऐतिहासिक था:

- पुराने नियम की अवधि के दौरान यहूदियों को केवल विश्वास द्वारा उचित ठहराया गया था (रोमियों 4:1-8; 9:25 से 10:8; 10:16-18)।
- नए नियम की अवधि के दौरान (जिस अवधि में यीशु और पौलुस रहते थे) यहूदी केवल विश्वास के द्वारा उचित थे (मरकुस 1:14-15; यूहन्ना 3:16, 18, 36; 6:29,40; रोमियों 10:9-15)।
- बाद की सभी शताब्दियों तक, मसीह के दूसरे आगमन तक, यहूदी केवल विश्वास के द्वारा उचित होंगे (रोमियों 11:23,26-27)। यहूदियों के लिए भी कोई और रास्ता नहीं बचा है! “सुसमाचार सभी के उद्धार के लिए परमेश्वर की एक शक्ति है, जो विश्वास करता है (मत्ती 10:5-6; प्रेरितों 17:1-4) पहले यहूदियों के लिए, फिर अन्यजातियों के लिए” (रोमियों 1:16; मत्ती 28:19; प्रेरितों 13:46-47)।
- और मसीह के दूसरे आगमन (इस्त्राएल का प्राकृतिक राष्ट्र) पर यहूदी परिवर्तित नहीं होंगे और बचाये नहीं जायेंगे। नया नियम प्रकाशितवाक्य स्पष्ट रूप से सिखाता है कि जकर्याह 12:10 (520-518 ई.पू.) की यह भविष्यवाणी (“मैं दाऊद के घर और यरूशलेम के निवासियों पर अनुग्रह और दुःख की भावना से बाहर आऊंगा। वे करेंगे। जिन्होंने मुझे छेदा है, वे मुझे देखेंगे और उसके लिए शोक करेंगे...”) मसीह के दूसरे आगमन का उल्लेख नहीं करता है, लेकिन मसीह के पहले आगमन का: उसके क्रूस (यूहन्ना 19:37), लोगों के संकट और दुःख का (लूका 23:48-49; यूहन्ना 20:11 ; प्रेरितों 2:37), पिन्तेकुस्त पर पवित्र आत्मा की चौकी (तुलना करें. प्रेरितों 2:16-17) और मसीहियों की

प्रार्थना (प्रेरितों 4:23-31; 12:5,12)!

इसलिए सुसमाचार को अब यहूदियों के लिए भी घोषित किया जाना चाहिए, ताकि वे यीशु मसीह पर विश्वास कर सकें और बच सकें। “अब परमेश्वर के एहसान का समय है; अब मुक्ति का दिन है” (2कुरिन्थियों 6:2)। प्रेरितों ने यही किया: उन्होंने यहूदियों को सुसमाचार सुनाया और उन्हें पश्चाताप करने के लिए बुलाया (प्रेरितों 2:14,38; 3:12,19; 4:8-12; 5:14, 20, 28; 6:7; 8:4; आदि)। और आज मसीहियों को भी ऐसा करना चाहिए।

11:28

प्रश्न 4. यहूदियों को “शत्रु” और “प्रिय” कैसे माना जाना चाहिए?

ध्यान दें। इस्राएल (“इस्राएल की पूर्णता”) में चुनाव विश्वासियों की पूरी संख्या का गठन करने वाले लोग एक ओर “शत्रु” माने जाते हैं और दूसरी ओर “प्रिय” के रूप में। संदर्भ (रोमियों 11:30-31) से पता चलता है कि पौलुस “इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र” (जिसे कुछ लोग “परमेश्वर का प्रिय” मानते हैं) की बात नहीं कर रहे हैं। वह “इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के सभी लोगों के बारे में बोल रहा है जो सच्चे इस्राएल का गठन करता है”, अर्थात्, उन सभी यहूदियों के बारे में जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं (तुलना करें. रोमियों 9:6)। परमेश्वर ऐसे यहूदियों को “घृणा” करना जारी रखता है (जो कि नहीं है) (और गैर-यहूदियों) (रोमियों 9:13) जो गलत करते हैं, परमेश्वर को अस्वीकार और हिंसा को प्रेम करना जारी रखते हैं (व्यवस्था. 7:7-8; मलाकी 1; 2-3; रोमियों 9:13; तुलना करें भजन 5:6; 11:5)।

रोमियों 11:28 में “शत्रु” और “प्रिय” लोग एक ही समूह के लोग हैं। जैसा कि दुनिया के इतिहास में बार-बार होता है, इस समूह के लोग शुरू में मसीह के सुसमाचार के और मसीहियों के “शत्रु” हैं। लेकिन जब परमेश्वर ने गैर-यहूदियों पर दया करना शुरू किया, तो ये “दुश्मन” भी यीशु मसीह की ओर मुड़ गए और मसीह और मसीहियों के लिए “प्रिय” बन गए।

गैर-यहूदियों के लिए भी यही सच है। जब अन्यजाति अभी भी “दुश्मन” थे, उन्हें यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से परमेश्वर के साथ मिलाया गया था (रोमियों 5:9-11)। चुने हुए, बुलाए गए और न्यायप्रिय लोगों के रूप में, वे अब “प्रिय” बन गए हैं (रोमियों 8:30-39)। इसके अलावा प्रेरित पतरस ऐसे लोगों की बात करता है जो लोग कभी नहीं थे, लेकिन अब परमेश्वर के लोग हैं” (1पतरस 2:9-10)।

पूर्व “शत्रुओं” को पितृसत्ता के आधार पर “उनके रूपांतरण” के बाद “प्रिय” कहा जाता है, अर्थात्, क्योंकि परमेश्वर ने पितृसत्ता के अपने वादे को पूरा किया, वह पितृसत्ता के वंशजों (उत्पत्ति 22) पर विश्वास करने के लिए अपने वादे को भी पूरा करेगा: 17-18; गलातियों 3:29)। अपने रूपांतरण से पहले प्रेरित पौलुस के जीवन की “शत्रु” के रूप में करें (26:9-11) उसके रूपांतरण के बाद (26:19-23) के जीवन के साथ “प्रिय” के रूप में तुलना करें।

11:29

प्रश्न 5. इस कथन को: “परमेश्वर के उपहार और उसकी पकार अखण्डनीय हैं” कैसे समझा जा सकता है?

ध्यान दें। शब्द इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के लिए परमेश्वर के प्यार का उल्लेख शब्दों द्वारा नहीं कर सकते। यह कुछ लोगों के स्पष्टीकरण का उल्लेख नहीं कर सकता है जो कहते हैं कि शुरू में परमेश्वर ने सभी यहूदियों को बचाने के लिए सभी युगों

में सभी यहूदियों के दिलों की कठोरता को सहन किया (जबकि एक ही समय में उन्होंने कठोर गैर-यहूदियों को नाश करने की अनुमति दी थी)। यह स्पष्टीकरण यीशु के यहूदियों के लिए बयान के साथ एक संघर्ष है। “तुमको मेरे कहने पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए,” तुमको फिर से जन्म लेना चाहिए! जो कोई भी विश्वास नहीं करता है, वह पहले से ही तिरस्कृत है और तिरस्कार करता है (अपूर्ण वर्तमान काल)।... जो कोई भी पुत्र को अस्वीकार करता है, वह निश्चित रूप से जीवन को नहीं देखेगा, क्योंकि परमेश्वर का क्रोध उस पर निरंतर बना रहता है “(वर्तमान काल)। (यूहन्ना 3:7, 18, 36)।

बाइबल सिखाती है कि यहूदियों को नहीं, बल्कि अन्यजातियों को भी बचने का दूसरा मौका नहीं मिलेगा। बाइबल सिखाती है कि यीशु ने यहूदियों से कहा, “कई लोग पूर्व और पश्चिम से आएंगे, और स्वर्ग के राज्य में अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ दावत में उनके स्थान लेंगे। लेकिन जो राज्य के हैं (यहूदियों के वंशज) उनको अंधेरे में बाहर फेंक दिया जाएगा, जहां रोना और दांत काटना होगा। “(मत्ती 8:11-12)। “परमेश्वर का राज्य आपसे (जो कि यीशु मसीह को अस्वीकार करने वाले यहूदियों से) ले लिया जाएगा और ऐसे लोगों को दिया जाएगा जो इसका फल पैदा करेंगे” (अर्थात्, परमेश्वर के नए नियम के लोग जो यहूदियों से मिलकर बने हैं) गैर-यहूदी जो यीशु मसीह (मत्ती 21:42-44) को मानते हैं

(1) परमेश्वर की स्थिर बुलाहट

शब्द “अपरिवर्तनीय” (ग्रीक: ametamelétos) का अर्थ केवल यह नहीं है कि परमेश्वर का “उन लोगों के संबंध में कोई पछतावा नहीं है जिन्हें उन्होंने चुना है या बुलाया है, बल्कि यह भी कि परमेश्वर उनके चुनाव, बुलाहट, औचित्य या महिमा” को याद (“नहीं निकलेगा) नहीं करेगा, (रोमियों 8:29-30,33)!”

रोमियों के अध्याय 9 में कहा गया है: परमेश्वर के प्राकृतिक राष्ट्र के लिए दिए गए कुछ विशेषाधिकारों के संबंध में परमेश्वर का चुनाव (रोमियों 9:4-5) के चुनाव के लिए समान नहीं है (2थिस्सलुनीकियों 2:13-14; 2तीमुथियुस 2:9-10)! परमेश्वर का आह्वान हमेशा प्रभावी है, क्योंकि परमेश्वर का आह्वान उनके चुनाव पर आधारित है और हमेशा उनके द्वारा चुने गए लोगों के औचित्य और गौरव की ओर जाता है (रोमियों 8:29-30; 9:11)!

परमेश्वर का आह्वान न केवल मसीहियों द्वारा सुसमाचार के बाहरी उद्घोषणा का उल्लेख करता है बल्कि आंतरिक भी, लोगों के दिलों और जीवन में पवित्र आत्मा की बुलाहट हमेशा प्रभावी रहती है। यह मसीहियों द्वारा सुसमाचार की घोषणा के माध्यम से होता है (तुलना करें रोमियों 1:5-7) और हमेशा प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करने की ओर जाता है (2थिस्सलुनीकियों 2:13-14)। इस प्रकार परमेश्वर का आह्वान हमेशा “अपरिवर्तनीय” होता है - इसे कभी भी रद्द नहीं किया जाएगा (वापस लेना, हटाना)। क्योंकि पुराने नियम और नए नियम दोनों यहूदियों के एक हिस्से के बारे में बोलते हैं जो अविश्वासी और अवज्ञाकारी बने रहते हैं, परमेश्वर का आह्वान केवल इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के भीतर यहूदियों के चुने हुए (चुने हुए) हिस्से को उनके बुलावे का उल्लेख कर सकता है।

परमेश्वर चुने हुए यहूदी विश्वासियों और चुने हुए गैर-यहूदी विश्वासियों से अपनी बुलाहट को कभी वापस नहीं लेता है। यीशु मसीह ने वादा किया था, “मैं उन्हें (अर्थात् मेरी भेड़ें) अनंत जीवन देता हूँ, और वे कभी नष्ट नहीं होंगे; कोई भी उन्हें मेरे हाथ से नहीं छीन सकता। मेरे पिता ने मुझे (जो भेड़ है) दिया है, वे सभी (अन्य प्राणियों) की तुलना में अधिक उत्कृष्ट हैं। और कोई भी मेरे पिता के हाथ से उन्हें (झुंड) नहीं छीन सकता (यूहन्ना 10:28 और वचन का सही अनुवाद 29)। यह शाश्वत जीवन का चौगुना आश्वासन है!

⁹ यूनानी लेक्सिकन ऑफ़ बौएर, अरंड्ट और गिंगरिच।

(2) परमेश्वर का अटल उपहार

इसी तरह परमेश्वर के उपहार “अटल” हैं परमेश्वर उन्हें कभी दूर नहीं ले जाते हैं। ये उपहार हालाँकि इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के विशेष विशेषाधिकारों का उल्लेख नहीं कर सकते हैं (रोमियों 9: 4-5), क्योंकि ये उपहार यीशु मसीह के पहले आगमन पर पूर्णता में चले गए हैं। मसीह के पहले आगमन के बाद, “अन्यजाति विश्वासी यहूदी विश्वासियों के साथ एक साथ वारिस बन गए हैं (पुराने नियम के यहूदी के साथ वादे को साझा करेंगे) (इफिसियों 2:11-22; 3:2-6; तुलना करें. 2 कुरिन्थियों 1:20)।

“वरदान” को परमेश्वर के विशेष वरदान के रूप में देखें:

- पवित्र आत्मा (प्रेरितों. 2:38; 15:7-11)
- विश्वास (प्रेरितों 13:48; फिलिप्पियों 1:29; 2पतरस 1:1)
- आशा, प्रेम (रोमियों 5:5)
- शांति जो सभी समझ से गुजरती है (गलातियों 5:22; फिलिप्पियों 4:6-7)
- अनन्त जीवन (यूहन्ना 10:28), आदि।

यह सभी वरदान, जो पवित्र आत्मा ने अविश्वासियों और अनाज्ञाकारी लोगों को नहीं, बल्कि चुने हुए विश्वासियों को प्रदान किए हैं, (प्रेरितों 5:32), लेकिन केवल उनके लिए चुने हुए विश्वासियों को (इफिसियों 1:3)।

रोमियों 11:30-31 में पौलुस ने बताया कि कैसे ये अटल उपहार और बुलाहट पूरे इतिहास में चुने हुए अन्यजातियों और चुने हुए यहूदियों से बदल जाते हैं।

11:32

प्रश्न 6. इस कथन को “परमेश्वर ने उन सभी को कैसे अनाज्ञा पर बाध्य किया है ताकि उन पर दया कर सके” कैसे समझा जा सकता है?

ध्यान दें।

रोमियों 11:32 कहते हैं, “क्योंकि परमेश्वर ने सब को आज्ञा उल्लंघन का बन्दी बना कर रखा था, इसलिए वह सब पर दया करे। क्योंकि अनाज्ञा के कारण परमेश्वर ने हमेशा हमेशा के लिए (अनोरिस्ट) कैद (एक साथ बंद / बंद) (ग्रीक: संकलिओ) (ग्रीक: टॉस पॉण्टस) किया , ताकि वह उन सभी के लिए दया कर सके।” उसने उन सभी को एक ऐसी स्थिति में डाल दिया जहाँ वे (अपने पापी स्वभाव से) अनाज्ञाकारी होने के लिए मजबूर थे “या” उसने उन सभी को अवज्ञा के लिए दिया (तुलना करें) रोमियों 1: 24,26,28)।

वचन “के लिए” शब्द के साथ शुरू होता है: और और पद्यांश को संक्षेपित करता है रोमियों 11: 25-32। यह “सभी लोगों” के साथ “अन्यजातियों की पूर्णता” (रोमियों 11:25) और “सभी इसराइल” (रोमियों 11:26) या “इसराइल की परिपूर्णता” (रोमियों 11:12) से संबंधित है।

जैसे रोमियों 5:18 में “सभी” (ग्रीक: पास) शब्द को उसके संदर्भ के संदर्भ में समझाया जाना चाहिए (रोमियों 5:17), इसलिए रोमियों 11:32 में “सभी” शब्द को उसके संदर्भ में समझाया जाना चाहिए संदर्भ (रोम 11:25-32)।

पौलुस “सभी लोगों को प्राकृतिक अन्यजातियों के राष्ट्रों” के बारे में नहीं बताता है और यह भी कि “इसराइल के प्राकृतिक यहूदी राष्ट्र के सभी लोग” के बारे में नहीं। वह “सार्वभौमिक मोक्ष” की बात नहीं करता है जो कहता है कि सभी लोग जो कभी रहते थे, अंततः बच जाएंगे। वह “सभी चुने हुए विश्वासियों को अन्यजातियों के देशों (“अन्यजातियों की पूर्णता”) और “सभी यहूदियों के बीच से चुने हुए विश्वासियों” (“सभी इस्राएल”) के बारे में बात करता है। ये सभी लोग अपनी प्राकृतिक ज़िद्दी अवस्था में थे:

- अनाज्ञाकारिता के कारावास में बंद (रोमियों 11:32; इफिसियों 2:2)
- पापियों (रोमियों 3:23)
- स्वभाव से कोई धमी नहीं (रोमियों 3:10)
- अपराधी (रोमियों 5:18)।

यहाँ शब्द “सभी” सार्वभौमिक है!

लेकिन सुसमाचार की घोषणा के माध्यम से परमेश्वर की धार्मिकता को दिया गया है:

- सभी यहूदी और गैर-यहूदी जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं (रोमियों 1:16-17)
- सभी लोगों को परमेश्वर का अनुग्रह और धार्मिकता का प्रचुर प्रावधान प्राप्त हुआ है (रोमियों 3:24; 5:17-18)

यहां “सभी” शब्द चुनावी विश्वासियों तक सीमित है, जो विश्वास के माध्यम से यीशु मसीह के लिए बंधे हुए हैं!

पौलुस के शब्दों पर ध्यान दें: “सभी जो इस्राएल से उतारे गए हैं वे इस्राएल नहीं हैं” (रोमियों 9:6)।

- पहला “इस्राएल” सार्वभौमिक है: “शरीर के अनुसार इस्राएल” (ग्रीक: इस्राएल काटा सर्क्स), प्राकृतिक इस्राएल, यहूदी राष्ट्र (1 कुरिन्थियों 10:18)।
- लेकिन दूसरा इस्राएल “परमेश्वर का इस्राएल” (यूनानी: इस्राएल तो थेओ) तक सीमित है, जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, जो मसीह में एक नई रचना है (गलातियों 6:14-16)।

11:33-36

प्रश्न 7. पौलुस अपने स्तुति गान में क्या कहता है।

ध्यान दें।

रोमियों 11:33-36 एक स्तुतिगान है। परमेश्वर के उद्धार की योजना के बारे में विचार करते हुए, पौलुस के मन से परमेश्वर के अथाह बुद्धि और ज्ञान के स्तुति और प्रशंसा से भर जाता है।

(1) पौलुस विशेषतौर पर रोमियों 11:25-26 और रोमियों 11:30-32 के बारे में विचार करता है।

ये पद “विश्वास करने वाले यहूदियों और विश्वास करने वाले गैर यहूदियों अर्थात अन्यजातियों के बीच पारस्परिक निर्भरता को दर्शाता है। ये पद यह भी दर्शाते हैं कि परमेश्वर यहूदियों और अन्यजातियों की संयुक्त “परिपूर्णता” के द्वारा अपनी महिमा भी करेंगे।

(2) पौलुस इस बात को भी स्वीकार करते हैं कि बाइबल का परमेश्वर उद्धार का स्रोत है।

परमेश्वर की ओर से। परमेश्वर ही उद्धार की योजना के सृजनहार हैं। उसी ने यीशु मसीह पर विश्वास करने वालों को चुन लिया है ताकि वे स्वयं उससे जुड़ सकें (रोमियों 8:29-30)।

परमेश्वर के द्वारा। परमेश्वर ही उद्धार की योजना का अनुप्रयोग करने और उसे पूरा करने वाले हैं (रचयिता और पूर्ण करने वाले) **परमेश्वर के लिए।** उद्धार की योजना की मंजिल स्वयं परमेश्वर हैं। विश्वासियों को परमेश्वर की महिमा के लिए सृजा गया और उद्धार दिया गया है। (तुलना करें यशायाह 43:7; कुलुस्सियों 1:16)।

“आमीन” कहने के द्वारा पौलुस परमेश्वर की योजना के प्रति अपनी व्यक्तिगत, औपचारिक और उत्तेजनापूर्ण स्वीकृति प्रदान करता है।

चरण 4. लागू करना।

अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 11:1-36 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 11:1-36 में संभावित अनुप्रयोगों के उद्धारण।

- 11:1. इस बात को समझें कि परमेश्वर ने पुराने नियम के उद्धार की योजना को रद्द नहीं किया है। वह इस्राएल राष्ट्र में से विश्वास करने वाले नागरिकों को उद्धार करता है। उसके बाद परमेश्वर ने गैर यहूदी राष्ट्रों में से भी विश्वासियों को लेकर उनके साथ जोड़ा है। इस तरह से परमेश्वर ने सारे संसार के हर एक राष्ट्र में से विश्वासियों को लेकर पुराने नियम के चुने हुए लोगों में जोड़ दिया।
- 11:4. भरोसा रखें कि आपके देश में प्रचण्ड सताव की अवस्था में भी, परमेश्वर के ऐसे लोग हैं, जो बाइबल में प्रगट किये गये परमेश्वर को छोड़ और किसी के सामने अपने घुटने नहीं टेकेगें।
- 11:5-6. परमेश्वर के अनुग्रह ने लोगों द्वारा व्यवस्था का पालन करने या धार्मिक व भले कामों को करने के द्वारा अपने आपको बचाने के साथ प्रयासों को निरर्थक कर दिया।
- 11:11. याद रखें कि जब आपके देश में कोई विशेष वर्ग का समूह बाइबल में प्रगट किये गये परमेश्वर से कुछ समय के लिए दूर हो जाता है, तो परमेश्वर उसी समय व परिस्थिति को किसी दूसरे समूह को उद्धार देने के लिए इस्तेमाल करते हैं।
- 11:14. इसलिए यहूदियों, मुसलमानों और मसीहियों तथा अन्य धर्म समूहों से नफ़रत करने की बजाय मसीह के अनुयायियों को सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए और सुसमाचार को अपने जीवन में इस तरह से लागू करना चाहिए जिससे कि शत्रुओं को उनके रूपान्तरित और आकर्षक जीवन को देखकर जलन हो ओर वे यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनने और पढ़ने के लिए प्रेरित हो जाएं।
- 11:18. अन्यजातियों में से आये विश्वासियों को कभी भी उन यहूदियों को लेकर खुश नहीं होना चाहिए जिनका सम्बन्ध अविश्वास के कारण परमेश्वर से टूट गया है। उन्हें सर्वदा यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ने अपनी वाचा का प्रारम्भ अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ किया था।

- 11:20-23. केवल एक ही पैमाना है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के पवित्र लोगों का भाग बन सकते हैं अर्थात् यीशु मसीह पर विश्वास करना। और परमेश्वर से रिश्ता टूटने का भी केवल एकमात्र आधार यीशु मसीह पर विश्वास न करना ही है।
- 11:24. याद रखें कि प्रायः “पुस्तक के लोग” (अर्थात्, यहूदी, नामधारी मसीही और मुस्लिम) यीशु मसीह पर विश्वास करने के नज़दीक हैं और वे तैयारी के साथ यीशु मसीह की ओर फिर जाएंगे।
- 11:25. मसीहियों को परमेश्वर के इस भेद को जानना चाहिए कि उसने अन्यजातियों में सुसमाचार सुनाने के लिए यहूदियों का इस्तेमाल किया और वह यहूदियों तक सुसमाचार पहुंचाने के लिए अन्यजातियों का इस्तेमाल करता है। अन्त में, संसार भर से अनगिनत लोग यीशु मसीह के पीछे हो लेंगे।
- 11:28. याद रखें कि जो लोग आज आपके दुश्मन हैं वे आने वाले समय में आपके प्रिय भाई व बहन बन सकते हैं।
- 11:30. याद रखें कि यदि परमेश्वर ने आप को यीशु मसीह में उद्धार के निमित्त बुलाया है तो वह अपनी बुलाहट से पीछे नहीं हटेगा। जब परमेश्वर ने आपको विश्वास, प्रेम और आशा प्रदान की है तो, वह उन वरदानों को वापस नहीं लेगा।
- 11:31-36. याद रखें कि जितने भी लोगों ने आज उद्धार पाया है वे कभी अनाज्ञाकारी और बुरी तरह से भटके हुए थे। इसलिए घमण्ड न करें, वरन परमेश्वर का धन्यवाद और उसकी बढ़ाई करें कि वह हमारे उद्धार को बनाने वाला और उसे पूरा करने वाला है।

2. रोमियों 11:1-36 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं दृढ़ता के साथ विश्वास में होकर चलते रहना चाहता हूं। तब मुझे इस बात का बिल्कुल भी डर नहीं होगा कि परमेश्वर मुझे अपने लोगों में से निकाल देंगे।

मैं बार बार प्रभु का धन्यवाद देता हूं कि वह ही मेरे उद्धार की योजना का स्रोत और उसे पूरा करने वाला है।

चरण 5. प्रार्थना।

प्रतिउत्तर

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 11:1-36 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5

प्रार्थना (8 मिनट)

[मध्यस्थता]
दूसरों के लिये प्रार्थना

दो या तीन समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिये और संसार भर के लोगों के लिये प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6

तैयारी (2 मिनट)

[निर्धारित कार्य]
अगले अध्याय के लिये

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को इस तैयारी को लिखित रूप में घर ले जाने दें या उन्हें इसकी नकल करने दें)।

1. समर्पण। चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 11:1-36 में से प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यिर्मयाह 1,2,4,10** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ
4. स्मरण करना। (3) **परमेश्वर की सामर्थ्य, यशायाह 41:10।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। लूका 17:7-10 में पाए जाने वाले “**अयोग्य दास**” के दृष्टान्त की तैयारी करें। दृष्टान्तों की व्याख्या करने के लिये उन छः निर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)
7. परमेश्वर के राज्य के विषय पर प्रचार करने हेतु अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। अपने शांत समय के नोट्स, अपने स्मरणीय नोट्स, अपने बाइबल के अध्ययन के नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना
---	-----------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना करें।** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपे।

2	साझा करें (20 मिनट) [शान्त समय] यिर्मयाह 1,2,4 और 10
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें (या** अपने नोट्स से **पढ़ें)** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यिर्मयाह 1,2,4 और 10) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट) [परमेश्वर के संसाधन] (3) यशायाह 41:10
---	--

दो-दो करके पुनरावलोकन करें।

(3) परमेश्वर की सामर्थ्य। यशायाह 41:10. मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ; मैं तुझे दृढ़ करूँगा और तेरी सहायता करूँगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्भाले रहूँगा।

4	शिक्षा देना (85 मिनट) [यीशु के दृष्टान्त] एक अयोग्य दास
---	--

“एक निकम्मे दास का दृष्टान्त” लूका अध्याय 17:7-10 में,

परमेश्वर के राज्य में सेवा के बारे में दृष्टान्त हैं

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों को उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेंगे (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें लूका 17:7-10.

1. दृष्टान्त की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आत्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

स्वामी और दास। यह कहानी यीशु के दिनों में सेवकों या दासों और उनके **स्वामियों** के बीच के विशिष्ट संबंधों का वर्णन करती है। यह कहानी एक छोटे से खेत के मालिक की है। इस किसान के पास केवल एक दास या सेवक है। इस दास या सेवक का चित्रण इस तरह से किया जाता है कि वो वही करता है जैसा उसे करने का आदेश दिया जाता है। उसका स्वामी उसके द्वारा किये गए कामों के लिए न तो उसे श्रेय देता है और ना उसका धन्यवाद करता है।

यीशु ने अपनी कहानी को बहुत से प्रश्नों के रूप में सुनाया, ताकि वह अपने श्रोताओं को सोचने के लिए मजबूर कर सकें। पहला सवाल है, “तुम में से ऐसा कौन है, यदि जिसके पास दास हो, ... वह उसका इंतजार करे?” अपेक्षित उत्तर “नहीं, वह उसका इंतजार नहीं करेगा।”

दूसरा सवाल है, “क्या वह उसे यह और वह काम करने की आज्ञा न देगा?” अपेक्षित उत्तर “हाँ, वह उसे है यह और वह काम करने की आज्ञा देगा।”

तीसरा सवाल है, “क्या वह उस दास का अहसान मानेगा, क्योंकि उन्होंने वे ही काम किये थे जिसकी आज्ञा दी गयी थी?” अपेक्षित उत्तर “नहीं है, वह उसका अहसान नहीं मानेगा।”

2. दृष्टान्त के तत्काल संदर्भ की जांच करें और उसके तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टान्त की “कहानी” का संदर्भ “स्थान” और “दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग” से मिलकर बना हो सकता है। दृष्टान्त का पृष्ठभूमि दृष्टान्त के उपलक्ष्य, या दृष्टान्त की परिस्थिति का वर्णन कर सकती है। पृष्ठभूमिल आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी से पहले पायी जाती है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी के बाद पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त का स्थान, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त का स्थान लूका 17:1-6, 11-19 में निहित है।

इसमें तीन भाग होते हैं: एक गंभीर चेतावनी, एक महान प्रोत्साहन और एक विपरीत उदाहरण। यीशु अपने शिष्यों को उपदेश दे रहे थे लेकिन वहाँ पर अन्य लोग भी थे जो उनके उपदेशों को सुन रहे थे (उदाहरणार्थ, फरीसी, लूका 16:1,14; 17:20)। ये गंभीर चेतावनी न केवल मसीहियों को, बल्कि गैर-मसीहियों को भी दी गयी है।

गंभीर चेतावनी किसी अन्य व्यक्ति को पाप करने के लिए उकसाने के बारे में है (लूका 17:1-4)। लूका 16 अध्याय में, यीशु ने लोगों को नरक में जाने के बारे में चेतावनी दी थी। नरक एक भयानक जगह है (लूका 16:23-24), और जब एक बार कोई व्यक्ति वहाँ चला जाता है, तो वहाँ से बचना असंभव है (लूका 16:26-31)! इसलिए, लोगों को अपने बातों और कार्यों को लेकर सतर्क होना चाहिए, ऐसा न हो कि अन्य लोग भटक जाएँ और हमेशा के लिए नाश हो जाएँ (लूका 17:1)। प्रलोभन (लालच) आने के लिए बाध्य हैं, क्योंकि फैलना पाप के स्वभाव में है। लेकिन जानबूझकर प्रलोभन का कारण होना एक

भयानक बात है! अगर कोई व्यक्ति मसीह छोटे से छोटे शिष्य द्वारा पाप कराने का कारण बनता है, अर्थात् वह उसके मार्ग में जानबूझकर किसी ऐसे जाल को डालता है जो उसे पाप करने के लिए उकसाए तो यह एक बहुत ही भयानक बात है। यीशु उन सभी लोगों को एक भविष्यसूचक श्राप (“हाय”) देते हैं जो दूसरों को जानबूझकर पाप करने के लिए उकसाते हैं और अपनी बुराई से पश्चाताप नहीं करते हैं। विचार करें कि यीशु ने मत्ती 13:41 में उन लोगों के बारे में क्या कहा जो पाप और बुराई करते हैं। दूसरों को पाप करने के लिए जानबूझकर उकसाते वाले इस पाप को बहुत गंभीर माना जाता है, क्योंकि शैतान द्वारा जानबूझकर किए गए प्रलोभन (लालच) के माध्यम से पाप ने मानव संसार में प्रवेश किया (उत्पत्ति 3:1-6)। और इन प्रलोभनों (लालच) के माध्यम से है कि मानव संसार में पाप का फैलना जारी है (1तीमुथियुस 6:9-10)। न तो परमेश्वर का कलाम और न ही इतिहास के तथ्य किसी को लुभाने (बहकाने, लुभाने) के द्वारा उससे भयानक पाप कराने की कोई छूट नहीं देते हैं (लूका 22:22; प्रेरितों 2:23)।

इसके अलावा, मसीहियों को अपनी बातों और कार्यों को लेकर सतर्क होना चाहिए, ऐसा न हो कि उनकी बुरी भाषा से प्रगट हो की वे भी इस संसार के लोगों के सामान हैं जो परमेश्वर के बच्चों को पाप करने के लिए प्रेरित करते हैं (मत्ती 18:7)। कोई भी व्यक्ति, जो यह महसूस करता है कि जो कुछ भी कहता है या करता है, उस से वह दुसरो को पाप के लिए उकसा रहा है, तो उसे इस बुराई को मिटाने के लिए सख्त उपाय करने चाहिए (मत्ती 18:6,8-9)। हालाँकि, पाप के प्रति अभिलाषाओं को मिटाना असंभव है, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से स्वयं को ऐसे लोगों के समूह का भाग होने से रोकना संभव है जो दूसरों को जानबूझकर पाप करने के लिए उकसाते हैं (भजन संहिता 1:1; 1कुरिन्थियों 10:13)।

अतः, एक मसीही को लगातार अपने जीवन पर नजर रखनी चाहिए। उसे सतर्क होना चाहिए कि वह जानबूझकर किसी अन्य व्यक्ति को पाप करने के लिए न उकसाए (लूका 17:1-3)। उसका जीवन को मसीह पर निर्भरता में जीना चाहिए (यूहन्ना 15:5), उसे अक्सर पवित्र आत्मा से उसके जीवन में पाये जाने वाले किसी भी पाप के लिए कायल करने के लिए कहना चाहिए जिसके लिए पश्चाताप करने की आवश्यकता हो (यूहन्ना 16:8) और जब कोई अन्य जन उसके जीवन में कुछ गलत बातों को देखकर उन्हें बताएं तो वह अपने आप को विनम्र करे। मसीहियों को एक दूसरे के जीवन पर भी ध्यान देना चाहिए। यदि कोई मसीही पाप करता है, तो उसे फटकारना चाहिए (मत्ती 18:15-17)। अगर वह पछताता है, तो उसे माफ कर दिया जाना चाहिए (मत्ती 17:3-4)। जिस प्रकार किसी के लिए जानबूझकर किसी दूसरे व्यक्ति को पाप में फंसाना गलत है, उसी प्रकार किसी व्यक्ति को उसके पाप का पश्चाताप करने पर क्षमा न करना भी गलत है। पाप को पछताने और पश्चाताप करने वाले पापी को क्षमा करने की यह प्रक्रिया कभी भी समाप्त नहीं होनी चाहिए (लूका 17:4)। बस एक दूसरे पर दोष लगाना व निंदा करना मना है (मत्ती 7:1-2), लेकिन इसके विपरीत, इसका आदेश है की आवश्यक होने पर एक दूसरे को फटकारें (लूका 17:3; 1कुरिन्थियों 5:9-13)। जब पापी अपने पाप का पश्चाताप करके विजय प्राप्त करता है, तो जिस व्यक्ति के साथ अन्याय हुआ है, उसे क्षमा करके और उसके प्रति दयालु बनकर विजय प्राप्त करनी चाहिए (लूका 17:3-4; याकूब 2:12-13)।

परमेश्वर के कार्यों को पूरा करने वाले विश्वास को बहुत सराहा गया है (लूका 17:5-6)। दूसरों को पाप कराने के लिये उकसाने से दूर रहने और हमेशा क्षमा करने के लिए तैयार रहने के लिए, परमेश्वर के साहस, शक्ति और प्रेम की आवश्यकता होती है! और यह परमेश्वर के साहस, शक्ति और प्रेम को प्राप्त करने के लिए विश्वास की आवश्यकता है! **यह विश्वास करने के लिए कि उन्हें ऐसा साहस, शक्ति और प्रेम उनकी प्रार्थनाओं के जवाब में मिल जाएगा, उन्हें यीशु के चेलों से अधिक विश्वास की आवश्यकता होगी (लूका 17: 5) ।** लेकिन यीशु ने उन्हें और हमें निराश न होने के लिए प्रोत्साहित किया।

विश्वास, चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, अभ्यास करने पर बढ़ता है ! अगर हम परमेश्वर के साथ भरोसेमंद रिश्ते में कायम रहते हैं तो परमेश्वर या मसीह द्वारा दिया कोई भी लक्ष्य हासिल करना हमारे नामुमकिन नहीं होगा (लूका 17: 6)। हमें विश्वास करना चाहिए कि जब परमेश्वर हमें आज्ञा देते हैं , वह हमें साहस, शक्ति और प्रेम भी देते हैं ताकि हम परमेश्वर की आज्ञाओं को पूरा करने में सक्षम हों। आवश्यक हमारे विश्वास की मात्रा नहीं है, बल्कि यह है कि हमारा मसीह के साथ ऐसा विश्वास पर आधारित रिश्ता है। विश्वास, चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, अभ्यास करने पर बढ़ता है !

वर्तमान संदर्भ में, मसीह हमें निम्नलिखित कार्य सौंपता है: अर्थात् दूसरों को पाप कराने के लिये उकसाने से दूर रहना और हमारे विरुद्ध पाप करने वाले लोगों को हमेशा क्षमा करना। यद्यपि ये कार्य अत्यंत कठिन हैं, परमेश्वर के साहस, शक्ति और प्रेम से इन्हें पूरा किया जा सकता है। हमें यही विश्वास करना चाहिए! लूका अध्याय 17:11-19 में कोढ़ी ने मसीह द्वारा उसे दिए गए कार्य के प्रति विश्वास से प्रतिक्रिया दी मसीह ने उसे रास्ते में ही चंगा कर दिया। मसीह में उसका विश्वास इतना मजबूत था कि उन्होंने चंगाई का कोई भी प्रमाण देखने से पहले ही उस पर काम करना प्रारंभ कर दिया (तुलना करें। लूका 7:1-10)।

इसके विपरीत उदाहरण सामरी कोढ़ी के रवैये के बारे में है। पहला मुद्दा यह है कि शिष्यों को चेतावनी दी गयी है कि वे इस बात के लिए जिम्मेदार हैं कि उनकी सेवा के कारण अन्य लोग पाप में ना पड़ें। दूसरा मुद्दा यह है कि शिष्यों को प्रोत्साहित किया जाता है कि उनका विश्वास उन्हें हर उस कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरित करेगा जो परमेश्वर उन्हें सौंपता है। लेकिन तीसरा मुद्दा एक सवाल बना हुआ है, “किस भावना के साथ शिष्य बाहर जाएंगे और अपने विभिन्न कार्यों में परमेश्वर की सेवा करेंगे?” उस प्रश्न का उत्तर लूका 17:7-10 में अयोग्य सेवक के दृष्टांत में दिया गया है और इसके विपरीत उदाहरण लूका 17:11-19 में दिए दृष्टान्त में दिया गया है जो उसके बाद आता है। लूका वर्णन करता है कि दस कोढ़ी, जिन्होंने वो किया जो यीशु ने उन्हें करने के लिए कहा था, वे चंगे हो गए, लेकिन उनमें से केवल एक ही प्रभु को धन्यवाद देने के लिए वापस आया। यह संभव है कि यह घटना उस विपरीत आत्मा का वर्णन करती है जिसका वर्णन अयोग्य सेवक के दृष्टांत में किया गया है।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 17:7- 9 में निहित है।

(3) दृष्टांत की व्याख्या या अनुप्रयोग लूका 17:10 में निहित है।

यीशु ने कहा, “इसी रीति से तुम भी जब उन सब कामों को कर चुको जिसकी आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, “हम निकम्मे दास हैं; जो हमें करना चाहिए था हमने केवल वही किया है।” स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग स्वामी के बारे में नहीं है, लेकिन दास के बारे में है। दृष्टांत की कहानी में दास ने वही किया जो उसे करने के लिए कहा गया था। और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में, जब शिष्यों ने सब कुछ किया है जो उन्हें करने के लिए कहा गया था, तो उन्हें खुद से कहना चाहिए कि वे अयोग्य सेवक हैं जिन्होंने अपना कर्तव्य निभाया है।

स्पष्टीकरण में मुख्य शब्द हैं “अयोग्य दास होना” (ग्रीक: डौलोई एक्ट्रियो) और “अपना कर्तव्य करना”। संदर्भ में अधिक जानकारी की कमी के कारण, इस दृष्टान्त के दो संभावित स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग हैं। दोनों स्पष्टीकरण (या अनुप्रयोग) उस दृष्टिकोण या भावना से संबंधित हैं जिसके साथ दास काम करता है।

पहली व्याख्या एक दास के दृष्टिकोण और भावना के साथ काम करने पर ज़ोर देती है। दृष्टान्त की कहानी में, दास केवल वही करता है जो उसे करने के लिए कहा जाता है। हालाँकि उसकी आज्ञाकारिता में कुछ भी गलत नहीं है, लेकिन सेवा करने के उसके रवैये में कुछ गलत है! वह केवल तब काम करता है जब उसे ऐसा करने के लिए कहा जाता है। दास को जारी

आदेशों का अर्थ यह हो सकता है कि दास नए आदेशों की प्रतीक्षा कर रहा था। एक दास की आत्मा ने उसे अपने कब्जे में ले लिया था, अर्थात् वह केवल अपना कर्तव्य पूरा करता था, कुछ कम नहीं और निश्चित रूप से अधिक भी नहीं। अपने कार्य को पूरा करने के बाद, वह तब तक प्रतीक्षा करता है जब तक कि उसका स्वामी उसे एक नया कार्य नहीं देता। खुद से बाहर, वह सेवा करने के लिए कोई पहल नहीं करता है। वह एक ठंडा गणना करने वाला दास है, जो केवल न्यूनतम या आदेश के पत्र के अनुसार करने के लिए निश्चयी है। उसका हृदय उसकी सेवा में नहीं है। एक दासत्व की भावना के साथ वह अपने कर्तव्यों का पालन करता है। संपूर्ण सेवा की भावना नहीं है, कोई परिश्रम नहीं है, कोई कृतज्ञता नहीं है, और उनकी सेवा में कोई खुशी नहीं है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि स्वामी उसको वह करने के लिए धन्यवाद नहीं करता है जो उसे करने के लिए कहा जाता है!

इस दृष्टांत का अनुप्रयोग तब यह होगा कि यदि मसीही लोग इस तरह भावनाहीन सेवक की तरह सेवा करते हैं, केवल वही करते हैं जो उन्हें करने के लिए कहा जाता है और इससे अधिक नहीं, तो ऐसे मसीहियों को खुद से कहना चाहिए कि वे किसी भी धन्यवाद के योग्य नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने अपने कर्तव्य से ज्यादा कुछ भी नहीं किया है। उन्हें अपनी सेवा को अपने स्वामी से किसी भी प्रशंसा, प्रशंसा या पुरस्कार प्राप्त करने के लिए अयोग्य रूप में मानना चाहिए, क्योंकि उन्होंने उनसे ज्यादा कुछ नहीं किया है जो उनसे अपेक्षित था।

जब मसीही जन परमेश्वर के राज्य में सेवा करते हैं, तो उन्हें एक दास की इस भावना या रवैये को छोड़ देना चाहिए। उनकी सेवा पूरे दिल से, मेहनत के साथ और साधारण से ऊपर होनी चाहिए जैसे यीशु मत्ती अध्याय 5:20 में कहते हैं, “कि यदि आपकी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से (ग्रीक: परिसस प्रतिस्थापन पलिओन) बढ़कर न हो, तो आप स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे।” (तुलना करें मत्ती 5:47-48)।

इस प्रकार लूका चंगाई प्राप्त करने वाले सामरी कोढ़ी की आत्मा के साथ दूसरे दृष्टांत में अयोग्य सेवक की भावना के साथ तुलना करता है। अयोग्य सेवक ने केवल अपना कर्तव्य किया (लूका 17:7-10), जबकि सामरी ने अपने कर्तव्य से अधिक किया (लूका 17:11-19)। हालाँकि यीशु ने दस कोढ़ियों को चंगा किया था, लेकिन केवल सामरी अपने उपचार के लिए परमेश्वर का धन्यवाद और प्रशंसा करने के लिए लौट आया। सभी दस कोढ़ियों ने अपना कर्तव्य निभाया, अर्थात्, उन्होंने वही किया जो यीशु ने उन्हें करने का आदेश दिया था। लेकिन उनमें से केवल एक ने यीशु से जो करने का आदेश दिया था, उससे अधिक किया था। वह स्वतंत्र रूप से परमेश्वर का धन्यवाद और प्रशंसा करने के लिए वापस आया था! इस दृष्टांत में, यीशु अपनी सेवा में फरीसियों के व्यवस्था के रवैये पर हमला करते हैं। मसीहियों को परमेश्वर की सेवा पूरी निष्ठा और लगन से करनी चाहिए, अपने कर्तव्य से ज्यादा।

दूसरी व्याख्या विनम्रता की भावना से सेवा करने पर जोर देती है। दृष्टान्त की कहानी में, दास वही करता है जो उसे बताया जाता है। हालाँकि उसकी आज्ञाकारिता में कुछ भी गलत नहीं था, गलती उसके सेवा करने के रवैये में थी! कहानी के सवालियों का मतलब यह हो सकता है कि दास को अपनी सेवा के लिए किसी प्रकार के ऋण या पुरस्कार की उम्मीद थी। घमंड की आत्मा और एक अतिरंजित आत्मसम्मान ने उसे अपने कब्जे में ले लिया था, अर्थात्, वह अपनी सेवा के लिए अपने स्वामी से कुछ उम्मीद करता है। वह बहस करता है कि उसका स्वामी उसे दिन भर कड़ी मेहनत करने का श्रेय दे सकता है और वह समझ सकता है कि दिन के अंत में उसे भी कुछ आराम और विश्राम की भी आवश्यकता होती है। या उसका स्वामी उसकी सेवा के लिए उसे धन्यवाद दे सकता था। यह दास सोच रहा था कि वह अपने कर्तव्य से अधिक कर रहा है और वह एक बेहतर

व्यवहार के योग्य है या किसी तरह के पुरस्कार के योग्य है! यदि दास के मन में ऐसे विचार उत्पन्न होते हैं, तो वह आत्मिक रूप से घमंडी और खुद के बारे में बहुत अधिक सोचने वाला है।

इस दृष्टान्त का अनुप्रयोग यह होगा कि जब मसीही जन परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें तो, उन्हें स्वयं से कहना चाहिए कि वे अपने कर्तव्य को करने के लिए किसी भी प्रशंसा, श्रेय या पुरस्कार के योग्य नहीं हैं। उन्हें अपनी सेवा को एक विशेषाधिकार के रूप में मानना चाहिए, न कि किसी तरह के पुरस्कार के योग्य। मसीही जन परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने या सेवा करने के लिए अतिरिक्त श्रेय के लायक नहीं हैं। जिस आज्ञाकारिता को हम पूरा करते हैं वह कोई अतिरिक्त काम नहीं है। इस दृष्टान्त में, यीशु हमारी सेवा को निरर्थक या बेकार नहीं बता रहे हैं, न ही वह पुरस्कारों से वंचित रखना चाहते हैं। लेकिन यीशु अनुचित आत्मसम्मान और दास के आध्यात्मिक घमंड का सामना कर रहे हैं। मसीहियों को पुरस्कार की उम्मीद किए बिना विनम्रता की भावना से परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु का इरादा दृष्टान्त की कहानी में हर विवरण में आत्मिक महत्व को रखना नहीं था। दृष्टान्त रूपक नहीं हैं। प्रासंगिक विवरण दृष्टान्त की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टान्त के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टान्त की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वतंत्र आत्मिक महत्व का वर्णन नहीं करना चाहिए।

सिखाएं। इस दृष्टान्त में, यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देता है।

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय करना - दृष्टान्त का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषय) या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या कहानी में पाया जाता है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टान्तों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टान्त में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ होता है, एक केंद्रीय बिंदु बनाने के लिए। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आत्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 17: 7-10 में अयोग्य सेवक का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में सेवा" के बारे में सिखाता है।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित हो सकता है। "मसीहियों को योग्य सेवक बनने का प्रयास करना चाहिए, जो केवल अपने कर्तव्य से अधिक करते हैं।" मसीहियों को दास की भावना के साथ सेवा नहीं करनी चाहिए, जो केवल वही करता है जो उसको कहा जाता है। उन्हें एक स्वतंत्र भावना के साथ सेवा करनी चाहिए, स्वेच्छा से, पूरे दिल से और खुशी से अर्थात् जितना उनसे करने के लिए कहा गया है उससे अधिक (1 पतरस 5:2)। वे प्रेम और कृतज्ञता की भावना से सेवा करते हैं। एक दास की आत्मा को परमेश्वर के राज्य में कोई सराहना नहीं मिलती है।

या दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित भी हो सकता है। "मसीहियों को अपने आप को अयोग्य सेवकों के रूप में मानना चाहिए, जो अपना कर्तव्य करते हैं।" मसीहियों को गर्व की भावना के साथ सेवा नहीं करनी चाहिए, यह सोचकर कि वे जो करने के लिए कहा जाता है, करने के लिए प्रशंसा, श्रेय या पुरस्कार के योग्य हैं। उन्हें सेवा का एक विशेषाधिकार के रूप में

सम्मान करना चाहिए, उनकी आज्ञाकारिता के लिए श्रेय की उम्मीद किए बिना। वे नम्रता की भावना से सेवा करते हैं। एक घमंडी आत्मा को परमेश्वर के राज्य में कोई सम्मान नहीं मिलता है (तुलना करें 1 पतरस 5:5-6)।

सेवा परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग अपनी सेवा के लिए उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक खुशी-खुशी काम कर रहे हैं, जो उनकी प्रशंसा, ऋण या पुरस्कार की अपेक्षा किए बिना करते हैं।

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत पद्यांशों के साथ दृष्टान्त की तुलना करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टान्तों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य अंशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण प्रति सन्दर्भ खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टान्त की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।
खोजें और चर्चा करें। बाइबल के प्रत्येक अंश में जो पढ़ाया जाता है उसकी तुलना अयोग्य सेवक के दृष्टान्त से कैसे होती है?

(1) निकम्मा दास और अयोग्य दास।

पढ़ें मत्ती 25:30। मूल शब्द “निकम्मा दास” (ग्रीक: अचरियों डोलों) मूल रूप से इन दो बाइबल पद्यांशों में उपयोग किया जाता है। मत्ती 25:30 में दास एक *निकम्मा* या *अयोग्य* दास था, क्योंकि उसने अपने सौंपे गए काम के साथ कुछ भी नहीं किया। निकम्मे दास को नर्क में फेंक दिया गया।

लेकिन लूका 17:10 में दास एक *अयोग्य* या *निंदनीय* दास था, क्योंकि उसने उससे अधिक नहीं किया था जो उसे करने के लिए कहा गया था। अयोग्य दास को अपने स्वामी से कोई प्रशंसा नहीं मिली।

(2) असाधारण दास।

पढ़ें मत्ती 5: 20,23-24,40-48। यह दृष्टान्त और पहाड़ी उपदेश के बीच तुलना है। मत्ती अध्याय 5:20 में यीशु ने कहा, “कि यदि आपकी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से *बढ़कर* न हो, तो आप स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे।” परमेश्वर के राज्य की उपमा साधारण से नहीं अपितु असाधारण से की गयी है। परमेश्वर के राज्य के लोग सामान्य से अधिक करते हैं। वे अपने कर्तव्य से ज्यादा कुछ करते हैं।

उदाहरण के लिए, मत्ती अध्याय 5:23-48 में, “साधारण” का मतलब हत्या से वरन क्रोधित होने से भी बचना, जिसे आत्मिक तौर पर हत्या करना माना गया है। लेकिन “असाधारण” का मतलब है की आप आगे बढ़कर उन लोगों से पुनः सुलह कर लेते हैं, जिन्होंने उनके विरुद्ध कोई काम किया होता है ! “साधारण” निष्पक्ष और न्यायपूर्ण होना है और पापियों को उचित सजा देना है। लेकिन “असाधारण” एक दुष्ट व्यक्ति का विरोध ना करना है, और साथ ही उसकी दुष्टता को सहन करना भी है ! “साधारण” एक विदेशी सैनिक द्वारा आग्रह करने पर उसके झुण्ड को एक मील ले जाने जैसा है। लेकिन “असाधारण” उसकी मांग से अधिक करना है जैसे एक के बजाये दो मील चलना! “साधारण” का अर्थ व्यक्ति को उसकी मांग के हिसाब से देना है। लेकिन “असाधारण” उसे उसकी मांग से अधिक देना है! “साधारण” अपने भाइयों का अभिवादन करना है, और केवल उन लोगों से प्यार करना है जो आपसे प्यार करते हैं और आपके लिए अच्छा करते हैं। लेकिन यीशु पूछते हैं, “तुम दूसरों से बढ़कर क्या कर रहे हो ?” (मत्ती 5:47)।

“असाधारण” अजनबियों को शुभकामनाएं देना, अपने दुश्मनों से प्यार करना, उन लोगों के लिए अच्छा करना जो आपसे

नफरत करते हैं, उन लोगों को आशीर्वाद देना जो आपसे दुर्व्यवहार करते या आपको दुखी करते हैं (लूका 6:27-28)। यीशु ने मसीहियों से अपेक्षा की कि वे धार्मिक अगुवों और शिक्षकों (फरीसियों) या अन्यजातियों (मानवतावादियों) की तुलना में अधिक करें। ” परमेश्वर के राज्य की उपमा साधारण से नहीं अपितु असाधारण से की गयी है, वे अपने कर्तव्य से अधिक , यहां तक कि उनके धार्मिक कर्तव्य से भी अधिक करते हैं। और वे यह सब पूरे जोश और पूरी उदारता की भावना के साथ करते हैं।

(3) एक कृतज्ञ दास ।

पढ़ें लूका 17: 11-19। यह दृष्टांत और अनुभाग के बीच एक तुलना है, जो दृष्टान्त के तुरंत बाद दिया गया है। लूका 17: 11-19 में यीशु पूछते हैं, “क्या दसों शुद्ध न हुए, तो फिर वे नौ कहाँ हैं ,” क्या परदेशी को छोड़ कोई और न निकला जो परमेश्वर की बड़ाई करता है? “ सभी दस कोढ़ियों ने अपना कर्तव्य निभाया: उन्होंने वही किया जो यीशु ने उन्हें करने का आदेश दिया था। लेकिन उनमें से केवल एक ने उससे अधिक किया था, जो उसे करने का आदेश दिया गया था। वह यीशु के पास लौट आया, उसने ऊँची आवाज़ में परमेश्वर की स्तुति की और यीशु ने जो उसके लिए किया उसके लिए विनम्रतापूर्वक धन्यवाद दिया! उसने उस भावनाहीन दास के बिल्कुल विपरीत काम किया। उससे जितना कहा था उससे **ज्यादा** किया था! उसने अपने कर्तव्य से **ज्यादा** काम किया। वह स्वतंत्र रूप से परमेश्वर का धन्यवाद और प्रशंसा करने के लिए वापस आया था! इसी तरह, परमेश्वर के राज्य के लोग उससे अधिक करते हैं जो यीशु उन्हें करने के लिए कहते हैं। और वे यह सब प्रशंसा और कृतज्ञता की भावना से करते हैं।

(4) नम्र दास।

पढ़ें लूका 12: 37; 22:27। यह दृष्टांत और यीशु के अपने उदाहरण के बीच तुलना है। चौकस सेवकों के दृष्टान्त में, लूका अध्याय 12:37 में, यीशु ने प्रतिज्ञा की, “धन्य हैं वे दास जिन्हें स्वामी आकर जागते पाए ; मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि वह कमर बांध कर उन्हें भोजन करने को बैठायेगा, और पास आकर उनकी सेवा करेगा। “ और लूका 22:27 में, यीशु ने कहा, बड़ा कौन है, वह जो भोजन पर बैठा है, या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं है जो भोजन पर बैठा है? लेकिन मैं तुम्हारे बीच में से सेवक के समान हूँ। “ अपने व्यक्तिगत उदाहरण में, यीशु ने कभी खुद की बातों के विरुद्ध काम नहीं किया। उन्होंने वो ही किया जो उन्होंने उपदेश दिया। उन्होंने सेवा का प्रचार किया और उन्होंने सेवा की । यूहन्ना अध्याय 13:15 में, उसने अपने चेलों के पाँव धोए और कहा, “क्योंकि मैंने तुम्हें नमूना दिखा दिया है कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो।” इसी तरह, परमेश्वर के राज्य के लोग विनम्रता की भावना के साथ और अन्य लोगों के लिए एक उदाहरण स्थापित करने की भावना के साथ काम करते हैं।

(5) सच्चे दास।

पढ़ें कुलुस्सियों 3:22-24। कुलुस्सियों अध्याय 3:22-24 में, पौलुस मसीही सेवकों या दासों को चेतावनी देता है कि सिर्फ अपने स्वामी द्वारा अपने पक्ष को जीतने के लिए अपने स्वामी की बात ना मानें। वह उन्हें ईमानदारी और प्रभु के प्रति श्रद्धा की भावना से सेवा करने के लिए प्रेरित करता है। इसी तरह, परमेश्वर के राज्य के लोग हर चीज को पूरी ईमानदारी से करते हैं जैसे कि वे प्रभु के लिए कर रहे हैं। और वे यह सब प्रभु के प्रति ईमानदारी और श्रद्धा की भावना से करते हैं।

6. परमेश्वर के राज्य में सेवा के बारे में दृष्टान्तों की मुख्या शिक्षाओं या पाठों का सारांश।

पढ़ें। भंडारी के बारे में दृष्टांत लूका 17:7-10 में अयोग्य सेवक के दृष्टांत हैं और मत्ती 24: 45-51 और 12- 42-46 में वफादार

और विश्वासघाती सेवकों के दृष्टांत हैं।

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में सेवा के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेश या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना या मानना सिखाया और उसने हमें क्या बनना या करना सिखाया?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर या यीशु मसीह कैसे हैं।

यीशु मसीह स्वयं हमारे बीच एक सेवक थे। वह सेवा करवाने के लिए नहीं आया था, सेवा करने के लिए और कई (मरकुस 10:45) के लिए रिहाई के रूप में अपने जीवन को देने के लिए। यीशु मसीह ने प्रत्येक मसीही को कुछ कार्य और जिम्मेदारियाँ सौंपी हैं जिनमें उसे सेवा करनी चाहिए। अपने दूसरे आगमन पर, वह निश्चित रूप से लोगों को या तो उनके भवनहीन मन के अनुसार या उनके कर्तव्य की तुलना में अधिक करने की उनकी पूरी भावना के अनुसार न्याय करेगा। वह उन्हें उनके विश्वासयोग्य या विश्वासघात के अनुसार न्याय देगा।

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें क्या होना चाहिए।

प्रत्येक मसीही का कर्तव्य है कि वह उस कार्य के प्रति विश्वासयोग्य हो जो यीशु मसीह ने उसे इस धरती पर करने के लिए दिया है। न केवल मसीही अगुवों या शिक्षकों, बल्कि प्रत्येक मसीही के पास एक निर्धारित कार्य है और यीशु मसीह ने उनसे विश्वासयोग्य होने की अपेक्षा की है। किसी भी विशिष्ट कार्य के अलावा, प्रत्येक मसीही से अपेक्षा की जाती है कि वह स्वामी के कार्य को पूरा करे और ज़रूरतमंद लोगों की देखभाल करे।

अपने दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह प्रत्येक वफादार मसीही को कुछ विशिष्ट कार्यों को नए स्वर्ग और नई पृथ्वी (लूका 19: 17, 19) में सौंपेगा। उसने कहा, “धन्य, हे उत्तम दास!” बहुत बहुत थोड़े में विश्वासयोग्य निकला अब दस नगरों पर अधिकार रखा।” वर्तमान पृथ्वी पर और नई पृथ्वी पर प्रत्येक कार्य सेवक की व्यक्तिगतता और पृथ्वी पर रहते हुए उसकी वफादारी के साथ सामंजस्य में होगा।

प्रतिभा (क्षमता / संभावना) जो परमेश्वर देता है, उसका उपयोग और विकास किया जाना चाहिए (मत्ती 25:15) और व्यक्ति को अधिकांश समय बनाना चाहिए (इफिसियों 5:16)। किसी को आलसी होने का अधिकार नहीं है। “यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए।” (2थिस्सलुनीकियों 3:10)। किसी को भी अकेले रहने का अधिकार नहीं है (लूका 9:23)। “इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे पियो, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।” (1कुरिन्थियों 10:31)। “मैं सभी मनुष्यों के लिए सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ।” (1कुरिन्थियों 9:22)।

“परमेश्वर के साथी सहकर्मी” कहे जाते हैं (1कुरिन्थियों 3:5-9)। यह जानना बहुत ही सौभाग्य की बात है कि परमेश्वर के सभी सेवकों को पृथ्वी पर परमेश्वर के कुल कार्यों को पूरा करने के लिए एक विशिष्ट कार्य दिया गया है।

लेकिन जब मसीही सेवा करें, तो उन्हें दास की भावना के साथ सेवा नहीं करनी चाहिए, अर्थात् केवल उन कामों को करना जो हमसे करने के लिए कहा जाता है। परमेश्वर के राज्य में एक दासत्व की भावना को कोई बढ़ावा नहीं मिलता है। मसीहियों को एक स्वतंत्र भावना के साथ सेवा करनी चाहिए, स्वेच्छा से, पूरे हृदय से और खुशी से जितना वे करने के लिए कहा जाता है उससे अधिक करना चाहिए। वे प्रेम, प्रशंसा और कृतज्ञता की भावना से काम करते हैं। वे नम्रता की भावना से सेवा करते हैं, प्रशंसा, श्रेय या पुरस्कार की तलाश में नहीं। और वे प्रभु के प्रति ईमानदारी और श्रद्धा की भावना से काम करते हैं। वे पृथ्वी

पर लोगों की सेवा करते हैं जैसे कि वे प्रभु की सेवा कर रहे हों। परमेश्वर के राज्य की विशेषता साधारण के द्वारा नहीं, अपितु असाधारण से हैं। परमेश्वर के राज्य के लोग अपने कर्तव्य से अधिक काम करते हैं। वे साधारण से ज्यादा करते हैं। मसीहियों की विशेषता होती है कि वे असाधारण होते हैं! वे उन कामों को करते हैं जो दूसरे नहीं कर सकते या करना नहीं चाहते, लेकिन उन कामों को किया जाना ज़रूरी है।

5	प्रार्थना (8 मिनट)	[प्रतिक्रियाएँ] परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना
----------	---------------------------	--

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से **छोटी-छोटी प्रार्थना** करने के लिए समूह में **बारियाँ लें**। या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	तैयारी करें (2 मिनट)	[निर्धारित कार्य] अगले अध्याय के लिए
----------	-----------------------------	---

(समूह अगुवा।) समूह के सदस्यों को इस तैयारी को लिखित रूप में घर ले जाने दें या उन्हें इसकी नकल करने दें।

1. **समर्पण।** चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर “एक अयोग्य दास” का प्रचार करें, **शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **यिर्मयाह 15, 17, 18 और 23** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना। (4) परमेश्वर की बुद्धि। याकूब 1:5।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **बाइबल अध्ययन।** घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 12:1-21।**
बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन सहिता 5:3)।
7. परमेश्वर के राज्य पर प्रचार करने के लिए **अपनी नोटबुक का अद्यतन करें।** शांत समय में अपने नोट्स, अपने स्मरण किए हुए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना
---	-----------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना करें।** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपे।

2	साझा करें (20 मिनट) [शांत समय] यिर्मयाह 15,17,18 और 23
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें (या)** अपने नोट्स से **पढ़ें**) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (यिर्मयाह 15,17,18 और 23) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट) [परमेश्वर के संसाधन] (4) याकूब 1:5
---	---

दो-दो करके पुनरावलोकन करें।

(4) परमेश्वर की बुद्धि। याकूब 1:5. पर यदि तुम से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी जाएगी।

4	बाइबल अध्ययन (85 मिनट) [रोमियों की पत्री] रोमियों 12:1-21
---	--

परिचय। रोमियों 12:1-21 का एक साथ अध्ययन करने के लिये बाइबल के पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें।

यद्यपि रोमियों की सम्पूर्ण पुस्तक मसीही सिद्धांत और अभ्यास से भरी हुई है, रोमियों अध्याय 1-11 सिद्धान्तों और रोमियों के अध्याय 12-16 अभ्यास पर जोर डालते हैं।

अध्याय 12 का विषय **पवित्रीकरण** है। रोमियों अध्याय 6 में हमें पहले से ही शिक्षा दी गई है कि धर्मी ठहराए जाने और पवित्रीकरण के लिए आधार यीशु मसीह के साथ उसकी मृत्यु और जी उठने में आत्मिक सम्बन्ध है (रोमियों 6:2-7; तुलना करें 1कुलिन्थियों 1:30 से)। धर्मी ठहराए जाने की मांग पवित्रता की नैतिक (पद) स्थिति के बिना हम अपनी व्यक्तिगत शैली (प्रक्रिया) में उन्नति नहीं कर सकते! और पवित्रीकरण के बिना हम अपने धर्मी ठहराए जाने के विषय में कभी भी निश्चित नहीं हो सकते! क्योंकि यीशु मसीह की मृत्यु और जी उठने के साथ आत्मिक सम्बन्ध स्थायी है और पवित्रीकरण में उन्नति करना एक मसीही के भीतर निरंतर चलने वाली गतिशील प्रक्रिया है (रोमियों 6:10-11)। यीशु मसीह के साथ आत्मिक सम्बन्ध का अर्थ है कि किसी व्यक्ति ने यीशु मसीह से उसके हृदय और जीवन में वास करने की प्रार्थना की है। इसका अर्थ है कि उस

मसीही जन की देह में पवित्र आत्मा उपस्थित है। पवित्र आत्मा मसीह की आत्मा, उस जी उठे और स्वर्ग पर चढ़ गए और ऊँचे पर उठाए हुए प्रभु की आत्मा से जो वर्तमान में स्वर्ग में शासन करता है कुछ भी कम नहीं है (रोमियों 8:9-10)। ऐसे मसीही जन का व्यावहारिक और संजातीय जीवन मसीह की छुटकारा प्रदान करने वाली उपलब्धि की ठोस बुनियाद पर स्थिर करता है। पवित्रीकरण में उन्नति इसलिए संभव होती है क्योंकि वह मसीही जन मसीह से सम्बन्धित है और पवित्र आत्मा के माध्यम से उस मसीही के नए जीवन में मसीह कार्य करता है।

कदम 1. पढ़ें।

परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 12:1-21 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें।

अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छूआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

12:1

खोज 1. अपनी देह के प्रति मसीही जन की जिम्मेदारी।

मसीही जन की देह पवित्रीकरण का एक महत्वपूर्ण भाग है। वचन 1 कहता है, “हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।” संसार में पाए जाने वाले कई धर्म देह को तुच्छ मानते हैं और देह को बुराई का रूप समझते हैं। देह और उसके अपमानजनक प्रभावों से स्वतंत्र होना ही उनका संजातीय आदर्श है। इसके विपरीत, मसीही विश्वास में मानव देह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

उत्पत्ति के समय से ही, मानव की देह उसके अस्तित्व का एक अभिन्न अंग है (इब्रानी में: उसका प्राण), अर्थात्, जिसके कारण से उसे मानव का रूप प्राप्त हुआ है (उत्पत्ति 2:7,21-23)। मनुष्य के जीवन के अंत में पाप के प्रभाव से देह मर जाती है। तथापि, इसे असामान्य समझा गया है, क्योंकि परमेश्वर की मंशा सारी देहों को पुनर्जीवित करने की है (दानियेल 12:2; फिलिप्पियों 3:20-21)।

क्योंकि मसीही जनों की देह पवित्र आत्मा का मंदिर है, इसलिए एक मसीही जन अपनी देह के सब सदस्यों को धार्मिकता के उपकरणों के रूप में परमेश्वर को समर्पित कर देता है (रोमियों 6:13,19)। एक मसीही जन अपने शरीर को परमेश्वर को जीवित बलिदान के रूप में चढ़ाता है, जिसका अर्थ है कि वह परमेश्वर और उसकी सेवा के पुनर्जीवित करने वाले स्वभाव को अपनी देह को जानबूझकर और लगातार एक उपकरण के रूप में समर्पित करता है। वह अपने शरीर को परमेश्वर को एक पवित्र

बलिदान के रूप में चढ़ाता है, जिसका अर्थ है उसे बुराई से पृथक कर देना (उदाहरण के लिए, कामुक वासना) और भलाई के प्रति समर्पित कर देना। और वह अपने शरीर को परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाता है, जो परमेश्वर की महिमा करने के द्वारा उसे आनन्द प्रदान करता है। देह के ऐसे चढ़ावे को “आत्मिक आराधना” कहा गया है (यूनानी में: लोजिकेन लात्रेइयन), जिसका अर्थ है, कि अन्यजातियों और यहूदियों के विपरीत मसीही जन बाहरी और यांत्रिकी संस्कारों (रीतियों) के माध्यम से आराधना नहीं करता है, परन्तु विवेक, समझ और अपनी देहों (जीवनों) के पवित्र समर्पण के माध्यम से।

12:2

खोज 2. अपने मन के प्रति मसीही जन की ज़िम्मेदारी।

मसीही जन का मन या सोचने का तरीका (यूनानी में: नोउस) परिवर्तन (बदलाव) की कुंजी है। वचन 2 कहता है, “इस संसार के सदृश्य न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम कर करते रहो।” व्यावहारिक मसीही जीवन जीने के लिए, मसीही जन के पास एक मानक होना अवश्य है। उसका यह मानक पापी संसार, कोई धार्मिक अगुवा या इस संसार का कोई धर्म नहीं होना चाहिए! उसका यह मानक बाइबल के परमेश्वर से कम कुछ भी नहीं होना चाहिए जिसने अपने आप को यीशु मसीह के जीवन के प्रेम के द्वारा प्रकट किया (इफिसियों 5:1-2) और जिस प्रकार से उसकी सिद्ध इच्छा बाइबल में दर्ज की गई है। वचन 2 अपने में एक नकारात्मक और एक सकारात्मक आदेश और एक वाचा को रखता है।

(1) नकारात्मक आदेश।

“कभी भी सदृश्य न हों (यूनानी में: सुसचेमातिज़ोमै) (आदेश, वर्तमान निरंतर काल)!” यह बुरे लोगों या प्रभावों की सादृश्यता से बचे रहने के विषय में बताता है। “अपने आप को इस बुरे युग के चाल चलन में ढल जाने की अनुमति मत दो।”

उसी प्रकार से, कुछ ऐसी बातें हैं जिनसे मसीहियों को अवश्य ही बचना चाहिए! उदाहरण के लिए, बाइबल सिखाती है कि मसीहियों को आक्रामक भाषा बोलने, अपमानजनक गीत गाने, गंदी पत्रिकाएँ और पुस्तकें पढ़ने, अनैतिक फिल्मों देखने, ललचाने वाले कपड़े पहनने, संदिग्ध खेलकूद में शामिल होने, और तथाकथित मित्रों की नास्तिकता और दुष्टता का अनुसरण करने से बचना चाहिए। मसीही विश्वास का प्रथम सबूत पाप से फिर जाना है (1थिस्सलुनीकियों 1:9)! इस अस्थायी, क्षणिक बुरे युग के द्वारा एक मसीही जीवन को निर्धारित नहीं किया जाना चाहिए (1यूहन्ना 2:17; 1 कुरिन्थियों 2:6,8)। बजाए इसके, आने वाले युग के द्वारा उसकी योजनाओं और महत्वाकांक्षाओं को निर्धारित किया जाना चाहिए! उसे ऐसे प्रतिमानों को विकसित करना चाहिए जो वर्तमान युग में बने रहें और आने वाले युग में भी लगातार बने रहेंगे!

(2) सकारात्मक आदेश।

“बदलते जाओ (यूनानी में: मेटामोर्फूमै) (आदेश, वर्तमान निरंतर काल, निष्क्रिय)! यह भीतरी बदलाव के विषय में बताता है जो कि अनन्त बदलाव की ओर अगुवाई करता है। “अपने मन के नए हो जाने के द्वारा अपने आप को बदलने की अनुमति प्रदान करो।”

उसी प्रकार से, कुछ ऐसी बातें भी हैं जिनका मसीहियों को अवश्य ही अनुसरण करना चाहिए! उदाहरण के लिए, मसीहियों को सक्रियता के साथ बदलाव की खोज करनी चाहिए, अपने मनों को परमेश्वर के वचनों से भरना चाहिए और इस बात की

इच्छुक होना चाहिए कि उनको बदलने के लिए पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन का उपयोग करता है। उनको लगातार अपने स्वयं के विवेक, मान्यताओं और धारणाओं को वापस बाइबल स्कूल भेजना चाहिए और पवित्र आत्मा की ओर से निर्देश प्राप्त करने चाहिए। उनको इस बात की जाँच करनी चाहिए कि क्या उनकी धारणाएँ बाइबल के साथ अनुरूपता में हैं। यह सकारात्मक आदेश उस उपलब्धि की स्थिरता, शालीनता और अभिमान पर प्रहार करती है जो अक्सर मसीहियों की विशेषता होती है। पौलुस सामान्य रूप से एक वार्तालाप या दूसरी आशीष के अनुभव की नहीं, परन्तु एक स्थिर नयेपन की शिक्षा दे रहा है!

(3) वाचा।

जब मसीही जन इसे करते हैं, तो वे इस अनुभव से होकर गुजरेंगे कि परमेश्वर किस तरह का जीवन चाहता है कि वे जीएँ। मसीही के जीवन की पवित्रता, न्याय और भलाई परमेश्वर की इच्छा का एक प्रतिबिम्ब होगा।

कदम 3. प्रश्न।

व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आइये रोमियों 12:1-21 में पायी जाने वाली सच्चाइयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होने दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

12:3

प्रश्न 1. वचन 3 का क्या अर्थ है?

ध्यान दें।

रोमियों 12:3 कहता है, “क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूँ कि जैसा समझना चाहिए उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे; पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिणाम के अनुसार बाँट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।”

मसीह की देह में पाए जाने वाले मसीहियों के मध्य में मौजूद बातों के विषय के बजाए पौलुस भिन्नताओं के बारे में बताता है। मसीहियों के मध्य में परमेश्वर ने कम से कम तीन भिन्नताओं को अनुमति प्रदान की है:

- वचन 3 के अनुसार, मसीहियों को अलग अलग माप का विश्वास प्राप्त होता है
- वचन 4 के अनुसार, मसीहियों के कलीसिया में अलग अलग कार्य होते हैं
- वचन 6 के अनुसार, मसीहियों को अलग अलग आत्मिक वरदान प्रदान किए गए हैं।

परमेश्वर की सर्वोत्तम इच्छा मसीहियों के मध्य में इन भिन्नताओं को निर्धारित करती है और उसी तरह से उनके पवित्रीकरण (व्यक्तिगत विकास) और उनकी सेवा (मसीह के लिए) की दिशा को भी।

(1) अतिशयोक्तिपूर्ण आत्म-सम्मान पाप है।

“जैसा समझना चाहिए, उससे बढ़ कर कोई भी अपने आप को न समझे”। परमेश्वर मसीही जन को कलीसिया में उनके महत्व को अधिक आँकने के पाप के खिलाफ चेतावनी देता है। लालच या कलीसिया में किसी आत्मिक वरदान को अभ्यास में लाने में निहित अभिमान उससे सम्बन्धित नहीं है। ऐसे मसीही जन जिनको कलीसिया में कोई आत्मिक वरदान या कार्य नहीं मिला है जो परमेश्वर द्वारा उनको प्रदान किए गए उस विश्वास के माप से मेल खाता है वे अभिमान या अतिशयोक्तिपूर्ण आत्म-सम्मान के पाप में लिप्त हैं।

(2) झूठी विनम्रता पाप है।

“पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिणाम के अनुसार बाँट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।” हालाँकि उसे अपने आप को उन वरदानों को पाने वाला नहीं समझना चाहिए जो उसके पास नहीं हैं, उसे उस वरदान या उन वरदानों को मान लेने से इनकार नहीं करना है जो उसे मिले हैं। झूठी विनम्रता भी पाप है।

(3) विश्वास का माप।

“माप” शब्द मापे जाने के परिणाम को संदर्भित करता है, अर्थात् एक निश्चित मात्रा या एक निश्चित प्रकार जिसे मापा गया है। उसी प्रकार से यह उस विश्वास की मात्रा का संदर्भ देता है जिसे मापा गया है। तथापि, इफिसियों 4:7 की अनुरूपता में विश्वास के प्रकार, अर्थात्, आत्मिक वरदान के प्रकार (उदाहरण के लिए, शिक्षा प्रदान करने की क्षमता) या कार्य का प्रकार (उदाहरण के लिए, बच्चों के शिक्षक) पर अधिक बल दिया गया है कि परमेश्वर अपनी सम्प्रभुता में प्रत्येक मसीही का माप लिया है। विश्वास के अलग अलग मापों का अर्थ वे अलग अलग तरीके हैं जिनसे मसीही जन अपने अलग अलग आत्मिक वरदानों और कलीसिया में पाए होने वाले अलग अलग कार्यों में अपने विश्वास का प्रदर्शन और अभ्यास करते हैं।

विश्वास के उदाहरण जिनको मसीहियों के लिए मापा गया है वह वरदानों और कार्यों की विविधता है जिसका उल्लेख वचन 6-8 में किया गया है। प्रत्येक मसीही जन को उसकी ही माप प्राप्त होता है, अर्थात्, वह आत्मिक वरदान और वह कार्य जिसे परमेश्वर ने अपनी सम्प्रभुता में कलीसिया की सेवा के दृष्टिकोण से उसे सौंपा है (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 12:11 से)। और सौंपे गए आत्मिक वरदान और कार्य से परमेश्वर की सेवा करने के द्वारा प्रत्येक मसीही जन को अपने विश्वास का प्रदर्शन और अभ्यास करना चाहिए।

“विश्वास” की आवश्यकता केवल उस समय ही नहीं होती है जब हम कलीसिया के सदस्य बनते हैं। कलीसिया के सदस्य के रूप में हमारे अलग अलग कार्यों का निष्पादन करने के लिए भी विश्वास की आवश्यकता होती है। सारे ही आत्मिक वरदानों और कार्यों का यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा (रोमियों 12:3; फिलिप्पियों 4:13) और दूसरों के प्रति प्रेम के द्वारा (1 कुरिन्थियों 13:1-13) ही अच्छी तरह से अभ्यास किया जा सकता है। यह तथ्य कि कलीसिया में पाए जाने वाले वरदानों और कार्यों को मापा गया है (इफिसियों 4:7), इसका अर्थ है कि प्रत्येक आत्मिक वरदान की कार्य के प्रकार के रूप में और उस क्षेत्र में सीमाएँ होती हैं जिसमें उसका अभ्यास किया जाना चाहिए।

12:4-8

प्रश्न 2. कलीसिया में मसीहियों की क्या जिम्मेदारी है?

ध्यान दें।

(1) एक आत्मिक वरदान की परिभाषा।

एक आत्मिक वरदान एक विशेष परमेश्वर प्रदत्त *अभिलाषा, क्षमता या कार्य* है। 1 कुरिन्थियों 12:4-7 के अनुसार, एक आत्मिक वरदान मसीही जन के माध्यम से परमेश्वर की सामर्थ्य, बुद्धि या अनुग्रह की एक अभिव्यक्ति है और यह अलग अलग प्रकार की सेवकाइयों में अपने आप ही प्रदर्शित होती है।

(2) आत्मिक वरदानों का उद्देश्य।

प्रत्येक मसीही जन का कर्तव्य उस आत्मिक वरदान या कार्य के द्वारा परमेश्वर के सेवा करना है जो परमेश्वर ने उसे सौंपा है। मानवीय देह के बहुत सारे अंग हैं और हर एक अंग का मानवीय देह में एक अलग, तौभी आवश्यक कार्य है। उसी प्रकार से, सारे मसीही जन मिल कर मसीह की देह का निर्माण करते हैं और एक आवश्यक कार्य के साथ प्रत्येक मसीही जन उस देह का एक अंग है।

मसीही जन एक दूसरे के अंग हैं” (रोमियों 12:5; इफिसियों 4:25)। प्रत्येक मसीही जन को उसे प्राप्त हुए आत्मिक वरदान के द्वारा दूसरे मसीही जन की सेवा करनी चाहिए (1 पतरस 4:10)।

(3) आत्मिक वरदानों के प्रकार।

1 कुरिन्थियों 12:28 सिखाता है कि तीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण आत्मिक वरदान अथवा कार्य यह हैं: प्रथम प्रेरित, दूसरा, भविष्यद्वक्ता और तीसरा शिक्षक। रोमियों 12:6-8 भविष्यद्वाणी का उल्लेख सबसे पहले इसलिए करता है, क्योंकि वहाँ रोम में कोई भी प्रेरित नहीं था (रोमियों 15:15-29, विशेष रूप से 20 वचन, प्रेरित पौलुस ने किसी अन्य प्रेरित की नींव पर निर्माण नहीं किया था)।

रोमियों 12:6-8 में दिए गए आत्मिक वरदानों या कार्यों में कोई पद प्रदान करने का आशय नहीं है। रोमियों 12:6-8 में, प्रथम चार आत्मिक वरदान उस क्षेत्र से सम्बन्धित हैं जिसमें उस वरदान का अभ्यास किया जाना है। उदाहरण के लिए, शिक्षा प्रदान करने की क्षमता का अभ्यास शिक्षा के क्षेत्र में किया गया है (उदाहरण के लिए: बच्चे, युवा, वयस्क या विकलांग)। इसी तरह से भविष्यद्वाणी करने, सेवा करने और प्रोत्साहित करने के साथ भी।

अंतिम तीन आत्मिक वरदान हृदय और इच्छा की प्रकृति से सम्बन्धित हैं जिसके साथ सभा को प्रतिपादित किया गया है। दूसरों की आवश्यकताओं में योगदान देना उदारता के साथ किया जाना चाहिए (यूनानी में: हेपलोतेस)। अगुवाई करना (शाब्दिक रूप से: सबसे आगे जाना) लगन अथवा समर्पण के साथ किया जाना चाहिए (यूनानी में: स्पोउडे)। और दया का प्रदर्शन आनन्दपूर्वक किया जाना चाहिए (यूनानी में: हिलोरोतेस)। ध्यान दें। “भविष्यद्वाणी” शब्द का अर्थ “पूर्व कथन कहना”, “घोषणा करना” है।

12:6

प्रश्न 3. भविष्यद्वाणी करने का मसीही वरदान क्या है?

ध्यान दें। “भविष्यद्वाणी” शब्द का अर्थ “पूर्व कथन कहना”, “घोषणा करना” है। परमेश्वर की ओर से सत्य के प्रकाशनों द्वारा

बात करने की क्षमता या कार्य को भविष्यद्वाणी कहते हैं (प्रेरितों के काम 2:16-17; 21:10-11)।

(1) प्रारंभिक कलीसिया में भविष्यद्वाणी।

प्रारंभिक मसीही कलीसिया में, नये नियम के पूरे होने से पूर्व, नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं की सच में आवश्यकता थी। मसीही जनों को लिखा हुआ नया नियम प्राप्त नहीं हुआ था और इसी कारण से उन लोगों पर अपने सत्य को प्रकट करने के लिए परमेश्वर ने नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं का उपयोग किया। नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने विशेष रूप से इस बात को प्रकट किया कि परमेश्वर उन मसीही जनों से क्या चाहता था कि वे वर्तमान समय में किस प्रकार का मसीही जीवन जीएँ। कई बार उन्होंने इस बात को प्रकट किया कि कुछ मसीही जनों के साथ भविष्य में क्या होगा (प्रेरितों के काम 21:10-11)। मसीहीयत का इतिहास यह प्रदर्शित करता है कि जब तक कि नया नियम पूरा नहीं हो गया था, तब तक नये नियम के भविष्यद्वक्ता लगातार अस्तित्व में रहे।

नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं को “विश्वास के अनुपात में” भविष्यद्वाणी करनी थी (यूनानी में: काता तेन अनालोजिअन तेस पिस्तिओस) (वस्तुनिष्ठ सम्बन्धकारक: विश्वास की मसीही देह, जिसमें परमेश्वर चाहता है कि मसीही जन विश्वास करें, रोमियों 1:5; गलातियों 1:23; 1 तीमथियुस 1:19; 4:1,6; 6:10,21)। इसका अर्थ है कि उनको प्रकट किए गए मसीही विश्वास की सीमा तक ही सीमित अपने आत्मिक वरदान का अभ्यास करना था (मसीही सिद्धांत, बाइबल) (यिर्मयाह 23:21-22; प्रेरितों के काम 20:27)। “यीशू की गवाही (उदाहरण के लिए यीशू के माध्यम से तथा यीशू के बारे में) भविष्यद्वाणी की आत्मा (संगंध) है” (प्रकाशितवाक्य 19:10), अर्थात्, जो कुछ भी यीशू मसीह ने प्रकट किया (सिखाया) था और विशेष रूप से उस बारे में जो उसने अपने बारे में पुराने नियम के प्रकाशन में (1 पतरस 2:9-12; 2 पतरस 1:21) और नये नियम के प्रकाशन में (यहन्ना 16:13-15) प्रकट किया था उस तक ही सीमित होकर उनको अपने आत्मिक वरदान का अभ्यास करना था। निश्चित रूप से उनको अपने आत्मिक वरदान का अभ्यास वहाँ तक ही सीमित होकर करना था जिसके लिए वे यह विश्वास करते थे कि वह सुनने वालों (मसीही अभ्यास) के लिए अच्छा (लाभकारी) था (यूनानी में: समफेरोन) (प्रेरितों के काम 20:20)।

(2) बाइबल के सिद्धांत के बंद होने के बाद की भविष्यद्वाणी।

बाइबल के सिद्धांत (बाइबल की 66 पुस्तकें) के बंद होने के बाद, किसी को भी बाइबल की अंतर्वस्तु में कुछ भी जोड़ने की अनुमति नहीं दी गई थी। प्रकाशितवाक्य 22:18-19 चेतावनी देता है, “यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से, जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।” भविष्यद्वाणी करने का वरदान पाए हुए मसीही जनों को परमेश्वर का वचन पहले से ही ऐसे बोलना चाहिए जैसा कि उसे बाइबल में प्रकट किया गया है, चाहे इसमें अतीत, वर्तमान या भविष्य का सत्कार हो। परन्तु वे बाइबल में “जो लिखा है उससे बाहर न जाएँ” (1 कुरिन्थियों 4:6)।

भविष्यद्वाणी करने का वरदान पाए हुए मसीही जनों को जो वे बोलते हैं उसका 100% जिम्मेदार रहना है, क्योंकि उनका मानवीय आत्मा उनकी नियंत्रण के अधीन रहता है (1 कुरिन्थियों 14:32)। अन्य मसीही जनों को अवश्य ही इन मसीही जनों के शब्दों को लिखे हुए वचन (बाइबल) के मानदंड के प्रकाश में जाँचना (मूल्यांकन करना) चाहिए जैसा कि प्रेरितों के काम 17:11 और 1 कुरिन्थियों 14:29 स्पष्ट रूप से सिखाते हैं: “अन्य लोग (जो बाइबल का प्रचार करते हैं) ध्यानपूर्वक उस बात की जाँच करें जो कहा गया है।”

12:10

प्रश्न 4. मसीही जन स्वयं से बढ़ कर एक दूसरे का आदर कैसे करते हैं?

ध्यान दें।

क्योंकि मसीही कलीसिया में अलग अलग माप का विश्वास, अलग अलग प्रकार के आत्मिक वरदान और अलग अलग प्रकार के कार्य पाए जाते हैं और प्रत्येक मसीही जन कुछ उपयोगी और अच्छा काम कर सकता है। प्रत्येक मसीही जन के पास करने के लिए एक योगदान होता है। प्रत्येक मसीही जन के पास सामर्थ्य या क्षमता का कम से कम एक क्षेत्र होगा। परन्तु किसी भी मसीही जन के पास सारी ही सामर्थ्य और सारी ही क्षमताएँ नहीं होंगी। कोई भी मसीही जन सेवा के प्रत्येक क्षेत्र में अच्छा नहीं है। मसीही जनों को एक दूसरे के आत्मिक वरदानों या कार्यों की आवश्यकता होती है।

इसलिए, मसीही जनों को एक दूसरे के आत्मिक वरदानों या कार्यों का आदर करना चाहिए। और मसीही जनों को अन्यो की उन विशिष्ट आत्मिक क्षमताओं और सामर्थ्य का सम्मान करना चाहिए जो उनसे बेहतर हैं। फिलिप्पियों 2:3 के अनुसार, मसीही जनों को “अन्यो को अपने से बेहतर समझना” चाहिए। इसका अर्थ है कि मसीही जनों को इस क्षेत्र में उनकी तुलना में जो बेहतर हैं उनका सम्मान करना चाहिए। उनकी सामर्थ्य और कलीसिया में उनके द्वारा किए जाने वाले विशेष योगदान की सराहना करें। किसी भी कलीसिया में एक दूसरे की आलोचना करने या जो अन्य मसीही जन कलीसिया में करते हैं उसे तुच्छ समझने से बढ़ कर विनाशकारी कुछ भी नहीं है। परन्तु जब मसीही जन एक दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं और एक दूसरे की सामर्थ्य और क्षमताओं की सराहना करते हैं, तब कलीसिया उन्नति करती है और उसका निर्माण होता है।

12:17-21

प्रश्न 5. पलटा लेने के बारे में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

ध्यान दें।

(1) मसीही जन कभी पलटा नहीं ले सकते।

वचन 17 कहता है, “बुराई के बदले किसी से बुराई न करो”। जबकि सरकार को बुराई करने वालों को दंड देना चाहिए (रोमियों 13:4), मसीही जन व्यवस्था को अपने हाथों में लेकर बुराई करने वालों को दंड नहीं दे सकते।

हालाँकि मसीही जन बुराई या अन्याय को सहते हैं, वे कभी पलटा नहीं ले सकते (रोमियों 12:19; 1 थिस्सलुनीकियों 5:15; 1 पतरस 3:9)। इसके बजाए, मसीही जनों को वही काम करने के लिए सावधान रहना चाहिए जो हर एक जन की दृष्टि में सही हो (2 कुरिन्थियों 8:21)। उनको केवल उस पर ही ध्यान नहीं देना है जो परमेश्वर की दृष्टि में उचित है (मत्ती 5:20-48; लूका 6:27-37), परन्तु उस पर भी ध्यान देना है जो गैर मसीही जनों की दृष्टि में भी सही है (2 कुरिन्थियों 4:2; 1 तीमुथियुस 3:7)। जब मसीही जन आचरण के इन नियमों का उल्लंघन करते हैं, तो वे मसीह पर तिरस्कार लाते हैं।

(2) मसीही जनों को हर एक जन के साथ मेल से रहना चाहिए।

वचन 18 कहता है, “जहाँ तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो”। जो आपके विरोध में बुराई करते हैं उनके साथ मेल से रहने का अर्थ तीन बातें होती हैं:

- उनके साथ झगड़ा नहीं करना।
- उनके साथ टूटे सम्बन्ध को सही करने के लिए कठिन प्रयास करना।

• उनके साथ भलाई करना।

यह हमेशा सम्भव नहीं होता है। कई बार दूसरों का लगातार बना रहने वाला बुरा व्यवहार आपको आप के साथ मेल से नहीं रहने देने का कारण होता है। और कई बार अधिक सोच-विचार करना जैसे कि “दूसरों के पापों में भाग नहीं लेना” (1तीमुथियुस 5:22), दूसरों के आप को अस्वीकार करने और आप से घृणा करने का कारण हो सकता है, क्योंकि आप उनके पाप में भाग नहीं लेना चाहते हैं।

हालाँकि मसीही जन सब लोगों के साथ मेल से रहना चाहते हैं, उनका कर्तव्य दूसरे मसीही जनों के पाप को डाँटने और झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं का विरोध करना भी है।

(3) मसीही जनों को न्याय करना परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए।

यीशु मसीहा वचन 19 कहता है, “परमेश्वर को क्रोध का अवसर दो”। लोगों का न्याय करना और उनको दंड देना केवल परमेश्वर के और उन लोगों के अधिकार में ही है जिनको परमेश्वर ने दंड देने का अधिकार प्रदान किया है। बाइबल में, परमेश्वर ने बुराई करने वाले लोगों को दंड देने का अधिकार निम्न लोगों को प्रदान किया है:

सरकार – किसी देश की सरकार के पास उनके देश में पाए जाने वाले सारे ही बुराई करने वाले लोगों को दंड देने का अधिकार और जिम्मेदारी है (रोमियों 13:3-4)। हालाँकि, उनका अधिकार सीमित है और उदाहरण के लिए उनके देश में रहने वाले नियमों का पालन करने वाले मसीही जनों को सताने के लिए उनके अधिकार को बढ़ाया नहीं जा सकता है (प्रेरितों के काम 4:19-20; 5:29)।

अभिभावकों के पास अपने अपरिपक्व बच्चों को बुरे कामों का दंड देने का अधिकार और जिम्मेदारी है (नीतिवचन 3:11-12; 13:24; 19:18; 22:15; 23:13-14; 29:15,17; इब्रानियों 12:5-11)। हालाँकि, उनका अधिकार सीमित है। पिता लोग अपने बच्चों से हताश नहीं हो सकते हैं और उनके प्रति कड़वाहट से नहीं भर सकते हैं (इफिसियों 6:4; कुलुस्सियों 3:21)।

स्थानीय कलीसिया के पास कलीसिया के अनुशासन¹⁰ का अभ्यास उन मसीही सदस्यों के प्रति जो निरंतर बुरे काम करने में लगे रहते हैं (1 कुरिन्थियों 5:12-13; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6,14-15; 1 तीमुथियुस 5:20; तीतुस 3:10) और विश्वासियों के मध्य के विवादों का निर्णय करने का (1 कुरिन्थियों 6:1-8) अधिकार और जिम्मेदारी है।

व्यक्तिगत। परन्तु वे सभी व्यक्तिगत अन्याय जो दूसरों के हाथों से मसीही जन सहते हैं उनका उत्तर अनपेक्षित दया के साथ दिया जाना चाहिए (मत्ती 5:38-41) और जवाबी कार्रवाई करने का आग्रह परमेश्वर के चरणों में छोड़ देना चाहिए। जब लोगों ने यीशु का तिरस्कार किया, तो उसने जवाबी कार्रवाई नहीं की; जब उसे सताया गया, तो उसने कोई धमकी नहीं दी। इसके बजाए उसने अपने आप को उसे सौंप दिया जो धार्मिकता से न्याय करता है” (1पतरस 2:21-23; तुलना करें भजन 37:5-13 से)!

(4) मसीही लोगों को भले काम करने के द्वारा बुराई पर जयवंत होना चाहिए।

वचन 20-21 कहता है, “बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो”। मसीही जनों को उस समय हतोत्साहित नहीं होना चाहिए जब अन्य लोग उन पर बुराई का ढेर लगाते हैं। इसके विपरीत, भले काम करने के द्वारा वे लोग शत्रुता को समाप्त करने और उन लोगों के बुरे कामों को रोकने के लिए परमेश्वर के उपकरण हैं जो उनको सताते हैं और उनके साथ बुरा व्यवहार

¹⁰ देखें www.dota.net नियमावली 8, अध्याय 39

करते हैं। इस रीति से वे उनके सिर पर जलते हुए कोयलों का ढेर लगाएँगे। ऐसा शत्रु या तो दया के साथ कोमल हो जाएगा, या, यदि वह इतना क्रूर है कि कोई भी बात उसे मना नहीं सकती है, तो वह शर्मिन्दगी की एक जलती हुई भावना से ग्रस्त हो जाएगा और उस दया के कारण पछताएगा जो मसीही जन उस पर उंडेलते हैं।

चरण 4. लागू करना।

अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 12:1-21 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 12:1-21 से सम्भव लागूकरण के उदाहरण।

- 12:1. अपनी देह के अंगों को परमेश्वर की सेवा में अपने पुनर्जीवित स्वभाव के साधनों के रूप में लगातार समर्पित करें।
- 12:1. अपनी देह को उन सब चीजों से अलग करें जो परमेश्वर को अप्रसन्न करती हैं और अपनी देह को उन चीजों को समर्पित करें जो परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं।
- 12:2. बुरे लोगों और प्रवृत्तियों की बाहरी अनुरूपता से बचें। इस बुरे युग के प्रतिरूप के सदृश्य होने की स्वयं को अनुमति न दें। आक्रामक भाषा बोलने, अपमानजनक गीत गाने, गंदी पत्रिकाएँ और पुस्तकें पढ़ने, अनैतिक फिल्में देखने, ललचाने वाले कपड़े पहनने, संदिग्ध खेलकूद में शामिल होने, और तथाकथित मित्रों की नास्तिकता और दुष्टता का अनुसरण करने से दूर रहें। जानबूझकर पाप से दूर हो जाएँ।
- 12:2. अपने आप को उस भीतरी बदलाव को समर्पित करें जो बाहरी बदलाव की ओर अगुवाई करता है। सक्रिय रूप से बदलाव की खोज करें, बाइबल में परमेश्वर की इच्छा की खोज करें, अपने मनो को परमेश्वर को वचनों से भरें और इस बात के इच्छुक बनें कि आप को बदलने के लिए पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन का उपयोग करें। अपने स्वयं के विवेक, मान्यताओं और धारणाओं को लगातार वापस बाइबल स्कूल भेजें और पवित्र आत्मा की ओर से निर्देश प्राप्त करें। इस बात की जाँच करें कि क्या आप की धारणाएँ बाइबल के साथ अनुरूपता में हैं। मसीही विकास में उन्नति में स्थिर होने से इनकार करें। आत्म-संतुष्टि से लड़ें।
- 12:3. यह न सोचें कि आप के पास एक विशेष आत्मिक वरदान या कार्य है जब कि परमेश्वर ने आप को ऐसा कोई वरदान या कार्य नहीं सौंपा है। अतिशयोक्तिपूर्ण आत्म-सम्मान का त्याग करें।
- 12:3. उस आत्मिक वरदान या कार्य का उपयोग करने से इनकार न करें जिसे परमेश्वर ने आप को सौंपा है। झूठी विनम्रता का त्याग करें।
- 12:5. इस बात को समझें और मान लें कि आप को दृढ़ रहने, उन्नति करें, सही से कार्य करने और परमेश्वर की सेवा करने के लिए अन्य मसीही जनों की आवश्यकता है। अस्वस्थ स्वतंत्रता का त्याग करें और स्वस्थ भीतरी निर्भरता का पोषण करें।
- 12:6. यदि आप के पास भविष्यद्वाणी करने का वरदान है, तो अतीत, वर्तमान या भविष्य के सत्कार के साथ बाइबल में लिखे हुए परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए इसका उपयोग करें।

- 12:8. यदि आप के पास दूसरों की आवश्यकताओं में योगदान करने का वरदान है, तो उन कारणों के लिए उदारता से दान दें जिससे आवश्यकता ग्रस्त लोगों को बड़ा फर्क पड़ेगा।
- 12:8. यदि आप के पास अगुवाई करने का वरदान है, तो लगन से शासन करें। परन्तु कभी भी एक सत्तावादी अगुवे न बनें (मत्ती 20:25-28)।
- 12:10. अन्य मसीही जनों का और उन वरदानों या कार्यों का आदर करें जो परमेश्वर ने उनको सौंपे हैं।
- 12:11. अपने कार्य को उत्साह और विश्वासयोग्यता के साथ करने से कभी न रुकें।
- 12:12. आनन्दित रहें क्योंकि परमेश्वर के वायदे भविष्य में अवश्य ही होने वाले हैं।
- 12:12. सताव में धीरज रखें, क्योंकि इससे प्रदर्शित होगा कि आप कठिन परिस्थितियों में भी प्रेम रखते हैं।
- 12:12. प्रार्थना में विश्वासयोग्य बनें, क्योंकि जो माँगता है उसे मिलता है, जो ढूँढ़ता है वह पाता है और जो खटखटाता है उसे खुला द्वार मिलता है।
- 12:13. आवश्यकता में पड़े अपने साथी मसीही जनों के साथ विशेष रूप से साझा करें। अतिथि-सत्कार का अभ्यास करें।
- 12:14. अपने सताने वाले लोगों को आशीष दो और जो आप के साथ बुरा बर्ताव करते हैं उनके लिए प्रार्थना करो (लूका 6:27-28)।
- 12:15. सहानुभूति का विकास करें।
- 12:16. निम्न स्तर वाले लोगों के साथ मेलजोल रखने के इच्छुक बनें।
- 12:17-21. बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।

2. रोमियों 12:1-21 से सम्भव लागूकरण के उदाहरण।

मैं इस बुरे संसार के बाहरी प्रतिमानों का अनुसरण करना नहीं चाहता। मैं नहीं चाहता कि यह बुरा संसार में अपने अपने साँचे में ढाले। इसके बजाए मैं अपने भीतरी मनुष्यत्व में बदलना, एक परिवर्तित मन पाना, परिवर्तित विवेक और परिवर्तित व्यवहार चाहता हूँ। इसलिए, मैं बुरी पत्रिकाओं को पढ़ने का या नास्तिक और दुष्ट लोगों के साथ अंतरंग शब्दों में शामिल होने से इनकार करूँगा। मैं अपने जीवन के लिए परमेश्वर की सिद्ध इच्छा को जानने की खोज करना चाहता हूँ।

मैं अतिशयोक्तिपूर्ण आत्म-सम्मान नहीं पाना चाहता हूँ, परन्तु बजाए इसके मैं अपना एक शुद्ध आकलन पाना चाहता हूँ। मैं अन्य मसीही जनों की सामर्थ्य की सराहना करना चाहता हूँ और कुछ विशेष क्षेत्रों में मुझसे बेहतर होने के लिए उनका आदर करना चाहता हूँ।

चरण 5. प्रार्थना।

प्रतिउत्तर

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 12:1-21 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5

प्रार्थना (8 मिनट)

/मध्यस्थता/

दूसरों के लिये प्रार्थना

दो या तीन समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिये और संसार भर के लोगों के लिये प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30;

6	तैयारी (2 मिनट) <i>[निर्धारित कार्य]</i> अगले अध्याय के लिये
---	---

(समूह अगुवा) समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी नदी करने दें।

1. **समर्पण।** चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 12:1-21 का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यिर्मयाह 25, 29, 30 और 31** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ
4. **स्मरण करना। (5) परमेश्वर की चंगाई। 2 इतिहास 7:14.** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **शिक्षा देना।** मत्ती 20:1-16. में पाए जाने वाले “**दाख की बारी के मजदूरों का दृष्टान्त**” के दृष्टान्त की तैयारी करें। दृष्टान्तों की व्याख्या करने के लिये उन छः निर्देशों का उपयोग करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)
7. परमेश्वर के राज्य के विषय पर प्रचार करने हेतु अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। अपने शांत समय के नोट्स, अपने स्मरणीय नोट्स, अपने बाइबल के अध्ययन के नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना
---	-----------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना करें।** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपे।

2	साझा करें (20 मिनट) [शांत समय] यिर्मयाह 25,29,30 और 31
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें (या** अपने नोट्स से **पढ़ें)** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यिर्मयाह 25,29,30 और 31) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट) [रोमियों में प्रमुख वचन] (5) 2 इतिहास 7:14
---	---

दो-दो करके पुनरावलोकन करें।

(5) परमेश्वर की चंगाई। 2 इतिहास 7:14. “तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चालसे फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूँगा।”

4	शिक्षा देना (85 मिनट) [यीशु के दृष्टान्त] दाख की बारी में मज़दूर
---	---

मत्ती अध्याय 20:1-16 में “दाख की बारी में मज़दूरों का दृष्टान्त”,

परमेश्वर के राज्य में पुरस्कार के बारे में दृष्टान्त है।

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों को उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेंगे (नियमावली 1, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें मत्ती 20:1-16.

1. दृष्टान्त की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। इस दृष्टांत को आलंकारिक भाषा में व्यक्त किया गया है और इस दृष्टांत का आत्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए सबसे पहले हम वचनों का और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। इस कहानी में पाए जाने वाले जीवन के लिए सत्य अवयव कौन से हैं?

ध्यान दें।

गृहस्वामी। सचमुच में वह घर का स्वामी है। सम्भवतः वह एक ऐसी सम्पदा का मालिक है, जो कि कई मकानों और एक बड़ी दाख की बारी से मिल कर बनी है।

किराए के मजदूर। कटाई के समय में, सामान्य रूप से मजदूरों को प्रतिदिन के आधार पर मजदूरी पर रखा जाता था। वे बाजारों में इकट्ठा होते थे, जहाँ काम कराने वाले उनको मजदूरी पर लेने के लिए आया करते थे। एक पूरे कार्य दिवस में सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक काम के 12 घंटे निहित हुआ करते थे। प्रत्येक दिन के अंत में, उनको उनकी मजदूरी दी जाती थी (लैव्यव्यवस्था 19:13)।

समझौता। सबसे पहले आने वाले मजदूरों ने गृहस्वामी के साथ एक दीनार में काम करने के लिए सहमति ठहराई। उस समय पर एक दीनार एक पूरे दिन के काम की मजदूरी है। बाद में आने वाले मजदूरों ने इस प्रकार का कोई समझौता नहीं किया, क्योंकि उन्होंने केवल दिन के कुछ भाग में काम किया था। हालाँकि, गृहस्वामी ने उनसे वायदा किया था कि जो ठीक होगा वह उनको देगा।

काम की मजदूरी। 12 घंटे के कार्य दिवस के अंत में, मजदूरों ने सामान्य रूप से एक दीनार प्राप्त किया। इस कहानी में सबसे पहले आने वाले मजदूरों ने वह प्राप्त किया जिसके लिए काम करने की उन्होंने सहमति ठहराई थी। हालाँकि, इस गृहस्वामी ने मजदूरों की अपेक्षा से बहुत बढ़ कर किया था। उसने सबसे अंत में आने वाले मजदूरों को सबसे पहले भुगतान करना आरम्भ किया। और उसने अंतिम मजदूरों को भी सबसे पहले वाले मजदूरों के समान ही धन का भुगतान किया।

2. तात्कालिक संदर्भ की जाँच करें और दृष्टांत के अवयवों को निर्धारित करें।

परिचय। इस दृष्टांत की 'कहानी' का संदर्भ दृष्टांत की "परिस्थिति" और "व्याख्या या लागूकरण" में निहित हो सकता है। इस दृष्टांत की परिस्थिति दृष्टांत को व्यक्त करने के लिए अवसर का बखान कर सकती है या दृष्टान्त को बताते समय परिस्थितियों को परिभाषित कर सकती है। सामान्य रूप से दृष्टांत की कहानी से पहले ही परिस्थिति मिल जाती है तथा व्याख्या या लागूकरण को सामान्य रूप से दृष्टांत की कहानी के बाद में पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की परिस्थिति, कहानी, और व्याख्या या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) मत्ती 19:16-30 में दृष्टांत की परिस्थिति को विस्तारित और निहित किया गया है।

दो बातें हमें दिखाती हैं कि इस दृष्टांत की परिस्थिति क्या है। पहला शब्द: "के लिए" दिखाता है कि यह पूर्ववर्ती बातों से जुड़ा हुआ है। और पूर्ववर्ती अनुच्छेद के उपसंहार के समान ही पूर्ववर्ती अनुच्छेद का उपसंहार भी है, "परन्तु जो पहले हैं, पिछले होंगे और जो पिछले हैं, पहले होंगे।"

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश न करने का जोखिम। मत्ती 19:16-26 एक जवान पुरुष का उल्लेख करता है, जो बहुत धनी

था, परन्तु उसे यह भी लगता था कि उसे अभी तक अनन्त जीवन (उद्धार) प्राप्त नहीं हुआ था। वह उद्धार पाने की खोज में था, परन्तु वह गलत तरीकों से प्रयास किया करता था। वह सोचता था कि उसे व्यवस्था की बातों का पालन करने के द्वारा उद्धार प्राप्त हो जाएगा (मत्ती 19:16,20)। यीशु ने दस आज्ञाओं की दूसरी सूची में की आज्ञाओं को उद्धरित किया था। उसे पहली सूची की आज्ञाओं को उद्धरित करने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि दूसरी सूची की आज्ञाओं का पालन करने में विफल होने का अर्थ पहली सूची की आज्ञाओं का पालन करने में विफल होना है (1यूहन्ना 4:20)।

उस धनी जवान पुरुष की प्रतिक्रिया यह प्रदर्शित करती है कि मसीह द्वारा आज्ञाओं की गहन आत्मिक व्याख्या के प्रति उसका रवैय्या बहुत दिखावटी था (मत्ती 5:21-48)। यीशु ने उत्तर दिया, “यदि तू सिद्ध होना चाहता है तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।” (मत्ती 19:21)।

यीशु ने उस धनी जवान पुरुष से भले काम करने के द्वारा उद्धार पाने के लिए नहीं कहा था! वह उस धनी जवान पुरुष को अपनी बातों के आज्ञापालन में दिखने वाले पूर्ण भरोसे की जाँच में डाल रहा था। बिना यीशु मसीह पर पूर्ण भरोसा किए, जो आत्म-समर्पण और आज्ञापालन में दिखाई पड़ता है, इस धनी जवान पुरुष से यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वह अपना सारा माल बेच डाले। यीशु जानते थे कि उसका हृदय उसकी सम्पत्ति से बँधा हुआ था। यदि यह धनी जवान पुरुष एक सिद्ध विश्वासी, या बेहतर व परिपक्व विश्वासी बनना चाहता था, तो उसे अपना सम्पूर्ण भरोसा यीशु मसीह पर रखना और यीशु द्वारा कही बातों को पूरा करना था। तब उसे जाकर अपनी सारी सम्पत्ति को बेच देना था, जो यीशु मसीह पर भरोसा करने और यीशु का शिष्य बनने के मार्ग में बाधा के रूप में खड़ी थी और तब वह एक शिष्य के समान यीशु का अनुसरण करना आरम्भ कर सकता था। यीशु का अनुसरण करने के द्वारा, वह अपने आप का इनकार करने, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाने और यीशु की गवाही देने के बारे में सीख सकता था। यीशु मसीह में बिना विश्वास और भरोसे के, जो आत्म-समर्पण और आज्ञापालन में दिखाई पड़ता है, कोई भी उद्धार नहीं पा सकता है!

यीशु मसीही बनने की इच्छा रखने वाले हर जन को अपना सब कुछ बेच देने वाली परीक्षा में डालता है जो कि एक बनना चाहता है! और साथ ही यीशु अपनी हर एक संतान को किसी भी विशेष परीक्षा में नहीं डालता है। पुराने नियम में अय्यूब, अब्राहम, याकूब और यूसुफ, और नये नियम में जक्कई और अरमतिआ का यूसुफ, ये वह लोग थे जिनके पास बहुत सम्पत्ति थी और उनको जाकर अपनी सम्पत्ति बेच देने के लिए नहीं कहा गया था! इसके अलावा, अब्राहम और बाकी के यह सब धनी लोग बचाए गए (धर्मी ठहराए गए) थे, किसी भले काम को करने के द्वारा नहीं, परन्तु केवल विश्वास के द्वारा (उत्पत्ति 15:6; रोमियों 3:28)! और जिस प्रकार का जीवन उन लोगों ने जीया उससे उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि उनका विश्वास सच्चा जीवित था (इब्रानियों 11:1-40; याकूब 2:21-23)।

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने में कठिनाई। उस धनी जवान पुरुष ने अपने धन और सम्पत्ति को रखने का और यीशु मसीह से फिर जाने का चुनाव किया। उसने अपने भरोसे को यीशु पर नहीं रखा और उसने यीशु का अनुसरण करना आरम्भ नहीं किया। तब यीशु ने कहा, “परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।” यीशु ने जो कहा और बताया था उसका वास्तव में अर्थ यह था कि किसी धनवान व्यक्ति के लिए काम करना, उसमें कीड़ा लगाना या परमेश्वर के राज्य में जाने के लिए उसके नये मार्ग को प्राप्त करना बिल्कुल असम्भव है! धन, संपत्ति, पैसा और ऐसी चीजें जो इन के साथ जुड़ी होती हैं अर्थात् सफलता, शक्ति और प्रसिद्धि, प्राकृतिक मनुष्यों के हृदय, मन और जीवन पर इतनी शक्तिशाली पकड़ बना लेती हैं कि वे खुद को इससे बाहर नहीं निकाल पाते हैं! यह बातें धनी, शक्तिशाली और

प्रसिद्ध लोगों को मोहित करती हैं, और उनको परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से रोके रखती हैं (मत्ती 6:24; 1तीमुथियुस 6:9-10)। यीशु ने अपने शिष्यों के मन को प्रभावित करने के लिए पूर्ण शब्दों में बात की कि आरम्भ से लेकर अंत तक उद्धार कोई मानवीय उपलब्धि नहीं है, लेकिन परमेश्वर की ओर से एक सर्वश्रेष्ठ और अनुग्रहकारी उपहार है (यूहन्ना 6:44-45; इफिसियों 2:8-9)।

मसीह के शिष्य इस गहन प्रकाशन से स्तब्ध थे और उन्होंने पूछा, “फिर किसका उद्धार हो सकता है?” शिष्यों ने यह तर्क सम्भवतः इसलिए दिया था क्योंकि गरीब लोग भी धनी बनना चाहते हैं, तो क्या वे भी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकेंगे। यीशु ने उत्तर दिया, “मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है” (मत्ती 19:26)। हर एक मनुष्य, चाहे धनी हो या गरीब, वह उद्धार के लिए पूर्ण रूप से परमेश्वर पर निर्भर करता है। अपने आप से, कोई भी व्यक्ति स्वयं के उद्धार के लिए कुछ भी नहीं कर सकता है! किसी भी व्यक्ति को उद्धार केवल इसलिए प्राप्त हुआ है क्योंकि उसने पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा, ऊपर से नया जन्म पाया है। “अचम्भा न कर कि मैंने तुझ से कहा, ‘तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है’” (यूहन्ना 3:3-8)। यहाँ तक कि परमेश्वर ऐसा विश्वास भी प्रदान करते हैं जिसका उस जन को अभ्यास करना है। “जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया।” (प्रेरितों. 13:48; तुलना करें फिलिप्पियों 1:29 से)। इस प्रकार से, संक्षेप में, यीशु मसीह सिखाते हैं कि लोगों का उद्धार उनके अपने ही किसी प्रयत्न के द्वारा नहीं होता है, परन्तु उनका उद्धार केवल परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के द्वारा होता है (2तीमुथियुस 1:9-10)।

परमेश्वर के राज्य में त्यागपूर्ण सेवा के लिए पुरस्कार। पतरस ने कहा कि वह और अन्य शिष्य अपना सब कुछ त्याग कर मसीह के पीछे हो लिए थे। और उसने पूछा कि उनको क्या मिलेगा। एक तरफ तो पतरस और अन्य शिष्यों ने बिलकुल वही किया जो यीशु ने उस धनी जवान पुरुष से करने के लिए कहा था। वे अपना सब कुछ त्याग कर यीशु के पीछे हो लिए थे (लूका 5:11)। दूसरी तरफ, यीशु ने कहा कि ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे कोई मनुष्य उद्धार पाने के लिए कर सकता है (मरकुस 10:26-27)। यह केवल परमेश्वर ही है जो अनन्त जीवन (उद्धार) प्रदान करता है!

यीशु ने अपने चेलों को सुनिश्चित करने वाला उत्तर दिया। “ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे सुसमाचार के लिए घर या भाइयों बहिनों या माता या पिता या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो, और अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और बाल-बच्चों और खेतों को, पर सताव के साथ और परलोक में अनन्त जीवना।” (मरकुस 10:29-30)। जिस किसी ने भी यीशु मसीह के लिए बलिदान चढ़ाया है, तो जितना उन्होंने त्यागा है उसकी तुलना में इस वर्तमान समय में वह उससे कहीं अधिक प्राप्त करेगा। सताव और कष्टों के बावजूद जिनका उनको इस पृथ्वी पर मसीह के लिए सामना करना पड़ता है, वे अधर्मी लोगों की तुलना में लोगों के साथ भौतिक सम्पत्ति और सम्बन्धों का बहुत अधिक आनन्द लेंगे। और मसीह के दूसरे आगमन के पश्चात वे नये स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में परमेश्वर के राज्य को उसके अंतिम रूप में प्राप्त करेंगे।

प्रथम और अंतिम होने के बारे में चेतावनी। परमेश्वर लोगों पर या उनकी सफलताओं को उस प्रकार से नहीं देखते हैं जैसे कि सांसारिक लोग देखते हैं। 1शमूएल 16:7 कहता है, “क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है, मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है” (1कुरिन्थियों 4:5)। “जो लोग पहले हैं” यह वे लोग हैं, जो अपनी सम्पत्ति, शिक्षण योग्यता, और पद, या सफलता, उपलब्धियों और प्रतिष्ठा के कारण, सामान्य लोगों के, और कभी कभी मसीही जनों के भी मध्य में बहुत सम्माननीय होते हैं। परन्तु क्योंकि परमेश्वर मनो को देखता है, इसलिए इनमें से बहुत से लोगों

को परमेश्वर के राज्य में अन्यो के पीछे स्थापित किया जाएगा, और कुछ को परमेश्वर के राज्य से बाहर कर दिया जाएगा (मत्ती 7:21-23)।

“जो लोग पहले हैं” यह वे लोग भी हो सकते हैं जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया था और अपनी अल्प आयु में ही कलीसिया में गए थे। परन्तु बजाए इस बात को एक महान सौभाग्य के रूप में देखने के, वे इसे एक योग्यता के रूप में समझते हैं, कुछ ऐसा जिसके लिए परमेश्वर उनको पुरस्कृत करेगा।

“जो लोग पिछले हैं” वे लोग हो सकते हैं जिनके जीवन बाद में परिवर्तित हो गए, जिस प्रकार से जक्कई, जो कठोर व्यापारी और चुंगी लेने वाला था (लूका 19:1-10) या भयंकर अपराधी और हत्यारा जिसे यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था (लूका 23:39-43)। जिनको कलीसिया में अत्यन्त महत्वपूर्ण समझा जाता है उनमें से बहुत से पिछले होंगे, और ऐसे बहुत से जो पृथ्वी पर एकदम अज्ञात थे वे पहले होंगे। ऐसे लोग उस कंगाल विधवा के जैसे हो सकते हैं, जिसने अपनी सारी जीविका को दान में दे दिया (मरकुस 12:41-44), या बैतनिय्याह की रहने वाली मरियम, जिसके द्वारा यीशु के प्रति किए गए दयालु कार्य की शिष्यों के द्वारा आलोचना की गई थी (मत्ती 26:8), या संसार में रहने वाले बहुत से बच्चे, जिन्होंने अपने भरोसे को यीशु मसीह पर रखा, जबकि शिष्यों ने अपने पद के महत्व के बारे में झगड़ा किया था (मत्ती 18:1-4; 20:20-28)। इसी कारण से यीशु ने अपने शिष्यों और सभी मसीही जनों को यह चेतावनी दी है कि वे ऐसी आत्मा से सावधान रहें जो “पहले होने” की इच्छा करती है।

दाख के मजदूरों का दृष्टांत इस सिद्धांत की व्याख्या करता है कि जो पहले हैं वह पिछले होंगे और जो पिछले हैं वह पहले होंगे। जब यीशु ने कहा, “स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्वामी के समान है, आदि।”, तब वह हमें यह बताना चाहते हैं कि अंतिम न्याय के दिन में अर्थात् परमेश्वर का राज्य आने पर, उसके अंतिम चरण में क्या होगा।

(2) मत्ती 20:1-15 में इस दृष्टांत की कहानी को निहित किया गया है।

(3) मत्ती 20:16 में इस दृष्टांत की व्याख्या या अनुप्रयोग को निहित किया गया है।

यीशु इस दृष्टांत का समापन उस प्रकार से करते हैं जैसे उसने मत्ती 19:16-30 में समापन किया था, “परन्तु बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे, और जो पिछले हैं, पहले होंगे।” यीशु अपने शिष्यों और सभी मसीही जनों को चेतावनी देता है कि वे उन पहलों के बीच में न हों जो कि पिछले होंगे!

उन लोगों के बारे में तीन बातें कहीं जा सकती हैं जो अपने आप को पहले वालों के रूप में समझते हैं:

पहले वालों में गिने जाने वाले लोग सोचते हैं कि उनको उनके द्वारा पूरे किए गए काम के लिए पुरस्कृत किया जाना चाहिए! पतरस यह जानने के लिए उत्सुक था कि उसे और अन्य शिष्यों को क्या हासिल होगा, क्योंकि उन्होंने सब कुछ त्याग कर यीशु का अनुसरण किया था। यीशु ने वायदा किया था कि वे लोग अपने भरोसे और आज्ञाकारिता के लिए बहुतायत से पुरस्कृत किए जाएंगे। परन्तु उसने उनको चेतावनी दी कि आत्मिक मामलों के सम्बन्ध में मजदूरी के लिए काम करने की आत्मा का शिकार होने से बचें! वे परमेश्वर की ओर से अनुग्रहकारी वरदान के रूप में अपने उद्धार को प्राप्त करते हैं, किसी ऐसी वस्तु के रूप में नहीं जो उन्होंने कमाई हो! इसलिए, परमेश्वर की ओर से मिलने वाले पुरस्कार, पृथ्वी पर लोगों की तरफ से मिलने वाले पुरस्कारों के समान नहीं होते हैं। केवल उद्धार ही नहीं, परन्तु परमेश्वर के राज्य में सेवा के लिए परमेश्वर की ओर से मिलने वाले पुरस्कार भी (1कुरिन्थियों 3:11-15) उसके लोगों के लिए परमेश्वर के योग्य अनुग्रह और प्रेम का प्रदर्शन हैं।

परमेश्वर की ओर से मिलने वाले पुरस्कार कभी भी पूरे किए गए काम का मुआवजा नहीं होते हैं।

जिनको पहले वालों में गिना जाता है वे लोग सोचते हैं कि उनको उनके द्वारा पूरे किए गए काम के अनुपात में पुरस्कृत किया जाना चाहिए। वे यह पहचानने में विफल हो गए हैं कि परमेश्वर पूर्ण रूप से सर्वश्रेष्ठ हैं और अपनी कृपा को बाँटने का अधिकार केवल उसी के पास है और वह अपने पुरस्कारों को तभी देते हैं जब वह प्रसन्न होते हैं ! यदि परमेश्वर उस व्यक्ति के समान जो अपने सम्पूर्ण जीवन में मसीही जन रहो हो, अपनी कृपा को किसी ऐसे व्यक्ति को देना चाहते हैं, जो केवल अपने जीवन के अंत के दिन में मसीही जन रहा हो, तो परमेश्वर के पास ऐसा करने का अधिकार है। कोई भी मनुष्य परमेश्वर की आलोचना नहीं कर सकता है, क्योंकि हर एक जन ने परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा उद्धार पाया हुआ है, और न कि उसके व्यवस्था के कामों से, उसके भले कामों या उसकी उपलब्धियों से, और न ही उसके समर्पण, उत्साह या बलिदान के कारण ! इसलिए, यह दृष्टांत शिक्षा प्रदान करता है कि कोई भी परमेश्वर से कुछ भी हासिल करने का हकदार नहीं है, उद्धार भी नहीं, जो एकमात्र पुरस्कार है। यह परमेश्वर की स्वतंत्रता और सम्प्रभुता पर बल डालता है कि वह विशुद्ध रूप से उसकी कृपा से अपने पुरस्कार प्रदान करता है।

जिनको पहले वालों में गिना जाता है वे लोग सोचते हैं कि जिन लोगों ने काम नहीं किया है उन्हें पुरस्कृत नहीं किया जाना चाहिए। वे अक्सर ऐसे छोटे और अज्ञात लोगों से ईर्ष्या रखते हैं, जिनको परमेश्वर उनसे बढ़ कर बड़ी प्रतिष्ठा प्रदान करता है जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में परमेश्वर के लिए कठोर परिश्रम किया है! इसलिए, यह दृष्टांत मसीही जनों को शिक्षा देता है कि वे अपने श्रम या परमेश्वर के राज्य में पाई गई उपलब्धियों के लिए स्वयं पर घमंड करने से बचें!

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरणों की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण में से कुछ आत्मिक महत्व पाने का इरादा नहीं किया था। यह प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में पाए जाने वाले ऐसे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को मजबूत करते हैं। इसलिए हमें दृष्टांत की कहानी के हर विवरण के लिए स्वतंत्र आत्मिक महत्व को जिम्मेदार नहीं ठहराना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन से विवरण वास्तव में आवश्यक और प्रासंगिक हैं।

ध्यान दें।

(1) दृष्टांत को एक रूपक के रूप में समझाना (रूपक)।

इस दृष्टांत के साथ अक्सर रूपक की व्याख्या द्वारा दुर्व्यवहार किया गया है। हालाँकि कुछ अनुवादकों ने अन्य बहुत ही मूल्यवान शिक्षाओं को लिखा है और वे इस दृष्टांत के लिए एक रूपक अर्थ के साथ आए हैं, जिसे इसके संदर्भ से कम नहीं किया जा सकता है और फलस्वरूप जिसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।

इरेनाइयुस (130-200 ई.प.) ने इस दृष्टांत की व्याख्या निम्नलिखित रूप से की है। “गृहस्वामी” परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है। “अलग-अलग पहर में रखे गए मजदूर” सृष्टि के समय के लोगों, सृष्टि हो जाने के बाद के लोगों और अंत समय के लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

ओरिजेन (185-254 ई.प.) ने इस दृष्टांत की व्याख्या निम्नलिखित रूप से की है। “गृहस्वामी” परमेश्वर का प्रतिनिधित्व

करता है। “पहली पारी के मजदूर” सृष्टि के समय से लेकर नूह तक लोगों की पीढ़ियों का प्रतीक हैं। “दूसरी पारी के मजदूर” नूह के समय से लेकर अब्राहम तक लोगों की पीढ़ियों का प्रतीक हैं। “तीसरी पारी के मजदूर” अब्राहम के समय से लेकर मूसा तक लोगों की पीढ़ियों का प्रतीक हैं। “चौथी पारी के मजदूर” मूसा के समय से लेकर यहोशू तक लोगों की पीढ़ियों का प्रतीक हैं। “पाँचवीं पारी के मजदूर” यहोशू के समय से लेकर यीशु तक लोगों की पीढ़ियों का प्रतीक हैं। “दीनार” उद्धार का प्रतिनिधित्व करती है।

ग्रेगरी द ग्रेट (540-604 ई.प.) ने इस दृष्टांत की व्याख्या निम्नलिखित रूप से की है। “दाख की बारी” सृष्टि के समय से लेकर मसीह के दूसरे आगमन तक की कलीसिया का प्रतीक है। “गृहस्वामी” परमेश्वर का प्रतीक है। “मजदूर” वे शिक्षक हैं जो विभिन्न समयों में कलीसिया में आने वाले मसीही जनों को निर्देश प्रदान करते हैं, आदम से लेकर नूह तक, नूह से लेकर अब्राहम तक, अब्राहम से लेकर मूसा तक, मूसा से लेकर यीशु तक। “पहले, तीसरे, छठे, सातवें और नौवें घंटे के मजदूर” उन इब्रानी लोगों को दर्शाते हैं, जिन्होंने परमेश्वर की महिमा की और उसे आदर प्रदान किया और संसार के आरम्भ से ही दाख की बारी की खेती करने के लिए दृढ़ रहे। “ग्यारहवाँ घंटा” मसीह के पहले आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन की समयावधि का प्रतीक है। “ग्यारहवें घंटे के मजदूर” प्रेरितों को दर्शाते हैं, या किसी अन्य व्याख्या में, अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। या विभिन्न घंटे एक व्यक्ति के जीवन के विभिन्न चरणों को दर्शाते हैं: बचपन, किशोरावस्था, युवा, वयस्क, अर्धेड़ आयु और वृद्धावस्था।

लेंस्की ने इस दृष्टांत की व्याख्या निम्नलिखित रूप से की है। “भंडारी” मसीह को दर्शाता है। “दीनार” अस्थायी या सांसारिक आशीषों का प्रतीक है। “ग्यारहवें घंटे में किराए पर लिए गए मजदूर” अक्षम्य आलस्य में समय बिताने वाले लोगों को दर्शाते हैं।

अन्य व्याख्याएँ जिनको अवश्य ही अस्वीकार किया जाना चाहिए:

यहूदी और अन्यजाति: “जिन्हें पहले बुलाया गया” वे यहूदियों का प्रतिनिधित्व करते हैं और “जिन्हें बाद में बुलाया गया” वे अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके संदर्भ में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह सुझाव देता है।

मालिक-कर्मचारी के संबंध: “मालिकों को अपने मजदूरों को एक जैसा ही वेतन देना चाहिए, चाहे कोई कितना भी काम करें!” इस संदर्भ में कुछ भी ऐसा नहीं है जो ऐसा सिखाये। यीशु का यह सिखाने का इरादा नहीं है कि इस सिद्धांत को मजदूरी और व्यापार में सामान्य रूप से लागू किया जाना चाहिए। इससे आलस्य, अराजकता और भ्रष्टाचार पैदा होगा और यह बाइबल भी नहीं है। “यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए।” (2थिस्सलुनीकियों 3:10)।

इसके विपरीत, यीशु ने यह सिखाने का इरादा किया कि सिद्धांत “जितने पिछले हैं, वे पहले हो जायेंगे और जो पहले हैं, वे पिछले होंगे। लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार को दर्शाते हैं! यीशु उस रवैये की निंदा करते हैं जो “इतने काम के लिए इतना वेतन” के आधार पर परमेश्वर से सौदा करने का प्रयास करता है।¹¹

जॉन एन डर्बी (1800-1882) का विधान। “यीशु ने दुनिया के इतिहास को सात विधानों में विभाजित किया है” (1) बाढ़ से पहले स्वर्ग की स्थिति, (2) नूह, (3) अब्राहम, (4) राजा, पुरोहित और व्यवस्था के अधीन इस्राएल (5) अन्यजातियों,

¹¹ कुछ मसीहियों, यहूदियों और मुसलमानों में उद्धार व्यवस्था (तोरह व शरिया) के कार्यों के द्वारा है। हिन्दुओं और बौद्धों में कर्म व पुनर्जन्म है।

(6) पवित्र आत्मा, (7) सहस्राब्दी साम्राज्य।¹² बाइबल में ऐसा कुछ भी नहीं है जो बाइबल को सात विधानों में विभाजित करने का सुझाव देता है जिसमें एक दूसरे के साथ विरोधाभासी सिद्धांत शामिल हैं (उदाहरण के लिए, इस्राएल के विभाजन और कलीसिया के विभाजन के अंत में दूसरे आगमन पर व्यवस्था को न्यायोचित बनाये रखना)। यीशु स्वयं दृष्टांत बताते हैं कि “जो पिछले हैं, वे पहले होंगे, और जो पहले हैं, वे पिछले होंगे”, का सिद्धांत को दर्शाते हुए। वह निश्चित रूप से कलीसिया के इतिहास के विभिन्न चरणों का वर्णन नहीं करता है।”

(2) सम्बंधित विवरणों की व्याख्या।

गृहस्वामी के पास यह अधिकार है कि वह जिसे चाहे उसे काम पर रख सकता है और अपने पैसे से वह जो चाहे कर सकता है। तथ्य यह है कि यीशु इस गृहस्वामी के साथ परमेश्वर के राज्य की तुलना करते हैं, यह दर्शाता है कि वह इस तथ्य पर तुरंत ध्यान दिलाता है कि परमेश्वर सब कुछ और सभी के स्वामी हैं, और यह कि परमेश्वर लोगों की नियति को पूर्ण संप्रभु तरीके से निर्धारित करता है। परमेश्वर को शासन करने का अधिकार है और हमें नहीं। उद्धार उसका मुफ्त उपहार है न कि मानव प्रयास का फल (इफिसियों 2: 8-9) यह विवरण प्रासंगिक है।

पहले मजदूर के साथ समझौता उचित था। यीशु के समय में मजदूर के रूप में सैनिकों के लिए मानक दैनिक वेतन एक दीनार था। तथ्य यह है कि जमींदार ने इन पहले घंटे के मजदूरों के साथ एक समझौता किया, एक मजदूरी का करार, जो यह दर्शाता है कि ये श्रमिक निश्चित रूप से मजदूरी के लिए काम कर रहे थे। दोनों मालिक और साथ ही कर्मचारियों ने इसे उचित माना, क्योंकि वे इस पर सहमत थे। यह प्रासंगिक है।

तीसरा, छठा, नौवां और ग्यारहवां घंटा।

सामान्य श्रम परिस्थितियों में, मजदूरों को दिन के अंत से ठीक एक घंटे पहले काम पर रखना बेहद अजीब होगा! यीशु निश्चित रूप से इन विवरणों को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं और इसलिए वे प्रासंगिक नहीं हैं। जो स्पष्ट हो जाता है वह यह है कि गृहस्वामी को केवल अपने दाख की बारी और उसमें किए गए कार्यों में ही दिलचस्पी नहीं है, बल्कि विशेष रूप से बेरोजगार मजदूरों में भी है! जो महत्वपूर्ण है वह यह नहीं की उसने कितनी देर तक काम किया, लेकिन यह कि उन्हें काम मिला है!

आखिरी मजदूरों से किया वादा। उन मजदूरों के साथ जिन्होंने दिन की शुरुआत के बाद अपना काम शुरू किया, गृहस्वामी ने कोई समझौता नहीं किया। उसने सिर्फ उनसे वादा किया कि जो सही होगा, वह उन्हें चुका देगा। यह विवरण इसलिए भी प्रासंगिक है, क्योंकि गृहस्वामी बाद में कहता है कि उसे अपने पैसे से वह करने का अधिकार है जो वह चाहता है। यह दृष्टांत के केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश को भी बताता है, अर्थात् परमेश्वर के पास वह अधिकार है जिसके सम्बन्ध में वह जिसे वह नियुक्त करता है और वह उन्हें कैसे पुरस्कार देता है।

शब्द “जब शाम आई” (मत्ती 20: 8)। ये शब्द प्रासंगिक हैं। संदर्भ (मत्ती 19:28) दुनिया के इतिहास के अंत की ओर इशारा करता है, जब मसीह सभी लोगों का न्याय करेगा। इसमें केंद्रीय बिंदु या दृष्टान्त के मुख्य संदेश का संदर्भ दिया गया है, अर्थात्, उस दिन आने पर क्या होगा।

दाख की बारी का गृहस्वामी (मत्ती 20:8)। कुछ अनुवादक गृहस्वामी के सरदार को आदेश में, इस तथ्य का प्रतीकात्मक संकेत देखते हैं कि “पिता किसी का न्याय नहीं करता, लेकिन न्याय करने का सब काम बेटे को सौंप दिया जाता है।” (यूहन्ना

¹² www.deltacourse.org में जाकर परिशिष्ट 4 में “प्रकाशितवाक्य – अंतिम पुस्तक” को देखें।

5:22)। लेकिन क्योंकि गृहस्वामी का वचन 11-15 से कोई कार्य नहीं होता है, इसलिए यह व्याख्या कि “गृहस्वामी” पिता का प्रतिनिधित्व करता है और “सरदार” पुत्र संदिग्ध है। सरदार को कहानी से समबन्धित एक आकृति के रूप में मानना बेहतर है और इससे सीखे जाने वाले सबक के लिए नहीं। वह केवल कहानी को अधिक रोचक और जीवित बनाता है।

मजदूरी का भुगतान अंतिम मजदूरों से शुरू होता है। यह विवरण प्रासंगिक है, क्योंकि मसीह ने कहा, “जो पिछले हैं, वे पहले होंगे।” यह आदेश पहले मजदूरों को यह देखने का मौका देता है कि गृहस्वामी दिन के अंत में आखिरी मजदूरों का क्या करेगा।

हर एक को एक ही पुरुस्कार मिलता है। जब अंतिम मजदूरों को एक दीनार दिया गया था, तो पहले मजदूरों को अपने और गृहस्वामी के बीच सहमति से अधिक प्राप्त होने की उम्मीद थी। हालांकि, पहले मजदूरों को अंतिम मजदूरों के समान राशि मिलती थी। वे गृहस्वामी के खिलाफ बड़बड़ाने लगे। वे न केवल जो उनको प्राप्त हुआ उस से असंतुष्ट थे, बल्कि इस बात से भी सहमत थे कि दूसरों को क्या दिया गया था। उनके असंतोष का मुख्य कारण यह था कि अन्य, हालांकि, आखिरी थे, पहले बने थे, और वे, हालांकि, पहले, अंतिम बना दिया गया था! हालांकि, उनके बुरे रवैये के लिए केवल उन्हें ही दोषी ठहराया गया था, क्योंकि उन्हें वह मिला था जिसके लिए वह शुरू होने से पहले गृहस्वामी के साथ सहमत हुए थे। इससे पता चला कि उन्होंने मजदूरी के लिए काम करने की भावना का आश्रय लिया था, कि वे मालिक के अधिकारों को पहचानने में विफल रहे, और यह कि वे ईर्ष्यालु थे।

सभी सच्चे मसीहियों को अनुग्रह के रूप में दिया गया केवल एक पुरुस्कार है, अर्थात्, वे सभी अपने अंतिम चरण में परमेश्वर के राज्य की विरासत में हिस्सा लेंगे!

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषय) या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या कहानी से ही मिला है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टान्तों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टान्त में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ होता है, एक केंद्रीय बिंदु बनाने के लिए। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आत्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 20: 1-16 में दाख की बारी में श्रमिकों के दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में पुरुस्कार" के बारे में सिखाता है।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। “परमेश्वर के पास वह अधिकार है की वह अपने राज्य में किसे काम पर रखे और अंतिम न्याय के दिन वह उन्हें क्या पुरुस्कार दे। इसलिए लोगों को सबसे पहले अंतिम होने वाले लोगों में होने से बचना चाहिए। उन्हें आत्मिक मामलों के संबंध में मजदूरी-के-लिए-काम की भावना में गिरने से बचना चाहिए।” वे अपने उद्धार को परमेश्वर से एक अनुग्रहपूर्ण उपहार के रूप में प्राप्त करते हैं, न कि किसी वस्तु के रूप में जो उन्होंने कमाई की है!

निःस्वार्थ सेवा, परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग अपेक्षा किए बिना

या पुरस्कार की मांग के बिना सेवा करते हैं। वे आत्मिक मामलों के संबंध में मजदूरी-के-लिए-काम की भावना के शिकार होने से बचते हैं (मत्ती 19:16,22,27; 20:2,13)। वे परमेश्वर की संप्रभुता को पहचानने में असफल नहीं होते हैं, अर्थात्, जब वह प्रसन्न होता है वह अपनी कृपा को वितरित करने का अधिकार रखता है (मत्ती 20:14-15, 23)। वे स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर लोगों को एक संप्रभु तरीके से बुलाता है, और वह जिनको वह बुलाता है देता है, जो भी पुरस्कार वह उपयुक्त समझता है, वह भी संप्रभु तरीके से! और अंत में, परमेश्वर के राज्य के लोग किसी से भी ईर्ष्या करने से बचते हैं जो परमेश्वर से अधिक प्राप्त करता है, जितना वे अपेक्षा करते हैं या सोचते हैं (मत्ती 20:15, 20-28)। वे महसूस करते हैं कि मसीह के प्रेम को जानना और परमेश्वर की बेल या राज्य में काम करना बहुत ही सौभाग्य की बात है!

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत पद्यांशों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य अंशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण प्रति-संदर्भ खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। इनमें से हरेक बाइबल पद्यांश कैसे सिखाती है, जिसकी तुलना दाख की बारी में काम करनेवालों के दृष्टांत से कैसे होती है?

(1) परमेश्वर के पास एक संप्रभु अधिकार है की वह उसे रखता है जिसे वह अपनी सेवा में रखना चाहता है (मरकुस 13:34)।

प्रभु यीशु मसीह ने अपने दासों को अपने घर या दाख की बारी (दुनिया भर में मसीही कलीसिया या राज्य को अपने वर्तमान चरण में) में रखा है और प्रत्येक दास को इसमें अपना काम सौंपा है। इस प्रकार, प्रत्येक मसीही को यह पता लगाना चाहिए कि प्रभु उसके द्वारा कलीसिया और इस वर्तमान दुनिया में क्या करवाना चाहता है। उनका जीवन प्रभु के लिए सार्थक है और कोई भी उनके योगदान की अवहेलना नहीं कर सकता है।

(2) केवल परमेश्वर ही वास्तविक विकास देते हैं

और दासों को स्वयं को परमेश्वर के सहकर्मी

(1 कुरिन्थियों 3:5-11) के रूप में मानना चाहिए।

उनके दास पौलुस को कुरिन्थ में सुसमाचार के बीज बोने का काम सौंपा गया था और उसके दास अपुल्लोस को कुरिन्थ में बढ़ते पौधों को पानी देने का काम सौंपा गया था।

(3) परमेश्वर के पास अपनी इच्छा के अनुसार अपने दासों को पुरस्कृत करने का अधिकार है

(1 कुरिन्थियों 3:10-15)।

उनके कुछ दास या साथी कर्मी बहुत सावधान रहते थे कि वे अपने निर्धारित काम को कैसे पूरा करते हैं। उन्होंने ऐसी सामग्रियों के साथ निर्माण किया, जिन्हें नष्ट नहीं किया जा सकता था। अंतिम न्याय के दिन उनके काम का अग्नि परीक्षण किया जाएगा और इससे उनके काम की गुणवत्ता का पता चलेगा। जब उनका काम अग्नि की परीक्षा से बचेगा, परमेश्वर उन्हें पुरस्कृत करेंगे। वह उन्हें कैसे पुरस्कृत करेगा, इस सन्देश में नहीं बताया गया है।

(4) विश्वास के माध्यम से धर्म के लिए विजय प्राप्त होती है

(1कुरिन्थियों 9:24-27; 2तीमुथियुस 4:6-8)।

किसी प्रतियोगिता में विजेता को इस तरह की माला मिलती है। लेकिन यहां सभी धावकों को एक जीत माल्यार्पण मिलता है जो हमेशा के लिए चलेगा, विश्वास के माध्यम से धर्म के लिए ताज (ग्रीक: हो तेस डिकाइओसुनेस स्टेफानोस)। परमेश्वर सार्वजनिक रूप से घोषणा करेंगे कि यीशु मसीह के उद्धार के सिद्ध कार्य के माध्यम से उनके दास को विश्वास से पूरी तरह से न्यायोचित ठहराया गया है। यह परमेश्वर की निपुण धार्मिकता का प्रतीक है जिसे मसीह ने अर्जित किया और परमेश्वर ने आस्तिक (प्रतिरूप) को विश्वास दिलाया!

(5) दस मुहरों (लूका 19:11-27) के दृष्टान्त (देखें परिशिष्ट 15)।

धार्मिकता के मुकुट से परे परमेश्वर के विशिष्ट पुरस्कार विश्वास और परिश्रम के विभिन्न अंशों पर आधारित होते हैं। विश्वास और परिश्रम के विभिन्न स्तरों के लिए पुरस्कार के विभिन्न स्तर हैं! जिस सेवक में अधिक विश्वास और परिश्रम होता है, उसे नई पृथ्वी पर अपने अंतिम चरण में परमेश्वर के राज्य में एक बड़ी जिम्मेदारी दी जाएगी (तुलना करें। 1कुरिन्थियों 3:10-15)।

(6) अयोग्य सेवक का दृष्टान्त (लूका 17:7-10) (परिशिष्ट 39 को देखें)।

मसीहियों को मजदूरी के बदले काम की भावना के शिकार होने से बचना चाहिए। दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित हो सकता है। “मसीहियों को योग्य सेवक बनने का प्रयास करना चाहिए, जो केवल अपने कर्तव्य से अधिक करते हैं।” मसीहियों को जो कुछ भी करने के लिए कहा जाता है, केवल उसे करते हुए दास की भावना के साथ सेवा नहीं करनी चाहिए। उन्हें स्वतंत्र भावना के साथ सेवा करनी चाहिए, स्वेच्छा से, तहे दिल से और खुशी से जितना वे करने के लिए कहा जाता है उससे अधिक करना चाहिए। वे प्रेम और कृतज्ञता की भावना से सेवा करते हैं। परमेश्वर के राज्य में एक सुस्त आत्मा को कोई प्राथमिकता नहीं मिलती है!

या दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित हो सकता है। “मसीहियों को अपने आप को अयोग्य सेवकों के रूप में मानना चाहिए, जो अपना कर्तव्य करते हैं।” मसीहियों को गर्व की भावना के साथ सेवा नहीं करनी चाहिए, यह सोचकर कि वे जो करने के लिए कहा जाता है, करने के लिए प्रशंसा, श्रेय या पुरस्कार के योग्य हैं। उन्हें सेवा का एक विशेषाधिकार के रूप में सम्मान करना चाहिए, उनकी आज्ञाकारिता के लिए श्रेय की उम्मीद किए बिना। वे नम्रता की भावना से सेवा करते हैं। परमेश्वर के राज्य में एक गर्व की भावना से प्राथमिकता प्राप्त नहीं होती है (तुलना करें 1पतरस 5:5-6)।

4. दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों को संक्षेप में वर्णन करें।

चर्चा करें। दाख की बारी में दासों के दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा क्या है ? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना या मानना सिखाया और उसने हमें क्या करना या बनना सिखाया?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर कैसे हैं।

परमेश्वर अंतिम न्याय पर प्रत्येक मसीही को कृपा के साथ पुरस्कृत करेंगे। हालाँकि, ये सभी पुरस्कार मसीहियों को इसलिए नहीं दिए गए हैं कि वे उनके लायक हैं या उन्होंने उन्हें अर्जित किया है, बल्कि इसलिए कि सब कुछ परमेश्वर के प्रेम और

अनुग्रह पर आधारित है। इफिसियों 2:10 के अनुसार भी जो कार्य मसीही करते हैं वह परमेश्वर की कृपा पर आधारित होता है!

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें क्या होना चाहिए।

महत्वपूर्ण यह है कि परमेश्वर की सेवा सही स्वभाव या आत्मा के साथ करना और ईमानदारी और लगन से करनी चाहिए: परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग आत्मिक मामलों के लिए मजदूरी के लिए काम की भावना के शिकार होने से बचते हैं, और इसके बजाय परमेश्वर के संप्रभु अधिकार को पहचानते हैं की वह जिसको चाहते हैं बुलाते हैं और अपनी इच्छा के अनुसार लोगों को पुरस्कृत करते हैं।

5	प्रार्थना (8 मिनट) <i>[प्रतिक्रियाएँ]</i> परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना
----------	---

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से **छोटी-छोटी प्रार्थना** करने के लिए समूह में **बारियाँ लें।** या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	तैयारी करें (2 मिनट) <i>[निर्धारित कार्य]</i> अगले अध्याय के लिए
----------	--

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी नकल करने दें।)

1. **समर्पण।** चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर “दाख की बारी में मजदूरों ” का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **यिर्मयाह 32, 33, 36 और 37** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना। श्रृंखला ठ का पुनरवलोकन करें: “परमेश्वर के संसाधन** (1) परमेश्वर की उपस्थिति। इब्रानियों 13:5-6, (2) परमेश्वर का वचन। भजन संहिता 119:105, (3) परमेश्वर की सामर्थ्य। यशायाह 41:10, (4) परमेश्वर की बुद्धि। याकूब 1:5; (5) परमेश्वर की चंगाई। 2इतिहास 7:14.5।
5. **बाइबल अध्ययन।** घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 13:1-14।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. परमेश्वर के राज्य पर प्रचार करने के लिए **अपनी नोटबुक का अद्यतन करें।** शांत समय में अपने नोट्स, अपने स्मरण किए हुए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना
---	-----------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना करें।** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपे।

2	साझा करें (20 मिनट) [शांत समय] यिर्मयाह 32,33,36 और 37
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें (या** अपने नोट्स से **पढ़ें)** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यिर्मयाह 32,33,36 और 37) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट) [परमेश्वर के संसाधन] श्रृंखला ठ का पुनरावलोकन करें
---	---

दो-दो करके **श्रृंखला ठ का पुनरावलोकन करें। “परमेश्वर के संसाधन”**

- (1) **इब्रानियों 13:5ब-6.** परमेश्वर ने कहा: “मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।” इसलिये हम निडर होकर कहते हैं: “प्रभु मेरा सहायक है, मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?”
- (2) **भजन 119:105.** “तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।”
- (3) **परमेश्वर की सामर्थ्य। यशायाह 41:10.** “मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ; मैं तुझे दृढ़ करूँगा और तेरी सहायता करूँगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे संभाले रहूँगा।”
- (4) **परमेश्वर की बुद्धि। याकूब 1:5.** “पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलहाना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी।”
- (5) **परमेश्वर की चंगाई। 2इतिहास 7:14.** “तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी जान से फिरे, तो मैं स्वर्ग मे से सुनकर उनका पाप क्षमा करूँगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूँगा।”

4	बाइबल अध्ययन (85 मिनट) [रोमियों की पत्री] रोमियों 13:1-14
---	--

परिचय। रोमियों 13:1-14 का एक साथ अध्ययन करने के लिये बाइबल के पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें।

रोमियों अध्याय 12 से 16 व्यावहारिक पवित्रता या शुद्धिकरण के विषय में बताते हैं और इनके उपयोग पर जोर देते हैं। रोमियों 12 ने अपने शरीर और मन के संबंध में और सभी प्रकार के रिश्तों के संबंध में मसीही के कर्तव्य को सिखाया। रोमियों 13

अधिकार के संस्थानों, विशेष रूप से सरकार, अपने पड़ोसी से संबंध और अंधेरे और प्रकाश के क्षेत्रों के प्रति संबंध के विषय में मसीही के कर्तव्य को सिखाता है।

कदम 1. पढ़ें।

परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 13:1-14 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें।

अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छूआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

13:1-7

खोज 1. अधिकार के विभिन्न संस्थानों के संबंध में मसीही की जिम्मेदारी।

(1) अधिकार और अधीनता के संबंध में परमेश्वर की सात संस्थाएँ।

परमेश्वर ने पृथ्वी पर सात अधिकार-अधीनता संबंध स्थापित किए हैं (रोमियों 13:1-2):

मसीह में परमेश्वर के पास सभी लोगों और सब चीजों पर अधिकार है (1 कुरिन्थियों 11:3; इफिसियों 1:20-23; कुलुस्सियों 1:18)।

मनुष्य का परमेश्वर की सृष्टि पर अधिकार है: भूमि, पेड़, पौधे और जानवर (उत्पत्ति 1:28; 2:15-16; भजन संहिता 8:4-8)।

पुरुष के पास विवाह संबंध में महिला पर अधिकार है (उत्पत्ति 3:16; इफिसियों 5:22-24; कुलुस्सियों 3:18; 1 पतरस 3:1-6) और कलीसिया की आधिकारिक सभाओं में अधिकार है (1 कुरिन्थियों 11:3) ; 14:33-35; 1 तीमुथियुस 2:11-14; 3:2-5)।

माता-पिता का अपने बच्चों पर अधिकार है जो अभी भी कम आयु के हैं (इफिसियों 6:1-3; कुलुस्सियों 3:20)।

किसी देश की **सरकार** का अपने नागरिकों पर अधिकार है (रोमियों 13:3-7; 1 पतरस 2:13-17);

नियोक्ता के पास अपने कर्मचारियों पर अधिकार है (इफिसियों 6:5-9; कुलुस्सियों 3:22-4:1; 1 पतरस 2:18-23)।

एक कलीसिया के **अगुवों** का अपनी कलीसिया के सदस्यों पर अधिकार होता है (प्रेरितों 20:28; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12; इब्रानियों 13:17)।

परमेश्वर ने इन सभी सात अधिकार-अधीनता संबंधों को स्थापित किया है। कोई भी व्यक्ति अधिकार की इन सात संस्थाओं को न बदले या इनका विरोध न करे। पहले को छोड़कर सभी अधिकार-अधीनता संबंधों में विशिष्ट, परन्तु सीमित कर्तव्य और

सीमित अधिकार भी हैं।

(2) नागरिक अधिकारी ।

बाइबल में निश्चित रूप से संसार की सरकारों के विषय में शिक्षाएँ हैं। पौलुस यहाँ नागरिक अधिकारों की बात कर रहा है, क्योंकि वह “तलवार रखने” और “करो और राजस्व का भुगतान करने” का उल्लेख करता है। यह शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि संसार में सभी मसीही किसी न किसी सरकारों के अधीन रहते हैं।

रोमियों को लिखे पत्र में यह भी महत्वपूर्ण था, क्योंकि रोम में मसीही कलीसिया में, सदस्यों का एक बड़ा भाग यहूदी मसीहियों का था। पौलुस के दिनों के कई यहूदी रोम की अधीनता के जुए को दूर करने के लिए एक अवसर की खोज में थे। वे एक बार फिर राजनीतिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए उत्सुक थे। वे अपने स्वयं का राजा और स्वयं के शासी अधिकारी चाहते थे (यूहन्ना 6:15; 8:33; प्रेरितों 1:5; 5:36-37)। पहले से ही पहली शताब्दी ई.स. के पहले आधे भाग में, रोम शहर में राजनीतिक गड़बड़ियाँ थीं। एक रोमी लेखक, सुटोनियस ने लिखा है कि सम्राट क्लौडियस ने 49 ई.स.में, एक निश्चित “क्रेस्टस” से प्रेरित यहूदियों के निरंतर विद्रोह के कारण सभी यहूदियों को रोम शहर से निष्कासित कर दिया था (तुलना करें प्रेरितों के काम 18:2)। जब यह अध्यादेश ज़ोर में नहीं रहा, तो कई यहूदी रोम लौट गए। इसलिए प्रेरित पौलुस ने लिखा कि रोम में मसीहियों को अवश्य स्वयं को शासी अधिकारियों के अधीन करना चाहिए। मसीहियों को क्यों अवश्य शासी अधिकारियों के अधीन होना चाहिए का कारण है कि परमेश्वर ने स्वयं सभी शासी अधिकारियों की स्थापना की है (रोमियों 13:12)।

13:8-14

खोज 2. अपने पड़ोसी के संबंध में मसीही की जिम्मेदारी।

रोमियों 13:8-14 सिखाता है कि व्यावहारिक पवित्रता या शुद्धिकरण पूर्ण चिह्नित प्रेम के जीवन जीने और प्रकाश में जीवन जीने से बढ़कर है। “प्रेम का जीवन जीने” का अर्थ प्रतिदिन स्वयं को परमेश्वर के प्रति सुगंधित भेंट और बलिदान के रूप में देना है (इफिसियों 5:1-2)। “प्रकाश में जीवन जीने” का अर्थ यह पता लगाना है कि प्रभु को क्या प्रसन्न करता है, अंधकार के फलहीन कर्मों को उजागर करना, एक पारदर्शी जीवन जीना और ऐसा फल देना जिसमें पूर्ण अच्छाई, धार्मिकता और सच्चाई सम्मिलित हो (इफिसियों 5:8-14)। क्योंकि मानव इतिहास का अंत और मसीहियों के पूर्ण उद्धार का समय तेजी से निकट आ रहा है, इसलिए शुद्धिकरण एक अति आवश्यक मामला है!

कदम 3. प्रश्न।

व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आइये रोमियों 13:1-14 में पायी जाने वाली सच्चाइयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होने दें कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

प्रश्न 1. शासी अधिकारियों के संबंध में मसीही का क्या कर्तव्य है?**ध्यान दें।****(1) परमेश्वर द्वारा स्थापित अधिकारियों के प्रति समर्पण करना शुद्धिकरण का एक भाग है।**

अधिकार (यूनानी: एकुशिया) के संस्थानों के प्रति “समर्पण” “परमेश्वर की अच्छी, स्वीकार्य और सिद्ध इच्छा” का एक भाग है जैसा कि रोमियों 12:2 सिखाता है।

नए नियम में हमने पढ़ा कि यहूदियों के पास रोमी सरकार के अधिकारों के विषय में प्रश्न थे (मत्ती 22:16-17; मरकुस 12:14; लूका 20:21-22)। यहूदियों में अपनी स्वतंत्रता पर गर्व करने की प्रवृत्ति थी (यूहन्ना 8:33)। यहूदियों के बीच देशद्रोही गुट थे (प्रेरितों 5:36-37)। धर्मनिरपेक्ष इतिहास की पुस्तकों में रोमी जूए के तहत यहूदियों की बेचैनी के संबंध में प्रमाण हैं। रोमी सम्राट, क्लौडियस, ने वास्तव में यहूदियों को सम्भवतः उनके विरोध या यहाँ तक कि उनके विद्रोह के कारण भी रोम से निष्कासित कर दिया था (प्रेरितों 18:2)।

रोमी अधिकारियों की सोच में, मसीही धर्म यहूदी धर्म से जुड़ा था और यहूदी धर्म के किसी भी देशद्रोही स्वभाव का आरोप वैसे ही मसीहियों पर भी लगाया जाना था। इसने ऐसी स्थिति पैदा की जिसमें मसीहियों के लिए सभी क्रांतिकारी आकांक्षाओं या कार्यों से बचने के साथ-साथ न्यायाध्यक्षों के प्रति उनके अधिकार के उचित उपयोग में अनधीनता करना आवश्यक था। शिक्षा भी मसीहियों के बीच “स्वतंत्रता” की किसी भी संभावित विकृत धारणा के विरुद्ध है, विशेष रूप से इस तथ्य को देखते हुए कि सभी मसीही मानते हैं कि सच्ची स्वतंत्रता राजाओं की अधीनता या प्रभु यीशु मसीह के शासन के बाध्य होने में है। इन राजनीतिक वास्तविकताओं को देखते हुए, पौलुस सिखाता है कि अधिकार के सभी सात संस्थानों के साथ एक मसीही का संबंध शुद्धिकरण का एक भाग है।

(2) अधिकार के संस्थानों के प्रति अधीनता बिना योग्यता के नहीं है।

एक ओर, नया नियम अधिकार की संस्थाओं के प्रति मसीहियों के कर्तव्यों को सिखाता है। 1 तीमुथियुस 2:1 सिखाता है कि मसीहियों को अधिकार में सभी लोगों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। तीतुस 3:1 सिखाता है कि मसीहियों को आज्ञाकारी होने के साथ-साथ शासक और अधिकारियों के प्रति शांतिपूर्वक और निंदा के बिना समर्पित होना चाहिए।

दूसरी ओर, नया नियम कहता है कि दुनिया में अधिकारियों ने अक्सर मसीहियों को सताया था क्योंकि उन्होंने सुसमाचार का प्रचार किया (और लोगों को पश्चाताप और परिवर्तन करने के लिए बोला) और गरीब, असहाय और उत्पीड़ितों की सहायता की। इसलिए बाइबल को उन अधिकारियों के प्रति अवज्ञा और उन अधिकारियों के प्रति आज्ञाकारिता के बीच एक स्पष्ट रेखा खींचनी थी जो अन्याय के साथ शासन करते हैं और जो न्याय साथ शासन करते हैं। यीशु मसीह ने दोनों मामलों में निष्ठा की माँग की है।

अधिकारियों के प्रति अवज्ञा प्रेरितों 4:19-20 और 5:29 में उल्लिखित है और अधिकारियों के प्रति आज्ञाकारिता रोमियों 13:1-7 में उल्लिखित है। एक सामान्य नियम के रूप में, सभी मसीहियों को उन सभी बातों में अधिकारियों का पालन करना चाहिए जो बाइबल की शिक्षाओं के विरुद्ध नहीं हैं। हालाँकि, जब अधिकारी अपने अधिकार से आगे निकल जाते हैं और माँग करते हैं कि मसीही ऐसे काम करें जो परमेश्वर द्वारा मना किए गए हैं, या मसीहियों को उन चीजों को करने के लिए मना

करते हैं, जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है, तो मसीहियों को सम्मान से अधिकारियों की बात मानने से इनकार कर देना चाहिए। जब भी अधिकार के पद पर लोगों की माँगों और परमेश्वर की आज्ञाओं के बीच संघर्ष होता है, तो प्रेरितों 5:29 में प्रेरित पतरस के शब्द को प्रभावी होना चाहिए, “हमें मनुष्य के बजाय परमेश्वर का पालन करना चाहिए।”

13:6-7

प्रश्न 2. करों और राजस्व के संबंध में मसीही का क्या कर्तव्य है?

ध्यान दें।

(1) मसीहियों को ज़रूर सरकार को कर देना चाहिए।

क्योंकि एक सरकार अपना पूरा समय अपने कार्य को देती है, इसलिए उसकी आर्थिक रूप से सहायता करने की आवश्यकता है। साथ ही सरकार में लोगों को अवश्य खाना और जीना चाहिए। सरकार बच्चों और वयस्कों की शिक्षा का विकास करके, पुलिस और व्यवस्थायी अदालतों के माध्यम से न्याय व्यवस्था बनाए रखने के द्वारा, और सड़कों और पार्कों, आदि के साथ नगरों और शहरों को विकसित करने के द्वारा समाज में लोगों का भला करती है। सरकार को अपराध और भ्रष्टाचार से लड़ना चाहिए, समाज में बुराई करने वालों को दंडित करना चाहिए और समाज में व्यवस्था व्यवस्था बनाए रखनी चाहिए है। यह सब अच्छा करने के लिए सरकार को धन की आवश्यकता है। यही कारण है कि परमेश्वर मसीहियों सहित सभी लोगों को सरकार को अपने करों और राजस्व का भुगतान करने की आज्ञा देता है।

करों को व्यक्तियों या अर्जित या प्राप्त संपत्ति पर लगाया जाता है (लूका 20:22-25) और राजस्व आयातित और निर्यात किए गए सामानों पर लगाया जाता है, अर्थात् व्यापार लेनदेन पर। करों और राजस्व का भुगतान सरकार का अत्याचारी आरोपण नहीं है, परन्तु सरकार के समर्थन में प्रजा की ओर से आवश्यक और उचित भागीदारी है।

(2) मसीहियों को ज़रूर सरकार के प्रति आदर देना चाहिए।

मसीहियों का कर्तव्य, न केवल सरकारी करों और राजस्व का भुगतान करना है, बल्कि आदर और सम्मान करना भी है। मसीहियों को सभी लोगों का और निश्चित रूप से अधिकारी लोगों का सम्मान करना चाहिए। मसीहियों को सरकार का सम्मान करना चाहिए जब वह अपने कर्तव्यों का पालन अच्छे ढंग से करती है।

परन्तु, न केवल नागरिकों का कर्तव्य है कि वे सरकार का समर्थन, आदर और सम्मान करें, बल्कि सरकार का भी कर्तव्य है कि वह परमेश्वर के नियमों और मानकों के अनुसार अपना कार्य करे। सरकार के पास पूर्ण शक्ति या अधिकार नहीं है, क्योंकि उसने बाइबल के परमेश्वर से अपने कार्य और अधिकार प्राप्त किए हैं। इसलिए सरकारों में सभी शासक और अधिकार के पदों पर सभी लोग पहले से ही अपनी जिम्मेदारियों के उत्तरदायी हैं कि वे उन्हें कैसे निभाते हैं।

अंतिम न्याय के दिन सभी लोगों को परमेश्वर को लेखा देना होगा: सरकारों में शासकों को इस बात का लेखा देना होगा कि उन्होंने अपने अधिकार को कैसे निष्पादित किया और सारी प्रजा को इस बात का लेखा देना होगा कि उन्होंने अपने आप को कैसे अधीन किया था। सभी लोगों को इस बात का विवरण देना होगा कि उन्होंने अपने करों और राजस्व का भुगतान कैसे किया या नहीं किया और कैसे उन्होंने अधिकारियों को सम्मान दिया या नहीं दिया है।

प्रश्न 3. रोमियों में “व्यवस्था” शब्द का क्या अर्थ है?**ध्यान दें।****(1) शब्द “व्यवस्था” के विभिन्न अर्थ।**

पौलुस ने व्यवस्था के विषय में बहुत कुछ सिखाया है। यह उल्लेखनीय है कि पौलुस कई अलग-अलग अर्थों के साथ “व्यवस्था” शब्द का उपयोग करता है।

व्यवस्था परमेश्वर के उद्धार और न्याय के लिए पूर्ण धर्मिकता की माँग है। व्यवस्था धार्मिकता और पवित्रता (उद्धार) और न्याय (सर्वनाश) के लिए परमेश्वर की परम माँग और शर्त है। क्योंकि बाइबल का परमेश्वर 100% धर्मी और पवित्र है, वह माँग करता है कि सभी लोग 100% धर्मी और पवित्र जीवन जीएं और वह माँग करता है कि सभी अपराधों का 100% न्याय हो और दंड दिया जाए। यह व्यवस्था परमेश्वर के संबंध में मनुष्य की स्थिति को संबोधित करती है।

परमेश्वर की व्यवस्था दुनिया में और इतिहास में सभी लोगों के लिए प्रकट की गई है (रोमियों 1:19-20; 2:14-5)। लोग जानते हैं कि जो कोई भी परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करता है, वह मरने के योग्य है (रोमियों 1:32)। सभी लोगों के कामों का न्याय इस आधार पर किया जायेगा कि वे परमेश्वर की व्यवस्था के विषय में कितना जानते हैं (रोमियों 2:12)। प्रत्येक मनुष्य उस क्षेत्र में रहता है जिसमें परमेश्वर की व्यवस्था संचालित है और उसके पास प्रासंगिकता है। व्यवस्था सभी लोगों को दोषी मानती है, उनके तर्कों को चुप करवाती है, उन्हें परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी बनाती है और उन्हें धर्मी नहीं ठहरा सकती या उन्हें बचा नहीं सकती (रोमियों 3:19-20)।

दस आज्ञाएँ। परमेश्वर की व्यवस्था शुद्धिकरण (पवित्र जीवन जीने) के लिए परमेश्वर की पूर्ण माँग और शर्त है। शब्द “व्यवस्था” का प्रयोग नैतिक व्यवस्था या दस आज्ञाओं को दर्शाने के लिए भी किया जाता है और इसके निम्नलिखित दो कार्य हैं:

परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था का पहला कार्य मनुष्य के पापी स्वभाव के भीतर पाप को सक्रिय करना है (रोमियों 7:8-9)। मनुष्य के पापी स्वभाव के भीतर नैतिक व्यवस्था के बिना पाप “मृत” या निष्क्रिय होता है। परमेश्वर की व्यवस्था बताती है कि परमेश्वर की दृष्टि में सही और गलत क्या है। जब कोई व्यक्ति सचेत रूप से परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था या दस आज्ञाओं के विषय में सोचता है, तो उसके पापी स्वभाव के भीतर पाप जीवित हो जाता है और वह बहुत सक्रिय हो जाता है। यह आमतौर पर इस व्यक्ति के जीवन परिवर्तन से कुछ समय पहले, उसके दौरान और उसके बाद होता है।

परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था का दूसरा कार्य धर्मी ठहराए (बचाए गए) व्यक्ति (मसीही) को सिखाना है कि कैसे धार्मिकता में जीना है, अर्थात् प्रेम का जीवन कैसे जीना है (रोमियों 13:8-10)।

पुराना नियम। पुराने नियम के लेखों में परमेश्वर की व्यवस्था लिखित रूप में है। परमेश्वर की व्यवस्था पुराने नियम की पुस्तक है, क्योंकि इसमें परमेश्वर का विशिष्ट प्रकाशन, उसके शब्द, उसके कार्य, उसकी इच्छा और उसकी आवश्यकताएँ सम्मिलित हैं। पहले केवल यहूदियों के पास परमेश्वर का यह विशेष प्रकाशन था (रोमियों 2:12)। पुराने नियम ने पहले ही यह प्रकट कर दिया था कि परमेश्वर की धार्मिकता व्यवस्था के कामों से प्राप्त नहीं की जा सकती है, परन्तु केवल विश्वास (मसीहा और उसके उद्धार के पूर्ण कार्य में) के माध्यम से (रोमियों 3:21-22; 4:3-8)। आज, पुराना नियम और नया नियम यहूदियों के साथ-साथ

गैर-यहूदियों के लिए भी दुनिया की लगभग प्रत्येक भाषा में उपलब्ध है।

(2) व्यवस्था का विभाजन।

व्यवस्था को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:

नैतिक व्यवस्था। परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था में उसकी आवश्यकताएँ बताई गई हैं कि लोगों को कैसे जीना चाहिए। उसमें दस आज्ञाएँ और बाइबल के अन्य सभी नैतिक व्यवस्था सम्मिलित हैं। नए नियम की अवधि में भी नैतिक व्यवस्था वैध रहती है।

अनुष्ठानिक व्यवस्था। पुराने नियम की अवधि के दौरान, परमेश्वर के पास आने, उसके साथ संगति करने, उसकी उपासना करने और उसकी सेवा करने के लिए उसकी आवश्यकताओं को परमेश्वर की अनुष्ठानिक (संस्कारी) व्यवस्था में व्यक्त किया गया था। उसमें पवित्र लोगों (याजकों और लेवियों); पवित्र स्थान (मिलाप का तम्बू और मंदिर); पवित्र समय (सब्त के दिन और धार्मिक पर्व); और पवित्र क्रियाएँ (बलिदान, खतना, शुद्ध खाने, पहले-जन्मे, पहले फल, दसवांश, स्वेच्छा भेंटें आदि) से सम्बंधित नियम थे। अनुष्ठानिक व्यवस्था को पूरा (मत्ती 5:17), रद्द (कुलुस्सियों 2:14) और *निरस्त (समाप्त)* (इफिसियों 2:15) किया गया है। अनुष्ठानिक व्यवस्था को मसीही कलीसिया में पुनःप्रस्तावित नहीं किया जा सकता है!

नागरिक व्यवस्था। पुराने नियम की अवधि के दौरान, धर्मशासित राष्ट्र इस्राएल के लिए परमेश्वर की आवश्यकताओं को सामाजिक (नागरिक) व्यवस्था में व्यक्त किया गया था। इनमें राजाओं, न्यायियों, युद्धों, संपत्ति, दंड, आदि से संबंधित नियम सम्मिलित थे। क्योंकि धर्मशासित राष्ट्र इस्राएल परमेश्वर के राज्य में प्रवेश हुआ है, जिसमें पृथ्वी का प्रत्येक देश सम्मिलित है, इसलिए इस्राएल की नागरिक व्यवस्था अब लागू नहीं होती है और परमेश्वर के राज्य के सिद्धांतों के साथ प्रतिस्थापित हुई है जो मत्ती अध्याय 5-7 और यीशु मसीह के सभी दृष्टांतों में सिखाए गए हैं।

13:8-10

प्रश्न 4. अपने पड़ोसी के संबंध में मसीही की क्या जिम्मेदारी है?

ध्यान दें।

रोमियों 13:8 कहता है, “आपस के प्रेम से छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।” कोई ऋण बकाया नहीं रहने दें, एक दूसरे से प्रेम करने को जारी रखने के ऋण को छोड़कर, क्योंकि जो अपने साथी से प्रेम करता है, उसने व्यवस्था को पूरा किया है। इस पद पर जोर वित्तीय ऋण पर नहीं है, बल्कि प्रत्येक मसीही के दायित्व पर है कि वह अपने पड़ोसी से प्रेम करे। रोमियों 13 सिखाता है कि अपने पड़ोसी से प्रेम करना भी शुद्धिकरण का एक भाग है।

(1) अपने पड़ोसी से प्रेम करना मसीहियों के लिए निरंतर दायित्व है।

प्रेम को एक ऋण के रूप में नहीं माना जाता है जिसका मसीहियों ने अभी तक भुगतान नहीं किया है। प्रेम को एक अपार ऋण के रूप में भी नहीं माना जाता है, एक ऐसा ऋण जिसे कभी भी पूरा नहीं किया जा सकता। पौलुस केवल मसीहियों को स्मरण दिला रहा है कि प्रेम एक स्थायी दायित्व है।

(2) अपने पड़ोसी से प्रेम करना व्यवस्था की पूर्णता है।

“वह जो अपने साथी से प्रेम करता है उसने व्यवस्था को पूरा किया है”। इस पद में, पौलुस परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के अर्थ में “व्यवस्था” शब्द का उपयोग करता है, जिसे दस आज्ञाओं में संक्षेपित किया गया है। इस पद में, पौलुस ने दस आज्ञाओं में से चार को उद्धृत किया है। इसका अर्थ यह है कि दस आज्ञाओं में मसीहियों के लिए स्थायी और टिकाऊ प्रासंगिकता है। यह उदाहरण प्रस्तुत करता है कि वास्तव में प्रेम क्या है। दस आज्ञाएँ मसीहियों को सिखाती हैं कि कैसे वह जीवन जिया जाए जो परमेश्वर को प्रसन्न करे, अर्थात् प्रेम का जीवन कैसे जीएं। “व्यवस्था की पूर्ति” का अर्थ है कि प्रेम के बिना कोई भी नियम कभी पूरा नहीं होता है! दस आज्ञाओं को प्रेम के बिना पूरा नहीं किया जा सकता है! यह केवल प्रेम के माध्यम से है कि मसीही परमेश्वर के सभी आदेशों में उसकी माँग को पूरा कर सकते हैं।

(3) अपने पड़ोसी से प्रेम करने का अर्थ है अपने पड़ोसी के प्रति पाप न करना।

अधिकांश दस आज्ञाओं को नकारात्मक रूप में बोला गया है, “न करो।” “व्यभिचार न करो।” “हत्या न करो।” “चोरी न करो।” “लोभ न करो।” परन्तु प्रेम का नियम सकारात्मक रूप में बोला गया है, “अपने पड़ोसी से प्रेम करो।” इस प्रकार, प्रेम करने के नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पहलू हैं: आप तब प्रेम करते हैं जब आप कुछ चीजों को नहीं करते हैं और जब आप कुछ चीजों को करते हैं तो आप प्रेम करते हैं। जबकि पुराने नियम ने उन चीजों पर जोर दिया है जो विश्वासियों को नहीं करनी चाहिए, नया नियम उन चीजों पर जोर देता है जिन्हें विश्वासियों को करना चाहिए!

प्रेम कभी पाप की वास्तविकता को अनदेखा नहीं करता है! एक मसीही जानबूझकर पाप करते हुए प्रेम नहीं कर सकता है। 1 थिस्सलुनीकियों 5:22 कहता है कि सच्चा मसीही प्रेम “हर प्रकार की बुराई से बचता है।” रोमियों 13:10 कहता है, कि सच्चा प्रेम “अपने पड़ोसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता है।” सच्चा प्रेम किसी भी रीति की यौन अनैतिकता में अपने पड़ोसी को सम्मिलित नहीं करेगा। सच्चा प्रेम अपने पड़ोसी के जीवन के किसी भी पहलू को नष्ट नहीं करेगा। सच्चा प्रेम अपने पड़ोसी की कोई चीज नहीं चुराएगा। और सच्चा प्रेम यहाँ तक कि अपने पड़ोसी से कुछ लेने की सोचेगा भी नहीं या इच्छा भी नहीं करेगा। इस प्रकार, दस आज्ञाएँ नकारात्मक रूप में हैं, क्योंकि वे पाप की वास्तविकता को कभी अनदेखा नहीं करती हैं। 1 कुरिन्थियों 13:4-6 में भी सच्चा प्रेम नकारात्मक शब्दों में व्यक्त किया गया है: “प्रेम ईर्ष्या नहीं करता है”, क्योंकि यह कभी भी पाप की वास्तविकता को अनदेखा नहीं करता है!

(4) अपने पड़ोसी से प्रेम करने का अर्थ है अपने पड़ोसी के प्रति सकारात्मक कार्रवाई करना।

“अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर” एक अनिवार्यता है और इसे सकारात्मक रूप में कहा गया है। प्रेम न केवल पाप जैसी नकारात्मक चीजों से बचता है, बल्कि निषेध (नकारात्मक) को उसकी विपरीत आज्ञा (सकारात्मक) में भी बदल देता है! उदाहरण के लिए, प्रेम सक्रिय रूप से अपने पड़ोसी को हर प्रकार की यौन अनैतिकता से बचाता है। और प्रेम सक्रिय रूप से अपने पड़ोसी के जीवन के शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, बौद्धिक और आत्मिक कल्याण को बढ़ावा देता है। प्रेम सक्रिय रूप से अपने पड़ोसी की संपत्ति का सम्मान और सुरक्षा करता है। और प्रेम सक्रिय रूप से सराहना करता है और इस बात से प्रसन्न होता है कि उसके पड़ोसी के पास क्या है या वह क्या करता है। प्रेम न केवल अपने पड़ोसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता है, बल्कि अपने पड़ोसी के लिए सक्रिय रूप से हर प्रकार की अच्छाई करता है।

13:13-14

प्रश्न 5. अंधेरे के क्षेत्र और प्रकाश के क्षेत्र के संबंध में मसीही की क्या जिम्मेदारी है?

ध्यान दें।

(1) मसीहियों का कर्तव्य है कि वे उस समय को जानें, जिसमें वे रहते हैं।

रोमियों 13:11 सचमुच कहता है, “इस समय को जानो”। शब्द “समय” (यूनानी: कैरोस) यहाँ अंत समय की घटनाओं के प्रकाश में वर्तमान समय को संदर्भित करता है। हम कहते हैं, “यह जानना कि चीजों की क्या स्थिति है।” यह वर्तमान समय को देखना है, यह जानते हुए कि यह मसीह के दूसरे आगमन, अंतिम न्याय और पृथ्वी पर सभी चीजों के नवीकरण की दिशा में तेजी से बढ़ना है। और रोमियों 13:12 कहता है, “रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है।” “दिन”, जो निकलने पर है, न्याय के दिन का संदर्भ है।

(3) मसीहियों का कर्तव्य है कि वे वह सब कुछ उतार दें जो अंधेरे से जुड़ा है

और उसे पहन लें जो कुछ प्रकाश से जुड़ा हुआ है।

बाइबल के अनुसार, “वर्तमान युग, जो मसीह के दूसरे आगमन के युग से पहले है, बुरा है”। इसलिए, मसीहियों को हमेशा वर्तमान युग को आने वाले युग के प्रकाश में देखना चाहिए, और पवित्र जीवन जीना चाहिए। रोमियों 13:12 कहता है, “इसलिये हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें”। यीशु मसीह के दूसरे आगमन में मसीही विश्वास ही वह कारण है कि वे पवित्रता में बढ़ना चाहते हैं। “प्रभु यीशु मसीह को पहन लो” को कहीं और “नए मनुष्यत्व को पहनना” कहा गया है (इफिसियों 4:24)। इस प्रकार, हम मसीहियों को अवश्य “अधर्मी और सांसारिक जुनून को “नहीं” कहना चाहिए, और इस वर्तमान युग में आत्म-नियंत्रित, शुचिता और ईश्वरीय जीवन जीना चाहिए, जबकि हम धन्य आशा की प्रतीक्षा करते हैं, अर्थात्, हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह का प्रकटीकरण” (तीतुस 2:12-13)।

चरण 4. लागू करना।

अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 13:1-14 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 13:1-14 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

13:1. बाइबल में दिए सात अधिकार-समर्पण रिश्तों में से हर किसी के प्रति स्वयं को समर्पित करें।

13:1-2. ऐसी बुरी शक्तियाँ हैं जिन्हें परमेश्वर ने स्थापित नहीं किया है और इसलिए मसीहियों को उनके प्रति समर्पण नहीं करना चाहिए। परमेश्वर उन्हें कुछ लोगों पर अधिकार करने की अनुमति देता है और सहता है जब तक कि वह उन्हें नष्ट नहीं कर देता। उदाहरण के लिए, शैतान का पूरे दुष्ट संसार पर नियंत्रण है, अर्थात् वह संसार जो परमेश्वर, मसीह और उसके लोगों से घृणा करता है और उनका विरोध करता है (1यूहन्ना 5:19; यूहन्ना 12:31; 17:14-16)। अन्य उदाहरण दो पशु हैं। “समुद्र से निकला पशु” जो शैतान की मसीहविरोधी सरकारों को प्रदर्शित करता है, “पृथ्वी से निकला पशु” जो शैतान के मसीहविरोधी धर्मों और दर्शन को प्रदर्शित करता है और “बड़ी वेश्या, बाबुल”, जो शैतान की मसीहविरोधी नैतिकता को प्रदर्शित करता है (प्रकाशितवाक्य अध्याय 17 और 19:19-

20)।

- 13:3. अधिकारियों से न भयभीत न हों। यदि आप भय से मुक्त होना चाहते हैं, तो वही करें जो परमेश्वर और अन्य छह अधिकार की संस्थाओं की दृष्टि से सही है।
- 13:4. कुछ परिस्थितियों में एक सरकार को “तलवार” काम में लाने का अधिकार है, अर्थात् मृत्युदंड को लागू करना (उत्पत्ति 9:6; निर्गमन 21:12; गिनती 35:16, 30-31; व्यवस्थाविवरण 19:11-13; न्यायियों 9:24; 2 राजा 14:5-6; मत्ती 26:52) या युद्ध में अपने देश की रक्षा करना। फिर भी, तलवार को काम में लाने का कारण कभी भी मनमाना नहीं हो सकता है और उसे कभी भी परमेश्वर के वचन का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।
- 13:6-7. सरकार को अपने करें और राजस्व का भुगतान करें। सरकारी पदों पर और अधिकार के किसी अन्य पद पर लोगों का आदर और सम्मान करें।
- 13:8. अपने जीवन की हर परिस्थिति में आप अपने पड़ोसी से प्रेम करने के दायित्व के तहत खड़े होते हैं, अर्थात्, उस व्यक्ति से प्रेम करने के लिए जिसे परमेश्वर आपके मार्ग में लाता है (लूका 10:25-37)।
- 13:9. हमेशा अपने पड़ोसी को हर प्रकार की यौन अनैतिकता से बचाएं। और उसके शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, बौद्धिक और आत्मिक कल्याण को बढ़ावा दें।
- 13:9. हमेशा अपने पड़ोसी की संपत्ति की रक्षा करें। और सक्रिय रूप से उसकी संपत्ति और उपलब्धियों की सराहना करें।
- 13:10. अपने पड़ोसी को कभी नुकसान न पहुँचाएं। हमेशा उसके साथ अच्छी और दयालु बातें करें।
- 13:11. प्रतिदिन सतर्क रहें, क्योंकि मसीह का दूसरा आगमन तेजी से निकट आ रहा है।
- 13:12-13. व्यभिचार और पियाकड़पन, यौन अनैतिकता और ऐयाशी, मतभेद और ईर्ष्या को बंद करें।
- 13:14. अपने आप को मसीह के साथ और धार्मिकता और पवित्रता के साथ ढाँप लें जो उसने आपके लिए अर्जित किए हैं। कभी भी पुराने पापी स्वभाव की किसी भी इच्छा को पूरा करने की न सोचें।

2. रोमियों 13:1-14 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

एक मसीही के रूप में, मैं हर उस चीज़ में स्वयं को शासी अधिकारियों के प्रति समर्पित करना चाहता हूँ जो बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं के विरुद्ध नहीं है। इसका अर्थ यह भी है कि मैं करों का भुगतान करने और सरकारी नेताओं का सम्मान करने के लिए प्रतिबद्ध हूँ।

दस आज़ाएँ मेरे लिए यह जानना के लिए बहुत ज़रूरी हैं कि कैसे परमेश्वर चाहता है कि मैं अपने पड़ोसी से व्यावहारिक रूप से प्रेम करूँ। मैं न केवल अपने पड़ोसी के विरुद्ध पाप करने से बचना चाहता हूँ, बल्कि वह भी सक्रिय रूप से करना चाहता हूँ जो मेरे पड़ोसी के लिए सबसे अच्छा है। मैं यह स्मरण रखना चाहता हूँ कि प्रेम का अर्थ मेरे पड़ोसी के विरुद्ध कभी भी पाप न करना है और हमेशा सक्रिय रूप से वह करना है जो मेरे पड़ोसी के लिए अच्छा है।

चरण 5. प्रार्थना।

प्रतिउत्तर

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 13:1-14 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	प्रार्थना (8 मिनट)	[मध्यस्थता] दूसरों के लिये प्रार्थना
----------	---------------------------	---

दो या तीन समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिये और संसार भर के लोगों के लिये प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	तैयारी (2 मिनट)	[निर्धारित कार्य] अगले अध्याय के लिये
----------	------------------------	--

(समूह अगुवा) समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें।

1. **समर्पण**। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 12:1-21 में से **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **यहेजकेल 2, 18, 33 और 34** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना। (16) रोमियों 12:16.** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **शिक्षा देना।** मत्ती 25:14-30. में पाए जाने वाले “**तोड़े**” के दृष्टान्त की तैयारी करें। दृष्टान्तों की व्याख्या करने के लिये उन छः निर्देशों का उपयोग करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)
7. परमेश्वर के राज्य के विषय पर प्रचार करने हेतु **अपनी नोटबुक का अद्यतन करें।** अपने शांत समय के नोट्स, अपने स्मरणीय नोट्स, अपने बाइबल के अध्ययन के नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना
---	-----------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना करें।** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपे।

2	साझा करें (20 मिनट) [शांत समय] यहेजकेल 2,18,33 और 34
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें (या** अपने नोट्स से **पढ़ें)** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (यहेजकेल 2,18,33 और 34) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट) [रोमियों में प्रमुख वचन] (16) रोमियों 12:16
---	--

दो-दो करके पुनरावलोकन करें।

(16) रोमियों 12:16. “आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।”

4	शिक्षा देना (85 मिनट) [यीशु के दृष्टान्त] तोड़े
---	--

मत्ती 25:14-30 में “तोड़ों का दृष्टान्त”

परमेश्वर के राज्य में पुरुस्कार के बारे में एक दृष्टान्त है।

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों को उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेंगे (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें मत्ती 25:14-30।

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

एक व्यक्ति जिसने अपनी संपत्ति अपने दासों को सौंप दी। उसने तीनों दासों में प्रत्येक को अलग-अलग तोड़े दिए। “एक तोड़ा” भार का एक माप है, लेकिन अलग-अलग समय में विभिन्न मूल्यों के साथ पैसे की एक इकाई भी है। यीशु के समय में, अटारी की प्रतिभा छह हजार दीनार से कम नहीं थी, और एक दीनार एक सैनिक या मजदूर की दैनिक मजदूरी थी। इसका मतलब था कि एक साधारण कार्यकर्ता को एक तोड़ा अर्जित करने के लिए लगभग बीस साल काम करना होगा! यह व्यक्ति एक बहुत अमीर व्यापारी था और चाहता था कि उसकी अनुपस्थिति में उसका पैसा बढ़े।

व्यक्ति ने अपने प्रत्येक दास को उनकी क्षमता के अनुसार दिया। यह व्यक्ति एक बुद्धिमान व्यक्ति था। क्योंकि वह जानता था कि उसके दासों के पास समान व्यवसायिक कौशल नहीं है, उसने एक को पांच, दूसरे को दो और तीसरे को एक तोड़ा दिया। याद रखें, एक तोड़ा कोई छोटी राशि नहीं है! यह बीस साल की मजदूरी का प्रतिनिधित्व करता है!

दोनों दासों ने अपना पैसा काम पर लगा दिया - पहले और दूसरे दास ने अपना पैसा काम पर लगाया और अपने पैसे को दोगुना कर दिया। कहानी में यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि उन्होंने यह कैसे किया। हालाँकि, अनुमान यह है कि उन्होंने ऐसा ईमानदार तरीकों से किया है!

तीसरे दास ने अपने स्वामी के पैसे छिपा दिए - उसने उसे दिए हुए कार्य की उपेक्षा की! क्योंकि घरों को आसानी से तोड़ा जा सकता था, खजाने को आमतौर पर जमीन के बाहर कहीं दफन किया जाता था (मत्ती 6:19; 13:44)। इस सेवक ने अपने कार्य की उपेक्षा इसलिए नहीं की थी क्योंकि जब वह अन्य दो के साथ अपनी राशि की तुलना करता था तब वह हीन महसूस करता था। उसने अपने स्वामी के खिलाफ अनुचित संदेह के कारण अपने कार्य की उपेक्षा की और क्योंकि वह आलसी था!

हिसाब के निपटारे का समय है - उसकी वापसी पर, स्वामी ने अपने दासों के साथ हिसाब-किताब का निपटारा किया।

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टान्त की “कहानी” का संदर्भ “स्थान” और “दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग” से मिलकर हो सकता है। दृष्टान्त का स्थान दृष्टान्त को बताने के अवसर को बता सकती है, या दृष्टान्त को बताने के समय परिस्थितियों का वर्णन कर सकती है। स्थान आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी से पहले पाया जाता है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी के बाद पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त का स्थान, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती 24:1-25:13 में पाई जाती है।

मत्ती अध्याय 24 में, यीशु ने अपने दूसरे आगमन और इस युग के अंत के संकेत के बारे में सिखाया। ऐसा होने की घड़ी और

दिन के बारे में कोई नहीं जानता (मत्ती 24:36)। इसलिए प्रत्येक मसीही को जागते और अच्छी तरह से तैयार और शालीनता से अपने जीवन को व्यतीत करना चाहिए जैसे कि मसीह किसी भी क्षण आ सकता है (मत्ती 24: 42,45-46)। यह निम्नलिखित तीन दृष्टान्तों की परिस्थिति है: विश्वासयोग्य और अविश्वासयोग्य दासों का दृष्टान्त, दस कुंवारियों का दृष्टान्त और तोड़ों का दृष्टान्त।

जब भी यीशु कहता है, “परमेश्वर का राज्य ऐसा है ...” वह यह सिखाना चाहता है कि पृथ्वी पर अब परमेश्वर के शासनकाल के दौरान क्या होता है और जब परमेश्वर का राज्य अपने अंतिम चरण में होगा तब निश्चित रूप से क्या होगा यह यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर प्रगट किया जायगा। अंतिम न्याय के दिन, दृष्टान्तों में वर्णित घटनाएं निश्चित रूप से होंगी। इसका मतलब यह है कि वर्तमान में रहने वाले लोग भी दृष्टान्तों में वर्णित घटनाओं में शामिल हैं! आज यीशु मसीह के प्रत्येक दृष्टान्त में आपके और मेरे लिए एक संदेश है!!! तोड़ों के दृष्टान्त में इस व्यक्ति और उसके दासों के बीच जो हुआ, यह बताता है कि यीशु मसीह और इतिहास के सभी लोगों के बीच क्या हुआ है। जिस प्रकार स्वामी अपने दासों के साथ वापसी के समय हिसाब लेता है, उसी प्रकार यीशु मसीह इतिहास के प्रत्येक व्यक्ति के साथ अपने दूसरे आगमन पर हिसाब लेगा।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 25:14-30 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या या उसका अनुप्रयोग मत्ती 25:28-30 में पाया जाता है।

यह पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य से सम्बन्ध रखता है और विशेष रूप से यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर क्या होगा... उसके दूसरे आने पर, यीशु मसीह सभी लोगों के साथ हिसाबों का निपटारा करेंगे।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानें।

परिचय। यीशु का इरादा कुछ आध्यात्मिक महत्व रखने के दृष्टान्त की कहानी में हर विवरण को करना नहीं था। दृष्टान्त प्रतीकात्मक नहीं हैं। प्रासंगिक विवरण दृष्टान्त की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टान्त के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टान्त की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वतंत्र आत्मिक महत्व को नहीं मढ़ना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

परमेश्वर का राज्य (मत्ती 25:1,14)। परमेश्वर का राज्य दृश्य कलीसिया, मसीह की देह या मसीहियों के विश्व व्यापी समुदाय से अधिक है।

● **परमेश्वर के राज्य की परिभाषा।** परमेश्वर का राज्य दृश्य कलीसिया, मसीह की देह या मसीही धर्म के विश्वव्यापी समुदाय से अधिक है।

भजन संहिता 24:1। सामान्य रूप से परमेश्वर का राज्य सभी लोगों पर स्वर्ग में राजा या प्रभु शासन या परमेश्वर का शासन है और अनंत काल से अनंत काल तक होता है (भजन संहिता 145:13; 146:10; यिर्मयाह 10:10; 1 तीमुथियुस 6:16);

मत्ती 28:18। विशेष रूप से परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह के माध्यम से पृथ्वी पर प्रभु का शासन या राज्य है (यूहन्ना 13:3; इफिसियों 1:20-22; फिलिप्पियों 2:9-11; कुलुस्सियों 1:15-20; प्रकाशितवाक्य 1:5); 17:14; 19:16)।

प्रकाशितवाक्य 1:5-6। परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह के पहले आगमन पर पूर्ण किये गए उद्धार के कार्य (मत्ती 21: 39,42-

43; 28:18; प्रेरितों 2:36) और पवित्र आत्मा के माध्यम से विश्वासियों में उस कार्य के अनुप्रयोग पर आधारित है। (रोमियों 14:17)।

लूका 17:20-21। परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह का संप्रभु शासन या राज्य है जो विश्वासियों के हृदयों में पहचाना जाता है और उनके जीवन में कार्यरत है (मत्ती 6:10,33; 25:34-40)।

● परमेश्वर के राज्य का परिणाम चार क्षेत्रों में प्रत्यक्ष है:

- मरकुस 10:25-26। परमेश्वर का शासन शुरू से अंत तक विश्वासियों के उद्धार में प्रगट होता है: अनंत काल में उसका चुनाव (इफिसियों 1:4-5), फिर से जन्म लेना (यूहन्ना 3:3-8), उसके जीवन का परिवर्तन (1कुरिन्थियों 6:9-11) और मसीह के दूसरे आगमन पर उनके शरीर का पुनरुत्थान (1कुरिन्थियों 15:24-26)। इसमें परमेश्वर द्वारा दिए गए उद्धार में आत्मा और शरीर के लिए सभी आत्मिक और शारीरिक आशीष शामिल हैं, जो परमेश्वर के शासन के आने के समय उसका पालन करने पर प्रदान की जाती है (इफिसियों 1:3)।

- मत्ती 16:18-19। परमेश्वर का राज्य धरती पर परमेश्वर की एक कलीसिया के रूप में सभी विश्वासियों के संविधान में पाया जाता है (इफिसियों 1:20-23; 1पतरस 2:4-5, 9-10)। कलीसिया ऐसे लोगों का समुदाय है, जिनके हृदयों और जीवन में परमेश्वर के प्रभुत्व को माना जाता है और पालन किया जाता है।

- मत्ती 25:34-40। परमेश्वर का राज्य मानव समाज के हर पहलू में विश्वासियों के अच्छे कार्यों में प्रगट होता है (न्याय, दया और प्रेम जैसे बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और आत्मिक क्षेत्रों में उनका प्रभाव (रोमियों 14:17)।

- 1 कुरिन्थियों 1:24-26। और अंत में, परमेश्वर का राज्य परमेश्वर की बचायी हुई सृष्टि में प्रगट होता है, जो भविष्य में महिमा के साथ नया स्वर्ग और नई पृथ्वी होगी, जिसमें बुलाये हुए लोगों में परमेश्वर के उद्धार के अंतिम कार्य होगा (मत्ती 25:34; 2 पतरस 1:11; प्रकाशितवाक्य 11:15)।

● परमेश्वर के राज्य की पाँच विशेषताएं हैं:

- मत्ती 12:28। परमेश्वर का राज्य विशेष रूप से यीशु मसीह के पहले आगमन पर स्थापित किया गया था (मत्ती 21:43)।

- यूहन्ना 18:36। परमेश्वर का राज्य वर्तमान दुनिया में है, लेकिन वर्तमान दुनिया का नहीं है (लूका 17:21)।

- मत्ती 13:11-17। परमेश्वर का राज्य विश्वासियों के लिए एक प्रकाशन है और एक ही समय में अविश्वासियों के लिए एक पहेली है।

- मत्ती 13:24-26, 36-43। परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी पर एक वर्तमान रूप है और नई पृथ्वी पर भविष्य का रूप है।

- मत्ती 13:31-33। परमेश्वर का राज्य छोटे से शुरू होता है, बढ़ता है और अंत में सब जगह फैल जायेगा (दानियेल 2:34-35,44-45)।

पुरुष की यात्रा। क्योंकि इस दृष्टांत की व्याख्या या अनुप्रयोग विशेष रूप से परमेश्वर के राज्य के साथ अंत समय से सम्बंधित है जब यीशु मसीह सभी लोगों का न्याय करेगा, व्यक्ति की यात्रा यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहले की अवधि का प्रतिनिधित्व करती है। यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक, लोगों को जो कुछ भी परमेश्वर ने उन्हें सौंपा है, उसके साथ काम करना चाहिए। यीशु का इरादा अपने शिष्यों के इस विश्वास का खंडन करना था कि वह एक समृद्ध यहूदी राज्य स्थापित करने के लिए यरूशलेम जा रहा था (प्रेरितों 1:6)। यह दृष्टांत संसार के अन्य राज्यों की तरह पृथ्वी पर एक वर्तमान राज्य की उनकी आशा को कमजोर बनाता है (यूहन्ना 18:36) और उन्हें इंतजार करने और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के भविष्य के राज्य के लिए

धैर्य के साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यीशु ने मसीहियों को आलसी या बेकार ना बनने की चेतावनी दी, लेकिन उन्हें उत्सुक होने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि वे जानते हैं कि प्रभु में उनका श्रम व्यर्थ नहीं है (1 कुरिन्थियों 15:58)।

स्वामी और उसकी संपत्ति के प्रबंधक। तोड़े स्वामी के थे, और दासों को ये तोड़े केवल उपयोग और उनके मूल्य को बढ़ाने के लिए सौंपे गए थे। यह एक प्रासंगिक विवरण है। केवल स्वामी ही मालिक है और सभी दास अपने मालिक के प्रति प्रबंधक, जिम्मेदार और जवाबदेह हैं!

उस व्यक्ति ने उनकी क्षमता के अनुसार प्रत्येक को दिया। तोड़ा एक प्राकृतिक क्षमता या आत्मिक उपहार का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता, क्योंकि स्वामी प्रत्येक दास को “उनकी प्राकृतिक या आत्मिक क्षमता के अनुसार” देता है (मत्ती 25:15)। इस प्रकार “तोड़े” को प्रभु के लिए व्यापार (कार्य, नियुक्त काम, सेवकाई, सेवा) करने के अवसर का प्रतिनिधित्व करना चाहिए। लेकिन व्यवसाय (कार्य, नियुक्त काम, सेवकाई, सेवा) करने के अवसरों की ये विभिन्न मात्रा निश्चित रूप से अलग-अलग प्राकृतिक कौशल और आत्मिक उपहारों के लिए संयोजित हैं, जो निश्चित रूप से प्रत्येक व्यक्ति को दी जाती है। यह एक प्रासंगिक विवरण है। परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को व्यवसाय (नियुक्त काम, सेवकाई, सेवा) करने के लिए अलग-अलग अवसर देता है। लेकिन एक तोड़ा कोई छोटी राशि नहीं है! यह बीस साल की कड़ी मेहनत की मजदूरी का प्रतिनिधित्व करता है!! यहां तक कि अगर आपको परमेश्वर के राज्य के भीतर सिर्फ एक मौका (अवसर) मिलता है, तो यह बहुत ही कीमती है! ऐसा मौका आप पास से न जाने दें! यहां तक कि परमेश्वर ने लोगों के बीच जो कुछ भी सौंपा है, वह परमेश्वर की नज़र में महत्वपूर्ण है!

दो दास काम करने के लिए अपना पैसा लगाते हैं। तोड़ों की संख्या महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि दासों ने उसके साथ क्या किया जिसे उन्होंने प्राप्त किया है, वह महत्वपूर्ण है! यह एक प्रासंगिक विवरण है। अंतिम न्याय के दिन, प्रत्येक व्यक्ति को सौंपे गए अवसरों की संख्या मायने नहीं रखती है, लेकिन जो उसे सौंपा गया था, उसका उपयोग करने में प्रत्येक की ईमानदारी और परिश्रम महत्वपूर्ण होगा!

तीसरे दास ने अपने मालिक के पैसे छिपा दिए। उसने उन अवसरों का उपयोग करने के लिए उपेक्षा की, जो स्वामी ने उसे अपने निर्धारित कार्य (कार्य, सेवकाई, सेवा) करने के लिए दिए थे! उसने चूक या उपेक्षा का पाप किया, जो कि उसके मालिक की आज्ञा के अनुसार नहीं करना था। यह एक प्रासंगिक विवरण है। जिन्हें परमेश्वर ने मना किया है, न केवल उन कामों के लिए दंडित किया जाएगा, बल्कि परमेश्वर द्वारा सौंपे गए कार्यों को ना करने के पाप के लिए भी दंडित किया जाएगा! (मत्ती 25:41-45; याकूब 4:17)

हिसाब का निपटारा। अपने दासों के साथ हिसाब निपटाने वाला स्वामी एक ऐसा विषय है जो अक्सर दृष्टान्तों में आता है। यह क्षमा न करने वाले दास का दृष्टान्त (मत्ती 18:23), दुष्ट किरायेदारों के दृष्टान्त (मत्ती 21:34), तोड़ों का दृष्टान्त (मत्ती 25:19) और दस मोहरों (लूका 19:15) के दृष्टान्त में पाया जाता है। इसलिए, एक दास का हमेशा यह कर्तव्य होता है कि वह अपने स्वामी की वापसी के दिन को ध्यान में रखे जब लेखा लिया जायगा! यह एक प्रासंगिक विवरण है।

विभिन्न जिम्मेदारियों के लिए एक ही पुरस्कार। यह एक प्रासंगिक विवरण है। क्योंकि पहले और दूसरा दास ही अपने तोड़ों के साथ वफादार रहे थे, इसलिए स्वामी ने उन दोनों को कई चीजों का प्रभारी रखा। दोनों ने उन्हें जो सौंपा गया था, उसे दोगुना कर दिया था। इसलिए दोनों को एक ही पुरस्कार मिला। उन दोनों को अपने स्वामी की स्वीकृति प्राप्त हुई और उन्हें प्रभु के आनंद (पूर्ण उपस्थिति) में प्रवेश करने के लिए आमंत्रित किया गया। यह स्वर्ग में आनंद के पर्व का प्रतिनिधित्व करता है।

लापरवाही की सज़ा। यह एक प्रासंगिक विवरण है। दुष्ट और आलसी दास को कड़ी सजा दी गई थी। बाहर अंधेरे में फेंक दिया जाना, जहां रोना और दांतों का पीसना होगा, जो नरक की पीड़ाओं का प्रतिनिधित्व करता है।

पुरुस्कार और सज़ा के बारे में सिद्धांत। परमेश्वर के राज्य में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, “जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा; परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।” (मत्ती 25:29; लूका 8:18; 19:26)। यह प्रासंगिक है।

- **सबसे पहले यह सिद्धांत वादा करता है कि विश्वासयोग्यता और परिश्रम को पुरस्कृत किया जाएगा।** यह केवल परमेश्वर के लिए हमारे निर्धारित कार्य (कार्य, सेवकाई, सेवा) करने के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए अवसरों का उपयोग करने और विकसित करने के तरीके में है, कि हम और अधिक समृद्ध बनें (लूका 10:29-37 ; गलातियों 6:10; 1 थिस्सलुनीकियों 5:15)। आत्मिक मामलों के संबंध में यह निश्चित रूप से सच है। आत्मिक मामलों में स्थिर खड़ा होना असंभव है! एक व्यक्ति अग्रिम या पीछे हटता है; उसका लाभ या हानि होती है; उसकी वृद्धि या गिरावट होती है! परमेश्वर द्वारा दी गयी प्रत्येक आशीष भविष्य में मिलने वाली आशीष का वादा है (यूहन्ना 1:16)! जब भी कोई व्यक्ति जो भी उसे सौंपा गया है, उसके साथ काम करता है, तो उसके अवसर कभी खोते नहीं हैं, लेकिन इसके बजाय बढ़ते और प्रभाव में मजबूत होते हैं।

मरकुस 4:24-25 के अनुसार, जो कोई भी परमेश्वर के वचन (बाइबल) को पढ़ता है और उसका अध्ययन करता है, उसे अधिक से अधिक आशीष प्राप्त होगी! और मत्ती 13:11-12 और मरकुस 4:13 के अनुसार, जो कोई भी अपने हृदय को खोलता है और परमेश्वर के वचन को प्राप्त करता है, वह एक फसल पैदा करेगा - तीस, साठ और उससे भी सौ गुना अधिक, जो उसे दिया गया है।

मत्ती के 7:7-8 के अनुसार, जो कोई प्रार्थना करता है, उसे अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर मिलेंगे, और याकूब 4:2-3 के अनुसार, जो प्रार्थना नहीं करता वह प्राप्त नहीं करता है।

नीतिवचन 11:24 और लूका 6:46 के अनुसार, जो देगा, उसे अधिक प्राप्त होगा, लेकिन जो कोई भी अपने पास रखता है वो वह भी खो देता है, जो उसके पास है।

और मत्ती 25:29 के अनुसार, जो कोई भी अपने परमेश्वर द्वारा दिए गए अवसरों का उपयोग करता है, उसके पास प्रचुर अवसर होंगे, लेकिन जिन अवसरों की उपेक्षा की जाती है, उन्हें ले लिया जाता है।

- **दूसरा, यह सिद्धांत चेतावनी देता है कि अविश्वास और लापरवाही को दंडित किया जाएगा।** मसीही होने का अर्थ है कि आपको अवसर दिए गए हैं, अपने आप को बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि स्वामी और स्वामी के राज्य की सेवा के लिए। एक मसीही, मसीह की देह (कलीसिया) से अलग सदस्य नहीं है। एक सदस्य जो देह के विकास में योगदान देता है वह देह के साथ बढ़ता है, लेकिन एक सदस्य जो कुछ भी नहीं करता है वह मर जाता है!

जब भी कोई व्यक्ति जो उसे सौंपा गया है, उसके साथ काम करने की उपेक्षा करता है, उसके अवसरों को उससे दूर ले जाया जाता है। “क्योंकि तू ने मेरे ज्ञान को तुच्छ जाना है, इसलिए मैं तुझे अपना याजक रहने के अयोग्य ठहराऊंगा।

इसलिए कि तूने अपने परमेश्वर की व्यवस्था को तज दिया है, मैं भी तेरे बाल-बच्चों को छोड़ देता हूँ। “ (होशे 4:6)
“इसलिए परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा” (मत्ती 8:12; 21:42-43)!

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषय) या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या कहानी से ही मिला है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टान्तों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टान्त में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ होता है, एक केंद्रीय बिंदु बनाने के लिए। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में कोई आत्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 25: 14-30 में तोड़ो का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में पुरस्कार" के बारे में सिखाता है।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। “लोगों को अपने स्वभाविक कौशल और आत्मिक उपहार के अनुसार परमेश्वर द्वारा दिए गए अवसरों (मौकों) का उपयोग करने में विश्वासयोग्य होना चाहिए। परमेश्वर विश्वास और परिश्रम को पुरस्कृत करेंगे, लेकिन वह अविश्वास और लापरवाही को दंडित करेंगे!”

विश्वास परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग उन अवसरों के संबंध में जो परमेश्वर ने उन्हें सौंपे हैं, विश्वासयोग्य और मेहनती हैं। जो कोई भी अपने जीवन-लक्ष्य और जिम्मेदारियों को पूरा करता है, चाहे वह महान हो या छोटा, यह अनुभव करेगा कि उसके अवसरों को कई गुना किया जा रहा है और उसे अधिक अवसरों और अधिक जिम्मेदारियों के साथ पुरस्कृत किया जाएगा। जो कोई भी अपने काम की उपेक्षा करता है और अपने अवसरों को अप्रयुक्त छोड़ देता है, वह अनुभव करेगा कि उसके अवसर कम हो जाते हैं और वह अंत में वह उसे भी खो देगा जो उसे सौंपा गया था।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबिल में दिए समान्तर या प्रक गद्यांश से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टान्तों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य अंशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण परस्पर-सन्दर्भ खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टान्त की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।
खोजें और चर्चा करें। यह कैसे सिखाता है कि जो तोड़ो का दृष्टान्त सिखाता है उसकी तुलना में इनमें से प्रत्येक बाइबल गद्यांश क्या सिखाता है?

(1) वर्तमान समय में हमारी संपत्ति का भण्डारण।

पढ़ें उत्पत्ति 39:2-6; लूका 16:2; 1 कुरिन्थियों 4:1-2,7; 2 कुरिन्थियों 5:19-20; 1 पतरस 4:10।

1 कुरिन्थियों 4:7 में लिखा है, “तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया? और जब की तूने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है कि मानो नहीं पाया?” बाइबल सिखाती है कि हमारे पास जो कुछ भी है वह परमेश्वर के अधिकार में है

और हमें परमेश्वर द्वारा सौंपा गया है। हम केवल परमेश्वर की संपत्ति के भंडारी हैं। मसीह के दूसरे आगमन पर, हमें देखभाल के लिए सौंपी गई हर चीज का हिसाब देना होगा।

(2) दूसरे आगमन से पहले ही भण्डारण संभव है।

पढ़ें मत्ती 24:9-14; 25:5,19; 28:18-20; 2 थिस्सलुनीकियों 2: 2-3; 2 पतरस 3:4-9; प्रकाशितवाक्य 20:1-3,7-11।
यीशु के दूसरे आगमन पर लौटने से पहले कितना समय व्यतीत होगा? यीशु मसीह को शुरू से ही पता था कि उनके दूसरे आगमन से पहले एक लंबा समय बीत जाएगा। यीशु के दूसरे आगमन से पहले कई ऐतिहासिक घटनाएँ होनी थीं। उसे फिर भी मरना था और मरे हुएओं में से जीवित होना था; स्वर्ग में उठाया जाना था और पवित्र आत्मा को उड़ेलना जाना था। दूसरे आगमन से पहले, सुसमाचार को सम्पूर्ण सृष्टि में प्रचार किया जाना था और पवित्र आत्मा को सभी राष्ट्रों में बहुत से लोगों का पुनर्निर्माण करके बदलना था। सभी राष्ट्रों में यीशु के चेले बनाए जाने थे। दूल्हे को आने में काफी समय लगेगा। इसलिए स्वामी के लौटने से पहले “लंबा समय” बाइबल में एक प्रासंगिक विवरण है।

(3) अंतिम न्याय पर प्रत्येक के भण्डारण की जवाबदेही।

पढ़ें सभोपदेशक 12:14; मत्ती 25:19,35-45; लूका 12:47-48; रोमियों 2:16; 2 कुरिन्थियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 20:13। अंतिम न्याय पर प्रत्येक व्यक्ति का क्या होगा? प्रत्येक व्यक्ति ने अपने जीवन में जो कुछ भी सोचा, कहा या किया है, उसका एक-एक हिसाब देना होगा! यहां तक कि उसे इस बात का भी हिसाब देना होगा कि उसने क्या सोचने, कहने और करने की उपेक्षा की है! अंतिम न्याय उसके कामों के अनुसार होगा (रोमियों 2:6; 2 कुरिन्थियों 5:10): उसने जो कुछ उसे सौंपा था, उसके साथ उसने क्या किया। परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार अपने कार्यों का न्याय करेगा (रोमियों 2:6; 2 कुरिन्थियों 5:10) और उसके अनुसार परमेश्वर ने उन्हें जो अवसर दिए थे उनका उपयोग कैसे किया (मत्ती 25:14-30)।

(4) परमेश्वर ने जहाँ बोया वहीं से काटेगा।

पढ़ें निर्गमन 5:7-9; 1 राजा 12:11; मत्ती 25:15।

दुष्ट और आलसी दास ने परमेश्वर के बारे में क्या कहा, अर्थात् परमेश्वर ने जहाँ फसल नहीं बोई है वह वहाँ से कटेगा यह सत्य नहीं है!

दो गद्यांश, इस प्रश्न से सम्बन्ध रखते हैं कि जहाँ बोया नहीं गया है, और दोनों दुष्ट लोगों के लिए ऐतिहासिक संदर्भ हैं। निर्गमन 5:7-9 के अनुसार, फिरौन ने वहाँ कटाई करने की कोशिश करी जहाँ उसने नहीं बोया था। इस्राएलियों को पुआल दिए बिना, उसने मांग की कि वे पहले की तरह ईंटें बनाते रहें। 1 राजा 12:11 के अनुसार, राजा रहूबियाम ने जहाँ बोया नहीं था, उसे काटने की कोशिश की। उसने यहूदा के लोगों से कहा, “मेरे पिता ने तुम पर जो भारी जूआ रखा था, मैं उसे और भी भारी करूँगा।”

हालाँकि, परमेश्वर दुष्ट फिरौन या दुष्ट राजा रहूबियाम के समान नहीं है। परमेश्वर जहाँ फसल नहीं बोता है, वहाँ नहीं काटता है! लेकिन वह फसल जरूर काटेगा जहाँ उसने बोया है! वह निश्चित रूप से हमें उन चीजों के लिए जिम्मेदार ठहराएगा जो उसने हमें सौंपी हैं। मत्ती 25:14 के अनुसार, परमेश्वर, इस दृष्टान्त में स्वामी की तरह, प्रत्येक मनुष्य को उसकी स्वभाविक और आत्मिक क्षमताओं के अनुसार तोड़े (अवसर) देते हैं! जब वह कार्य सौंपता है, तो वह प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व और योग्यता (क्षमता) को दया के साथ आंकता है। हालाँकि, वह अपने तोड़े को वितरित करके बोता है! तोड़े को वितरित करके, वह

(बिखेरता) बोता है! इसलिए यह सिर्फ इतना है कि वह काटता भी है!

(5) बहाने करने वाला मनुष्य तोड़ो का भंडारी नहीं होता।

पढ़ें मत्ती 7:15-23; 22:5; 25:21,23,44-45; लूका 13:26-27; 14:18-20।

दुष्ट और आलसी लोग किस तरह के बहाने बनाते हैं? लोग अक्सर परमेश्वर के सामने सभी तरह के बहाने बनाते हैं।

मत्ती 25:24-25 के अनुसार, दुष्ट सेवक ने अपने कार्य को इसलिए नजरंदाज नहीं किया क्योंकि वह हीन महसूस करता था, बल्कि इसलिए कि वह संदेहजनक था! उसने अपने स्वामी पर कठोर और अनुचित होने का आरोप लगाया। इसी तरह, कई लोग अपने पापों और अपने कर्तव्यों की उपेक्षा के लिए परमेश्वर को दोषी मानते हैं।

लूका 13:26-27 के अनुसार, कुछ लोग यह दावा करेंगे कि वे धरती पर मसीह के साथ जुड़े हुए हैं, कि उन्होंने उसके साथ भोजन किया था और उसकी शिक्षा सुनी थी। लेकिन मसीह उनसे कहेगा कि वह उन्हें नहीं जानता, अर्थात् उनका कोई व्यक्तिगत संबंध या संगति नहीं थी।

मत्ती 7:15-20 उनके बीच में झूठे मसीही भविष्यद्वक्ता और शिक्षकों के प्रति मसीही चेलों के संबंध की बात करते हैं। आखिरकार इन झूठे मसीहियों का दुष्ट प्रभाव बहुत स्पष्ट हो जाएगा!

मत्ती 7:21 उनके बीच में नाम के मसीहियों के प्रति मसीही चेलों के संबंध की बात करता है। जबकि नाम के मसीही मसीह का अपने होंठों से अंगीकार करते हैं, सच्चे मसीही वास्तव में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं।

मत्ती 7:22-23 में उनके बीच में झूठे मसीही आश्चर्यकर्म करने वालों के प्रति मसीही चेलों के संबंध के बारे में बताया गया है। यद्यपि वे मसीह का प्रचार करते हैं और आश्चर्यकर्म करने में सक्षम हैं, उन्हें मसीह द्वारा नहीं बुलाया गया है (और फलस्वरूप उनका न्याय, बचाया गया)। वे शायद दुष्ट की शक्तियों के साथ मिलकर अपना धर्म निभाते हैं।

मत्ती 25:44-45 के अनुसार, कुछ लोग कहेंगे कि जब वे धरती पर थे, तो उनकी मदद के लिए उन्होंने कभी मसीह को नहीं देखा था। लेकिन मसीह कहेंगे कि जो कुछ उन्होंने अन्य मसीहियों के साथ नहीं किया था, वह उनके साथ भी नहीं किया गया।

मत्ती 22:5 के अनुसार, कुछ लोग कहेंगे कि उनके पास परमेश्वर की बातों के लिए समय नहीं है, और वे अपने व्यवसाय या पृथ्वी के काम में बहुत व्यस्त हैं।

और लूका 14:18-20 के अनुसार, लोग सभी प्रकार के बहाने बनाएंगे कि मसीह के उद्धार की बुलाहट का जवाब न दें। कोई कहेगा कि उसने अभी अभी एक खेत खरीदा है और उसे जाकर देखना चाहिए। एक और कहेगा कि उसने अभी अभी पांच बैल खरीदे और उन्हें आजमा कर देखना चाहिए। कोई दूसरा व्यक्ति कहेगा कि उसने अभी विवाह किया है और इसलिए वह नहीं आ सकता है।

इस प्रकार, दुष्ट और आलसी लोग सभी प्रकार के बहाने बनाएंगे कि वे मसीह का अनुसरण, आराधना या सेवा न करें।

(6) विश्वासयोग्य भंडारी के लिए पुरस्कार।

पढ़ें मत्ती 25: 21,23; 2 तीमुथियुस 4:8।

विश्वासयोग्य और मेहनती दासों को कैसे पुरस्कृत किया जाएगा? उनकी वर्तमान ज़िम्मेदारियाँ, जो पृथ्वी पर ईमानदारी और लगन से क्रियान्वित की जाती हैं, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में उनकी भावी ज़िम्मेदारियों से बहुत अधिक महत्वपूर्ण होंगी। इसके अलावा, आगे जीवन में वे परमेश्वर के आनंद और अन्य मसीहियों के आनंद को साझा करेंगे!

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा का सारांश बताएं।

चर्चा करें। तोड़ो के दृष्टान्त के मुख्य उपदेश या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना या *मानना* सिखाया और उसने हमें क्या *करना* या *बनना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर कैसा है।

परमेश्वर अंतिम न्याय पर प्रत्येक मसीही को अपने अनुग्रह के द्वारा पुरस्कृत करेंगे।

हालाँकि, ये सभी पुरस्कार इसलिए नहीं दिए गए हैं कि मसीही उनके लायक या उन्हें अर्जित किया है, बल्कि इसलिए कि सब कुछ परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह पर आधारित है। इफिसियों 2:10 के अनुसार, यहां तक कि मसीही जो कार्य करते हैं, वे परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित होते हैं!

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें किसके समान होना चाहिए।

परमेश्वर की सेवा ईमानदारी और लगन से करना महत्वपूर्ण है:

परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग क्षमताओं और अवसरों के संबंध में वफादार और मेहनती हैं, जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें सौंपा है। परमेश्वर सफलता या परिणाम को पुरस्कृत नहीं करता है, लेकिन विश्वास और परिश्रम को। पूरक 15 भी देखें: “दस मोहरों का दृष्टान्त”।

(3) एक महत्वपूर्ण सिद्धांत।

परमेश्वर के राज्य में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत “जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा। लेकिन जिसके पास नहीं है, उसे भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।” (मत्ती 25:29)।

- परमेश्वर ने हमें जो कुछ सौंपा है, उसका उपयोग करने की उपेक्षा करने से, हम वह सब कुछ खो देंगे जो मूल रूप से हमें सौंपा गया था।
- लेकिन उसका प्रयोग करके जो परमेश्वर ने हमें क्या सौंपा है, हम आत्मिक धन में वृद्धि करेंगे!

5	प्रार्थना (8 मिनट) <i>[प्रतिक्रियाएँ]</i> परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना
---	--

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए समूह में **बारियाँ लें।** या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	तैयारी करें (2 मिनट) <i>[सौंपा गया कार्य]</i> अगले अध्याय के लिए
---	---

(समूह का अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर “एक अयोग्य दास” का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन यहेजकेल 36, 37, 38 और 39 के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। (17) रोमियों 12:17। पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। रोमियों 14:1-23।
बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन सहिता 5:3)।
7. परमेश्वर के राज्य पर प्रचार करने के लिए अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। शांत समय में अपने नोट्स, अपने स्मरण किए हुए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना
---	-----------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना करें।** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपे।

2	साझा करें (20 मिनट) [शांत समय] यहेजकेल 36,37,38 और 39
---	--

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें (या)** अपने नोट्स से **पढ़ें**) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यहेजकेल 36,37,38 और 39) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट) [रोमियों में प्रमुख वचन] (17) रोमियों 12:17
---	--

दो-दो करके **पुनरावलोकन करें।**

(17) रोमियों 12:17-18. बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के लिये भली हैं, उनकी चिन्ता किया करें। जहाँ तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।

4	बाइबल अध्ययन (85 मिनट) [रोमियों की पत्री] रोमियों 14:1-23
---	--

परिचय। एक साथ मिलकर **रोमियों 14:1-23** का अध्ययन करने के लिये बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों वाली विधि का प्रयोग करें।

रोमियों 14:1 से 15:6 उन मसीहियों के सम्बन्ध मसीही की जिम्मेदारी को सिखाता है जिनका विश्वास (या यों कहें: आस्था) कमजोर या मजबूत है। इस संदर्भ में, यह उद्धार के अर्थ में उनका यीशु मसीह के प्रति विश्वास नहीं होता, परन्तु इस विषय में उनकी आस्था कि वे मसीही के रूप में क्या कर सकते हैं या नहीं कर सकते हैं! उनका व्यक्तिपरक विश्वास विवादित (विवादास्पद) मामलों के विषय में उनके व्यक्तिगत विचारों, आस्था या प्रतीतियों को निर्धारित करता है।

परन्तु ध्यान दें, एक मसीही जिसका विवादित (विवादास्पद) चीजों के मामले में “एक मजबूत विश्वास” है, उसका उसी समय में अन्य आत्मिक मामलों में “कमजोर विश्वास” हो सकता है, जैसे कि मसीही सत्य का ज्ञान, प्रार्थना, विश्वासयोग्यता या मसीही सेवकाई में उत्साहित होना। इसी प्रकार, एक मसीही जिसका विवादित चीजों के मामले में “एक कमजोर विश्वास” है, उसी समय में उसका अन्य आत्मिक मामलों में “एक मजबूत विश्वास” हो सकता है।

कदम 1. पढ़ें।

परमेश्वर का वचन

आइये एक साथ मिलकर रोमियों 14:1-23 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें।

अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छूआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

14:1-2

खोज 1. मसीहियों के बीच विवादित (विवादास्पद) मामले।

(1) गैर-विवादित मामले।

पौलुस के पत्रियों में, वह विभिन्न स्थितियों में मसीहियों को लिखता है। उदाहरण के लिए:

- कुरिन्थ वासियों को लिखे अपने पत्र में, वह मसीहियों के न्यायालय में जाने की समस्या, मसीहियों द्वारा उनके बीच में अवज्ञाकारी मसीहियों को सहने, विवाह और तलाक आदि जैसी समस्याओं से निपटता है।
 - गलातिय वासियों को लिखे अपने पत्र में, वह यहूदियों की झूठी शिक्षा से निपटता है कि व्यवस्था के कार्यों को करने के माध्यम से मसीही उद्धार प सकते हैं।
 - कुलुस्सिय वासियों को लिखे अपने पत्र में, वह आत्मज्ञान की झूठी शिक्षा से निपटता है कि मानव आत्मा को मानव शरीर से मुक्त किया जाना आवश्यक था, विशेष रूप से कड़ी तपस्या के माध्यम से।
- इन सभी मामलों के विषय में बाइबल में स्पष्ट शिक्षा है। ये विवादित मामले नहीं हैं।

(2) विवादित (विवादास्पद) मामले।

हालाँकि, मसीहियों के बीच विवादित मामले हैं। रोमियों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस विवादित मामलों के मुद्दे से निपटता है। “विवादित मामले” ऐसे मामले हैं जिनके विषय में बाइबल में थोड़ी या कोई शिक्षा नहीं है। इसके बावजूद, ऐसे मसीही हैं जो इन मामलों के विषय में मजबूत राय, आस्था या विश्वास रखते हैं और इसके परिणामस्वरूप उनके तर्क या विवाद होते हैं। प्रेरित ने कहा, “विवादित मामलों पर न्याय किए बिना उसे स्वीकार करो जिसका विश्वास कमजोर है” (यूनानी: मे आई आक्रिसे लोगिस्मोन)।

रोम में मसीही अलग-अलग पृष्ठभूमि से आए और उन्होंने कुछ मामलों के विषय में अलग-अलग राय रखी। उनकी राय में मतभेद यहाँ तक पतित हुए कि मजबूत मसीही कमजोर मसीहियों के दृढ़ विश्वास को कम समझते थे और कमजोर मसीही मजबूत के दृढ़ विश्वास को आँकते थे।

राय ऐसे विचार होते हैं जिन्हें संभावना के रूप में माना जाता है, जबकि आस्था दृढ़ विश्वास होता है। परन्तु रोम में, कुछ लोग अपनी राय को दृढ़ विश्वास मानते थे! रोम के मसीही इस विषय में अलग-अलग राय रखते थे कि वे क्या खा सकते हैं या नहीं (शुद्ध और अशुद्ध भोजन) और इसके विषय में कि कौनसा दिन एक धार्मिक त्योहार है (एक सप्ताह, एक उपवास दिन, एक फसह, आदि)। वे इस विषय में झगड़ा करते थे कि क्या एक मसीही सब कुछ खा सकता है या केवल सब्जियाँ (रोमियों 14:2)। और वे इस विषय में झगड़ा करते थे कि क्या मसीही को एक दिन को दूसरे दिन की तुलना में अधिक पवित्र मानना चाहिए या हर दिन को एक जैसा मानना चाहिए (रोमियों 14:5)।

इन विवादों की संभावित पृष्ठभूमि शायद पुराने नियम की औपचारिक व्यवस्था थी जिसके साथ वे मसीही जुड़े हुए थे, जो पहले यहूदी या यहूदी मत को अपनाए हुए थे। पुराने नियम में औपचारिक व्यवस्था ने परमेश्वर की उन आवश्यकताओं के विषय में बताया कि उसके लोग कैसे उससे संपर्क कर सकते हैं और उसकी उपासना कर सकते हैं। उसमें पवित्र व्यक्तियों (याजकों और लेवियों), पवित्र स्थानों (मिलाप का तम्बू और मंदिर), पवित्र समय (सप्ताह के दिन, धार्मिक पर्व) और पवित्र कार्यों (बलिदान, खतना, शुद्ध खाने, स्वयं को धोना, पहले-जन्मे, पहले फल, दशमांश, आदि) के विषय में नियम सम्मिलित थे। यहूदियों के धर्म शिक्षकों ने इन में 613 अन्य मानव निर्मित नियम जोड़े और सभी यहूदियों के लिए अपने नियमों को अनिवार्य बना दिया।

इस प्रकार, विशेष रूप से यहूदी और यहूदी मत को अपनाए हुए लोगों ने, जो बाद में मसीही बन गए थे, अभी भी ऐसे नियमों को बहुत महत्वपूर्ण या अनिवार्य मानते थे। वे अभी तक यह नहीं समझ पाए थे कि अपने प्रथम आगमन पर यीशु मसीह ने औपचारिक व्यवस्था को बदल (इब्रानियों 7:12), पूरा (मत्ती 5:17), रद्द (कुलुस्सियों 2:14) और निरस्त (समाप्त) (इफिसियों 2:14-15) कर दिया था और यहूदी धर्म शिक्षकों के सभी मानव निर्मित नियमों को अस्वीकृत (मरकुस 7:1-13) कर दिया गया था! दूसरी ओर गैर-यहूदी जो मसीही बन गए थे, इन नियमों को महत्वपूर्ण या अनिवार्य नहीं मानते थे। इस प्रकार से व्यक्तिगत रायों के विषय में तर्क आए थे।

उनकी राय में मतभेद का मामला जटिल बन गया था, जब दोनों पक्षों के मसीही अपनी व्यक्तिगत राय को दृढ़ विश्वास के रूप में मानने लगे थे! विवादित मामलों पर राय अपने आप में गलत नहीं थी। परन्तु जब लोग अपनी व्यक्तिगत राय (या कलीसिया की परंपराओं) के माध्यम से परमेश्वर का वचन शक्तिहीन (यूनानी: आकुरु) (वर्तमान काल) (एनआईवी: अमान्य ठहराना) (मरकुस 7:13; गलातियों 3:17) करते हैं, अन्य मसीहियों पर अपनी व्यक्तिगत राय को लागू (प्रेरितों 15:1) करते हैं, इस प्रकार की राय रखते हुए लोगों को कम समझते हैं या उनकी निंदा (रोमियों 14:3) करते हैं, तब दोनों ओर एक दूसरे को प्रेम में स्वीकार करने की आज्ञा का उल्लंघन होता है (रोमियों 14:1)!

(3) आज मसीहियों के बीच विवादित (विवादास्पद) मामले।

हमारे समय में, मसीही निम्नलिखित मामलों को विवादित मामला मान सकते हैं:

- क्या मसीहियों को पूरे वर्ष में सभी मसीही त्योहारों को मनाना चाहिए या उनमें से केवल कुछ को?
- क्या मसीहियों को एक विशेष तरीके से लोगों को बपतिस्मा देना चाहिए?
- क्या मसीहियों को हर सप्ताह या हर वर्ष केवल कुछ ही बार प्रभु भोजन मनाना चाहिए?
- क्या मसीहियों को प्रभु के दिन में दो बार कलीसिया की सभाओं में भाग लेना चाहिए या हर दिन चर्च जाना चाहिए?
- क्या मसीहियों को केवल बाइबल में दिए भजन गाने चाहिए या वे नए आत्मिक गीत बना सकते हैं या गा सकते हैं?

- क्या मसीही आराधना सभा में विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों का उपयोग करें (भजन संहिता 150)?
- क्या मसीही अलग-अलग ढंग के संगीत बनायें, गायन के दौरान ताली बजाएँ, नाचें या सभा के दौरान शोर मचाएँ?
- क्या कलीसिया के अगुवों को अलग लिपिकीय वस्त्र पहनने चाहिए?
- क्या मसीहियों को विशेष प्रकार के कपड़े पहनने चाहिए जो उन्हें मसीहियों के रूप में अलग पहचान दें?
- क्या मसीही पुरुषों को छोटे बाल या दाढ़ी रखनी चाहिए?
- क्या मसीही महिलाओं को सिर पर शॉल या ओढ़नी लेनी चाहिए?
- क्या मसीही आभूषण पहनें, शराब पियें, नाचें, बिना जुए के भाग्य वाले (पासा फेंकने वाले) खेल खेलें, टेलीविजन देखें या फिल्में देखें, आदि।
- क्या कलीसिया की आधिकारिक सभाओं में महिलाएँ बात कर सकती हैं?
- क्या समलैंगिक अभिविन्यास वाले लोग कलीसिया की गतिविधियों में भाग ले सकते हैं?
- क्या नशा करनेवालों और वेश्याओं का कलीसिया की सभाओं में भाग लेने के लिए स्वागत है?
- क्या मसीहियों को राजनीति और समुदाय में भाग लेना चाहिए?
- क्या मसीहियों को पर्यावरण के मुद्दों जैसे पानी के संरक्षण और वैश्विक तापमान बढ़ौतरी के विषय में चिंतित होना चाहिए?
- क्या मसीहियों को इस बात की चिंता करनी चाहिए कि वे कितनी मछली पकड़ते हैं, माँस उद्योग के लिए वे कितने मवेशियों को पालते हैं, कारों के ईंधन या बीड़ी के तंबाकू के उत्पादन के लिए वे कितनी कृषि भूमि का उपयोग के लिए करते हैं?
- क्या मसीहियों को वर्षावनों, पक्की लकड़ी, पक्षियों, जानवरों, कीटों आदि को बचाने में सहायता करनी चाहिए।
- क्या मसीहियों को हथियार उद्योग को मंजूरी देनी चाहिए क्योंकि वह अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है?
- क्या प्रत्येक इंसान को बंदूक खरीदनी या रखनी चाहिए (यूएसए में दूसरा संशोधन) (मत्ती 26:52)?
- आदि।

मसीहियों को इन बातों के विषय में व्यक्तिगत आस्था रखने की आवश्यकता है! परन्तु मसीहियों को यह भी एहसास होना चाहिए कि अन्य मसीही इन चीजों के विषय में अलग-अलग आस्था रख सकते हैं!

14:3-4

खोज 2. रवैया जो मसीहियों का विवादित मामलों के संबंध में होना चाहिए।

पद 1 विशिष्ट मसीहियों को “विश्वास में कमजोर” कहता है। इस संदर्भ में, यहाँ इसका अर्थ यीशु मसीह के उद्धार के लिए उनका विश्वास नहीं है, बल्कि उनका यह विश्वास कि वे मसीही के रूप में क्या कर सकते हैं या नहीं कर सकते हैं! उनका व्यक्तिपरक विश्वास विवादित मामलों के संबंध में उनकी व्यक्तिगत राय, आस्था या विश्वास को निर्धारित करता है। ऐसे मसीही हैं जिनका व्यक्तिगत विश्वास उन्हें कुछ खाद्य पदार्थ खाने से मना करता है और कुछ ऐसे मसीही हैं जिनका व्यक्तिगत विश्वास उन्हें हर चीज खाने की अनुमति देता है।

“कमजोर” और “मजबूत” वर्णनों द्वारा, किसी निंदा का अभिप्राय नहीं, परन्तु केवल अंतर करना है। पौलुस उस विश्वास को “कमजोर विश्वास” कहता है जो लोगों को कुछ चीजों को करने के लिए मना करता है, क्योंकि इस प्रकार का विश्वास उन

मसीहियों के आचरण से ठोकर और विनाश के लिए अतिसंवेदनशील है, जिनका विश्वास उन्हें वही चीजों को करने की अनुमति देता है।

(1) दृढ़ विश्वास वाले मसीही कमजोर विश्वास वाले मसीहियों पर न्याय पारित न करें।

रोमियों 14:1 कहता है, “जो विश्वास में निर्बल है, उसे अपनी संगति में ले लो, परन्तु उसी शंकाओं पर विवाद करने के लिए नहीं।” प्रेरित पौलुस के प्रबोधन का यह भाग दृढ़ विश्वास वाले मसीहियों के लिए है। वे कमजोर विश्वास वाले मसीहियों के विचारों या राय के विषय में कोई न्याय न बनायें। मजबूत कमजोर लोगों के संदेहों या विभिन्न आस्थाओं दोषों के विषय में अलग-अलग बयान न दें। उदाहरण के लिए, वे उनके विश्वास के विषय में नकारात्मक बयान न दें कि वे क्या खाते हैं या पीते हैं या वे किन दिनों को अन्य दिनों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। वे ऐसे लोगों को नीचा या तुच्छ न समझें (रोमियों 14:3)।

(2) कमजोर विश्वास वाले मसीही मजबूत विश्वास वाले लोगों की निंदा न करें।

रोमियों 14:3 कहता है, “और खानेवाला न-खाने वाले को तुच्छ न जाने, और न-खानेवाला खाने वाले पर दोष न लगाए।” प्रेरित पौलुस के प्रबोधन का यह भाग कमजोर विश्वास वाले मसीहियों के लिए है। वे उनसे अलग खाने वाले, या उनसे अलग कपड़े पहनने वाले, या उनसे अलग गाने वाले मजबूत विश्वास के मसीहियों का न्याय न करें या उनकी निंदा न करें। परमेश्वर ने मजबूत विश्वास वाले मसीहियों को स्वीकार किया है और इसलिए कमजोर विश्वास वाले मसीही उनकी “दूसरे दर्जे के मसीही” या “कोई मसीही नहीं” होने के रूप में निंदा न करें! वे उन्हें “अवज्ञाकारी” या “अनात्मिक” मसीही न मानें। परमेश्वर ने मजबूत मसीही को स्वीकार कर लिया है और कमजोर मसीही उसकी निंदा न करें जिसे परमेश्वर ने अनुमोदित किया है या उसे अस्वीकार न करें जिसे परमेश्वर ने स्वीकार किया है।

रोमियों 14:4 कहता है, “तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बन्ध रखता है।” कमजोर मसीहियों को प्रभु के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करने के लिए प्रेरित किया गया है जिसने मजबूत मसीहियों को उनकी अधिक स्वतंत्रता की जीवन शैली के साथ स्वीकार किया है।

एक मजबूत विश्वास वाले मसीहियों द्वारा स्वतंत्रता के अभ्यास के संबंध में कमजोर मसीहियों की प्रवृत्ति में वह “सांसारिकता” या “धर्मत्याग”, यहाँ तक कि विश्वास से “हटना” भी माना गया। कमजोर मसीही ने सोचा कि मजबूत मसीही की जीवन-शैली मसीह की अस्वीकृति के अधीन थी। परन्तु पौलुस का कहना है कि कलीसिया के प्रभु ने घर के नियमों और मानदंडों को निर्धारित किया था और घर के रहने वालों को अपने स्वयं के मानदंडों और नियमों के साथ एक दूसरे का न्याय करने की अनुमति नहीं थी। वह कमजोर मसीहियों को बोलता है कि वे मजबूत मसीहियों के अपने कठोर निर्णय को रद्द कर दें। प्रभु मजबूत मसीहियों की जीवन शैली को मंजूरी देता है और यह देखता है कि मजबूत मसीही अपने विश्वास में खड़े रहें।

कदम 3. प्रश्न।

व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आइये रोमियों 14:1-23 में पायी जाने वाली सच्चाइयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होने दें कि पहले हर सदस्य अपना

प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

14:5-9

प्रश्न 1. मसीहियों को विवादित (विवादास्पद) मामलों के विषय में अपनी व्यक्तिगत राय या आस्था को कैसे मानना चाहिए?

ध्यान दें।

(1) विवादित (विवादास्पद) मामलों के विषय में मसीहियों को अपने स्वयं के मन में पूरी रीति से आश्वस्त होना चाहिए (रोमियों 14:5)

दो चरम सीमाएं हैं और दोनों से बचना चाहिए।

एक ओर, ऐसी कालीसियाएँ हैं जो अनुरूपता की माँग करती हैं। जब कलीसिया के अगुवे या सदस्य विवादित मामलों में अनुरूपता की माँग करते हैं, तो परमेश्वर का लक्ष्य चूक जाता है, अर्थात्, एक दूसरे से प्रेम करना और विविधता को स्वीकार करना! प्रेरित पौलुस मसीहियों को कलीसिया में विविधता को स्वीकार करने और विवादित मामलों (मांस खाने और शराब पीने जैसे) के विषय में एक दूसरे की प्रतिबद्धता को सहन करने के लिए प्रेरित करता है, वचन 23।

दूसरी ओर, ऐसे मसीही हैं जिनके पास व्यक्तिगत आस्था की कमी है। प्रेरित पौलुस कहता है कि प्रत्येक मसीही को विभिन्न विवादित मामलों के विषय में “अपने मन में पूरी रीति से आश्वस्त होना चाहिए” (यूनानी: तो इदिओ नोए प्लेरोफोरेओ) (आदेश, वर्तमान काल) क्योंकि केवल यही वह तरीका है जिससे वह इन चीजों को प्रभु के लिए सचेत रूप से कर सकता है या नहीं कर सकता है। प्रत्येक मसीही को न केवल इन मामलों में एक व्यक्तिगत राय या आस्था रखने का अधिकार है, परन्तु परमेश्वर की यह माँग है कि प्रत्येक मसीही को अपनी आस्थाओं के विषय में स्पष्ट होना चाहिए और अपनी आस्थाओं के अनुसार जीना चाहिए।

(2) मसीहियों को अपना पूरा आचरण सब कुछ परमेश्वर हेतु करने के रूप में निर्धारित करना चाहिए (रोमियों 14:6)।

स्वतंत्रता के क्षेत्र में (जहाँ मसीही चुन सकते हैं और निर्णय ले सकते हैं) एक मसीही का आचरण अधर्मी नहीं है। एक मसीही जो कुछ भी करता है या करने से मना करता है वह “प्रभु के प्रति” है। वह इस चेतना के प्रति कभी भी निराश नहीं होता कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है (1 कुरिन्थियों 10:31; कुलुस्सियों 3:17,23)। वह आंतरिक रवैया जिसके साथ किसी विशेष आस्था का अभ्यास किया जाता है या अभ्यास करने से रूका जाता है, जो परमेश्वर की दृष्टि में महत्वपूर्ण है।

दोनों मजबूत और कमजोर मसीहियों की व्यक्तिगत आस्था और परिणामस्वरूप आचरण, परमेश्वर को स्वीकार्य होने का प्रमाण यह है कि दोनों मजबूत और कमजोर मसीही परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं (मत्ती 15:36; प्रेरितों 27:35; 1 कुरिन्थियों 10:30), चाहे वे चीजें असीमित या सीमित तरीके से करें। “क्योंकि परमेश्वर की बनाई हर चीज अच्छी है और कोई भी अस्वीकार नहीं होनी चाहिए यदि वह धन्यवाद के साथ प्राप्त हुई है, क्योंकि वह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना से पवित्र हुई है”! बनाई गई चीजें परमेश्वर को स्वीकार्य होती हैं, जब:

- वे बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के अनुसार उपयोग की जाती हैं (1 तीमथियुस 4:5)

- वे व्यक्तिगत आस्था के साथ उपयोग की जाती हैं (रोमियों 14:5)
- मसीही ने उनके विषय में प्रार्थना की है (1 तीमथियुस 4:4; प्रकाशितवाक्य 3:6)।

परमेश्वर का धन्यवाद करने से, मसीही परमेश्वर के प्रति अपना आभार और मसीह के प्रति समर्पण की भावना प्रकट करते हैं।

(3) मसीही अपनी व्यक्तिगत आस्था का रचनात्मक रूप से

बचाव कर सकते हैं (रोमियों 14:16)।

“जिस चीज़ को आप अच्छा मानते हैं उसे बुरा न बोलने दें”। जिसे मज़बूत मसीही अच्छा मानता है, वह जो खाता है और पीता है, या पुराने नियम के त्योहार के दिनों को कैसे देखता है, इस संबंध में उसकी स्वतंत्रता है। मज़बूत मसीही को यह महसूस करने की आवश्यकता नहीं है कि किसी विवादित मामले में उसकी स्वतंत्रता एक कमज़ोर मसीही के विवेक से आंकी जाती है, क्योंकि वह अपनी स्वतंत्रता के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता है (1 कुरिन्थियों 10:29-30)।

इसके बजाय, मज़बूत मसीही को वह करना चाहिए जो कुछ भी वह करता है और कमज़ोर मसीही को ऐसा कुछ करने से बचना चाहिए जिसका जिसका वह परमेश्वर की महिमा के प्रति समर्थन नहीं करता है (1 कुरिन्थियों 10:31)। मज़बूत मसीही उसका आनंद लेने के लिए स्वतंत्र है जो धन्यवाद के साथ प्राप्त करने के लिए परमेश्वर ने बनाया है। इस प्रकार मज़बूत मसीही को दोषी, अस्वीकृत या शर्मिंदा महसूस नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह कुछ विशेष आस्थाएँ रखता है, जिसे कि कमज़ोर मसीही अस्वीकार करते हैं। जब उसकी आस्थाओं पर कमज़ोर मसीहियों द्वारा आक्रमण किया जाता है या उन्हें अस्वीकृत कर दिया जाता है, तो मज़बूत मसीही रचनात्मक रूप से और प्रेम से अपनी आस्थाओं की रक्षा कर सकता है।

(4) मसीहियों को विवादित (विवादास्पद) मामलों के विषय में अपनी व्यक्तिगत आस्था को अपने और परमेश्वर के बीच रखना चाहिए (14:22)।

“आप इन चीज़ों के विषय में जो भी मानते हैं, उसे अपने और परमेश्वर के बीच रखें” कमज़ोर मसीहियों की हानि के लिए विवादित मामलों के संबंध में मज़बूत मसीही अपने अधिकारों और स्वतंत्रता का प्रदर्शन या प्रतिवाद न करें! हालाँकि, मज़बूत मसीहियों को इस प्रकार की आस्था रखने का अधिकार है और वे अपनी आस्थाओं का आत्मसमर्पण न करें! यदि वे अपनी आस्थाओं का आत्मसमर्पण करेंगे, तो वे ऐसा विश्वास के बिना करेंगे, और यह “पाप” होगा (रोमियों 14:23)।

14:10-14

प्रश्न 2. मसीहियों को विवादित (विवादास्पद) मामलों के विषय में दूसरों की व्यक्तिगत राय या आस्था को कैसे देखना चाहिए?

ध्यान दें।

(1) मसीहियों को विवादित मामलों के संबंध में दूसरों की व्यक्तिगत राय, आस्था या विश्वास का न्याय नहीं करना चाहिए (रोमियों 14:10-12)।

सभी मसीही एक दिन परमेश्वर के न्याय के आसन के समक्ष खड़े होंगे और अपने जीवन का लेखा-जोखा परमेश्वर को देंगे। मसीही परमेश्वर को इसका कोई लेखा नहीं देंगे कि अन्य मसीही कैसे रहे हैं, परंतु उन्हें उसका लेखा देना होगा कि वे स्वयं कैसे रहे हैं! “परमेश्वर हर छिपी हुई वस्तु सहित हर काम को न्याय में लाएगा, भले वह अच्छा हो या बुरा।” और यीशु ने कहा, “मैं तुम से कहता हूँ कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे” (मत्ती 12:36)।

इसलिए, मसीहियों को विवादित मामलों के क्षेत्र में अन्य मसीहियों की व्यक्तिगत आस्था या आचरण पर न्याय नहीं करना चाहिए या उसे कम नहीं समझना चाहिए। परमेश्वर ने मसीहियों को मसीही कलीसिया के बाहर लोगों का न्याय करने से मना किया है। यह परमेश्वर का विशेषाधिकार है (मत्ती 7:1-2; 1 कुरिन्थियों 5:12-13)। परमेश्वर ने मसीहियों को अन्य मसीहियों का न्याय करने से भी मना किया है, सिवाय स्पष्ट पाप के मामले में (तुलना करें: मत्ती 18:15-17; 1 कुरिन्थियों 5:1-13; 1 तीमुथियुस 5:20)। मसीहियों को बल्कि अपने स्वयं के व्यवहार और प्रेमहीन आचरण को जाँचना चाहिए, जाँचना चाहिए कि क्या वे अपने स्वयं की आस्थाओं के अनुसार रहते हैं, और जाँचना चाहिए कि क्या वे अपनी अलग-अलग आस्थाओं के कारण दूसरों का न्याय करने से रुके हैं!

(2) मसीहियों को इस बात में अंतर करना चाहिए कि उद्देश्यपूर्ण रूप से क्या सत्य है और कुछ मसीही किसे आत्मगत रूप में सत्य मानते हैं (रोमियों 4:14)।

बाइबल में स्पष्ट रूप से जो आज्ञाएँ, निषेध या शिक्षाएँ दी गई हैं, वह उद्देश्यपूर्ण रूप से सत्य है। और जिसे सत्य माना जाता है, भले ही जब उसके विषय में बाइबल में कोई स्पष्ट शिक्षा नहीं दी गई है, वह आत्मगत रूप में सत्य है। बाइबल में दिया केवल उद्देश्यपूर्ण सत्य शिक्षा और जीवन का आधार है। अन्य लोगों का आत्मगत सत्य उन्हें प्रेम दिखाने का आधार है।

उदाहरण के लिए, यीशु ने स्पष्ट रूप से सिखाया कि सभी भोजन “शुद्ध” हैं (मरकुस 7:15,19)। और प्रेरित पौलुस ने यह भी सिखाया कि जो कुछ भी परमेश्वर ने बनाया है वह “अच्छा” है और कुछ भी “अस्वीकृत” नहीं किया जाना चाहिए यदि वह धन्यवाद के साथ प्राप्त होता है (1 तीमुथियुस 4:4-5; तुलना करें रोमियों 14:14,20)। प्रेरित पौलुस इस सच्चाई को मानता है कि सभी भोजन शुद्ध हैं और बाइबल में पढ़ाए गए उद्देश्यपूर्ण सत्य के रूप में खाए जा सकते हैं। यह उद्देश्यपूर्ण सत्य उसका व्यक्तिगत आत्मगत सत्य भी है।

हालाँकि, यद्यपि बाइबल में दी गई उद्देश्यपूर्ण शिक्षा का उद्देश्य सभी प्रकार के भोजन को “शुद्ध” मानना है, परन्तु ऐसे मसीही भी हैं जो आत्मगत आस्था रखते हैं कि कुछ भोजन “अशुद्ध” है। एक कमजोर मसीही इस उद्देश्यपूर्ण सत्य को जान सकता है कि सभी भोजन “शुद्ध” हैं, फिर भी आत्मगत रूप से विश्वास नहीं कर सकता कि सभी भोजन “शुद्ध” हैं। उदाहरण के लिए, उसे सूअर का मांस खाना असंभव लगता है। या वह शराब पीने के बिल्कुल विरोद्ध में है। जब मजबूत मसीही कमजोर मसीहियों से संबंधित होते हैं, तो उन्हें केवल बाइबल में दिए गए उद्देश्यपूर्ण सत्य को ही नहीं, बल्कि कमजोर मसीही के आत्मगत सत्य, व्यक्तिगत आस्था को भी ध्यान में रखना चाहिए!

मूर्तियों के संबंध में भी स्थिति समान है (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 8:4,7)। कई मसीही जानते हैं कि वास्तव में मूर्ति का कोई अस्तित्व नहीं है और कोई ईश्वर नहीं है परन्तु केवल बाइबल का जीवित परमेश्वर है। अन्य “देवी-देवता” का अस्तित्व केवल मानव निर्मित छवियों के रूप में या मानव मन द्वारा तैयार किए गए विचारों के रूप में है। हालाँकि, प्रत्येक मसीही को यह पता नहीं है या यह उसकी आस्था नहीं है! कुछ मसीही अभी भी मूर्तियों के इतने आदी हैं कि वे आत्मगत रूप से मूर्तियों को चढ़ाए गए खाद्य पदार्थों को “अशुद्ध” मानते हैं! इस प्रकार भेद बाइबल की शिक्षा और व्यक्तिगत आस्था के बीच है। भेद “वास्तव में उद्देश्यपूर्ण रूप से सच क्या है” और “आत्मगत रूप से किसे सच माना जाता है” के बीच है! मसीहियों को विवादित मामलों के विषय में बाइबल की शिक्षा को जानना चाहिए, परन्तु फिर भी अपनी स्वयं की आत्मगत भावनाओं और विचारों के साथ-साथ इन मामलों के विषय में अन्य मसीहियों की आत्मगत भावनाओं और विचारों को भी मानना चाहिए। केवल प्रेम, स्वीकृति और आपसी सम्मान के वातावरण में, मसीही अपने आत्मगत विचारों या आस्थाओं के क्षेत्र में एक दूसरे का निर्माण कर

सकते हैं।

1 कुरिन्थियों 8:4-13 कहता है, “अतः मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तुओं के खाने के विषय में हम जानते हैं कि मूर्ति जगत में कुछ भी नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं है। यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं (जैसा कि सचमुच बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं) तौभी हमारे लिये तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात् पिता जिसकी ओर से सब वस्तुएँ आई हैं, और हम उसी के लिये जीते हैं। और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिसके द्वारा सब वस्तुएँ आई हैं, और हम उसी के लिये जीते हैं। पर सब को यह ज्ञान नहीं, कुछ लोग अभी भी मूर्तियों के इतने आदी हैं कि जब वे ऐसा खाना खाते हैं, तो वे सोचते हैं कि यह मूर्ति को चढ़ाया गया है, और चूँकि उनका विवेक कमजोर है, इसलिए वह अपवित्र हो गया है। परन्तु भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुँचाता। यदि हम न खाएँ तो हमारी कुछ हानि नहीं, और यदि खाएँ तो कुछ लाभ नहीं। परन्तु सावधान! ऐसा न हो कि तुम्हारी यह स्वतंत्रता कहीं निर्बलों के लिये ठोकर का कारण हो जाए। क्योंकि यदि कोई तुझ ज्ञानी को मूर्ति के मन्दिर में भोजन करते देखे और वह निर्बल जन हो, तो क्या उसके विवेक को मूर्ति के सामने बलि की हुई वस्तु खाने का साहस न हो जाएगा। इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाई जिसके लिये मसीह मरा, नष्ट हो जाएगा। इस प्रकार भाईयों के विरुद्ध अपराध करने से और उनके निर्बल विवेक को चोट पहुँचाने से, तुम मसीह के विरुद्ध अपराध करते हो। इस कारण यदि मेरा भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाए, तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊँगा, न हो कि मैं अपने भाई के लिये ठोकर का कारम बनाँ।”

14:15-20अ

प्रश्न 3. विवादित (विवादास्पद) मामलों के विषय में मसीहियों का क्या रवैया होना चाहिए?

ध्यान दें। “कमजोर” और “मजबूत” वर्णनों द्वारा, किसी निंदा का आशय नहीं है, परन्तु केवल अंतर है। पौलुस उस विश्वास को “एक कमजोर विश्वास” कहता है जो लोगों को कुछ चीजों को करने के लिए मना करता है, क्योंकि इस प्रकार का विश्वास “मजबूत विश्वास” वाले मसीहियों के आचरण से ठोकर और विनाश के लिए अतिसंवेदनशील है जो उन्हें ऐसी चीजें करने की अनुमति देता है।

(1) मसीहियों को अपने आचरण का निर्धारण अपने अधिकारों या अपनी स्वतंत्रता से नहीं,

बल्कि प्रेम से करने देना चाहिए (रोमियों 14:13,15)।

सभी मसीहियों (चाहे मजबूत या कमजोर हों) की उन मामलों में एक ही विश्वास या आस्था होनी चाहिए जिनकी बाइबल आज्ञा, निषेध या शिक्षा देती है। ये मामले “विवादित मामले” नहीं हैं। उन चीजों के विषय में जिनकी बाइबल स्पष्ट रूप से आज्ञा, निषिद्ध या शिक्षा देती है, किसी को भी अपनी राय रखने की अनुमति नहीं है! किसी को भी अपनी अधार्मिकता और दुष्टता से सच्चाई को दबाने या सच्चाई को मोड़ने का अधिकार नहीं है (रोमियों 1:18,25)।

मजबूत मसीहियों को विवादित मामलों के विषय में राय या आस्थाएँ रखने का अधिकार और स्वतंत्रता है (इस प्रकार, ऐसे मामले जिनकी बाइबल आज्ञा, निषिद्ध या शिक्षा नहीं देती है)। हालाँकि, उनके पास उस अधिकार या स्वतंत्रता को व्यक्त करने या उस अधिकार या स्वतंत्रता को प्रयोग करने का कोई अधिकार नहीं है जब वह एक कमजोर मसीही के उसके विश्वास में ठोकर खाने का कारण बनता है। प्रेम की व्यवस्था अधिकारों और स्वतंत्रता की व्यवस्था से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है!

एक मजबूत मसीही सार्वजनिक रूप से किसी विवादित मामले के विषय में अपनी राय या आस्था व्यक्त न करे जब वह कमजोर मसीही के उसके विश्वास में ठोकर का कारण बनता है। वह कमजोर मसीहियों की उपस्थिति में विवादित मामलों के क्षेत्र में अपने अधिकार या स्वतंत्रता का प्रयोग भी न करे। जब वह फिर भी उस अधिकार या स्वतंत्रता का दुरुपयोग करता है, तो वह अपने भाई को नष्ट कर देता है। इसलिए, जब भी कोई मसीही उपस्थित होता है, जो किसी विशेष मामले में कमजोर विश्वास रखता है, तो एक मजबूत मसीही उस आस्था को न तो व्यक्त करे या न उसका उपयोग करे। मसीही समुदाय के भीतर व्यक्तिगत अधिकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता उतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि एक ऐसे ईसाई के प्रति प्रेम प्रदर्शित करना जो किसी विवादित मामले के संबंध में एक राय या आस्था रखता है।

(2) मसीहियों को अपने आचरण का निर्धारण उसके द्वारा होने देना चाहिए कि दूसरे व्यक्ति को क्या आत्मिक उन्नति देता है (रोमियों 14:13,15)।

मसीही एक दूसरे को नष्ट न करें (रोमियों 14:15)। वे दूसरे मसीही में परमेश्वर के कार्य को नष्ट न कर दें (रोमियों 14:20)। शब्द “नष्ट” (यूनानी: अपोलुमी) एक बहुत ही मजबूत शब्द है (1 कुरिन्थियों 8:11)। हालाँकि, यहाँ यह मसीही विश्वास से हटने और अनंत विनाश का भी संदर्भ नहीं है।

सभी पाप विनाशकारी हैं। जब एक मजबूत मसीही किसी कमजोर मसीही की राय, आस्था या विश्वास पर विचार किए बिना एक विवादित मामले के संबंध में अपने अधिकार और स्वतंत्रता का प्रयोग करता है, तो वह विनाशकारी रूप से कार्य कर रहा है, अर्थात् वह भाई के विरुद्ध और परमेश्वर के विरुद्ध पाप करता है। मजबूत मसीही का पाप यह है कि वह प्रेम की माँगों का उल्लंघन करता है और वह अपने भाई की धार्मिक भलाई के लिए चिंता करने में विफल रहता है। उसका प्रेमहीन आचरण ही वह कारण है कि कमजोर मसीही विवादित मामलों के विषय में अपने विश्वास में ठोकर खाता है। यही कारण है कि एक विवादित मामले के संबंध में कमजोर मसीही की राय या आस्था को नष्ट किया जा रहा है।

इसके अलावा जब कमजोर मसीही मजबूत मसीही के आचरण से अपने धार्मिक विश्वास को पलटने की अनुमति देता है, तो वह स्वयं अपनी लिए विनाशकारी कदम उठाता है, यानी वह भी स्वयं के विरुद्ध और परमेश्वर के विरुद्ध पाप करता है। कमजोर मसीही का पाप यह है कि वह अपने व्यक्तिगत धार्मिक आस्था और अपने विवेक का उल्लंघन करता है। यदि कमजोर मसीही अपनी व्यक्तिगत आस्थाओं और विवेक का उल्लंघन करना जारी रखेगा, और यदि निष्ठा का यह उल्लंघन ठीक नहीं किया गया, तो यह उसके विश्वास और उसके व्यक्तित्व में गंभीर समस्याएँ पैदा कर सकता है। फिर भी, उसके मामले में भी, प्रभु उसे खड़ा करने में सक्षम है (रोमियों 14:4)।

मजबूत मसीही को उस प्रभाव पर विचार करना चाहिए कि उसकी आस्थाएँ और आचरण कमजोर मसीहियों पर ला सकते हैं। न तो मजबूत और न ही कमजोर मसीही मसीहियों की सुरक्षा की बाइबल की शिक्षाओं और मसीहियों की अंतिम दृढ़ता के पीछे शरण ले। कमजोर मसीही अभी भी परमेश्वर की कारीगरी हैं (इफिसियों 2:10) और परमेश्वर ने अभी तक उसे तैयार करने के कार्य को रोका नहीं है। इसलिए, मजबूत मसीही अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रदर्शन से कमजोर मसीहियों के विश्वास और आस्थाओं को न तोड़ें।

(3) मसीहियों की जिम्मेदारी, अपने अधिकारों और स्वतंत्रता को बढ़ावा देना नहीं, बल्कि परमेश्वर के राज्य को बढ़ावा देना है (रोमियों 14:17-19)।

जब मज़बूत मसीही के अधिकार और स्वतंत्रता कमजोर मसीही के लिए क्षति का कारण बन जाते हैं, तो उसके अधिकार और स्वतंत्रता में बाधा आती है। परमेश्वर के राज्य में विवादित मामलों पर मज़बूत राय या आस्था रखना ज़रूरी नहीं है, बल्कि “प्रेम” (यूहन्ना 13:34-35) और “पवित्र आत्मा में धार्मिकता, शांति और आनंद” को बढ़ावा देना है (रोमियों 14:17)। परमेश्वर का राज्य वह क्षेत्र है, जिसके सभी (मज़बूत और कमजोर) मसीही हैं, जिस क्षेत्र में परमेश्वर के प्रभुत्व शासन को मान्यता प्राप्त है और उसकी इच्छा सर्वोच्च है! यह वह संसार है जिसका मसीही है।

जब खाने-पीने के प्रश्न प्रमुख चिंता का विषय बन जाते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि लोगों के विचार और व्यवहार परमेश्वर के राज्य की रूचियों से कितने भटक गए हैं। परमेश्वर के राज्य में मसीही की जिम्मेदारी वही करना है जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक है, व्यक्तिगत संबंधों में शांति को बढ़ावा देना है, केवल वही करना है जो दूसरों की आत्मिक उन्नति करता है, ताकि सभी को आनंद का अनुभव हो सके। केवल इन चीजों को करने से, मसीही मसीह की सेवा करते हैं, परमेश्वर को अच्छी रीति से प्रसन्न करते हैं और अन्य लोगों द्वारा अनुमोदित होते हैं, विशेषकर गैर-मसीहियों द्वारा (रोमियों 14:18-19)। मज़बूत मसीहियों की ओर से अविवेकी आचरण के गैर-मसीहियों द्वारा जबरदस्त अनुमान और विचारधाराएँ होती हैं। मसीहियों को मसीही कलीसिया के प्रति शत्रु को तिरस्कारपूर्ण रीति से बोलने का अवसर नहीं देना चाहिए। परमेश्वर की दृष्टि में सही करना और रिश्तों में सामंजस्य बिठाना दो चीजें हैं जिन्हें कलीसिया की संगति में मसीहियों के रवैये और आचरण को नियंत्रित करना चाहिए।

14:20ख-23

प्रश्न 4. विवादित (विवादास्पद) मामलों के संबंध में किसी की आस्थाओं और पाप का क्या संबंध है?

ध्यान दें। मज़बूत और कमजोर मसीही दोनों के पास विवादित मामलों के विषय में राय, आस्थाएँ या विश्वास हैं। हालाँकि, जब कोई व्यक्ति उनके अनुसार नहीं जीता है, तो वह पाप करता है।

(1) मसीही अपनी व्यक्तिगत आस्थाओं के विरुद्ध कुछ भी न करे।

रोमियों 14:20 का शाब्दिक रूप से कहता है, “यह एक आदमी के लिए गलत है, जो खाता है (जो वह खाता है उसके द्वारा) (स्वयं को या दूसरे को) ठोकर मारता है (यूनानी: प्रोस्कोम्मा)।” कुछ अनुवादकों के अनुसार संदर्भ एक कमजोर मसीही के लिए है जो अपने विवेक के विरुद्ध खाता और पीता है। उसके व्यवहार से पता चलता है कि वह अपनी आस्था के साथ काम नहीं कर रहा है। वह पाप करता है, क्योंकि “वह संदेह करता है जब वह खाता है।” वह दोषी है क्योंकि वह विश्वास में कार्य नहीं करता है। “और जो कुछ भी विश्वास से नहीं आता है वह पाप है” (रोमियों 14:23)। दूसरों के अनुसार, संदर्भ एक मज़बूत मसीही के लिए है जो अपने खाने और पीने से कमजोर मसीही के प्रति अपराध करता है (वह उसे उसकी आस्थाओं में ठोकर खाने के लिए प्रेरित करता है)। मज़बूत मसीही के व्यवहार से संदेह की पीड़ा आती है। दोनों अनुवाद संभव हैं, परन्तु अंतिम बेहतर है। कमजोर मसीही तब ठोकर खाता है जब वह अपनी व्यक्तिगत आस्था के विरुद्ध खाता है, अर्थात्, जब वह स्पष्ट विवेक के बिना और विश्वास के बिना खाता है (रोमियों 14:14,23)।

इसलिए, रोमियों 14:21 में, मज़बूत मसीही कुछ भी ऐसा न करने के लिए उकसाया जाता है, जिससे अंततः कमजोर मसीही ठोकर खाए। यह कहता है, भला तो यह है कि तू न मांस खाए (जो पहले मूर्तियों को चढ़ाया गया हो और बाद में बाज़ार में बीके) और न दाखरस पीए (जो पहले मूर्तियों को चढ़ाई गई हो और बाद में बाज़ार में बीके), और न कुछ ऐसा करे जिससे

तेरा भाई ठोकर खाए (यूनानी: प्रोस्कोप्टो)। विश्वास में कमजोर लोगों को आश्वस्त किया गया था कि वह पीना और खाना जो मूर्तियों को चढ़ाया गया था, “प्रदूषित” था (रोमियों 14:14)।

इस संबंध में यीशु मसीह के शब्दों को स्मरण रखना अच्छा है, “एक व्यक्ति के बाहर का कुछ भी उसके अंदर जाने से उसे” अशुद्ध “नहीं बना सकता है। इसके बजाय, वह जो एक व्यक्ति से बाहर आता है, वह उसे ‘अशुद्ध’ बनाता है” (मरकुस 7:15-23)।

(2) मसीहियों को विश्वास से सभी चीजें करनी चाहिए, अर्थात्, अपनी व्यक्तिगत आस्था के अनुसार।

मजबूत मसीहियों को अपनी स्वतंत्रता के विषय में मजबूत राय या आस्था रखने और विवादित मामलों में अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करने का अधिकार है (रोमियों 14:22)। हालाँकि, वे अपनी व्यक्तिगत आस्थाओं का आत्मसमर्पण न करें, क्योंकि यदि वे ऐसा करते हैं, तो वे विश्वास के बिना कार्य करेंगे (रोमियों 14:23)। वे कमजोर मसीहियों की हानि के लिए अपने अधिकारों और स्वतंत्रता का प्रदर्शन या प्रतिवाद भी न करें। इसके बजाय, उन्हें विवादित मामलों के विषय में अपनी राय और आस्था को अपने और परमेश्वर के बीच रखना चाहिए (रोमियों 14:22)।

कमजोर मसीहियों को उन्हीं विवादित मामलों के विषय में अलग-अलग राय या आस्था रखने और उससे बचने का अधिकार है जो मजबूत मसीही करते हैं (रोमियों 14:22)। हालाँकि, वे भी अपनी व्यक्तिगत आस्थाओं का आत्मसमर्पण न करें, क्योंकि यदि वे ऐसा करते हैं, तो वे भी विश्वास के बिना कार्य करेंगे (रोमियों 14:23)। वे कुछ भी ऐसा न करें जिसके विषय में उन्हें संदेह है या जिसके विषय में उनका विवेक उनकी निंदा करता है। हालाँकि कमजोर मसीही अपनी आस्था को खराब करने के लिए मजबूत मसीहियों के उदाहरण से परीक्षा में पड़ सकते हैं, परन्तु वे इस बात के जिम्मेदार रहते हैं कि उनके सभी कार्य उनकी व्यक्तिगत आस्था से होते हैं। रोमियों 14:23 कहता है, “परन्तु जो सन्देह कर के खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर चुका, क्योंकि वह निश्चय धारणा से नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है।” जब एक कमजोर मसीही फिर भी अपने विवेक का उल्लंघन करता है और कुछ ऐसा करता है जो उसे यकीन दिलाता है कि उसे नहीं करना चाहिए, वह विश्वास के बिना काम कर रहा होता है। बिना विश्वास के कुछ भी करना पाप है।

इसीलिए, मजबूत और कमजोर मसीही दोनों को केवल उन चीजों को करना चाहिए जिसे वे आत्मगत रूप से (व्यक्तिगत) मानते हैं कि सही है। यह केवल विश्वास है जिससे कि मसीही दृढ़ खड़े रहते हैं।

चरण 4. लागू करना।

अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 14:1-23 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें।

(स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 14:1-23 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

- 14:1,3. मज़बूत मसीही को निर्णय पारित किए बिना विवादित मामलों में कमज़ोर मसीही के संदेह, राय, आस्था या विश्वास को स्वीकार करना चाहिए और उसे या उसके संदेह को नीची दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।
- 14:3. कमज़ोर मसीही को विवादित मामलों के विषय में विभिन्न राय, आस्था या विश्वास रखने के लिए मज़बूत मसीही की निंदा नहीं करनी चाहिए।
- 14:5,23. कमज़ोर और मज़बूत दोनों मसीहियों को इस बात पर पूरी रीति से आश्वस्त होना चाहिए कि वे आत्मगत रूप में विवादित मामलों के विषय में स्वयं के लिए क्या सही और ठीक मानते हैं। उन्हें किसी भी क्षेत्र में केवल तभी कार्य करना चाहिए जब वे मानते हों कि वह उनके लिए ठीक और सही है।
- 14:6-9. एक मसीही जो भी विवादित मामलों के क्षेत्र में करता है, उसे प्रभु के प्रति करना चाहिए और प्रभु को धन्यवाद देना चाहिए।
- 14:10-12. मसीहियों को इस प्रकार से जीना चाहिए जिससे पता चले कि वे पूरी रीति से जानते हैं कि उन्हें परमेश्वर के न्याय के आसन के सामने अपने व्यक्तिगत जीवन का लेखा देना होगा।
- 14:13,20. मज़बूत मसीहियों को इस बात को लेकर अपना दिमाग तैयार करना चाहिए कि वे कमज़ोर मसीही के रास्ते में कभी कोई ठोकर या बाधा न डालें और न ही कभी उनमें परमेश्वर के कार्य को नष्ट करें।
- 14:14. यद्यपि सभी भोजन अपने आप में शुद्ध हैं, परन्तु एक कमज़ोर मसीही को केवल वही खाना चाहिए जिसे वह मानता है कि वह उसके लिए शुद्ध है।
- 14:15,21. एक मज़बूत मसीही को मांस खाने या शराब पीने से बचना चाहिए जब भी वह किसी भी कमज़ोर उपस्थित मसीही को परेशान करता है।
- 14:15. मज़बूत मसीहियों के आचरण का निर्धारण उनके अधिकारों और स्वतंत्रता से नहीं, बल्कि परमेश्वर, उनके पड़ोसी और स्वयं के प्रति उनके प्रेम से होना चाहिए।
- 14:16,22. मज़बूत मसीहियों को उन विवादित मामलों की बुराई करने की अनुमति कमज़ोर मसीहियों को नहीं देनी चाहिए जिन्हें वे अच्छा मानते हैं। उन्हें स्वयं को दोषी भी नहीं मानना चाहिए कि वे ऐसी राय, आस्था या विश्वास रखते हैं।
- 14:17,19. मसीहियों का आचरण परमेश्वर के शासन से निर्धारित होता है, जिसके लिए उन्हें वही करना पड़ता है जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक होता है, अलग-अलग राय रखने वाले लोगों के साथ शांति से रहना पड़ता है और एक दूसरे की बढ़ौतरी करनी होती है।
- 14:22. मज़बूत और कमज़ोर मसीहियों को विवादित मामलों के विषय में अपनी राय या विश्वास को अपने और परमेश्वर के बीच रखना चाहिए।

2. रोमियों 14:1-23 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं इस बात का अधिक ध्यान रखना चाहता हूँ कि मैं विवादित मामलों के क्षेत्र में अन्य मसीहियों की राय की आलोचना, न्याय, निंदा न करूँ या उन्हें कम न समझूँ।
मैं और अधिक सावधान रहना चाहता हूँ कि ऐसा कुछ न कहूँ या करूँ जिससे दूसरे मसीही को उसके मसीही विश्वास में ठोकर लगे।

चरण 5. प्रार्थना।**प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 14:1-23 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5**प्रार्थना** (8 मिनट)

[मध्यस्थता]
दूसरों के लिये प्रार्थना

दो या तीन समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिये और संसार भर के लोगों के लिये प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6**तैयारी** (2 मिनट)

[निर्धारित कार्य]
अगले अध्याय के लिये

(समूह अगुवा।) समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें।

1. **समर्पण।** चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 14:1-23 में से **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन यहजेकेल **दानियेल 2, 3, 4, 6** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना। (18) रोमियों 13:8.** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **शिक्षा देना।** मत्ती 25:1-13 में पाए जाने वाले “**दस कुंवारियों**” के दृष्टान्त की तैयारी करें। दृष्टान्तों की व्याख्या करने के लिये उन छः निर्देशों का उपयोग करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. परमेश्वर के राज्य के विषय पर प्रचार करने हेतु **अपनी नोटबुक का अद्यतन करें।** अपने शांत समय के नोट्स, अपने स्मरणीय नोट्स, अपने बाइबल के अध्ययन के नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना
---	-----------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना करें।** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपे।

2	साझा करें (20 मिनट) [शांत समय] दानियेल 2, 3, 4 और 6
---	--

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें (या अपने नोट्स से पढ़ें)** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (दानियेल 2, 3, 4, और 6) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट) [रोमियों में प्रमुख वचन] (18) रोमियों 13:8
---	---

दो-दो करके **पुनरावलोकन करें।**

(18) रोमियों 13:8. “आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।”

4	शिक्षा देना (85 मिनट) [यीशु के दृष्टान्त] दस कुंवारियां
---	--

मत्ती अध्याय 25:1-13 में “दस कुंवारियों का दृष्टान्त”

परमेश्वर के राज्य में जागते रहने

के बारे में शिक्षा देता है।

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़मर्रा की जिन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों को उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेंगे (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

परमेश्वर के राज्य में जागते रहने के बारे में तीन दृष्टान्त :

- मत्ती 25:1-13 में दस कुंवारियों का दृष्टान्त।

- मत्ती 24:32-35 में अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त।
- लूका 12:35-40 में जागते रहने वाले दास का दृष्टान्त।

क. दस कुँवारियों का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 25:1-13.

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगे।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े वास्तविक तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

एक यहूदी विवाह का चित्रण। बाइबल में, विवाह समारोह एक सामाजिक और धार्मिक पर्व था। इसके अलावा, यह एक सार्वजनिक पर्व भी था। बाइबल में विवाह कभी भी एक गुप्त मामले के रूप में नहीं था; इसे हमेशा ही एक सार्वजनिक कार्यक्रम के रूप में मनाया गया।

पुराने समय में, “एक पत्नी को पाना”, “सगाई करना” या “विवाह करने का निर्णय लेना” (Greek: mnésteuó), पूरी तरह से एक पारिवारिक मामला था। जिसमें यह भी शामिल है :

- विवाह के लिए साथी का चुनाव (उत्पत्ति 21:21)
- कभी-कभी, दुल्हन के परिवार को प्रतिपूर्ति या उपहार देना (उत्पत्ति 29:18, 34:12)
- दूल्हा और दुल्हन को उपहार देना (उत्पत्ति 24:59, 61, 1 राजा 9:16)

विवाह समारोह एक सार्वजनिक कार्यक्रम था। इसमें कुछ निम्नलिखित तत्व शामिल थे। दूल्हा और दुल्हन ने विवाह के कपड़े पहने थे (भजन संहिता 45:13-14)। दूल्हा और दुल्हन के मित्र उनके साथ थे (भजन 45:14, यूहन्ना 3:29)। एक बारात थी (मत्ती 25:1-14) और एक विवाह की दावत थी, जो कभी-कभी पूरे हफ्ते चलती थी (मत्ती 22:1-14, यूहन्ना 2:1-10, न्यायियों 14:17)। विवाह समारोह का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा एक विवाह की वाचा थी जिसमें परमेश्वर स्वयं एक गवाह थे (मलाकी 2:14, नीतिवचन 2:17, यहजकेल 16:8)। सदियों से, मसीहियों ने भी परमेश्वर, अपने परिवारों, दोस्तों और मसीही भाइयों और बहनों की उपस्थिति में अपने विवाह समारोह को सार्वजनिक रूप से आयोजित किए।

विवाह की रस्म के बाद ही विवाह संपन्न होता था (उत्पत्ति 29:21-23, व्यवस्थाविवरण 22:13-21; इब्रानियों 13:4)।

कुँवारियाँ। कुँवारियाँ कौन थीं? क्या वे दुल्हन के साथ या मित्रों और पड़ोसियों की बेटियाँ थीं? विवाह का उत्सव कहाँ हुआ - दुल्हन या दूल्हे के घर पर? जब दूल्हे से मिलने के लिए धूम मची, तो कुँवारियाँ कहाँ थीं? क्या वे कहीं बाहर खुले में, सड़क के किनारे या घर के अन्दर थीं? क्या वे दुल्हन के घर पर थीं या पहले से ही दूल्हे के घर पर थीं? उनका समारोह क्या था? क्या वे दूल्हे और उसके मित्रों से मिलने के लिए बाहर गयीं जब वे दुल्हन को लेने के लिए उसके घर आए और फिर एक भव्य बारात में दूल्हे के घर लौट आए? या वे पहले से ही दुल्हन के साथ दूल्हे के घर पर थीं और सभी आमंत्रित मेहमान दूल्हे के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे?

नए नियम के सर्वश्रेष्ठ यूनानी ग्रंथों में कुछ भी ऐसा नहीं है जो दूल्हे के साथ आने वाली बारात के बारे में बता सके। इसमें दुल्हन का उल्लेख भी नहीं है। इसलिए यह मान लेना अधिक उचित है कि दुल्हन पहले से ही उस स्थान पर थी जहाँ विवाह होना वाला था। वह या तो अपने माता-पिता के घर पर थी या दूल्हे के घर पर। चूंकि दूल्हे के घर पर होना अधिक सामान्य था, इसलिए हम इसे मान लेंगे। इस प्रकार, दुल्हन, आमंत्रित मेहमान और दस कुंवारियाँ सभी दूल्हे के घर पर एकत्रित हुईं, जो या तो उसका अपना नया घर था या उसके माता-पिता का। सब कुछ तैयार था, सिवाय इसके कि दूल्हा अभी तक नहीं आया था!

वह दूल्हे से मिलने के लिए गयीं। पद 1 में यह कहानी का सारांश है, क्योंकि वे वास्तव में पद 10 में दूल्हे से मिलने के लिए निकली थीं। हालाँकि मूल रूप से सभी दस कुंवारियों का इरादा था कि वे बाहर जाएँ और दूल्हे से मिलें, वास्तव में कहें तो, केवल पाँच बुद्धिमान कुंवारियाँ दूल्हे से मिलने के लिए बाहर गयीं, क्योंकि पाँच मूर्ख कुंवारियाँ तेल खरीदने के लिए गई थीं।

मशालें। ये आमतौर पर मिट्टी से बनी होती थीं। एक मशाल में शीर्ष पर तीन छेद के साथ तेल के लिए एक ग्राही होता था : एक तेल डालने के लिए, एक हवा को बाहर निकलने के लिए और एक बाती के लिए। जब जुलूस में इन मशालों का उपयोग किया जाता था, तो उन्हें लकड़ी के खम्भे के जरिए मशालों की तरह रखा जाता था। जब पहली बार दूल्हा आ रहा था तो उन्होंने धूम सुनी।

विवाह का घर। जब बारात घर पहुँची तो सभी मेहमान अन्दर गए और दरवाज़ा बन्द कर दिया गया। इस समय पर, दृष्टान्त की कहानी सामान्य परिस्थितियों की तुलना में बहुत अधिक गंभीर हो जाती है। जब पाँच मूर्ख कुंवारी वहाँ पहुँची, तब तक बहुत देर हो चुकी थी और उन्हें प्रवेश करने से मना कर दिया गया था। सामान्य विवाह भोज में, उन्हें प्रवेश से मना नहीं किया जाएगा। लेकिन यह एक गंभीर संदेश के साथ यीशु का दृष्टान्त है। उसकी कहानी में, दरवाज़ा बिल्कुल बन्द था! और दूल्हे ने यह स्वीकार करने से इनकार कर दिया कि वह उन्हें जानता था!

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

परिचय। दृष्टान्त की “कहानी” का संदर्भ “स्थान” और “दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग” से मिलकर हो सकता है। दृष्टान्त का स्थान दृष्टान्त को बताने के अवसर को बता सकती है, या दृष्टान्त को बताने के समय परिस्थितियों का वर्णन कर सकती है। स्थान आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी से पहले पाया जाता है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी के बाद पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त का स्थान, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती 24:1-23 में पायी जाती हैं।

यह पिछले दृष्टान्तों के समान ही है : अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त और विश्वासयोग्य और अविश्वासयोग्य दास का दृष्टान्त।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 25:1-12 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या या उसका अनुप्रयोग मत्ती 25:13 में लिखी हुआ है।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश सतर्क रहना और लगातार जागते रहना है। क्यों? क्योंकि कोई भी यीशु मसीह के दूसरे आगमन के “उस दिन और उस घड़ी” को नहीं जानता (मत्ती 24:36,42-44, 50)! वह अचानक और अप्रत्याशित रूप से आएँगे, जैसे

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र-बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त को एक रूपक (उपनिवेशवाद) के रूप में मानना।

इस दृष्टान्त का अक्सर अलौकिक व्याख्या द्वारा दुरुपयोग किया गया है। कुछ अनुवादकों ने, हालाँकि उन्होंने अन्य बहुत मूल्यवान शिक्षाएँ लिखी हैं, दृष्टान्त के एक अलंकारिक अर्थ को निकाला, जिसे संदर्भित नहीं किया जा सकता है और इसके परिणामस्वरूप इसे अस्वीकार किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए:

अगस्टिन (354-430 A.D.) ने इस प्रकार दृष्टान्त की व्याख्या की। संख्या “पाँच” शरीर में आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है क्योंकि आत्मा पाँच इंद्रियों का उपयोग करती है। पाँच इन्द्रियाँ ही एहसास करने का एकमात्र तरीका है। इस प्रकार, जो कोई भी गैरव्यवस्थायी रूप से देखने, सुनने, सूँघने, चखने और छूने से परहेज करता है, उसे “कुँवारी” नाम मिलता है। लेकिन यह सिर्फ एक कुँवारी होने के लिए पर्याप्त नहीं है; उनके पास “मशाल” भी होनी चाहिए, जो अच्छे कामों की निशानी है। यद्यपि बुद्धिमान और मूर्ख दोनों कुँवारी लड़कियों के पास मशालें थीं, केवल बुद्धिमान कुँवारी लड़कियों के पास ही “तेल” था, जो प्यार का प्रतिनिधित्व करता है और जो 1 कुरिन्थियों अध्याय 13 के अनुसार सबसे अच्छा तरीका है।

मार्टिन लूथर (1483-1546) ने दृष्टान्त की व्याख्या इस प्रकार की। पाँच मूर्ख कुँवारी लड़कियों को अस्वीकार कर दिया गया था, इसलिए नहीं कि उन्होंने सेवा नहीं की, बल्कि इसलिए कि उन्होंने “तेल” के बिना सेवा की, जो परमेश्वर के अनुग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने अपने स्वयं के संसाधनों के आधार पर सेवा की, न कि परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा। उन्होंने परमेश्वर की महिमा नहीं, बल्कि स्वयं की महिमा को खोजा।

रिचर्ड सी. ट्रेच (1807-1886) ने दृष्टान्त की व्याख्या इस प्रकार की। “मशालें” मसीही जीवन में जो कुछ भी बाहर का है, उसका प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि “तेल” जो कुछ भी भीतर या आत्मिक है, का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए, रोमियों की पुस्तक में, मशालें व्यवस्था के कार्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि तेल उस विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है जो बचाता या न्याय करता है। लेकिन याकूब की पुस्तक में, मशालें विश्वास के बाहरी आवरण का प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि तेल उन कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है जो सच्चे विश्वास का परिणाम हैं।

इन सभी रूपक व्याख्याओं को अस्वीकार किया जाना चाहिए।

(2) प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण।

दस कुँवारियाँ। वे प्रासंगिक हैं, क्योंकि यीशु स्वर्ग के राज्य की तुलना उनके साथ करते हैं! पाँच बुद्धिमान कुँवारियाँ सच्चे मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती हैं और पाँच मूर्ख कुँवारियाँ नाम के मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। सभी दस कुँवारियाँ इस वर्तमान दुनिया में एक साथ मिलकर रहती हैं। जबकि नाम के मसीही लोग तैयार या जागते नहीं रहते हैं, सच्चे मसीही उसके दूसरे आगमन पर यीशु मसीह की वापसी के लिए सतर्क और तैयार हैं! संख्या “दस” पृथ्वी पर एक पूर्ण संख्या है, लेकिन क्योंकि यीशु इसकी व्याख्या नहीं करते, इसलिए यह साबित नहीं किया जा सकता है कि यह उन मसीहियों की पूरी संख्या का प्रतिनिधित्व करता है जो कभी पृथ्वी पर रहते थे।

मशालें। यीशु मशालों को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। मशालें तेल की बत्ती और तेल डालने के लिए एक छेद और बाहर की ओर हवा को निकालने के लिए एक छेद से बने हुए थे। जुलूस के दौरान, इन मशालों को लकड़ी के खम्भे के द्वारा ऊपर तरह रखा जाता था।

तेल। यीशु तेल के प्रतीकात्मक अर्थ की व्याख्या नहीं करते। इसलिए हमें अटकलें नहीं लगानी चाहिए। तेल का उपयोग भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं का अभिषेक करने और घावों को ठीक करने के लिए एक दवा के रूप में किया जाता था।

यदि तेल का प्रतीकात्मक अर्थ है, तो यशायाह 61:1 के अनुसार, यह पवित्र आत्मा द्वारा अभिषेक की ओर इशारा करता है, जिसके द्वारा सामर्थी लोगों को दूल्हे, यीशु मसीह के स्वागत के लिए तैयार किया जाता है। सच्चे (फिर से पैदा हुए) मसीही जन को मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार किया जाएगा, जबकि नाम के (फिर से पैदा नहीं हुए) मसीही स्वयं को मसीह की वापसी के लिए तैयार नहीं करेंगे (जकर्याह 4:1-6; यूहन्ना 3: 3,5; 2 थिस्सलुनीकियों 2: 13)।

पाँच मूर्ख और पाँच बुद्धिमान कुँवारियाँ। यह बहुत प्रासंगिक है। सभी दस कुँवारियों को उम्मीद थी कि दूल्हा दूसरे दिन आने से पहले आ जाएगा, लेकिन उनमें से कोई भी नहीं जानता था कि वह किस घड़ी आ रहा है। उन सभी के पास मशालें थीं और विवाह के उत्सव में भाग लेने के लिए वे सभी उत्सुक थीं। वे सभी घर के अन्दर इंतजार कर रही थीं, जिसकी अपनी रोशनी थी। सब ऊँघकर सो गयीं। लेकिन उनके बीच मुख्य अंतर यह था कि उनमें से केवल पाँच “बुद्धिमान” थीं, उन्होंने स्वयं को अच्छी तरह से तैयार किया हुआ था। वे दूल्हे के अचानक और अप्रत्याशित रूप से आने के लिए तैयार थीं, वे अपने साथ तेल ले गयीं। अन्य पाँच मूर्ख थीं, क्योंकि वे दूल्हे से मिलने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं थीं! उनके पास मशालें थीं, लेकिन वे अपने साथ तेल नहीं लेकर गयीं। उनकी लापरवाही संवेदनहीन, अदूरदर्शी और अक्षम्य थी!

ऊँघकर सो जाना। यह स्पष्ट है कि जिस घर में वे कुँवारियाँ आई थीं, वहाँ वे ऊँघकर सो गयीं। वे सड़क के किनारे कहीं बाहर नहीं सोयीं, क्योंकि वे धूम मचने के बाद ही नींद में से जागकर बाहर निकलीं। पाँच बुद्धिमान कुँवारियाँ दूल्हे से भेंट करने के लिए निकलीं, जबकि पाँच मूर्ख कुँवारियाँ तेल खरीदने के लिए निकल पड़ीं।

इसका अन्योक्ति के रूप में वर्णन करना सटीक लगता है कि यह मसीही कलीसिया के कमजोर होने का प्रतिनिधित्व करता है। हालाँकि, यीशु इस विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। इसके अलावा, अन्त में उनकी व्याख्या या अनुप्रयोग दृष्टान्त के एक अन्य पहलू की ओर इशारा करता है - मसीही कलीसिया के कमजोर पड़ने की ओर नहीं, बल्कि मसीहियों की तैयारी की ओर। बुद्धिमान और मूर्ख कुँवारियाँ दोनों सो गयीं। केवल बुद्धिमान कुँवारियाँ ही बिना किसी डर के सो सकती हैं क्योंकि वे तैयार हैं! मूर्ख कुँवारियाँ झूठी सुरक्षा के आश्वासन में रहती हैं।

उन्हें ऐसा लगता है कि वे अपनी आत्मा के लिए पर्याप्त काम कर चुकी हैं, या उन्होंने ऐसा सोचा कि ईश्वरीय मिलाप इतनी जल्दी नहीं होगा, या उन्होंने सोचा कि जीवन में अपने खोए अवसरों को बदलने और पुनर्स्थापित करने के लिए हमेशा पर्याप्त समय होगा। वे कितनी मूर्ख हैं!

आधी रात को धूम मची : “देखो’ दूल्हा आ रहा है।” उससे भेंट करने के लिये चलो। धूम ने सभी को चौंका दिया-जागो। यीशु यह नहीं कहते कि किसने धूम मचाई। यह इंतजार कर रहे मेहमानों में से एक ने किया होगा, जो जागे हुए थे, या दूल्हे के साथ रहने वाले युवकों में से एक ने चिल्लाया होगा। फिर भी, ऐसा लगता है कि दूल्हा अभी भी घर से काफी दूरी पर था, क्योंकि कुँवारियों को सबसे पहले अपनी मशालों को ठीक करना, तेल डालना, मशालें जलाना पड़ा और दूल्हे से मिलने के लिए अन्धेरी रात में कुछ दूरी पर चलना पड़ा। यह अब तक प्रासंगिक है कि यीशु मसीह अपने दूसरे आगमन के लिए समय लेगा। यह अब तक प्रासंगिक है क्योंकि दूसरा आगमन पूरी तरह से अचानक और अप्रत्याशित रूप से होगा!

बुद्धिमान कुँवारियों ने अपनी मशालों को जलाया, लेकिन मूर्ख कुँवारियों को एहसास हुआ कि वे तैयार नहीं थीं। इसे विस्तार से नहीं बताया गया है, लेकिन यह मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार होने के केंद्र बिन्दु या मुख्य सबक को बढ़ावा देते हैं! जब आधी रात को धूम मची, तब वे सभी कुँवारियाँ उठकर अपनी मशालें ठीक करनी लगीं। एक बाती जो अभी तक पूरी तरह से सूखी नहीं है, कुछ समयके लिए उज्ज्वल रूप से जल सकती है। लेकिन बाती में बिना तेल के, मशालें जल्द ही बुझ जाएंगी। इस समय पर मूर्ख कुँवारियों को एहसास हुआ कि उनके पास तेल नहीं था। उन्होंने महसूस किया कि वे पूरी तरह से तैयार नहीं हैं! पीड़ा के साथ, उन्होंने बुद्धिमान कुँवारियों से तेल माँगा।

बुद्धिमान कुँवारियों ने मूर्ख कुँवारियों को तेल देने से मना कर दिया। इस विवरण की व्याख्या नहीं की गई है, लेकिन यह मूर्ख या बुद्धिमान होने के केंद्र बिंदु या मुख्य संदेश को बढ़ावा देता है। बुद्धिमान कुँवारियों ने मूर्ख कुँवारियों को अपना पास का तेल देने से इनकार कर दिया, इसलिए नहीं कि वे कठोर थीं, बल्कि इसलिए कि उन्हें स्वयं पूरे तेल की आवश्यकता थी। विवाह की बारात बहुत धीमी गति से आगे बढ़ी और वे काफी दूर थीं। आधी रात और अंधेरा था। कुँवारियों का काम दूल्हे से भेंट करने के लिए बाहर जाना था और फिर उसे अपने घर वापस लेकर आना था, जहाँ उनकी मशालें अभी भी हर समय उज्ज्वल रूप से जल रही थीं। उनका इंकार करना बहुत उचित था। इससे यह साबित हुआ कि बुद्धिमान कुँवारियों ने आगे के विषय में सोचा और अपने कार्य के लिए अच्छी तैयारी की थी। मूर्ख कुँवारियों को अपने लिए यह पता लगाना बाकी था कि बाज़ार में आधी रात को तेल खरीदने की कोशिश करना पूरी तरह से निरर्थक प्रयास है। मूर्ख कुँवारियों को तैयार होने में बहुत देर हो गई!

दूल्हा आ पहुँचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ विवाह के घर में चली गईं। मत्ती 25:6 में लिखा है, “आधी रात को धूम मची : “देखो’ दूल्हा आ रहा है।” उससे भेंट करने के लिये चलो। (Greek: idou ho numfios, exerchesthe eis apantésin autou). पद 10 में लिखा है : “जब वे मोल लेने को जा रही थीं तो दूल्हा आ पहुँचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ चली गईं और द्वार बन्द किया गया।” शब्द : “eis apantésin” यीशु मसीह के दूसरे आगमन को संदर्भित करता है जो अचानक और अप्रत्याशित रूप से और उन लोगों के लिए होगा जो उससे भेंट करने के लिए आये थे और अन्य जो उनसे मिलने नहीं आए थे (तुलना करें मत्ती 24:40-41) ओर ना ही विवाह के भोज में हिस्सा लिया।

प्रेरितों के काम 28:15 में “eis apantésin” शब्द उन विश्वासियों के लिए उपयोग किया गया है जो रोम लौटने से पहले

पौलुस से मिलने और उसका स्वागत करने के लिए गए थे।

1थिस्सलुनीकियों 4:16-17 में “eis apantesin” शब्द उन विश्वासियों के लिए उपयोग किया गया है जिन्हें यीशु मसीह से बादलों में मिलने (Greek: harpazó), उसका स्वागत करने, उसे महिमा देने और उसकी महिमा करना और उस पर अचंभा करने (2थिस्सलुनीकियों 1:7-10) के लिए पुरानी पृथ्वी से उठा लिया गया और यीशु मसीह के साथ (नए यरूशलेम में) नई पृथ्वी पर जाने से पहले (प्रकाशितवाक्य 21:1-2) ताकि वह उसके साथ हमेशा के लिए रह सके (1थिस्सलुनीकियों 4:18; 5:10; प्रकाशितवाक्य 21:3-5), न्याय के दिन उनका न्याय होगा (मत्ती 25:31-33), साथ ही पुरानी पृथ्वी का न्याय भी होगा (मत्ती 24:29-31; रोमियों 8:19-23; 2 पतरस 3:10-13; तुलना करें प्रकाशितवाक्य 6:12-17; 16:17-21; 20:11)!

द्वार बन्द किया गया। यह वास्तविकता के विपरीत था, क्योंकि एक सांसारिक दूल्हा कभी भी मेहमानों को बाहर नहीं करेगा! अब भी पश्चाताप करने और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का अवसर है!

लेकिन यह स्वर्गीय दूल्हे और उसके दूसरे आगमन के बारे में एक दृष्टान्त है! दरवाज़ा बन्द है और फिर से खोला नहीं गया! यह एक प्रासंगिक विवरण है! एक समय आएगा जब परमेश्वर के राज्य का दरवाज़ा निश्चित रूप से बन्द हो जायेगा!

यीशु के दूसरे आगमन से पहले, परमेश्वर के राज्य का द्वार दिन और रात खुला रहता है (तुलना करें यूहन्ना 10:7-9)। यह अभी भी अनुग्रह का समय है। संसार में लोगों को अभी भी दूल्हे से मिलने के लिए तैयार होने के लिए बुलाया जाता है, अर्थात् पश्चाताप करने और यीशु मसीह पर विश्वास करने के लिए (मरकुस 1:15; लूका 4:18-19; 13:1-5; 2 कुरिन्थियों 6:1-2)।

लेकिन दूसरे आगमन पर, परिवर्तित होने या बचने के लिए कोई और अवसर नहीं मिलेगा (यशायाह 61:2 ए ब)! अन्तिम न्याय के दिन पर यीशु मसीह उन सभी को बाहर कर देगा, जो अभी तक बदले नहीं। यीशु उनसे तब कहेगा, “मैं तुम्हें नहीं जानता!” “मैं आपको उन लोगों के रूप में नहीं पहचानता, जिन्हें मैं अपनी सन्तान कहने से प्रसन्न हूँ!” (1कुरिन्थियों 8:3; 2 तीमुथियुस 2:19)।

दूसरे आगमन के बाद नई पृथ्वी पर नया यरूशलेम के द्वार (जो अपने अन्तिम चरण में परमेश्वर का राज्य है) कभी बन्द नहीं होंगे। सभी राष्ट्रों के यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले विश्वासी अपने वैभव (महिमा और सम्मान) को इसमें उजागर करेगा (प्रकाशितवाक्य 21:4-27)।

4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य सन्देश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। *दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र-बिन्दु होता है।* इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 25:1-13 में दस कुँवारियों का दृष्टान्त “परमेश्वर के राज्य में जागते रहने” के बारे में शिक्षा देता है।

दृष्टान्त का मुख्य सन्देश निम्नलिखित है। “मसीहियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए स्वयं को तैयार करना चाहिए और यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए लगातार जागते और तैयार रहना चाहिए। वह अचानक और अप्रत्याशित रूप से सभी के लिए आ जाएगा! दरवाज़ा बन्द किया जाएगा और बाद में फिर खोला नहीं जाएगा! पश्चात्ताप करने का कोई दूसरा अवसर नहीं है!”

यहाँ पर ज़ोर अपने जीवन के दौरान यीशु के पास आने वाले व्यक्ति पर नहीं है बल्कि यीशु के दूसरे आगमन पर है। इतिहास में अन्तिम ईश्वरीय मेल-मिलाप का क्षण अचानक और अप्रत्याशित होगा! अन्तिम बुलाहट (मत्ती 24:31; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16), अन्तिम फसल (प्रकाशितवाक्य 14:15-16) और अन्तिम न्याय (प्रकाशितवाक्य 14:18-19) काफी अचानक और अप्रत्याशित होगा!

केवल जो यीशु मसीह के प्रति समर्पण में अपना जीवन व्यतीत करते हैं, वे इसके साथ “एक नई पृथ्वी और एक नए स्वर्ग” के अन्तिम रूप में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे! जो लोग तैयार नहीं हैं, अर्थात्, जिन्होंने अपने हृदयों को आत्मसमर्पित नहीं किया है और जो यीशु मसीह के लिए अपने जीवन को व्यतीत नहीं करते, उन्हें राज्य से बाहर रखा जाएगा!

जागते और तैयार रहना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक हैं। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए अच्छी तरह से तैयार रहते हैं। वे आत्मसंतुष्ट नहीं हैं। वे तैयारी करने में देरी नहीं करते। तैयार होने के लिए पहला कदम यीशु मसीह को उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में स्वीकार करना है (यूहन्ना 1:12-13)। इसके बाद, मसीही लगातार सतर्क और यीशु मसीह से मिलने के लिए तैयार रहते हैं। परमेश्वर के राज्य के लोग जानते हैं कि जब एक बार यीशु मसीह वापस आयेगा, तब अनुग्रह का द्वार अपरिवर्तनीय रूप से बन्द कर दिया जाएगा! आप वास्तव में केवल तभी तैयार होते हैं जब आप किसी भी समय यीशु मसीह से मिलने के लिए तैयार होते हैं, जब आपको वर्तमान समय में अपने आचरण पर शर्मिंदगी महसूस नहीं होती और जब आप उसके दूसरे आगमन पर खाली हाथ नहीं खड़े होते हैं।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के प्रत्येक गद्यांशों में से जो कुछ भी पढ़ाया जाता है, उसकी तुलना में दस कुँवारियों का दृष्टान्त क्या सिखाता है?

लूका 13:22-30. यीशु सभी लोगों से अपनी दुष्टता छोड़ने और उसे उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने को कहता है। उन्हें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए अपनी पूरी ताकत से एक लड़ाई को लड़ना चाहिए, यानी कुशती करनी चाहिए। उन्हें अपने पापी स्वभाव, संसार की वस्तुओं और शैतान और आत्मसंतुष्टि, शिथिलता और लापरवाही के विरुद्ध भी लड़ना चाहिए।

हर कोई जो मसीह की आज्ञा का पालन करने का प्रयास करता है और संघर्ष करता है, वह निश्चित रूप से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेगा! उद्धार हालाँकि मानव परिश्रम का उत्पाद नहीं है, लेकिन परमेश्वर का अनुग्रह है जो वह उसकी इच्छा पूरी करने वालों के ऊपर करता है (इफिसियों 2:8-9; फिलिप्पियों 2:12-13)।

मत्ती 7:21-23; 8:11-12; 2तीमुथियुस 2:19. यीशु लोगों को चेतावनी देता है कि मसीह कलीसिया या गतिविधियों के साथ जुड़ना परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने आश्वासन नहीं देता है। महत्वपूर्ण यह है कि एक व्यक्ति यीशु मसीह द्वारा उसके अन्दर किये गए कार्यों के द्वारा फिर से पैदा हुआ है और यीशु मसीह ने उसे अपनी सन्तान के रूप में स्वीकार किया है।

ख. अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 24:32-35. परिशिष्ट 16 देखें।

ग. चौकस दास का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 12:35-40. परिशिष्ट 16 देखें।

घ. परमेश्वर के राज्य में जागते रहने के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेशों या शिक्षाओं का सारांश।

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में जागते रहने के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेश या शिक्षाएँ क्या हैं?
यीशु मसीह हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और वह हमें क्या *बनना* या क्या *करना* सिखाते है?
ध्यान दें।

(1) सभी मसीहियों को पता होने चाहिए की परमेश्वर या यीशु मसीह कैसा है।

यीशु मसीह का दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा। मसीह की भविष्यद्वाणियाँ उन चीजों के विषय में हैं जो उसके पहले और दूसरे आगमन के बीच होंगी। इस तथ्य से मसीहियों को चौकस हो जाना चाहिए और यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार रहना चाहिए!

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें किसके समान बनना है।

मसीहियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए लगातार तैयार और तत्पर रहना चाहिए। वह अचानक और अप्रत्याशित रूप से आएगा। केवल वे ही जो यीशु मसीह के प्रति समर्पण में अपना जीवन जीते हैं, उनके साथ स्वर्ग और नई पृथ्वी के महिमान्वित रूप में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे! जो लोग तैयार नहीं हैं, अर्थात्, जिन्होंने यीशु मसीह के सामने अपने हृदयों और जीवन को आत्मसमर्पित नहीं किया है, वे राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएंगे!"

(3) सच्चे और नाम के मसीही दोनों समान और अलग होते हैं।

यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले सभी लोग कई मायनों में एक जैसे हैं। दोनों अपने दूल्हे, यीशु मसीह से मिलने के लिए अपने

मार्ग पर हैं।

हालाँकि, कुछ मसीही बुद्धिमान होते हैं। वे सच्चे मसीही हैं। वे अपने पुराने जीवन को छोड़कर यीशु मसीह की ओर फिर चुके हैं और उसे ही अपने जीवन का उद्धारकर्ता और परमेश्वर मानते हैं। वे आश्चर्य हैं कि उन्हें मसीह के उपदेशों पर विश्वास और आज्ञाकारिता में जीवन जीने के लिए दूसरे आगमन के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है।

दूसरे जो स्वयं को “मसीह” कहते हैं वे मूर्ख हैं। उन्हें सच्चे मसीही नहीं कहा जाता है (या नाम के मसीही या रुढ़िवादी मसीही)। यद्यपि वे सभी प्रकार की मसीही सभाओं और गतिविधियों में भाग लेते हैं, फिर भी वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएँगे। क्यों? क्योंकि यीशु मसीह मत्ती 7:21-23 में उनसे कहता है, “मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना!” यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आप बपतिस्मा लेते हैं, प्रभु भोज लेते हैं, या मसीही सभाओं और गतिविधियों में भाग लेते हैं, लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि यीशु मसीह आपको व्यक्तिगत रूप से जानता है (तुलना करें यूहन्ना 10:27-28) और उसने आपको अपने चेले के रूप में अपना अनुसरण करने के लिए बुलाया है (तुलना करें लूका 9:57-62)!

अपने दूसरे आगमन पर, यीशु उन सभी लोगों को अपने राज्य से बाहर कर देगा, जो अभी भी वास्तव में परिवर्तित नहीं हुए हैं (अर्थात्, जो उस पर विश्वास नहीं करते हैं)। वह कहता है, “अचम्भा न कर कि मैंने तुझ से कहा, ‘तुझे नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है!’” (यूहन्ना 3:7; तुलना करें यूहन्ना 1:12-13; 3:5,16,18,36)। वह उन्हें नहीं पहिचानेगा क्योंकि वह उनसे प्रसन्न है जिसे उसने अपने लिए बुलाया है। ऐसे लोग “भक्ति का भेष तो धरेंगे, लेकिन उसकी शक्ति को नहीं मानेंगे” (2तीमथियुस 3:5)। वे अपने न्यायी से मिलने के लिए तैयार नहीं हैं!

(4) यीशु के पहले और दूसरे आगमन के बीच एक लंबा समय होगा।

हालाँकि, सदियों से कुछ मसीहियों ने “यीशु मसीह की जल्दी ही वापसी” की उम्मीद की है, मसीह ने स्वयं कहा कि उनके आने में एक लंबा समय लगेगा। “और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा। (मत्ती 24:14), मसीहों के खिलाफ कई अत्याचार होंगे (मत्ती 24:9)। मसीहियों को राज्य का सुसमाचार फैलाने के लिए अपनी प्रतिभा को काम में लाना चाहिए (मत्ती 25:16,19) और जगत के सभी देशों में (लोगों के समूह) यीशु मसीह के चेलों को बनाया जाना चाहिए (मत्ती 28:18-20)!”

(5) यीशु का दूसरा आगमन अचानक, अप्रत्याशित, दृश्यमान और श्रव्य होगा।

दूसरा आगमन दो बार नहीं होगा (महान क्लेश से पहले विश्वासियों या कलीसिया का पहला तथाकथित अन्त और महान क्लेश के अन्त में तथाकथित “मसीह का प्रकाशन”)। यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर कोई रहस्य नहीं होगा (अदृश्य और अश्रव्य)! हालाँकि यीशु मसीह का केवल दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा (लूका 12:40; 1 थिस्सलुनीकियों 5:1-4; 2 पतरस 3:10; प्रकाशितवाक्य 3:3; 16:15), यह प्रत्यक्ष होगा; सृष्टि में सभी लोगों के लिए श्रव्य होगा (मत्ती 24:30-31; 25:6; 26:64; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16; प्रकाशितवाक्य 1:7)!

(6) तैयारी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में स्थानान्तरित नहीं होती है।

बुद्धिमान मसीही मूर्ख मसीहियों को अपनी तैयारी को स्थानान्तरित नहीं कर सकते। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वयं के पाप के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार है (यिर्मयाह 31:29-30; यहजेकेल 18) और व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह को लेखा देने के लिए जिम्मेदार है। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को बदलने और सुसमाचार पर विश्वास करने के लिए जिम्मेदार है (मरकुस 1:15; लूका 13:1-

5)। यहां तक कि जिन लोगों ने कभी भी सुसमाचार नहीं सुना या अभी तक उसे समझ नहीं पाए हैं, वे सृष्टि में (रोमियों 1:19-20), अपने हृदय और विवेक में (रोमियों 2:14-16), परमेश्वर के प्रकाशन के प्रति जिम्मेदार हैं! सारांश में, इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार और तत्पर होने के लिए जिम्मेदार है (मत्ती 25:7-9; भजन 49:7; नीतिवचन 9:12)।

(7) जो तैयार नहीं हैं उनके लिए दूसरा मौका नहीं होगा।

जो लोग तैयार नहीं हैं, अर्थात्, मरने से पहले जिनका उद्धार नहीं हुआ और साथ ही मसीह के दूसरे आगमन पर भी उनका उद्धार नहीं हुआ, उन्हें बचने का एक और मौका कभी नहीं मिलेगा (मत्ती 25:10-12; 10:32-33; 24:37-42; 25:34-46; 2 कुरिन्थियों 5:9-10; गलातियों 6:7-8; 2 थिस्सलुनीकियों 1:8-9) (1 पतरस 3:18-22 स्वर्ग में यीशु मसीह के चढ़ जाने का उल्लेख करता है न कि अधोलोक में उतरने का!)

(8) सभी मसीहियों को जागते और तैयार रहने की आवश्यकता है।

क्योंकि यीशु मसीह के दूसरे आगमन के दिन और घड़ी को कोई नहीं जानता, इसलिए मसीहियों को लगातार जागते और तैयार रहने की आवश्यकता है। (मत्ती 25:13; नीतिवचन 27:1; 2 कुरिन्थियों 6:2; 2 पतरस 1:5-11)।

5	प्रार्थना (8 मिनट) <i>[प्रतिक्रियाएँ]</i> परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना
---	--

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए समूह में बारियाँ लें। या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	तैयारी करें (2 मिनट) <i>[निर्धारित कार्य]</i> अगले अध्याय के लिए
---	---

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर “दस कुंवारियों” का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **दानियेल 7, 8, 9 और 12** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(19) रोमियों 13:14।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 15:1-33।**
बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन सहिता 5:3)।
7. परमेश्वर के राज्य पर प्रचार करने के लिए अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। शांत समय में अपने नोट्स, अपने स्मरण किए हुए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना
---	-----------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना करें।** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपे।

2	साझा करें (20 मिनट) [शांत समय] दानियेल 7,8,9 और 12
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें (या** अपने नोट्स से **पढ़ें)** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (दानियेल 7,8,9 और 12) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट) [रोमियों में प्रमुख वचन] (19) रोमियों 13:14
---	--

दो-दो करके **पुनरावलोकन करें।**

(19) रोमियों 13:14. वरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।

4	बाइबल अध्ययन (85 मिनट) [रोमियों की पत्री] रोमियों 15:1-33
---	--

परिचय। एक साथ मिलकर **रोमियों 15:1-33** का अध्ययन करने के लिये बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों वाली विधि का प्रयोग करें।

रोमियों 15:1-6 मसीहियों के सम्बन्ध में मसीही के कर्तव्य को सिखाना जारी रखता है जिनका विश्वास कमज़ोर या मज़बूत है। रोमियों 15:7-13 अन्य जातीय समूहों के संबंध में मसीही के कर्तव्य को सिखाता है। और रोमियों 15:14-33 प्रेरित पौलुस की सेवकाई, नीति और योजनाओं का वर्णन करता है।

कदम 1. पढ़ें।	परमेश्वर का वचन
आइये एक साथ मिलकर रोमियों 15:1-33 तक पढ़ें।	
आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।	

कदम 2. खोजें।	अवलोकन
ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?	

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छूआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

15:1-6

खोज 1. मज़बूत मसीही कमज़ोर मसीहियों की असफलताओं को सँभालने के लिए जिम्मेदार हैं।

पौलुस मसीहियों के विश्वास के विषय में बोलना जारी रखता है जो कमज़ोर या मज़बूत हैं। इस संदर्भ में, इसका अर्थ है कि उद्धार के लिए यीशु मसीह के प्रति यह उनका विश्वास नहीं है, परन्तु उनका विश्वास या उन चीज़ों के विषय में आस्था है जिनकी बाइबल में आज्ञा, निषिद्ध या शिक्षा नहीं है, परन्तु जिनके विषय में मसीही अलग राय रखते हैं! यह तथ्य कि कमज़ोर मसीही उन चीज़ों के विषय में संदेह रखते हैं जिन पर मज़बूत मसीही विश्वास रखते हैं और करते हैं, रिश्तों में तनाव और घर्षण पैदा कर सकता है। इसलिए, मज़बूत मसीहियों को इस बात के लिए समझाया जाता है कि वे कमज़ोर मसीहियों के संदेहों के विरुद्ध प्रतिक्रिया न करें, बल्कि उनको सहते रहें।

(1) मसीहियों को अपने भले के लिए अपने पड़ोसियों को प्रसन्न करना चाहिए, ताकि उनका निर्माण हो सके।

“खुश करने” का अर्थ है दयावान होना और वह करना जिसे कमज़ोर मसीही अनुमोदित करता है और वह न करना जिसकी वह निंदा करता है। हालाँकि, इसका अर्थ यह नहीं समझा जाना चाहिए कि मज़बूत मसीही हमेशा कमज़ोर मसीहियों की सनकी बातों और इच्छाओं को पूरा करते रहेंगे और इस प्रकार हमेशा वह काम करते रहेंगे जो कमज़ोर मसीहियों को प्रसन्न करता है! किसी और को खुश करना मसीही के जीवन का एक पूर्ण सिद्धांत नहीं है, क्योंकि गलातियों 1:10 के अनुसार, मसीह के सेवक होने के लिए मसीही लोगों को खुश ही न करता रहे! खुश करने की जिम्मेदारी केवल खाने और पीने के मुद्दे और अन्य विवादित (विवादास्पद) मामलों के साथ निपटने वाली स्थिति तक सीमित रहने की है (1 कुरिन्थियों 10: 31,33)। “किसी को खुश करने” का अर्थ है “उसकी भलाई की तलाश करना ताकि वह बच जाए” (1 कुरिन्थियों 10:31,33)।

खुश करने की जिम्मेदारी शायद उन मामलों को सम्मिलित करने तक के लिए नहीं बढ़ाई जा सकती है जो बाइबल में स्पष्ट रूप से सिखाए गए हैं, परन्तु जिनके विषय में अभी भी कमज़ोर मसीहियों को संदेह हो सकता है! कमज़ोर मसीही बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं का उल्लंघन करके उन्नति नहीं कर सकते हैं! वास्तव में यीशु मसीह की आज्ञाएँ, निषेध और शिक्षा लोगों को वास्तव में स्वतंत्र बनाती है (यूहन्ना 8:31-32)। सत्य उन्नति करता है!

परन्तु कमज़ोर मसीही तब भी उन्नति करते हैं जब मज़बूत मसीही कृपा और स्वेच्छा से विवादित मामलों के क्षेत्र में अपने आचरण को सीमित करते हैं। इस प्रकार, कमज़ोर मसीही विवेक की शांति बनाए रखने में सक्षम होंगे (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 8:12)।

(2) मसीहियों को मसीह के निस्वार्थ प्रेम के उदाहरण का पालन करना चाहिए।

जब मसीह पृथ्वी पर आया, तो उसने परमेश्वर को अस्वीकार करने वालों की भर्त्सना और शत्रुता को लिया (तुलना करें यूहन्ना 10:20; मत्ती 10:24-25)। इसलिए, मसीहियों को उसके पद चिन्हों पर चलना चाहिए और विवादित मामलों के विषय में साथी-मसीहियों के संदेह को सहन करना चाहिए।

हालाँकि, मसीह ने क्या किया और मज़बूत मसीहियों को क्या करने का आग्रह किया जाता है, इसके बीच एक अंतर है। मसीह ने स्वयं को खुश नहीं किया और उसने परमेश्वर के विरुद्ध गैर-मसीहियों की भर्त्सना और शत्रुता को सहन करने की अतुलनीय सीमा तक ऐसा किया। मज़बूत मसीहियों से केवल अपने साथी-मसीहियों के विवादित मामलों के विषय में संदेहों को सहने का आग्रह किया गया है। यदि मसीह ने सबसे बड़ा और सबसे कठिन काम किया, तो क्या मज़बूत मसीहियों को उससे कहीं छोटा और सरल काम नहीं करना चाहिए?

पुराने नियम में अतीत में मसीह के इस उदाहरण की पहले से ही भविष्यद्वाणी की गई थी (भजन 69:9)। इसी प्रकार, “अतीत में लिखी गई हर बात हमें सिखाने के लिए लिखी गई थी”। प्रेरित पौलुस बाइबल की ही बात कर रहा है और किसी अन्य शास्त्र की नहीं! वह कहता है कि बाइबल का व्यक्त उद्देश्य है:

- “चेतावनी देना” (1 कुरिन्थियों 10:6,11)
- “सीखाना, फटकारना, सही करना, प्रशिक्षित करना और धार्मिकता से परिपूर्ण करना” (2 तीमुथियुस 3:16-17)
- वचन में दिए धीरज (यूनानी: हूपोमोनी) और प्रोत्साहन (यूनानी: पैराक्लेसिस) के माध्यम से आशा देना। (रोमियों 15:4)।

और पौलुस कहता है कि परमेश्वर स्वयं “धीरज और प्रोत्साहन देनेवाला परमेश्वर है” (रोमियों 15:5)। परमेश्वर के वचन, बाइबल और परमेश्वर के बीच घनिष्ठ संबंध पर ध्यान दें! बाइबल परमेश्वर का स्थायी वचन है और इसलिए परमेश्वर का जीवित वचन है। परमेश्वर बाइबल के द्वारा लोगों को प्रोत्साहन और आराम देता है।

15:7-13

खोज 2. कलीसिया में यहूदियों और अन्यजातियों को एक दूसरे को स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि यीशु मसीह दोनों जातीय समूहों के लोगों को बचाने के लिए आया था।

रोमियों 15:7-8 कहता है, “जैसा मसीह ने परमेश्वर की महिमा के लिये तुम्हें ग्रहण किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो। इसलिये मैं कहता हूँ कि जो प्रतिज्ञाएँ बापदादों को दी गई थीं उन्हें दृढ़ करने के लिये मसीह, परमेश्वर की सच्चाई का प्रमाण देने के लिये, खतना किए हुए लोगों का सेवक बना।” मसीही कलीसिया में यहूदियों और अन्यजातियों को एक दूसरे को स्वीकार करना चाहिए क्योंकि यीशु मसीह यहूदियों और अन्यजातियों (गैर-यहूदियों) को बचाने के मुख्य उद्देश्य से आया था! और क्योंकि पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा दांव पर है!

यहूदियों और अन्यजातियों के बीच इस अंतर का अर्थ यह नहीं है कि यहूदी कमज़ोर मसीही थे और अन्यजाति मज़बूत मसीही थे। कमज़ोर और मज़बूत मसीहियों के समूह अच्छी रीति से दोनों नस्लीय समूहों से तैयार किए गए हो सकते हैं। ऐसे यहूदी और यहूदी मत को अपनाए हुए भी थे, जिनको औपचारिक व्यवस्था की पृष्ठभूमि के कारण संदेह थे। और गैर-यहूदी भी थे, जिनको अन्यजाति मूर्तिपूजा में पृष्ठभूमि होने के कारण संदेह थे। हालाँकि इस अंतर ने इस आवश्यकता पर बल दिया कि यहूदी पृष्ठभूमि से मसीही और अन्यजातियों की पृष्ठभूमि से मसीही रोम की कलीसिया के भीतर एक दूसरे को स्वीकार करें।

(1) यीशु मसीह यहूदियों के लिए आया।

रोमियों 15:8 का शाब्दिक अर्थ है कि मसीह “खतना किए हुए लोगों का सेवक बन गया”, अर्थात् वह खतना करवाए हुए लोगों के लिए सेवक बन गया (रोमियों 4:12)। यह “शरीर के भाव से इस्त्राएली” (1 कुरिन्थियों 10:18) या इस्राएल के जातीय या राष्ट्रीय नागरिकों के लिए पद्य है। “यीशु मसीह पूर्वजों से किए गए वादों की पुष्टि करने के लिए सत्य की ओर से यहूदियों का सेवक बन गया”। इस प्रकार, यीशु मसीह अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ की गई वाचा को स्थापित करने और उसे लागू करने के लिए आया था, वह वाचा जो परमेश्वर की शपथ के साथ प्रमाणित थी (तुलना करें। इब्रानियों 6:16-18)।

वाचा का वादा यह था कि परमेश्वर अब्राहम के एक वंशज (इब्रानी: बीज) के माध्यम से दुनिया में सभी देशों को आशीष देगा (उत्पत्ति 22:18), अर्थात् यीशु मसीह (गलातियों 3:16)। और पुराने नियम के काल में उस वाचा का चिन्ह और मुहर खतना था (उत्पत्ति 17:1-21; रोमियों 4:11)। परमेश्वर ने अपने वचन को पूरा करने की शपथ प्रतिज्ञा के साथ की थी। परमेश्वर की विश्वासयोग्यता विफल नहीं हो सकती है और इसलिए यीशु मसीह इसकी पुष्टि करने आया और परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को प्रभावी करने के लिए आया था (मत्ती 26:54)। इस प्रकार, यीशु मसीह “पहले यहूदियों के लिए आया” (मत्ती 10:5-6; रोमियों 1:16)। इसके बाद, “उद्धार यहूदियों से बाहर गया” (मत्ती 15:24; यूहन्ना 4:22) दुनिया के सभी अन्यजातियों के देशों में (मत्ती 24:14; 28:19; तुलना करें यशायाह 2:2-3)।

(2) यीशु मसीह अन्यजातियों के लिए भी आया।

यीशु मसीह यहूदियों के पास आया था, न केवल यहूदियों के लिए, बल्कि अन्यजातियों के लिए भी (तुलना करें यशायाह 9:2; 42:6; 49:6)। यहूदियों के लिए यीशु मसीह के माध्यम से मसीह की दया ने यीशु मसीह के माध्यम से अन्यजातियों के लिए परमेश्वर की दया का नेतृत्व किया।

रोमियों अध्याय 11 ने पहले से ही परमेश्वर के प्रतिमान में अन्यजातियों और यहूदियों की पारस्परिक निर्भरता को सिखाया। मसीह पहले इस्राएल के जातीय या प्राकृतिक राष्ट्र और फिर दुनिया में जातीय या प्राकृतिक राष्ट्रों के लिए वाचा को लागू करने के लिए आया था। यीशु मसीह ने यह “पूर्वजों से किए गए वादे की पुष्टि करने के लिए किया था ताकि अन्यजातिपरमेश्वर को उसकी दया के लिए महिमा दे सकें, जैसा कि लिखा गया है” पुराने नियम में। पुराने नियम के चार उद्धरणों के साथ, प्रेरित पौलुस यह पुष्टि करता है कि मसीह के यहूदियों के बीच आने का एक प्रतिमान धरती पर अन्यजातियों के राष्ट्रों को उद्धार देना था!

- 2शमूएल 22:50 और भजन 18:49। “इसलिये, इस कारण मैं जाति जाति के सामने तेरा भजन गाऊंगा, और तेरे नाम का भजन”
- व्यवस्थाविवरण 32:43, “हे जाति जाति के लोग, उसकी प्रजा के साथ आनन्द मनाओ।”
- भजन 117:1, “हे सब जाति के जाति के सभी लोग, यहोवा की स्तुति करो।”
- यशायाह 11:10; प्रकाशितवाक्य 5:5; 22:16, “उस समय यिशै की जड़ देश देश के लोगों के लिये एक झण्डा होगी; सब राज्यों के लोग उसे ढूंढेंगे।” पुराने नियम का यूनानी अनुवाद कहता है, “और वह जो अन्यजातियों पर शासन करने के लिए उठेगा; उसमें अन्यजाति भरोसा करेंगे” या बेहतर: “उसमें अन्यजाति विश्वास करेंगे”। मसीहा, यीशु मसीह, अन्यजाति राष्ट्रों पर शासन करेगा और अन्यजाति राष्ट्र उसमें विश्वास करेंगे और इस अपेक्षा के साथ कि पुराने नियम में परमेश्वर के वादों को पूरा किया जाएगा (रोमियों 15:12-13; इब्रानियों 11:1; तुलना करें 2 कुरिन्थियों 1:20)।

कदम 3. प्रश्न

व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आइये रोमियों 15:1-33 में पायी जाने वाली सच्चाइयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होने दें कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

15:14-19ख

प्रश्न 1. पौलुस की सेवकाई की कुछ विशेषताएँ क्या हैं?

ध्यान दें।

पौलुस की सेवकाई को प्रोत्साहन, अनुस्मारक और विनम्रता के द्वारा अन्य चीजों में चिह्नित किया गया था।

(1) प्रोत्साहित करने वाला पौलुस (रोमियों 15:14)।

प्रेरित पौलुस सवयं कई विशेषताओं वाला व्यक्ति था। उसने अन्य मसीहियों की ताकत और क्षमताओं को भी पहचाना। उनकी कमजोरियों और असफलताओं को चुनने के बजाय, उसने उनकी ताकत और उपलब्धियों से उन्हें प्रोत्साहित किया। रोमियों 1:8,12 में, उसने पहले ही उनके विश्वास के लिए उनकी सराहना कर दी। अब रोमियों 15:14 में उसने यह कहकर उनका हौसला बढ़ाया कि वे “अच्छाई से परिपूर्ण, ज्ञान में पूर्ण और एक दूसरे को निर्देश देने के लिए सक्षम हैं”।

अच्छाई वह सद्गुण है जो सारी दुष्टता और बुराई के विरुद्ध है। इसमें हृदय की स्पष्टता और दयालुता और सक्रिय रूप से लोगों का भला करना सम्मिलित है। अच्छाई वह गुण है जो कमजोर मसीहियों को नुकसान पहुँचाने से रोकने के लिए मजबूत मसीहियों को विवश करेगा।

ज्ञान वह गुण है जो मसीही विश्वास को समझता है। यह मसीही विश्वास में दूसरों को निर्देश देने की क्षमता से संबंधित है। यहाँ यह विशेष रूप से इस बात के ज्ञान का सन्दर्भ है कि यीशु मसीह के माध्यम से “पुराने नियम की छायाएँ” नए नियम की वास्तविकताओं में कैसे पूरी हुई (कुलुस्सियों 2:17; इब्रानियों 10:1)। इस प्रकार ज्ञान वह गुण है जो रोम में मसीहियों के बीच विवादित मामलों के विषय में विश्वास की कमजोरी को ठीक करेगा। इस प्रकार, रोमियों 14:1 से 15:13 में राय, आस्थाओं या विश्वास के अंतर काल्पनिक नहीं थे। रोम में, अवश्य इस पर शिक्षण की आवश्यकता की स्थिति रही होगी।

एक दूसरे को निर्देश देने की क्षमता वह गुण है जिसका एक दूसरे पर गहरा प्रभाव होता है। एक दूसरे को निर्देश देने का शाब्दिक अर्थ है “एक दूसरे के दिमाग में डालना (उत्कीर्ण करना)” (यूनानी: नाओफेतेओ)। रोम के मसीहियों में विवादित मामलों पर अलग-अलग राय या आस्था रखने के लिए एक-दूसरे का न्याय न करने या निंदा न करने की चेतावनी देने की क्षमता थी। उनके पास एक दूसरे को प्रेम करने और विश्वास को बनाने की आवश्यकता को लेकर दूसरों के दिमागों पर लगातार

प्रभाव डालने की क्षमता थी।

(2) स्मरण कराने वाला पौलुस (रोमियों 15:15-16)।

प्रेरित पौलुस ने रोम के मसीहियों को स्मरण दिलाया कि परमेश्वर ने उसे अनुग्रह दिया था कि “वह अन्यजातियों के लिए याजक की सेवकाई के साथ मसीह के सुसमाचार का प्रचारक बने ताकि अन्यजाति पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र किए गए परमेश्वर के लिए स्वीकार्य भेंट बन सकें।” यहूदियों के लिए पौलुस अपनी सेवकाई का वर्णन करने हेतु पुराने नियम के चित्रों का उपयोग करता है। वह विशेष रूप से अन्यजाति राष्ट्रों को सुसमाचार प्रचार को वेदी पर बलिदान लाने वाले एक याजक की पवित्र (अलग और समर्पित) सेवा के रूप में मानता है। इस चित्र में, अन्यजातियों को जो मसीही बन गए हैं, परमेश्वर को स्वीकार्य भेंट के रूप में माना जाता है।

पौलुस के समय से 700 वर्ष पहले से ही, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि परमेश्वर “उनमें से कुछ को जो जीवित रहेंगे (अर्थात्, यहूदियों में से कुछ जो बाबल के निर्वासन में चले गए थे) राष्ट्रों के लिए भेजेगा (यशायाह 1:9; 10:20-23) (अर्थात्, अन्यजातियों राष्ट्रों में जिन्होंने कभी बाइबल के परमेश्वर के विषय में नहीं सुना होगा या कभी परमेश्वर की महिमा नहीं देखी होगी, उदाहरण के लिए उसके चमत्कार)। ये यहूदी अन्यजाति राष्ट्रों में परमेश्वर की महिमा की घोषणा करेंगे।” अपनी बारी में, “वे (अर्थात्, विश्वास करने वाले अन्यजाति या मसीही) सभी राष्ट्रों के अन्य यहूदियों को यहोवा को भेंट के रूप में लाएँगे” (यशायाह 66:19-21)¹³। इस प्रकार, पहले से ही 700 वर्ष पहले भविष्यद्वक्ता यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि यहूदी और गैर-यहूदी एक-दूसरे की बाइबल के परमेश्वर को जानने में सहायता करेंगे जैसा कि प्रेरित पौलुस रोमियों 11 में सिखाता है। किसी भी भेंट को परमेश्वर के स्वीकार्य होने के लिए, उसे शुद्ध और पवित्र होना चाहिए। पौलुस कहता है कि पवित्र आत्मा पवित्रता की इस स्थिति का निर्माण करता है। पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र किए गए (अर्थात्, नया जन्म) केवल यहूदी और अन्यजाति बाइबल के परमेश्वर के लिए स्वीकार्य भेंट होंगे।

(3) विनम्र सेवक पौलुस (रोमियों 15:17-19)।

पौलुस अपने आप को इस्राएल के छुड़ाए हुए लोगों में से एक के रूप में संबोधित करता है जिसे यशायाह के समान परमेश्वर की कीर्ति और महिमा का प्रचार करने के लिए भेजा गया है। हालांकि पौलुस ने बहुत से यहूदियों और गैर यहूदियों की मसीह में अगुवाई की थी, लेकिन वह पद 18 में कहता है, “क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे और किसी बात के विषय में कहने का साहस नहीं जो मसीह ने अन्यजातियों की अधीनता के लिए वचन और कर्म और चिन्हों और अद्भुत कामों की सामर्थ्य से और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से मेरे ही द्वारा किये। पौलुस दीन था उसने सेवकाई के क्षेत्र में अपनी साड़ी उपलब्धियों के लिए सारी महिमा यीशु मसीह को दी। महत्वपूर्ण वह नहीं था जो कि पौलुस ने मसीह के माध्यम से किया था, परन्तु यह जो कि मसीह ने पौलुस के माध्यम से जो पूरा किया (तुलना करें प्रेरितों 14:27)। सुसमाचार का प्रचार और कई लोगों को मसीह की ओर ले आना, पौलुस का काम नहीं था, बल्कि मसीह का था।

यीशु मसीह ने पौलुस के वचनों और कार्यों के माध्यम से काम किया। पौलुस के वचनों और कार्यों के पीछे “चिन्हों और चमत्कारों की शक्ति” (यूनानी: डूनामिस समईओन कई तेरातोन) और पवित्र आत्मा की शक्ति (यूनानी: डूनामिस) थी। एक “चमत्कार” (यूनानी: सेमेऑन) केवल एक अद्भुत कार्य, कोई अद्भुत घटना (2 कुरिन्थियों 12:12; गलातियों 3:5; इब्रानियों

¹³ यहूदियों को शारीरिक रूप से मध्य पूर्व में स्थित इस्राएल की भूमि पर वापस लाना नहीं! परन्तु यहूदियों को आत्मिक रूप से यीशु मसीह में विश्वास में लाना!

2:4) नहीं है, परन्तु यह विशेष रूप से अलौकिक अभिकरण की ओर संकेत करते हुए एक विशिष्ट चिन्ह है जिसके द्वारा यह होता है और इस प्रकार अपने अलौकिक चरित्र को प्रमाणित करता है। चिन्ह जो प्रेरित पौलुस ने किए, उन्होंने यीशु मसीह को प्रतिनिधि के रूप में इंगित किया, जिसने इन्हें संभव किया। इन चिन्हों ने प्रमाणित किया कि यीशु मसीह ने अपने प्रेरित के रूप में पौलुस को भेजा था (तुलना करें व्यवस्थाविवरण 34:17; मरकुस 16:20; प्रेरितों 2:43; 2 कुरिन्थियों 12:12; इब्रानियों 2:4)!

पौलुस ने कहा कि उसने पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से अपने चमत्कार किए। जब भी वह सुसमाचार के उद्धार के प्रभावों की बात करता था तो पवित्र आत्मा का उल्लेख करना पौलुस की विशेषता थी। पवित्र आत्मा के काम करने और यीशु मसीह (रोमियों: 9:11-9; 2 कुरिन्थियों 3:17,18) के बीच इस संबंध में कोई अलगाव न करना भी पौलुस की विशेषता थी। पौलुस ने प्रभुत्व के तीन माध्यमों के प्रकाशन (व्यक्तियों) के कार्यों और प्रभुत्व के इन तीन माध्यमों के प्रकाशन (व्यक्तियों) के साथ मसीहियों के विशिष्ट संबंधों के चारों ओर अपनी शिक्षा को बुना है। पौलुस के विचार को त्रिएकता के सिद्धांत द्वारा सशर्त किया गया था (रोमियों 15:30; इफिसियों 4:3-6)।

15:19ख-21

प्रश्न 2. पौलुस की नियुक्त सेवा की नीति क्या थी?

ध्यान दें।

(1) पौलुस ने संक्षेप में बताया कि मसीह ने उसके माध्यम से क्या पूरा किया था।

प्रेरित पौलुस ने “यरूशलेम से इल्लुरिकुस के चारों ओर” सुसमाचार सुनाया। वह अब तक सुसमाचार प्रचार की अपनी सेवकाई की पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं का वर्णन करता है (तुलना करें 2 तीमुथियुस 4:10)। वह कहता है, “मैंने सुसमाचार का पूरी तरह से प्रचार किया है”। पौलुस का पूरी तरह से का अर्थ यह नहीं था कि उसने उन्हें वह सब कुछ सिखाया जो उन्हें जानने की ज़रूरत थी, जैसा कि उसने इफिसुस में किया था (प्रेरितों 20:20,27), परन्तु इस अर्थ में कि उसने इस पूरे क्षेत्र में सुसमाचार प्रचार का अपना काम पूरा किया। उसका उद्देश्य इस पूरे क्षेत्र में मसीही कलीसियाओं की नींव रखना था (1 कुरिन्थियों 3:7,10)। जो कि उसने पूरा किया।

(2) पौलुस नियुक्त सेवा की अपनी व्यक्तिगत नीति की व्याख्या करता है।

वह कहता है, “यह हमेशा से ही वहाँ पर सुसमाचार प्रचार करने की मेरी महत्वाकांक्षा रही है जहाँ मसीह को नहीं जाना जाता था, ताकि मैं किसी और की नींव पर न बनाऊँ।” पौलुस की नीति जिसमें उसकी सेवकाई का संचालन, उसके दायरे और सीमाओं को निर्देशित किया गया था, मसीही कलीसियाओं की नींव रखना और समय-समय पर निम्न के द्वारा अपने स्वयं के काम को मज़बूत करने की थी:

- निरन्तर प्रार्थना करें (1 थिस्सलुनिकियों 1:2-3)
- अब और तब भेंट करना
- पत्र लिखना
- सहकर्मि भेजना

उसकी प्रेरित गतिविधि उन कलीसियाओं के निर्माण करने की ओर निर्देशित नहीं थी जो अन्य मसीही श्रमिकों द्वारा स्थापित

की गई थीं। पौलुस यशायाह 52:15 को उद्धृत करता है, जिसका संदर्भ मसीहा के अपमान के बाद उसकी महिमा के विश्वव्यापी प्रभावों की भविष्यद्वाणी का है (यशायाह 52:14)। अन्यजाति राष्ट्र और राजा उन चीजों को देखेंगे, सुनेंगे और समझेंगे, जिनका उन्होंने पहले कभी नहीं बताया गया था। इस पद्य को उद्धृत करके, पौलुस अन्यजातियों के बीच अपने स्वयं के नियुक्त कार्य सेवकाई के काम को परमेश्वर की योजना के अनुसार आयोजित मानता था और इस प्रकार विशेष रूप से जिसकी वचन के द्वारा माँग की गई थी। फिर भी, पौलुस यह माँग नहीं करता है कि उसकी व्यक्तिगत नियुक्त कार्य सेवकाई की नीति अन्य सभी नियुक्त सेवकाई कार्यकर्ताओं की नियुक्त कार्य सेवकाई नीति होनी चाहिए।

15:22-24

प्रश्न 3. पौलुस की भविष्य की यात्रा की क्या योजनाएँ थीं?

ध्यान दें। यह तथ्य कि प्रेरित पौलुस सबसे पहले उन राष्ट्रों और नगरों में गया था जहाँ अभी तक सुसमाचार का प्रचार नहीं किया गया था, इसी का कारण था कि वह अक्सर रोम आने के लिए बाधित हुआ था। परन्तु अब जब दुनिया के इस भाग में उसका काम पूरा हो गया था, तो उसने दूर पश्चिम जाते हुए रोम का दौरा करने की योजना बनाई। पौलुस की स्पेन यात्रा की योजना निश्चित है। हालाँकि बाइबल हमें यह नहीं बताती है कि क्या उसने कभी स्पेन की यात्रा की थी, “कुरिन्थ को पत्र” जिसे रोम के क्लेमेंट (95 ई.स.) नामक एक कलीसिया के अगुवे ने लिखा था और एक प्राचीन दस्तावेज जिसे “मूराटोरियन टुकड़ा” कहा जाता है (170 ई.स.) बताते हैं कि पौलुस ने स्पेन की यात्रा की थी। पौलुस ने स्पेन के मार्ग में रोम से होकर जाने की योजना बनाई। उसने वहाँ कुछ सेवकाई करने और स्पेन की ओर अपनी यात्रा पर उनके द्वारा सहायता की अपेक्षा की थी। बाइबल में इस बात का प्रमाण है कि अन्य कलीसियाओं ने प्रेरित पौलुस की नियुक्त कार्य सेवकाई की यात्राओं में उसकी सहायता की थी (प्रेरितों 13:1-4; 14:26; 15:40; फिलिप्पियों 4:15-16)।

15:25-29

प्रश्न 4. यरूशलेम में गरीबों के लिए पौलुस की क्या सेवकाई थी?

ध्यान दें। इससे पहले कि वह रोम और स्पेन की यात्रा पर जाता, पौलुस ने यरूशलेम और यहूदिया में रहने वाले गरीब मसीहियों के लिए मकदूनिया और अखया की मसीही कलीसियाओं द्वारा दिए दान (वित्तीय उपहार) के साथ पहले यरूशलेम की यात्रा करने की योजना बनाई। दया का यह काम प्रेरित पौलुस की विश्वव्यापी नियुक्त कार्य सेवकाई उद्यम का भाग था। वित्तीय योगदान का शाब्दिक अर्थ “संगती” (यूनानी: कोईनोनिया) था। यह संगती के बंधन का एक टोकन था जिसका दुनिया के विभिन्न देशों के मसीहियों के बीच अस्तित्व था। यरूशलेम और यहूदिया के मसीहियों ने अन्यजाति लोगों के साथ सुसमाचार को साझा किया था। अब इन अन्यजाति राष्ट्रों के मसीहियों ने यरूशलेम और यहूदिया में गरीब मसीहियों के साथ अपनी भौतिक संपत्ति साझा की। हालाँकि, वित्तीय योगदान की मात्रा एक स्वैच्छिक प्रकृति की थी, परन्तु इस प्रकार के प्रेम को साझा करना दुनिया के सभी मसीहियों के लिए एक दायित्व था (रोमियों 15:27)। दुनिया भर के मसीहियों को आत्मिक और साथ ही एक दूसरे के साथ भौतिक आशीर्षों को साझा करना चाहिए। इस स्तर पर, अन्यजाति यहूदियों के साथ अपने भौतिक साधनों को साझा करने में आभारी थे, क्योंकि सुसमाचार यहूदियों से निकला था (तुलना करें यशायाह 2:3ख; 11:1; 42:1; 60:3; यूहन्ना 4:22)। इस प्रकार प्रेरित पौलुस ने सिखाया कि यहूदी विश्वासियों और अन्यजातियों में से विश्वासियों के बीच की परस्पर निर्भरता (जैसा कि रोमियों 11 में सिखाया गया है) ठोस और व्यावहारिक भी होनी चाहिए।

रोमियों 15:28 में, पौलुस शाब्दिक रूप से कहता है, “सो मैं यह काम पूरा करके और उन को यह चन्दा सौंप कर तुम्हारे पास होता हुआ इसपानिया को जाऊंगा।” वाक्यांश “चन्दा सौंप कर (यूनानी: सफ्रेगिजो)” समझना कठिन है, परन्तु संभवतः इसका अर्थ है “जब मैं वह एकत्र की गई राशि उनके हाथों में सुरक्षित रूप से रख (सौंप) दूँगा।”

15:30-33

प्रश्न 5. पौलुस ने प्रार्थना की विनती क्यों की?

ध्यान दें। रोमियों 15:30 में, पौलुस कहता है, “मैं तुम से विनती करता हूँ... कि मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो।” पौलुस की यह विशेषता है कि वह लोगों से उसके लिए प्रार्थना करने को कहता है। प्रार्थना एक साथ मिलकर संघर्ष करना है (यूनानी: सुनागोनाइजोमी)। यह एक कुश्ती है, क्योंकि मसीहियों के आसपास की दुष्ट आत्माओं, वह बुरी दुनिया जिसमें वे रहते हैं और उनमें के पापी स्वभाव द्वारा प्रस्तावित प्रतिरोध होता है। यह उन द्वारों के कारण संघर्ष है जो मसीह, मसीहियों, मसीही कलीसिया और मसीही संदेश के विरुद्ध बंद हैं। यही कारण है कि पौलुस मसीहियों को प्रार्थना करने के लिए कहता है। “प्रार्थना करें कि परमेश्वर हमारे संदेश के लिए एक द्वार खोले, ताकि हम मसीह के रहस्य को घोषित कर सकें। प्रार्थना करें कि मैं इसे स्पष्ट रूप से घोषित कर सकूँ, जैसा कि मुझे करना चाहिए” (कुलुस्सियों 4:3-4)। क्योंकि प्रार्थना एक संघर्ष है, मसीही एक साथ प्रार्थना करके एक दूसरे की सहायता कर सकते हैं।

उसने विशेष रूप से यरूशलेम के लिए अपनी तत्काल यात्रा के लिए प्रार्थना की विनती की। उसने उनसे प्रार्थना करने के लिए कहा ताकि उसे यहूदिया में गैर-मसीहियों से बचाया जा सके, वे यहूदी जिन्होंने हर जगह जाकर पौलुस का विरोध किया और मसीहियों को यहूदी धर्म में वापस लाने का प्रयास किया। और उसने उनसे इसलिए प्रार्थना करने के लिए कहा कि यहूदी मसीहियों के लिए उसकी सेवा उन्हें स्वीकार्य हो। पौलुस शहादत के लिए नहीं तरसता था, परन्तु उसके पास उस संदेह के पुख्ता प्रमाण थे, जिसके साथ उसकी अन्यजातियों में सेवकाई को माना जाता था। उसने संभवतः यरूशलेम में उसके विषय में प्रसारित झूठे समाचारों के विषय में सुना होगा, कि उसने अन्यजातियों के बीच रहने वाले यहूदियों को कथित तौर पर मूसा की व्यवस्था को छोड़ने और यहूदी रीति-रिवाजों के अनुसार न जीने की शिक्षा दी थी (प्रेरितों 21:20-21))। इसलिए इस डर का कुछ आधार था कि मकदूनिया और अखया में उसकी सेवकाई के वित्तीय योगदान का यहूदिया में स्वागत नहीं किया जाएगा। सभी विरोधों के बावजूद, पौलुस ने परमेश्वर की संप्रभुता को मान्यता दी। उसने कहा, “परमेश्वर की इच्छा से मैं यह और वह करूँगा” (मत्ती 26:39; याकूब 4:13-17)। उसका मानना था कि ऐसा कुछ भी नहीं होगा जिसमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर की अनुमति न हो। प्रेरित पौलुस ने स्वयं को और अपने जीवन की घटनाओं को पूरी रीति से प्रभु की इच्छा और बुद्धि को समर्पित कर दिया।

चरण 4. लागू करना।

अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 15:1-33 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें।

(स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 15:1-33 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

- 15:1-2. अपने आप को खुश मत करो, बल्कि विवादित मामलों के संबंध में अपने पड़ोसी के संदेहों को सहन करके उसे खुश करें और उसे तैयार करें।
- 15:4. पुराने नियम को पढ़ें और उसका अध्ययन करें, क्योंकि पुराने नियम में सब कुछ मसीहियों को धैर्य, धीरज और दृढ़ता सिखाने के लिए लिखा गया था। यह उन्हें उससे प्रोत्साहित करता है कि परमेश्वर ने अतीत में क्या कहा और क्या किया।
- 15:5. इस बात का एहसास करें कि मसीही एकता केवल तब आती है जब परमेश्वर मसीहियों को यीशु मसीह के अनुसार आपस में एकता की भावना देता है (जब कि वे उसका अनुसरण करते रहते हैं)। शिष्यत्व के बिना (परिपक्वता की ओर बढ़ते हुए) (1 कुरिन्थियों 3:3-4; इफिसियों 4:13-14) कलीसिया के भीतर एकता नहीं आएगी और अन्य कलीसियाओं के साथ भी एकता नहीं होगी।
- 15:7. स्वीकृति सहनशीलता के समान नहीं है। जिस तरह से यीशु मसीह ने हमें स्वीकार किया, मसीही स्वीकृति का मानक उससे कुछ कम नहीं है।
- 15:14. एक दूसरे को निर्देश देने के लिए कलीसिया के भीतर क्षमता विकसित करें (तुलना करें कुलुस्सियों 3:16)।
- 15:14-15. कभी भी अपने साथी-मसीहियों पर प्रभाव डालना बंद न करें। उनकी सच में प्रशंसा करके प्रोत्साहित करते रहें। उन्हें बार-बार परमेश्वर की कृपा स्मरण दिलाएं।
- 15:18. यीशु मसीह के लिए जो आपने पूरा किया है उसके बजाय यीशु मसीह ने आपके माध्यम से जो कुछ भी किया है उसके विषय में बोलकर परमेश्वर की महिमा करें।
- 15:19-20. पौलुस की व्यक्तिगत नीति को उस सुसमाचार को वहाँ घोषित करने के लिए आपको कभी-कभी चुनौती देने दें, जहाँ पहले किसी ने भी इसकी घोषणा नहीं की हो।
- 15:24. भविष्य में आप जो करना चाहते हैं, उसकी योजना बनाएँ, परन्तु हमेशा अपनी योजना को परमेश्वर को सौंपे (नीतिवचन 16:3)।
- 15:27. अपने साथी मसीहियों के साथ अपनी आत्मिक और साथ ही साथ भौतिक आशीषों को साझा करें, विशेषकर दुनिया के उन मसीहियों के साथ, जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।
- 15:30. कुछ मसीहियों के साथ उनके संघर्ष या सेवकाई में उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करके जुड़ें।

2. रोमियों 15:1-33 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं हमारी कलीसिया में कमजोर मसीहियों की असफलताओं को उठाना चाहता हूँ।

मैं अपनी कलीसिया के सेवकों के साथ मजदूरों के लिए, खुले दरवाजों के लिए और खुले दिलों के लिए प्रार्थना में उनके संघर्ष में सम्मिलित होना चाहता हूँ।

चरण 5. प्रार्थना।**प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 15:1-33 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5**प्रार्थना** (8 मिनट)

[मध्यस्थता]
दूसरों के लिये प्रार्थना

दो या तीन समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिये और संसार भर के लोगों के लिये प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6**तैयारी** (2 मिनट)

[निर्धारित कार्य]
अगले अध्याय के लिये

(समूह अगुवा।) समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें।

1. समर्पण। चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 15:1-33 में से प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन यहेजकेल होशे 5, योएल 2, अमोस 5 और योना 1 के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ
4. स्मरण करना। (20) रोमियों 16:17. पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 25:31-46 में पाए जाने वाले “भेड़ और बकरी” के दृष्टान्त की तैयारी करें। दृष्टान्तों की व्याख्या करने के लिये उन छः निर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. परमेश्वर के राज्य के विषय पर प्रचार करने हेतु अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। अपने शांत समय के नोट्स, अपने स्मरणीय नोट्स, अपने बाइबल के अध्ययन के नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना
---	-----------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना करें।** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपे।

2	साझा करें (20 मिनट) <i>[शांत समय]</i> होशे 2, योएल 2, आमोस 5 और योना 1
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से **पढ़ें**) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (होशे 2, योएल 2, आमोस 5, और योना 1) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट) <i>[रोमियों में प्रमुख वचन]</i> (20) रोमियों 16:17
---	---

दो-दो करके **पुनरावलोकन करें।**

(20) रोमियों 16:17. अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है, फूट डालने और ठोकर खिलाने का कारन होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो।

4	शिक्षा देना (85 मिनट) <i>[यीशु के दृष्टान्त]</i> भेड़ और बकरियां
---	---

मत्ती 25:31-46 में भेड़ों और बकरियों का दृष्टान्त

परमेश्वर के राज्य में न्याय

के बारे में दृष्टान्त है

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों को उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेंगे (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें मत्ती 25:31-46.

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आत्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

यह वास्तव में एक दृष्टान्त नहीं है, हालांकि इसमें एक दृष्टान्त के तत्व शामिल हैं। उदाहरण के लिए, भेड़ और बकरियां अक्सर दिन के दौरान आपस में मिलती हैं जब वे चरती हैं। लेकिन शाम को, जब चरवाहा अपनी भेड़ों को बुलाता है, तो बकरियां जवाब नहीं देती हैं! भेड़ें अपने चरवाहे की आवाज़ सुनती हैं और उसके चारों ओर इकट्ठा होती हैं (यूहन्ना 10:1-6)। लेकिन बकरियों को एक साथ चलाना पड़ता है।

मत्ती 25:31-46 अंतिम न्याय के दिन का एक नाटकीय वर्णन है, जो इस प्रतीकवाद का उपयोग करता है।

2. वर्तमान संदर्भ की जांच करें और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टान्त की 'कहानी' के संदर्भ में दृष्टान्त का "स्थान" और "स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग" शामिल हो सकते हैं। दृष्टान्त का स्थान दृष्टान्त को बताने के अवसर को बता सकता है, या दृष्टान्त को बताने के समय *परिस्थितियों* का वर्णन कर सकता है। स्थान आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी से पहले पाया जाता है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टान्त की कहानी के बाद पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त का स्थान, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती अध्याय 24 और 25 में लिखी हुई है।

यह अंतिम न्याय के दिन का वर्णन करता है। इन दो अध्यायों में अंतिम बातों (परलोक सिद्धान्त) पर यीशु के उपदेश शामिल हैं। इन दो अध्यायों का संदेश यह है कि जब मसीह न्याय करेगा और प्रतिफल देगा, तो मसीह की वापसी के मद्देनजर मसीहियों को जागते रहना चाहिए। इन अध्यायों की भविष्यवाणियों में निकट भविष्य में होने वाली घटनाओं और अंत समय में होने वाली घटनाओं दोनों का संदर्भ है।

मत्ती 24 में, यरूशलेम पर आने वाले निर्णय (रोमियों द्वारा 70 ईस्वी) और पूरी दुनिया के अंतिम निर्णय के दिन (मसीह के दूसरे आगमन पर) को अंतिम बातों पर एक महान शिक्षण बनाने के लिए एक साथ मिलाया गया है (अर्थात्, यरूशलेम के लिए आखिरी बातें और इस दुनिया के लिए आखिरी बातें)! यरूशलेम की तरफ बढ़ती हुई तबाही एक प्रकार के रूप में कार्य करती है, जो कि एक उदाहरण के रूप में है, जो अंतिम समय में क्लेश का चित्रण करता है।

मत्ती 25 में, दस कुंवारी कन्याओं का दृष्टान्त यह सिखाता है कि पूरे दिन की सतर्कता और तैयारी प्रत्येक मसीही के लिए आवश्यक होती है, क्योंकि मसीह का दूसरा आगमन अज्ञात है। तोड़ो का दृष्टान्त सिखाता है कि अंतिम न्याय के दिन से पहले परमेश्वर द्वारा दी गयी प्रत्येक क्षमताओं और अवसरों का उपयोग करने में विश्वास और परिश्रम करना आवश्यक है। इस बिंदु पर, यीशु ने नाटकीय और अक्सर प्रतीकात्मक भाषा में अंतिम न्याय के दिन का वर्णन किया।

(2) कहानी अंतिम न्याय के दिन के विवरण के रूप में है।

(3) स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग एक ही रूप में है।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु का इरादा दृष्टान्त की कहानी के हर विवरण में आत्मिक महत्व रखने का नहीं था। दृष्टान्त रूपक नहीं हैं। प्रासंगिक विवरण दृष्टान्त की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टान्त के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टान्त की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वतंत्र आत्मिक महत्व का वर्णन नहीं करना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

न्याय का सिंहासन। यह प्रासंगिक है, क्योंकि यह सीधे यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय के दिन से संबंधित है।

न्याय का सिंहासन हवा में है या पृथ्वी पर? जकर्याह 14:4 के आधार पर, कुछ मसीही धरती पर सिंहासन रखते हैं। हालाँकि, जकर्याह 14:1-5 एक सिंहासन की बात नहीं करता है! जकर्याह पुराने नियम में “यहोवा का एक दिन” पर आखिरी बातों का वर्णन करता है, यानी कि इस्राएल की भूमि में इस्राएल के लोगों के साथ होने वाली घटनाओं के संदर्भ में (तुलना करें) प्रकाशितवाक्य 20:8-9)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन, यीशु मसीह, आमतौर पर ऊपरी क्षेत्रों में है (प्रकाशितवाक्य 4:1-2; 5:6; 20:11-12; तुलना करें मत्ती 19:28-29; 25:31)। न्याय का सिंहासन संभवतः हवा में खड़ा है जहां सच्चे मसीही यीशु मसीह से बादलों पर दूसरे आगमन पर उससे आनंद के साथ मिलने के लिए, उसका स्वागत करने के लिए व उस पर अचंभित होने के लिए (2थिस्सलुनीकियों 1:10) “एक साथ लाये जाएंगे” या छीन लिए जायेंगे (ग्रीक:हरपाजो) (1थिस्सलुनीकियों 4:15-17; प्रकाशितवाक्य 12:5)।

बाइबल के किसी भी अधिकार के बिना कुछ मसीही सिखाते हैं कि तीन अलग-अलग अवसरों पर तीन अलग-अलग न्याय के सिंहासन को प्रतिष्ठित करना चाहिए:

- वे सोचते हैं कि “मसीह के न्याय का आसन” (2 कुरिन्थियों 5:10) केवल मसीहियों के विश्वास के निर्णय के लिए है – जिसे बादलों में उठाया जाना या “मसीह के पहले आगमन “(ग्रीक: परोसिए) के नाम से जाना जाता है, मसीह के तथाकथित दूसरे आगमन (ग्राइक: अपोकैलपिसिस) से 7 या 3.5 साल पहले। वे मानते हैं कि मसीह का न्याय आसन स्वर्ग में है।
- उन्हें लगता है कि “महिमा में मसीह का सिंहासन” (मत्ती 19:28; 25:31) तथाकथित उपस्थिति / प्रकाशितवाक्य या “मसीह के दूसरे आगमन” पर इस्राएल को छोड़कर सभी राष्ट्रों के न्याय के लिए है (ग्रीक: अपोकैलपिसिस) जिसकी मसीह पृथ्वी पर तथाकथित हजार वर्ष के राज्य की स्थापना करेगा। वे मानते हैं कि महिमा में मसीह का सिंहासन पृथ्वी पर खड़ा है (जकर्याह 14:4)।
- और वे सोचते हैं कि “एक बड़ा श्वेत सिंहासन” (प्रकाशितवाक्य 20:11) पृथ्वी पर मसीह के तथाकथित हजार वर्ष

के राज्य के अंत में सभी अविश्वासियों के न्याय के लिए है, (पिछले दो अंतिम न्याय के दूसरे के 1000 साल बाद)। वे मानते हैं कि महान सफेद सिंहासन भी स्वर्ग में है।

हालाँकि, ये तीन अलग-अलग नाम सभी एक और केवल मसीह के दूसरे आगमन के अंतिम न्याय के सिंहासन को संदर्भित करते हैं।¹⁴

न्यायाधीश। यह प्रासंगिक है, क्योंकि वह सीधे मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय के दिन से संबंधित है।

ये न्यायाधीश कौन है? क्या वह परमेश्वर पिता है या यीशु मसीह है?

निर्गामी ईश्वरीय कार्य जैसे की निर्माण, प्रदान करना, उद्धार और न्याय में पवित्र त्रिमूर्ति (त्रिएक ईश्वर) सहयोग करते हैं। फिर भी, वर्तमान पद्यांश में यह स्पष्ट है कि न्याय करने का सम्मान यीशु मसीह को मध्यस्थ के रूप में प्रदान किया जाता है, उनके निपुण मध्यस्थ कार्य के लिए एक पुरस्कार के रूप में (दानियेल 7:13-14; मत्ती 13:41; 16:27; 26:64; 28:18; यूहन्ना 5:22-23, 27-29; फिलिप्पियों 2:9-10)। यीशु को “राजा” (यूहन्ना 1:36; प्रकाशितवाक्य 19:16) कहा जाता है और उन्हें स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है (मत्ती 11:27; 28:18; यूहन्ना 3:35; 13:3; इफिसियों 1:22)।

प्रकाशितवाक्य 20:11 में, जो एक बड़े श्वेत सिंहासन पर बैठा हुआ है, वह यीशु मसीह है (मत्ती 19: 28; यूहन्ना 5:22; प्रकाशितवाक्य 5:6), जो अंतिम फसल काटने के लिए आता है (प्रकाशितवाक्य 14:14)। वर्तमान पृथ्वी और आकाश (सितारों का) उनकी उपस्थिति से प्रकाशित होता है (प्रकाशितवाक्य 6:14; 20:11)। इसका मतलब यह नहीं है कि अंतिम न्याय में सम्पूर्ण जगत का “विनाश” किया गया है, बल्कि यह है कि इसका पूरी तरह से “नवीनीकरण” (ग्रीक: अपोकैलपिसिस) (प्रेरितों 3:21), “छुटकारा” (ग्रीक: एलियूथेरो) (रोमियों 8: 21) या “नया” किया जाता है (ग्रीक: कइना पोइयो) (प्रकाशितवाक्य 21: 1,5; तुलना करें 2 पतरस 3:10)।

स्वर्गदूत। वे प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे सीधे मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय के दिन से संबंधित हैं। स्वर्गदूतों के कार्य क्या हैं?

वे *अंत समय* में यीशु मसीह से जुड़े हैं। दूसरे आगमन पर, वे मसीह की महिमान्वित श्रंखला बनाएंगे और उनके पास करने के लिए दो महत्वपूर्ण कार्य होंगे:

- मृत्यु से पुनरुत्थान (1 कुरिन्थियों 15:42-49) और पृथ्वी पर जीवित लोगों के परिवर्तन के बाद (1 कुरिन्थियों 15:50-52), स्वर्गदूत परमेश्वर के चुने हुए लोगों को पृथ्वी पर हर जगह से इकट्ठा करेंगे (भेड़)। सभी परमेश्वर के चुने हुए, अर्थात् पुराने नियम की अवधि के सभी सच्चे विश्वासियों और नए नियम की अवधि से सभी सच्चे मसीही “उनके साथ बादलों पर जायेंगे कि हवा में प्रभु से मिलें”¹⁵ (मत्ती 24:31, 40अ, 41अ; 1थिस्सलुनीकियों 4:15-17) उसका स्वागत करें, उस पर अचंभा करें और उसे महिमा दें (2 थिस्सलुनीकियों 1:10)। ये विश्वासी वही हैं जो मसीह से मिलने के लिए तुरंत “उठा लिए जायेंगे” (स्वर्गदूतों के साथ) (ग्रीक: पैरालम्बनो) (मत्ती 24:31,40अ, 41अ)।

¹⁴ जिस प्रकार से यीशु मसीह के विभिन्न नाम भिन्न मसीह की और संकेत नहीं करते। ठीक उसी प्रकार से परमेश्वर के लोगों अर्थात् कलीसिया के भिन्न नाम बहुत से कलीसियाओं को नहीं दर्शाते। नियमावली 3, परिशिष्ट 12 को देखें।

¹⁵ ग्रीक: hama sun autois harpagnésometha en nefalais eis apantésin (मत्ती 25:6, प्रेरितों 28:15) tou kuriou eis aera.

- बाद में उसी अंतिम न्याय के दिन स्वर्गदूत वो सब कुछ परमेश्वर के राज्य से बाहर कर देंगे जो पाप का कारण बनते हैं और जो बुराई (बकरियां) मत्ती 13:41) करते हैं, और उन्हें अंतिम न्याय के लिए हवा में मसीह के न्याय के सिंहासन के सामने ले जाया जायगा। वहाँ यीशु मसीह इन स्वर्गदूतों के साथ मिलकर उन्हें अपने बाएँ हाथ पर एक अलग जगह सौंपेंगे (मत्ती 13:49; 25; 31-33; यहूदा 1:14-15)। ये अविश्वासी वही हैं जो पहले स्वर्गदूतों द्वारा पीछे छोड़ दिए जाते हैं (मत्ती 24:40ब, 41ब), फिर न्याय के आसन के सामने लाये जाते हैं और न्याय के बाद आत्मा और शरीर को नरक में फेंक दिया जाता है (मत्ती 13:42, 50; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9; प्रकाशितवाक्य 14:17-20)।

राष्ट्र। न्याय के सिंहासन के सामने एकत्र होने वाले राष्ट्र प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे सीधे मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय के दिन से संबंधित हैं। न्याय के सिंहासन के सामने इकट्ठा होने वाले ये राष्ट्र कौन हैं?

कुछ मसीही मानते हैं कि मत्ती 25:31-46 में वर्णित न्याय प्रकाशितवाक्य 20:11-15 में वर्णित न्याय से अलग है। वे कहते हैं कि मत्ती 25 केवल अन्यजातियों द्वारा यहूदी राष्ट्रों के साथ किये गए व्यवहार के अनुसार अन्यजातियों के राष्ट्र के न्याय का वर्णन करता है, और यह कि प्रकाशितवाक्य 20 में हजार साल बाद एक और न्याय का वर्णन होता है, अर्थात् केवल अविश्वासियों और ईश्वरविहीन लोगों का न्याय। ये लोग सभी गैर-यहूदी होंगे, क्योंकि रोमियों 11:26 के आधार पर यह मान लिया जाता है कि सभी यहूदी बच जाएंगे। लेकिन रोमियों 10:12 पहले से ही बहुत स्पष्ट है कि मसीह के पहले आगमन के बाद से यहूदी और गैर-यहूदी के बीच कोई अंतर नहीं है!

मत्ती 25, 2 कुरिन्थियों 5:10 और प्रकाशितवाक्य 20 में वर्णित न्याय एक और एक ही अंतिम न्याय का दिन है।

मत्ती 25:31-46 में वर्णित न्याय उतना ही सार्वभौमिक और अंतिम है जितना कि प्रकाशितवाक्य 20:11-15 में वर्णित न्याय। मत्ती का कहना है कि “सभी राष्ट्र” और वह अलग से यहूदी राष्ट्र का उल्लेख नहीं करते हैं। और प्रकाशितवाक्य कहते हैं, “मृत, महान और छोटे” न्याय के सिंहासन से सामने खड़े थे। लेखक इस सामान्य पुनरुत्थान और अंतिम न्याय से किसी को भी बाहर नहीं करते हैं! इसके अलावा, मत्ती 19:28 में विशेष रूप से उल्लेख किया गया है कि “सभी चीजों के नवीनीकरण पर” (ग्रीक: पॉलेजनेसिया) (दूसरे आगमन पर) बारह प्रेरित “इस्राएल के बारह गोत्रों” का न्याय करेंगे (इस प्रकार: सभी जन्मे फिर से यहूदी या यहूदियों और गैर-यहूदियों के अर्थ में जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं)। वे उनका उसी तरह से न्याय करेंगे जिस तरह “महिमा और सम्मान से उन पर शासन” करते हैं। (ग्रीक: कृणो) (1कुरिन्थियों 6:2-3 की तुलना में)।

दानियेल 12:2, यूहन्ना 5:28-29 और प्रेरितों 24:15 सिखाते हैं कि सभी अधर्मी लोग और पृथ्वी पर सभी धर्मी लोग फिर से जीवित हो जाएंगे और एक ही समय में एक साथ मानव इतिहास के अंतिम दिन पर वर्तमान पृथ्वी पर उनका न्याय किया जायगा। बाइबल मसीह के दूसरे आगमन की शिक्षा देती है, मृतकों में से एक पुनरुत्थान और उन सभी लोगों के अंतिम न्याय का एक दिन जो कभी जीवित रहे हैं। सिंहासन से पहले जो राष्ट्र एकत्रित होते हैं, वे सभी ऐसे लोग होते हैं जो कभी भी अपनी राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना रहते हैं!

भेड़ और बकरियां। वे प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे सीधे मसीह के दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय के दिन से संबंधित हैं। भेड़ और बकरियाँ कौन हैं? बिंदु 5 देखें।

“भेड़ और बकरियाँ” पुराने नियम के प्रतीक हैं। “भेड़” उन लोगों का प्रतीक है जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं और उसका

अनुसरण करते हैं। वे नम्र और आज्ञाकारी हैं (भजन संहिता 79:13; यूहन्ना 10:3-4,27)। दूसरी ओर “बकरियाँ” उन लोगों का प्रतीक है जो जुझारू, बेलगाम और विनाशकारी हैं (यहेजकेल 34:17-19; दानियेल 8:5,7,21)।

यीशु के भाइयों में से सबसे छोटा। अंतिम न्याय के दिन, जिस तरह से प्रत्येक व्यक्ति ने “यीशु के छोटे से छोटे भाइयों में से एक के साथ कैसा व्यवहार किया है”, यह दिखाएगा कि वह एक भेड़ या एक बकरी है। इब्रानियों 2:11-12 सिखाता है कि “यीशु और यीशु का एक भाई” “एक से आये हैं” (एक ही परिवार, ऊपर से पैदा हुआ) “और मत्ती 12:50 सिखाता है कि” यीशु का एक भाई परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करता है “(तुलना करें। मत्ती 28: 10)। मत्ती 25 मसीहियों और गैर-मसीहियों (धर्मी और अधर्मी) के बीच अंतर करता है न कि यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच! “यीशु का छोटे से छोटा भाई” उन मसीहियों को प्रदर्शित करते हैं जिन्हें मदद की ज़रूरत है, जैसे भूखे मसीही, अकेले मसीही, गरीब मसीही, बीमार मसीही और कैद (सताए हुए) मसीही। संक्षेप में, वे ज़रूरतमंद मसीही हैं।

भेड़ धार्मिक लोगों को दर्शाती है। यह प्रासंगिक है, क्योंकि यह यीशु के अपने दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय पर सीधा ऐलान है। भेड़ों को “धार्मिक” क्यों कहा जाता है?

भेड़ को “धार्मिक” कहा जाता है, क्योंकि न केवल यीशु मसीह में उनके विश्वास के द्वारा धार्मिकता और यीशु मसीह की पवित्रता को उन पर आरोपित किया जाता है (उन्हें समझा जाता है) और उन्हें धार्मिक रूप से माना जाता है, बल्कि यह भी कि वह धर्मी जीवन जीते हैं। यह धार्मिकता के अध्यारोपण, धार्मिकता प्रगट करने और धार्मिकता में जीने का सवाल है! जिन शब्दों के साथ यीशु ने धर्मी लोगों का स्वागत किया है, वे दिखाते हैं कि उन्होंने अपने दैनिक जीवन को ईमानदारी से व्यतीत किया है, दूसरों के प्रति प्रेम, दया और दया दिखाते हुए, यहां तक कि मसीहियों के बीच भी। ये लोग यीशु मसीह के चले साबित हुए, महान आश्चर्यकर्मों और महान उपलब्धियों (मत्ती 7:21-23) के कारण नहीं, बल्कि जीवन की साधारण छोटी चीजों के कारण: भोजन, वस्त्र और ध्यान (मत्ती 10:40-42; 25:35-36)। मसीह के इन ईमानदार अनुयायियों को धन्य कहा जाता है। उन्होंने अपनी सेवा को सहजता से, विनम्रतापूर्वक, खुशी और कृतज्ञता के साथ प्रदान किया था जिसे वे बाद में पूरी तरह से भूल गए थे!

बकरियाँ अधर्मी लोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह प्रासंगिक है, क्योंकि यह यीशु के अपने दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय पर सीधा ऐलान है। बकरियों को “अधर्मी” क्यों कहा जाता है?

बकरियों को अधर्मी कहा जाता है, न केवल उनके अविश्वास के कारण उन्हें उचित नहीं ठहराया गया है, बल्कि इसलिए भी कि वे धर्मी रूप से जीने में असफल रहे थे। जिन शब्दों के साथ यीशु अधर्म की निंदा करते हैं वे विशेष रूप से उपेक्षा के उनके पापों के लिए निंदा करते हैं! इस पद्यांश में एक भी दुष्ट काम का उल्लेख नहीं किया गया है, जैसे कि मूर्ति पूजा, हत्या, व्यभिचार, चोरी, आदि लेकिन केवल उपेक्षा का पाप। उन्होंने दूसरों को प्रेम, दया और कृपा नहीं दिखाई, विशेष रूप से मसीहियों के बीच, विशेष रूप से छोटे लोगों को भी नहीं। यीशु की घोषणा पर आश्चर्य की उनकी अभिव्यक्ति से पता चलता है कि उन्होंने स्वयं को यह सोचने के लिए उकसाया था कि वे अधर्मी नहीं थे, लेकिन मानवीय रूप से काफी “अच्छे” लोग दिखते थे।

उद्धार का आधार अनुग्रह है। यह बहुत ही प्रासंगिक है, क्योंकि यीशु सीधे अपने दूसरे आगमन के दिन को अंतिम न्याय के संबंध में सिखाता है। उद्धार का एकमात्र आधार क्या है?

मत्ती 25 में, धर्मी कर्मों के पहले मत्ती 25 में उल्लेख किया गया है, यीशु इस बात पर जोर देते हैं कि उनके उद्धार का आधार, और इसलिए उनके सभी बाद के अच्छे कर्मों का आधार, यह तथ्य है कि उन्हें अनंतकाल से परमेश्वर द्वारा परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करने के लिए चुना गया है। अपने अंतिम चरण में (मत्ती 25:34)। चाहे परमेश्वर ने “जगत की उत्पत्ति से पहले उन्हें चुन लिया” (इफिसियों 1:4) या “जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।” (मत्ती 25 :34) इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि नतीजा वही है! धर्मी लोगों के अच्छे कर्म नहीं, बल्कि परमेश्वर की दया और कृपा उनके उद्धार की नींव है। उनके अच्छे कार्य केवल फल हैं, अनुग्रह का मूल नहीं! इस प्रकार, सारी महिमा केवल परमेश्वर को दी जानी चाहिए!

एक पेड़ अनुग्रह, विश्वास और अच्छे कार्यों के बीच के संबंध को चित्रित कर सकता है। “जड़” परमेश्वर की कृपा का प्रतिनिधित्व करती है, “तना” विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है और “फल” अच्छे काम को दर्शाता है (तुलना करें। इफिसियों 2:8-10)।

उद्धार विश्वास का मापदंड है। “जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।” (यूहन्ना 3:36) “परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ, जिस के लिए उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो।” (2 थिस्सलुनीकियों 2:13-14). उद्धार का मानक क्या होगा? उद्धार का मानक यीशु मसीह में विश्वास होगा। सभी लोगों को उनके यीशु मसीह में विश्वास या उसकी अस्वीकृति के लिए आंका जाएगा।

न्याय का मापदंड कार्य है। यह प्रासंगिक है, क्योंकि यीशु का वचन 34 में सीधा यही तात्पर्य है। “परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरे, न्याय करेगा।” (सभोपदेशक 12:14)। “वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदल देगी:” (रोमियों 2:6)। “क्योंकि तुम जानते हो कि जो कोई भी अच्छा होगा, चाहे दास हो चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही मिलेगा” (इफिसियों 6:8)।

वास्तविक विश्वास या अविश्वास के साक्ष्य में उस तरह से शामिल होगा जिस तरह से लोगों ने “मसीह के छोटे से छोटे भाइयों” के साथ व्यवहार किया है, अर्थात्, जिस तरह से उन्होंने अन्य मसीहियों के साथ व्यवहार किया है (मत्ती 25:40,45)। विश्वासियों के अच्छे काम, चाहे कई हों या कुछ, उनके वास्तविक विश्वास का प्रमाण होंगे। अविश्वासियों की उपेक्षा के पाप, चाहे असंख्य हों या छिटपुट, उनके अविश्वास के प्रमाण होंगे। अंतिम न्याय के दिन विश्वासियों के अच्छे काम (उनके विश्वास के सबूत के रूप में) या अविश्वासियों की उपेक्षा (उनके अविश्वास के सबूत के रूप में) सार्वजनिक रूप से घोषित किए जाएंगे। अंतिम न्याय के मानक लोगों के काम होंगे।

उद्धार के मुद्दों में व्यवस्था केवल “दोषी” और “खोये हुए” (1तीमुथियुस 1:8-11) के रूप में हर व्यक्ति की निंदा कर सकती है। लेकिन अंतिम न्याय (मुक्ति या निंदा का मुद्दा नहीं) के मामले में व्यवस्था माप या मानक के रूप में कार्य करती है जिसके द्वारा विश्वासियों को पुरस्कृत किया जाएगा और अविश्वासियों और दुष्ट लोगों को दंडित किया जाएगा। उद्धार का मुद्दा एक मसीही द्वारा यीशु मसीह के संबंध से निर्धारित होता है जिस पल वह मसीही बन जाता है। विश्वासियों को बचाया जाता है, लेकिन अविश्वासियों की निंदा (बर्बादी) होती रहती है। यह उनके मसीही जीवन की शुरुआत में निर्धारित किया गया है। लेकिन निर्णय का मुद्दा मसीही के अपने जीवन के दौरान मसीही के कार्यों से निर्धारित होता है। यह इतिहास के अंत में निर्धारित होता है। धर्मी जीवित को पुरस्कृत किया जाएगा, लेकिन अधर्मी जीवित को दंडित किया जाएगा। धर्मी लोगों

(मसीहियों) को उनके चुनाव के आधार पर बचाया जाएगा, जो उनके बुलावे, विश्वास द्वारा न्यायसंगतता और जीवन के पवित्रकरण (अच्छे कार्यों) के द्वारा स्पष्ट किया जाता है। अधर्मी लोगो (गैर-मसीही) की केवल अविश्वास, अधर्म और धार्मिकता की कमी के आधार पर निंदा की जायगी।

अधर्मी अनन्तकाल तक दण्ड भोगेंगे। यह प्रासंगिक है, क्योंकि यीशु इसे सीधे सिखाते हैं। अधर्मी की सजा क्या होगी?

बकरियां, अर्थात् अधर्मी, को नरक में फेंक दिया जाएगा। वहाँ वे हमेशा के लिए परमेश्वर की प्यार और परवाह करने वाली उपस्थिति से हमेशा के लिए अलग हो जाएंगे (दानियेल 12:2; मत्ती 25:46; 2 थिस्सलुनीकियों 1:8-9)। वे चिरस्थायी पीड़ा को भुगतेंगे (यशायाह 66:24; मरकुस 9:48; प्रकाशितवाक्य 14:27; 18:2.2-23)।

धर्मी अनन्त जीवन में जायेंगे। यह प्रासंगिक है, क्योंकि यीशु इसे सीधे तौर पर सिखाते हैं। धर्मियों की विरासत क्या होगी? भेड़, अर्थात् धर्मी, वे लोग जो विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बच जाते हैं, संसार की रचना के बाद से उनके लिए तैयार किए गए राज्य को विरासत में प्राप्त करेंगे। इस संदर्भ में राज्य परमेश्वर के राज्य के रूप में अपने अंतिम रूप (रूप या चरण) में नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में है। धर्मी लोगों को परमेश्वर के राज्य की विरासत अर्जित करने की आवश्यकता नहीं है और न ही वे जो कुछ भी कर रहे हैं, उसके द्वारा परमेश्वर के राज्य को विरासत में प्राप्त कर सकते हैं। वे परमेश्वर के प्रभुत्व और अनुग्रहपूर्ण उपहार के रूप में परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करते हैं (यूहन्ना 3:3; रोमियों 8:17; कुलुस्सियों 1:13)। वे राज्य को एक स्थिर और ना छीने जा सकने वाले कब्जे के रूप में प्राप्त करेंगे (इब्रानियों 12:28)। सच्चे मसीही, जो पहले से ही परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी थे (मत्ती 5:3,10,19; यूहन्ना 3:3), फिर वास्तव में परमेश्वर के राज्य के वारिस बन जाएंगे (मत्ती 25:34) आत्मा और शरीर के उद्धार के लिए और सम्पूर्ण जगत के नवीकरण के संबंध में सभी वादे उनके बाद उत्तरोत्तर और अनन्तकाल के लिए पूरे होंगे! वे परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण में नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में हमेशा का जीवन प्राप्त करेंगे। वे कभी भी भूखे या प्यासे नहीं रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 7:16)। वे फिर कभी मृत्यु या शोक या रोने या दर्द का अनुभव नहीं करेंगे, क्योंकि इस वर्तमान पृथ्वी पर चीजों के पुराने आदेश मर चुके हैं। नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर परमेश्वर सब कुछ नया कर देगा (प्रकाशितवाक्य 21:3-5)।

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषय) या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या कहानी से ही मिला है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टान्तों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टान्त में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ होता है, एक केंद्रीय बिंदु बनाने के लिए। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में आत्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 25: 31-46 में भेड़ और बकरियों के दृष्टान्त परमेश्वर के राज्य में न्याय के बारे में सिखाते हैं।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "मसीहियों और गैर-मसीहियों को यीशु के द्वारा अंतिम न्याय के दिन उसके दूसरे आगमन पर यीशु मसीह से उनके सम्बन्ध पर मसीह और उनके सच्चे अनुयायियों के प्रति उनके आचरण के आधार पर आंका जाएगा।"

अंतिम न्याय का दिन परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य (भेड़) के सच्चे लोग अंतिम न्याय के दिन में विश्वास करते हैं। वे अंतिम न्याय के दिन से पहले पृथ्वी पर मसीह के अनुयाइयों से जिस तरह व्यवहार करते हैं उससे वे यह दिखते हैं की उनका मसीह में वास्तविक विश्वास है। वे निश्चित रूप से नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में अपने अंतिम स्वरूप में परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करेंगे।

यह अंतिम न्याय का दिन चार कारणों से आवश्यक है:

- सभी लोग जो कभी पृथ्वी पर रहे थे, उन्हें उनके कामों के संबंध में आंका जाना चाहिए (रोमियों 2: 6-11; 1 कुरिन्थियों 3:11-15; 2 कुरिन्थियों 5:10)।
- उसके उद्धार और न्याय में परमेश्वर की धार्मिकता को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया जाना चाहिए, ताकि परमेश्वर को मसीह में महिमा दी जा सके (रोमियों 3:21-24; 11:36; 2थिस्सलुनीकियों 1:10; प्रकाशितवाक्य 15:3-4)।
- मसीह की धार्मिकता की सार्वजनिक रूप से उसके उद्धार में पुष्टि होनी चाहिए। सभी लोगों को खुले हृदय से स्वीकार करना चाहिए कि यीशु मसीह कोई अपराधी नहीं था, बल्कि उद्धारकर्ता और प्रभु था। सभी लोगों को अपनी पूरी महिमा के साथ अपने लोगों के साथ उनके दूसरे आगमन पर उन्हें पूर्ण रूप से देखना चाहिए (प्रकाशितवाक्य 1:7; फिलिप्पियों 2:9-10; 9-10; 1थिस्सलुनीकियों 4:14-17; 2थिस्सलुनीकियों 1:10)।
- गैर-मसीहियों द्वारा मसीहियों के अधर्मी उत्पीड़न को सभी लोगों द्वारा पूर्ण प्रकाश में देखा जाना चाहिए (प्रकाशितवाक्य 20:12-13)।

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत पद्यांशों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य अंशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण प्रति-सन्दर्भ को खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। अंतिम न्याय के दिन के बारे में बाइबल क्या सिखाती है?

पढ़ें। यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 1:11; 24:15; 2 थिस्सलुनीकियों 1:5-10; प्रकाशितवाक्य 20:11-15

खोजें और चर्चा करें। अंतिम न्याय कितने होंगे?

ध्यान दें। दो अलग-अलग विचार हैं। पहला दृश्य बाइबल का नहीं है। दूसरा दृश्य बाइबल का है।

(1) अंतिम निर्णय दिवस - एक गैर-बाइबल दृष्टिकोण।

व्यवस्थावाद सिखाता है कि अंतिम न्याय के कुछ दिन होते हैं और ये उनके विचार से मेल खाते हैं कि मसीह के दो दूसरे आगमन (3½ या 7 वर्ष के अंतर से) और मृतकों में से दो अलग-अलग पुनरुत्थान (कम से कम 1000 साल के अंतर से) हैं।

- **मसीहियों के लिए पहला अंतिम न्याय का दिन।** 2 कुरिन्थियों 5:10 के आधार पर, वे सिखाते हैं कि मसीह की पहली वापसी के साथ केवल मेल खाने वाले विश्वासियों का पहला अंतिम निर्णय होगा (तथाकथित बादलों पर उठाया जाना या मसीह के आना) (ग्रीक: परोसिआ)। मानक यीशु मसीह में विश्वास होगा। यह धारणा गलत है!
- **राष्ट्रों के लिए दूसरा अंतिम न्याय का दिन।** पुराने नियम के आधार पर योएल 3: 2,12, मत्ती 19:28; मत्ती 25: 31-46, वे सिखाते हैं कि मसीह की दूसरी वापसी के साथ समकालीन अन्यजातियों के राष्ट्रों का दूसरा अंतिम

न्याय होगा (मसीह का तथाकथित प्रकाशितवाक्य) (ग्रीक: अपोकलोप्सिस) जो साधारणतः तथाकथित पहली वापसी के 7 या 3½ वर्ष या तुरंत बाद होगा। यहूदियों को इस फैसले में शामिल नहीं किया गया है और फैसले की कसौटी पर यीशु मसीह में अन्यजातियों का विश्वास नहीं होगा, लेकिन जिस तरह से इन अन्यजातियों ने यहूदियों के साथ व्यवहार किया है, जिसे ये लोग यीशु के “भाइयों” के रूप में मानते हैं (तुलना करें मत्ती 25:40)। यह धारणा गलत है!

- **गैर-मसीहियों के लिए तीसरा अंतिम न्याय का दिन।** मत्ती 19:28 के आधार पर वे सिखाते हैं कि मसीह के तथाकथित सहस्राब्दी साम्राज्य की शुरुआत में केवल यहूदियों का तीसरा अंतिम निर्णय होगा। बहुतों का मानना है कि सभी यहूदियों को बचाया जाएगा (रोमियों की व्याख्या 11:26)। यह धारणा गलत है!

व्यवस्थावाद बाइबल का नहीं है!¹⁶

(2) अंतिम न्याय का दिन - बाइबल का दृष्टिकोण।

हजार वर्ष की अवधि। बाइबल एक शाब्दिक सहस्राब्दी राज्य को नहीं सिखाता है (शांति के हजार साल के साम्राज्य), लेकिन मसीह के पहले आगमन और उनके दूसरे आगमन (प्रकाशितवाक्य 20:1-7) के बीच एक प्रतीकात्मक हजार वर्ष की अवधि है।¹⁷ संख्या 1000 एक प्रतीकात्मक संख्या है। और जो कि बाइबल के पद्यांशों में 6 बार पायी जाती है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक एक प्रकाशन है जो प्रतीकों और संख्याओं का उपयोग करती है जिसे प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या की जानी चाहिए (ग्रीक: सेमैनो) (प्रकाशितवाक्य 1: 1)! प्रतीकात्मक 1000 वर्ष (देखें भजन संहिता 90:4; 2 पतरस 3:8) समय की एक पूर्ण अवधि है (संख्या “10”) जो त्रिगुण परमेश्वर द्वारा निर्धारित की गई है (संख्या “3”: 10 x 10 x 10) और यह सभी पीढ़ियों पर फैला है (देखें निर्गमन 20:6; भजन संहिता 105:8)।

प्रतीकात्मक 1000 साल की अवधि स्पष्ट रूप से मसीह के पहले आगमन पर शैतान को बांधे जाने के साथ शुरू हो जाती है (मत्ती 12: 28-30; मत्ती 28: 18; लूका 10:18-20; यूहन्ना 12: 31-32; रोमियों 16:20; इफिसियों 1; 20-22; कुलुस्सियों 1:13; कुलुस्सियों 2:15; इब्रानियों 2:14; 1 पतरस 3:22; 1 यूहन्ना 3:8; 1 यूहन्ना 5:18; प्रकाशितवाक्य 12:5-11; प्रकाशितवाक्य 20:1-3)।

इस प्रतीकात्मक 1000 साल की अवधि में, जब मसीही मर जाते हैं, “वे एक बार और हमेशा के लिए जीवित रहते हैं” (मसीह की उपस्थिति में), (एनआईवी के बजाय: वे जीवन में आए थे) (यूनानी: एज़ेसन <ज़ाओ) (एनोरिस्ट काल)।

प्रतीकात्मक 1000 वर्ष की अवधि स्पष्ट रूप से मसीह के दूसरे आगमन पर समाप्त हो जाती है (तुलना करें प्रकाशितवाक्य 11: 7-18) जहां निम्नलिखित कार्य होते हैं:

- **महाविपत्ति अंतिम युद्ध के साथ समाप्त होती है,** जब शैतान और उसके सभी मसीही-विरोधी सहयोगियों को बहुत पीटा जाता है और हमेशा के लिए पृथ्वी से हटा दिया जाता है (मत्ती 24:21-24; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1-12 और निम्नलिखित; समानांतर विवरण: प्रकाशितवाक्य 3:10; प्रकाशितवाक्य 6:9-11; प्रकाशितवाक्य 9:11-21; प्रकाशितवाक्य 11:7-10; प्रकाशितवाक्य 13:7-8; प्रकाशितवाक्य 16:12-16; प्रकाशितवाक्य 16:17-20; प्रकाशितवाक्य 17:9ब-18; प्रकाशितवाक्य 18:1-24; प्रकाशितवाक्य 19:11-21 और प्रकाशितवाक्य 20:7-10)।

¹⁶ www.last-biblebook.org के अंतर्गत “युगों से सम्बंधित ईश्वरीय ज्ञान व वाचा सम्बंधित ईश्वरीय ज्ञान” (परिशिष्ट)– प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर एक विस्तृत टीका।

¹⁷ प्रकाशितवाक्य 20 से तुलना करें www.Deltacourse.org।

- **सभी मृतकों का एकमात्र पुनरुत्थान** (यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 24:15 और निम्नलिखित समानांतर विवरण: 1कुरिन्थियों 15:35-57; 2कुरिन्थियों 5:1-9; फिलिप्पियों 3:20-21; 1थिस्सलुनीकियों 4:14-16; 1यूहन्ना 3:2-3; प्रकाशितवाक्य 11:11-12; प्रकाशितवाक्य 20:12अ-13-14)।
- **मसीहियों का बादलों पर उठाया जाना** (मत्ती 24:29-31, 40-41; 1थिस्सलुनीकियों 4:13-17; 1थिस्सलुनीकियों 5:1-2; 2थिस्सलुनीकियों 1:10)।
- **हवा में सभी लोगों का एकमात्र अंतिम न्याय** (मत्ती 25:31-32; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 थिस्सलुनीकियों 1:5-9 और निम्नलिखित समानांतर विवरण: प्रकाशितवाक्य 11:18; प्रकाशितवाक्य 14:6,14-20; प्रकाशितवाक्य 20:11अ, 12ब)।
- **सभी चीजों का नवीकरण** (ताकि नया स्वर्ग और नई पृथ्वी अस्तित्व में आ जाए) (मत्ती 24:35; प्रेरितों 3:21; 2 पतरस 3:10-13; प्रकाशितवाक्य 20:11ब; प्रकाशितवाक्य 21:1-22:6)।

प्रतीकात्मक 1000 वर्ष की अवधि महान विपत्ति को नहीं दर्शाती है जिसका उल्लेख मत्ती 24:21-25 में किया गया है, लेकिन मसीह के दूसरे आगमन पर महान विपत्ति के साथ समाप्त होती है (मत्ती 24:26-31)।

इस प्रकार, “1000 वर्ष एक प्रतीकात्मक संख्या है जो मसीही काल या नए नियम की अवधि का प्रतिनिधित्व करती है, जो यीशु मसीह के प्रथम और द्वितीय आगमन के बीच की अवधि है।” प्रकाशितवाक्य की पुस्तक मसीह के दूसरे आगमन के बाद एक शाब्दिक सहस्राब्दि राज्य¹⁸ नहीं सिखाती है, बल्कि एक उद्घाटन किया हुआ, साकार या वर्तमान सहस्राब्दि है जिसमें हम अब जीवित हैं!

एक दूसरा आगमन।

2 थिस्सलुनीकियों 1: 8-9 के अनुसार, केवल एक और अंतिम न्याय का दिन यीशु मसीह के एक और केवल दूसरे “आगमन” पर होगा (ग्रीक: अर्चामे 2 थिस्सलुनीकियों 1:10 में और यूनानी - पारसिया 2 थिस्सलुनीकियों 2:1 में) या यीशु मसीह का “प्रगटीकरण” (यूनानी: अपोकलोप्सिस 2 थिस्सलुनीकियों 1:7)। मत्ती 24:39-41 “आगमन” (ग्रीक: परिउसिआ) की बात करता है जबकि लूका 17:30-35 “प्रकटीकरण” की बात करता है (ग्रीक: अपोकलुटोमै)। इसलिए, मसीह के “आगमन” और “प्रकटीकरण” में कोई अंतर नहीं है! हो सकता है कि इन शब्दों का इस्तेमाल दो अलग-अलग दूसरे आगमन को पेश करने में न किया जाए। विश्वासियों (मसीहियों) को प्रभु से मिलने के लिए हवा में बादलों में ‘उठा लिया जायगा’ (ग्रीक: harpazó) (भविष्य, निष्क्रिय) (1थिस्सलुनीकियों 4:17) ठीक उसी तरह जैसे यीशु मसीह अपने अधिरोहण में परमेश्वर के द्वारा उनके राज्य में “उठा लिए गए थे। (ग्रीक: हरपाजो) (अनाधिकारी, निष्क्रिय) (प्रकाशितवाक्य 12:5)। मसीही जन यीशु मसीह का स्वागत करेंगे, उस पर अचंभा करेंगे और उसकी महिमा करेंगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:10)।

बाइबल मसीह की दो दूसरे आगमन को नहीं सिखाती है, लेकिन केवल एक दूसरा आगमन है (प्रेरितों 1:11 और मसीह के सभी दृष्टांत)!

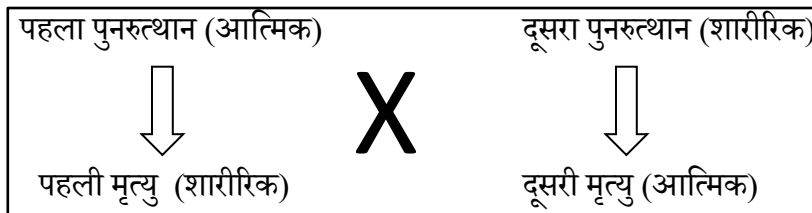
शरीर का एक पुनरुत्थान।

बाइबल मरे हुएों में से दो पुनरुत्थान नहीं सिखाती है, लेकिन मसीह के दूसरे आगमन पर मृतकों में से केवल एक पुनरुत्थान

¹⁸ “राज्य” शब्द का इस्तेमाल प्रकाशितवाक्य 20:1-7 में भी नहीं किया गया है!

है (यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 24:15)

प्रकाशितवाक्य 20: 4-6 भाषण का एक चित्र (एक व्यतिक्रम)¹⁹ है।)



- **पहली मृत्यु** (निहित) मसीहियों के साथ-साथ गैर- मसीहियों के शरीर की मृत्यु को भी बताती है।
- **पहला पुनरुत्थान** एक शाब्दिक घटना के लिए एक आलंकारिक अभिव्यक्ति है, अर्थात्, शरीर का पुनरुत्थान नहीं, बल्कि केवल (केवल आत्मा) मसीहियों की आत्मा (आत्मा) का पुनरुत्थान (ग्रीक: पुस्चे) (प्रकाशितवाक्य 20:4। 1000 वर्षों की प्रतीकात्मक अवधि के दौरान, जब मसीही मर जाते हैं, “वे एक बार और हमेशा के लिए जीवित रहते हैं” (मसीह की उपस्थिति में) (ग्रीक: ईजीजेन <zó) (NIV “वे जीवन में आए थे” काफी हद तक शारीरिक पुनरुत्थान का सुझाव देता है)। यह स्वर्ग के आत्मिक वास्तविकता में अद्वितीय आत्मिक पुनरुत्थान / रूपांतरण को बताता है, उनकी शारीरिक मृत्यु के बाद स्वर्गीय महिमा में उनके आत्मिक जीवन का संदर्भ है (सभोपदेशक 12:7; देखें लूका 16:22; लूका 23:43; 2 कुरिन्थियों 5:1,8; फिलिप्पियों 1:23; कुलुस्सियों 3:3-4; 1 थिस्सलुनीकियों 4:14; 1 थिस्सलुनीकियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 14:13; प्रकाशितवाक्य 20:4)। इसे “पहला पुनरुत्थान” कहा जाता है। यह शारीरिक पुनरुत्थान नहीं है, बल्कि आत्मिक पुनरुत्थान है।

गैर-मसीहियों की आत्माएं “जीवित नहीं थीं” (मसीह की उपस्थिति में नहीं आईं) (एनआईवी: “वे जीवन में नहीं आए”) जब तक कि 1000 साल समाप्त नहीं हो गए “(ग्रीक: ओक एजेसन अच्छी टेलेस्टी टा चिलिअ एते)। वे स्वर्ग में स्थानांतरित नहीं होते हैं, लेकिन दूसरे आगमन तक नरक में रहते हैं, जब वे अंतिम न्याय में मसीह के सामने खड़े होंगे (देखें मरकुस 8:34-38; मरकुस 9:43-48; लूका 16:23; 2पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 20: 5 एन मत्ती 25: 31-33)।

निम्न में “लाइव” शब्द (ग्रीक: ज़ाओ) का एक ही अर्थ है:

- लूका 20:37-38। मसीह के पहले आगमन से पहले जीओ। अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर (भौतिक) मृतकों के परमेश्वर नहीं हैं (ग्रीक: नेक्रोन), लेकिन (आत्मिक रूप से) जीवित है (ग्रीक: जोनटों <ज़ाओ) (पूर्ण भूतकाल, सक्रिय)। परमेश्वर के सन्दर्भ में, पितर “जीवित” हैं (ग्रीक: जोसिन <ज़ाओ) (वर्तमान काल)।
- यूहन्ना 11:25। मसीह के प्रथम आगमन के बाद जीओ। भले ही वह एक बार मर जाए (शारीरिक रूप से) (नोरिस्ट), वह (उसकी आत्मा) निश्चित रूप से “जीवित” रहेगा (ग्रीक: जोसेतै <ज़ाओ) (भविष्य काल)।
- 1 थिस्सलुनीकियों 5:10। मसीह के दूसरे आगमन के बाद जियो। मसीह हमारे लिए मर गया ताकि हम चाहे (हमारे शरीर) जाग रहे हैं (हम अभी भी जीवित हैं) या सो रहे हैं (मृत्यु में) (ग्रीक: कठऊदो), हम (हमारी आत्माएं) मसीह में (स्वर्ग में) एक साथ (ग्रीक: हमा सन) “जीवित” हैं (ग्रीक: जोसोमें “ज़ाओ) (आयरिस्ट)।

- **दूसरा पुनरुत्थान** (निहित) मसीह के दूसरे आगमन पर मसीही और गैर-मसीही दोनों के शरीर के पुनरुत्थान (केवल) को संदर्भित करता है।

¹⁹ केइसमस अर्थात् वाक्य परिवर्तन। दूसरा वाक्य पहले वाक्य का उलट क्रम है।

- **दूसरी मृत्यु केवल गैर-मसीही की (केवल) शाश्वत मृत्यु को संदर्भित करती है।** यह एक शाब्दिक घटना के लिए एक आलंकारिक अभिव्यक्ति है, अर्थात्, शरीर की मृत्यु नहीं (क्योंकि यह पहले से ही पहली मृत्यु के साथ हो गयी थी), लेकिन अनंत मृत्यु, अर्थात् अवज्ञाकारी (अपवित्र और अधर्मी) लोगों की जब वे अंतिम न्याय पर नरक में फेंक दिए जाते हैं (मत्ती 10:28; प्रकाशितवाक्य 21:8)

प्रकाशितवाक्य 20:4-6 में यूहन्ना 5: 24-29 के सुसमाचार के इस आंकड़े की तुलना करें, जो “आत्मिक पुनरुत्थान” (पुनर्जनन पर) और “शरीर के पुनरुत्थान” की बात करता है (दूसरे आगमन पर)! मसीह में सभी विश्वासियों का आत्मिक पुनरुत्थान मसीह के पहले आगमन से लेकर आज तक होता है। उनकी मृत आत्माएं (आत्माएं) (इफिसियों 2:1) जीवित हो जाती हैं (इफिसियों 2:4), अर्थात्, फिर से जन्म लेते हैं (यूहन्ना 3: 3-8)। लेकिन यूहन्ना 5: 28-29 मसीह के दूसरे आगमन और अंतिम न्याय पर शरीर के पुनरुत्थान के बारे में बोलता है। आत्मिक पुनरुत्थान और शारीरिक पुनरुत्थान दोनों ही शाब्दिक और वास्तविक घटनाएँ हैं!

उस दिन, अविश्वासी (गैर-मसीही) हमेशा के लिए विनाश में चले जाएंगे और प्रभु की उपस्थिति से बाहर निकल जाएंगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:8-9; मत्ती 25:41)। लेकिन मसीह में विश्वासी मसीह का स्वागत करेंगे, उसकी महिमा और उसपर अचम्भा करेंगे (2 थिस्सलुनीकियों 1:10) और अपने अंतिम चरण में परमेश्वर के राज्य को विरासत में लेंगे (मत्ती 25:34)।

एक न्याय का दिन।

बाइबल कई अलग-अलग अंतिम न्याय के दिनों को नहीं सिखाती है, लेकिन दूसरे आगमन के तुरंत बाद केवल एक अंतिम न्याय के दिन और केवल एक दूसरे आगमन वाले दिन जब मृतकों में से पुनरुत्थान होगा (मत्ती 25:31-33; 2 पतरस 3); 3-13; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)!

- **पुनरुत्थान।** मत्ती में पद्यांशों के अनुसार, यीशु मसीह के दूसरे आगमन के दिन, मसीहियों के शरीर (जो कब्र में लेटे हुए हैं) पुनर्जीवित होते हैं और अपनी आत्माओं के साथ फिर से एकजुट होते हैं जो यीशु के साथ उसके दूसरे आगमन (1 थिस्सलुनीकियों 4: 14) में आए थे। दूसरी आगमन पर जो पृथ्वी पर अभी भी जीवित मसीही हैं वो पूरी तरह से बदल/रूपांतरित किये जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:42-55)।
 - **बादलों पर उठाया जाना।** तब सभी मसीही शरीर और आत्मा के साथ “उठा लिए जायेंगे” (प्रकाशितवाक्य 12: 5) या बादलों में “एक साथ किये जायेंगे” (ग्रीक: हरपाजो) (1 थिस्सलुनीकियों 4:17) या प्रभु यीशु मसीह से मिलने के लिए हवा में “ले लिए जायेंगे” (स्वर्गदूतों के साथ) (ग्रीक) : पैरालंबनोमई) (मत्ती 14: 31; 40 ए, 41 ए) (ग्रीक: ईइस एपेंटेसिन)।” यह तथाकथित “संतों या कलीसिया का उठाया जाना है”, जो कि यीशु के दूसरे आगमन से 3½ या 7 साल पहले नहीं होगा, लेकिन ठीक मसीह के दूसरे आगमन के दिन में ही होगा! इन सभी मसीहियों को “भेड़” (मत्ती 25:33), “गेहूँ” (मत्ती 3:12), “अच्छा बीज”, “राज्य के पुत्र”, या “धर्मी” (मत्ती 13: 36-43) कहा जाता है। वे प्रभु यीशु मसीह से मिलने, उनका स्वागत करने और उन पर अचम्भा करने के लिए (2 थिस्सलुनीकियों 1:10; तुलना करें प्रेरितों 28:15) पर बादलों में उठाये जाएंगे।
- मत्ती 25:6 में लिखा है: “आधी रात को धूम मची: देखो, दूल्हा आ रहा है!” उससे भेंट करने के लिए चलो! “(ग्रीक: इदोउ हो नुम्फियस, एक्सरेचेष्टे इस अपनतेसिं औटो)। वचन 10 कहता है: “जब वे मोल लेने को जा रही थी तो दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार थी, वे उसके साथ विवाह के घर में चले गयी और द्वार बन्द किया गया।”

शब्द: “एड्स एपेंटेसिन” यीशु मसीह के दूसरे आगमन को संदर्भित करता है जो अचानक और अप्रत्याशित रूप से और ऐसे लोगों से मिलेगा जो उससे मिलने के लिए आये हैं और दूसरों से जिन्होंने उससे मिलने में भाग नहीं लिया था (देखें मत्ती 24: 40-41) और शादी के भोज में भी हिस्सा नहीं लिया।

शब्द “ईस एपेंटेसिन” प्रेरितों 28:15 में उन विश्वासियों का उपयोग किया जाता है जो रोम से बाहर निकलकर पौलुस का स्वागत करने गए थे उसके रोम वापस आने से पहले।

शब्द “ईस एपेंटेसिन” 1 थिस्सलुनीकियों 4: 16-17 में विश्वासियों के लिए उपयोग किया जाता है जो “छीन लिए गए” (ग्रीक: हरपाजो) पुरानी पृथ्वी से यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर उनसे मिलने के लिए हवा में उसका स्वागत करने, उसकी महिमा करने के लिए, और उस पर अचंभा करने के लिए, (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10) और इस अंतिम न्याय दिवस (मत्ती 25:31-33) पर न्याय करवाने के लिए, साथ ही साथ पुरानी पृथ्वी के न्याय के साथ (मत्ती 24:29-31); रोमियों 8:19-23; 2 पतरस 3:10-13; प्रकाशितवाक्य 6: 12-17; 16: 17-21; 20:11) इससे पहले की वे मसीह के साथ एक साथ उतरते हैं (नई यरूशलेम के रूप में) नई पृथ्वी पर (प्रकाशितवाक्य 21: 1-2) यीशु मसीह के साथ हमेशा के लिए रहने के लिए (1 थिस्सलुनीकियों 4:18; 5:10; प्रकाशितवाक्य 21: 3-5)!

- **गैर-मसीही**। गैर-मसीही पृथ्वी पर “पीछे छोड़े हुए” में सबसे पहले हैं (मत्ती 24:40 बी, 41 बी)। मसीह के स्वागत में उनका कोई हिस्सा नहीं होगा। बाद में मसीह के दूसरे आगमन के उसी दिन, गैर-मसीही मसीह की न्याय के सिंहासन के सामने स्वर्गदूतों द्वारा लाये जायेंगे और उन्हें जलती हुई भट्टी (मत्ती 13: 40-42, 48; 25: 32-33) में फेंक दिया जाएगा। गैर-मसीही को “बकरियां” (मत्ती 25:33), “गदहा” (मत्ती 3:12), “खरपतवार”, “दुष्टों का पुत्र” या “बुराई करने वाले” कहा जाता है। मत्ती 13:36-43)।

बाइबल का सही नज़रिया यह है कि हर किसी के लिए केवल एक अंतिम न्याय का दिन होता है (तुलना में मत्ती 25: 46)!

(3) न्याय की कसौटी।

पढ़ें। लूका 10:20; प्रकाशितवाक्य 13:7-8; 20:11-15; 21: 8।

खोजें और चर्चा करें। फैसले की कसौटी क्या होगी?

ध्यान दें। प्रकाशितवाक्य 20:11-15 के अनुसार, एक और एकमात्र अंतिम न्याय के दिन (प्रकाशितवाक्य 20:12) पर, दुनिया के इतिहास में जितने लोग मारे गए हैं, “वे सभी मृत्यु (मृत्यु की अवस्था) और पाताल लोक (मृत शरीरों का स्थान, कब्र)”, अर्थात्, वे सभी बिना किसी अपवाद के शारीरिक रूप से पुनर्जीवित हो जाएंगे (प्रकाशितवाक्य 20:13; तुलना करें यूहन्ना 5:28-29 ; प्रेरितों. 24:15)। यह “मृत्यु” और “पाताल” का अंत भी होगा, क्योंकि वे दोनों नरक में नष्ट हो जाएंगे (प्रकाशितवाक्य 20:14)।

सभी को, विश्वासियों और अविश्वासियों को, स्वर्ग में पुस्तकों और जीवन की पुस्तक के अनुसार आंका जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:20-15)। हर किसी को उसके द्वारा किए गए कार्यों के अनुसार आंका जाएगा, जिसमें छिपी हुई चीजें होंगी, चाहे वह अच्छी हों या बुरी (सभोपदेशक 12:14; रोमियों 2:6-11; 2कुरिन्थियों 5:10)। ये सभी बातें स्वर्ग की किताबों में दर्ज हैं। इस प्रकार, लोगों को निम्नलिखित के अनुसार आंका जाएगा:

- परमेश्वर के सामान्य प्रकाशितवाक्य के संबंध में उनके कार्य (सभोपदेशक 12:14; रोमियों 1:19- 20; रोमियों 2:5-12अ, 14-15)

- परमेश्वर के विशेष प्रकाशितवाक्य के संबंध में उनके कार्य (रोमियों 2:12ब-13; रोमियों 3:10-20)
- ससमाचार के प्रचार के संबंध में उनके कार्य (रोमियों 3:21-31)।

सभी अविश्वासियों (जो लोग यीशु मसीह में विश्वास नहीं करते हैं) को आग की झील में फेंक दिया जाएगा, क्योंकि उनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं (प्रकाशितवाक्य 20:15)। लेकिन सभी विश्वासी (जो लोग यीशु मसीह में विश्वास करते हैं) नए स्वर्ग और नई पृथ्वी को प्राप्त करेंगे, क्योंकि उनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं।

(4) भेड़ और बकरियाँ।

पढ़ें। 1यूहन्ना 1:9-11; 3:4-10।

खोजें और चर्चा करें। भेड़ और बकरियाँ कौन हैं?

ध्यान दें। 1यूहन्ना 1:9-11 और 3:4-10 के अनुसार, “शैतान के बच्चे” और “परमेश्वर के बच्चे” के बीच एक स्पष्ट अंतर है। शैतान के बच्चों की विशेषता है कि वे परमेश्वर से पैदा नहीं होते (अर्थात् फिर से जन्म नहीं लेते), वे जो सही है उसकी उपेक्षा करके पाप में जीना जारी रखते हैं और जो मसीहियों से प्रेम नहीं करते हैं। परमेश्वर के बच्चों को परमेश्वर में पैदा होने से, पाप में जीना जारी ना रखने से, जो सही है उसे करने और अपने मसीही भाइयों से प्रेम करने से पहचाने जाते हैं। यह पद्यांश बताता है कि “बकरियाँ” प्रतीकात्मक रूप से शैतान के बच्चों का प्रतिनिधित्व करती हैं और “भेड़ें” प्रतीकात्मक रूप से परमेश्वर के बच्चों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

हर कोई जो यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की संतान नहीं है, शैतान की सन्तान है। परमेश्वर की प्रत्येक सच्ची संतानें यीशु मसीह (यूहन्ना 8:42) को प्रेम करती हैं! लोग अब्राहम के शारीरिक वंशज होने का दावा कर सकते हैं, लेकिन जब वह यीशु पर या जो यीशु सिखाते हैं उसपर विश्वास नहीं करते हैं अभी भी शैतान की संतानें हैं (यूहन्ना 8: 39-47)। “यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ तो अपने पापों से मरोगे - अर्थात्: तुम नरक में चलें जाओगे” (यही है, कि यीशु मसीह “मैं जो हूँ सो हूँ” (यहोवा या बेहतर याहेवे) निर्गमन 3: 14-15। (यूहन्ना 8: 24)। इसके अलावा भी यशायाह 40: 3 से तुलना करें, मरकुस 1:3 के साथ!

(5) यीशु मसीह के भाई।

पढ़ें। मत्ती 12:50; 28:10; मरकुस 3:35; यूहन्ना 20:17; रोमियों 8:29; इब्रानियों 2:11-13,17; याकूब 2:15-17; 1यूहन्ना 3:16-18; मत्ती 10:14-16, 40-42।

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह के “भाई” कौन हैं?

ध्यान दें।

यीशु के इन भाइयों में से सबसे छोटा। मत्ती 12:50 और मरकुस 3:35 के अनुसार, यीशु “यहूदियों” को अपने भाई नहीं कहता, लेकिन वह हर किसी को जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करता है “उसको भाई, बहन और माता-पिता” कहता है। मत्ती 28:10 और यूहन्ना 20:17 सिखाते हैं कि यीशु अपने ही शिष्यों को “भाइयों” कहते हैं। रोमियों 8:29-34 के अनुसार, वे सभी लोग जो परमेश्वर द्वारा चुने गए हैं और इसलिए उन्हें परमेश्वर द्वारा पुकारा गया, न्यायसंगत और महिमान्वित किया गया है, उन्हें यीशु का “भाई” कहा जाता है। और इब्रानियों 2:11-13, 17, के अनुसार, वे सभी लोग जिन्हें पवित्र बनाया गया है, अर्थात्, परमेश्वर के बच्चे हुए हैं, यीशु के “भाई” हैं। वे अब उसके परिवार के हैं!

इस प्रकार मत्ती 25:40 के अनुसार, “यीशु मसीह के भाई” वे सभी लोग हैं जिन्होंने स्वयं को मसीह के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है और उनके साथ एक आत्मिक संबंध और संगति में खड़े हैं। केवल वे ही वास्तविक मसीही हैं। वे ऐसे लोग हैं जो अपनी जाति, राष्ट्रीयता, सामाजिक स्थिति आदि की परवाह किए बिना विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से बच जाते हैं, अविश्वासी यहूदी और अन्य सभी अविश्वासी निश्चित रूप से यीशु के भाई नहीं हैं!

अविश्वासी यहूदियों और पृथ्वी पर अन्य अविश्वासी यीशु के भाई नहीं हैं! वे “परमेश्वर के लोग” (इसाएल) भी नहीं हैं और बाइबल का परमेश्वर उनका परमेश्वर नहीं है “(होशे 1: 9)!

और “यीशु के ये काम से काम भाई” उन मसीहियों के लिए एक संदर्भ है जिन्हें मदद की ज़रूरत है, क्योंकि भूखे मसीही, अकेले मसीही, गरीब मसीही, बीमार मसीही, कैद किए गए मसीही और सताए गए मसीही हैं (तुलना करें) इब्रानियों 10:32-34; 13:3)। वे ज़रूरतमंद मसीही हैं। ज़रूरतमंद मसीहियों के इस प्रतीकात्मक वर्णन में प्रेरितों 6:1-2, याकूब 2:1-26 और 1 यूहन्ना 3: 16-20 में इसकी समानता है। मसीहियों की जिम्मेदारी है कि वे ज़रूरतमंद मसीहियों की मदद करके अपना वास्तविक विश्वास और प्रेम प्रदर्शित करें!

यीशु के छोटे लोग (ऐसे जिन्होंने पुरोहितों, धर्मियों, और शिष्यों को बाहर निकाल दिया)। और मत्ती 10:40-42 में इसका समानांतर है। संदर्भ मसीह के चेलों को प्रेरित के रूप में भेजने का बोलता है (जिसका अर्थ है: बाहर निकले गए) सुसमाचार का प्रचार करने के लिए। मत्ती 10: 14-16 के अनुसार, यदि कोई उनका स्वागत नहीं करेगा या उनके संदेश को नहीं सुनेगा, तो उन्हें अपने पैरों से धूल झाड़ना चाहिए और उन लोगों और उनके शहर को छोड़ देना चाहिए। अंतिम न्याय के दिन यह उस कस्बे की तुलना में परमेश्वरहीन और दुष्ट सदोम और गोमोरा के लिए अधिक सहनीय होगा। हालाँकि, जो एक प्रेरित का स्वागत करता है वह स्वयं मसीह को और उसके भेजने वाले, परमेश्वर पिता का स्वागत करता है!

जो कोई भी मसीही शिष्यों को उनकी वास्तविक क्षमता, अधिकृत प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार करता है वह स्वं मसीह को स्वीकार करता है। जब लोग इन मसीहियों को अपने पड़ोसी (गैर-मसीही, अन्य धर्मों के अनुयायियों) के संभावित विरोध और उत्पीड़न के बावजूद अपने नए नियम के संदेश के साथ प्राप्त करते हैं, तो वे स्वयं यीशु मसीह को प्राप्त करते हैं (मत्ती 10:40)। जो कोई भी (वास्तविक) पुरोहित को प्राप्त करता है (शब्द का अर्थ है: उपदेशक बाइबल के परमेश्वर द्वारा भेजा गया) क्योंकि वह एक पुरोहित है एक पुरोहित का पुरस्कार प्राप्त करेगा। जो कोई भी धर्मी व्यक्ति को प्राप्त करता है (मतलब: वह व्यक्ति जो विश्वास से उचित हो, एक मसीही) धर्मी पुरुष का प्रतिफल प्राप्त करेगा। जो भी इन छोटे लोगों में से एक को एक प्याला ठंडा पानी देता है (एक व्यक्ति, एक पुरोहित, एक धर्मी व्यक्ति, मसीह का एक शिष्य) क्योंकि वह एक शिष्य है (मसीह का) निश्चित रूप से अपना पुरस्कार नहीं खोएगा (मत्ती 10:42)। दुनिया की नज़रों में, यह शिष्य निरर्थक या अज्ञात हो सकता है, लेकिन मसीह की नज़र में यह छोटा व्यक्ति जो मसीह में विश्वास करता है, “उनका अपना चेला” है। “जो कोई भी इस तरह के एक छोटे मसीही (जो मसीह को स्वीकार करता है और मसीह पर निर्भर है) की मदद करता है, निश्चित रूप से अपना पुरस्कार नहीं खोएगा।

पुरस्कार क्या है? बाइबल वादा करती है कि वह पहले से ही अब परमेश्वर की शांति का अनुभव करेगा (मत्ती 10:13)। “शांति” परमेश्वर की पूर्णता, आत्मिक समृद्धि और आशंकाओं, आंदोलनकारी जुनून और नैतिक संघर्ष से उद्धार है। बाइबल वादा करती है कि वह स्वयं मसीह द्वारा उनकी वापसी पर सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया जाएगा (मत्ती 25:34-36)। और बाइबल उनके कार्यों (मत्ती 16:27; 1 कुरिन्थियों 3:12-14) के अनुसार पुरस्कार का वादा करती है, जिसमें उन सभी

आशीर्षों का समावेश होता है जो अंतिम न्याय के दिन (मत्ती 10:42) पर मसीहियों को अनुग्रहपूर्वक प्रदान की जाती हैं।

6. दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों को संक्षेप में प्रस्तुत करें।

चर्चा करें। मध्यस्थ मित्र के इस दृष्टान्त का मुख्य उपदेश या संदेश क्या है? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना या मानना सिखाया और उसने हमें क्या करना या बनना सिखाया है?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर या यीशु मसीह कैसे हैं।

अपने दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह उन सभी लोगों का न्याय करने के लिए आएगा जो कभी पृथ्वी पर रहते थे! कोई नहीं बचेगा! सभी को अपने जीवन का लेखा-जोखा यीशु मसीह को देना होगा!

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें क्या होना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति जो कभी भी जीवित रहा है, वह मसीह के साथ अपने संबंधों और मसीह और मसीहियों के प्रति उसके आचरण के आधार पर आंका जाएगा, चाहे वह किसी भी मसीही के लिए कितना भी महत्वहीन क्यों न हो। उसके अनुसार यह अंदाजा लगाया जाएगा कि क्या उसके सांसारिक जीवन के दौरान उसने यीशु मसीह में अपने विश्वास का प्रमाण दिया है, अर्थात् क्या उसने यीशु मसीह में एक सच्चे विश्वास का जीवन जिया है।

5	प्रार्थना (8 मिनट)	<i>[प्रतिक्रियाएँ]</i> परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना
---	--------------------	---

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से **छोटी-छोटी प्रार्थना** करने के लिए समूह में **बारियाँ लें**। या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	तैयारी करें (2 मिनट)	<i>[निर्धारित कार्य]</i> अगले अध्याय के लिए
---	----------------------	--

(समूह अगुवा।) समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें।

1. **समर्पण।** चले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर “भेड़ें और बकरियों” का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **मीका 5, हाग्वै 2, जकर्याह 14, मलाकी 3** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना।** (16) रोमियों 12:16, (17) रोमियों 12:17, (18) रोमियों 13:8, (19) रोमियों 13:14, (20) रोमियों 16:17। रोमियों की पत्री से पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **बाइबल अध्ययन।** घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 16:1-27।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।

6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन सहिता 5:3)
7. परमेश्वर के राज्य पर प्रचार करने के लिए अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। शांत समय में अपने नोट्स, अपने स्मरण किए हुए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

1	प्रार्थना
---	-----------

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु **प्रार्थना करें।** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हाथों में सौंपे।

2	साझा करें (20 मिनट) [शांत समय] मीका 5, हागै 2, जकर्याह 14 और मलाकी 3
---	---

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें (या** अपने नोट्स से **पढ़ें)** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (मीका 5, हागै 2, जकर्याह 14 और मलाकी 3) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	स्मरण करें (5 मिनट) [रोमियों में प्रमुख वचन] रोमियों में पाए जाने वाले प्रमुख वचनों की समीक्षा करें
---	--

दो-दो करके रोमियों की पत्री से पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की **समीक्षा करें।**

(16) रोमियों 12:16. आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो, परन्तु दीनों के साथ संगती रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।

(17) रोमियों 12:17. बुराई के बदले किसी के साथ बुराई मत करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली है, उनकी चिन्ता किया करो।

(18) रोमियों 13:8. आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।

(19) रोमियों 13:14. वरन् यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।

(20) रोमियों 16:17. हे भाईयों, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरित जो तुम ने पाई है, फूट डालने और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उनसे सावधान रहो; और उनसे दूर रहो।

4	बाइबल अध्ययन (85 मिनट) [रोमियों की पत्री] रोमियों 16:1-27
---	--

परिचय। एक साथ मिलकर **रोमियों 16:1-27** का अध्ययन करने के लिये बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों वाली विधि का प्रयोग करें।

रोमियों 16 प्रेरित पौलुस और उसके सहकर्मियों के बारे में बताता है।

चरण 1. पढ़ें।

परमेश्वर का वचन

आइये एक साथ मिलकर रोमियों 16:1-27 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

चरण 2. खोजें।

अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छूआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

16:1-2

खोज 1. कलीसिया के कार्यालय में कार्य करने के संबंध में मसीहियों को महिलाओं को कैसे देखना चाहिए।

फीबे नाम का अर्थ है "उज्ज्वल या प्रकाशमान"। जब एक मसीही एक मसीही कलीसिया से दूसरी में जाता था जहाँ वो उन मसीहियों के लिए अज्ञात था, तब एक सिफारिश का पत्र जरूरी होता था। क्योंकि प्रेरित फीबे को किंखिया में कलीसिया के "सेविका" के रूप में मानते हैं, वह संभवतः रोम के रोमियों को पौलुस के पत्र का वाहक थी। किंखिया कुरिन्थ के बंदरगाहों में से एक था। वहाँ एक कलीसिया थी और फीबे इस कलीसिया की "सेविका" थी।

(1) फीबे एक डीकन के बजाय सेविका थी।

हालाँकि "सेविका" के लिए ग्रीक शब्द ठीक वैसा ही है जैसा कि ग्रीक शब्द "डीकॉन" (यूनानी: डायकोनोस) (तुलना करें। फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:8-13), यहाँ कोई आधार या इसे मानने की जरूरत नहीं है; फीबे ने एक कार्यालय या कलीसिया में "डीकन" के स्थान पर कार्य किया।

1 पतरस 4:10 में लिखा है कि सभी मसीहियों, पुरुषों और महिलाओं को, स्थानीय कलीसिया में लोगों की उन आत्मिक वरदान के साथ सेवा करने की आवश्यकता होती है जो उन्हें मिले हैं। फीबे ने जो सेवा की वह डीकनों के समान थी: उनकी सेवकाई गरीबों, बीमारों और निर्जन लोगों के लिए दया में से एक थी, और फीबे की सेवकाई यात्रियों के लिए दया और सत्कार की थी। पौलुस उनकी सेवा को कई को "सहायता देने" के रूप में कहता है (यूनानी: प्रोस्टैटिस) जिनमे से एक पौलुस भी था। इस शब्द का अर्थ है "संरक्षक, संरक्षिका, सहायक या मददगार"। उसने पूर्व और पश्चिम के बीच यात्रियों की सहायता की जो कुरिन्थ के बंदरगाह में रुकते थे। वह एक सुशील महिला भी हो सकती थी, जिसमें सतर्क दिमाग और अजनबियों के प्रति दया और हृदय से मदद की भावना थी। उसकी तुलना उन महिलाओं से की जानी चाहिए, जिसका उल्लेख मरकुस 15:41, 1 तीमुथियुस 5:9-10 और प्रेरितों 16:15 में किया गया है, जिन्होंने इसी तरह की सेवाएं दी थीं।

लेकिन यह तथ्य कि फीबे ने एक विशिष्ट सेवा का प्रदर्शन किया है, इसका मतलब यह नहीं है कि उसने कलीसिया के एक कार्यालय में डीकन के पद पर कब्जा कर लिया है। बाइबल में कोई ऐसी उल्लेख नहीं है कि महिलाओं ने किसी कार्यालय में

"वरिष्ठ" या "डीकन" के रूप में कब्जा किया। बाइबल में वरिष्ठ सभी "पुरुष" थे (निर्गमन 18:21; व्यवस्थाविवरण 1:13; प्रेरितों 20:17, 28; 1 तीमुथियुस 2:11-12; 3:1-2,4; तीतुस 1:6-9)। लेकिन कुछ महिलाओं के पास सेवकाई का उपहार था (रोमियों 12:7) और बाइबल में सभी महिलाओं को अपने उपहार के साथ सेवा करने की आवश्यकता है।

(2) दासों और डीकन में अंतर।

दास। नए नियम की मूल भाषा में इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "सेवक" (यूनानी; डायकोनोस)। बाइबल सिखाती है कि मसीह के शरीर में "कई सदस्य" हैं, हर का एक कार्य (यूनानी: प्रैक्सिस), हर एक "एक अलग आत्मिक उपहार के साथ" (यूनानी: करिश्माता डायफोरा) (रोमियों 12:3-8) और हर कोई विभिन्न सेवा / सेवकाई के साथ है (यूनानी: डायकोनिया) (1कुरिन्थियों 12:5)। परमेश्वर मसीहियों को जो अलग-अलग आत्मिक उपहार देते हैं, वे सेवा करने के लिए हैं (1पतरस 4:10-11)। और कुछ आत्मिक उपहार कलीसिया के निर्माण के लिए मसीहियों को तैयार करने के लिए हैं (इफिसियों 4:11-12)।

रोमियों 12:7 एक विशेष आत्मिक उपहार को "सेवकाई" (यूनानी: डायकोनिया) का उपहार को बताता है और यह "सहायक कर्मों" के आत्मिक उपहार से संबंधित है (यूनानी: एंटीलैम्पिसिस) (1कुरिन्थियों 12:28)। ये दोनों आत्मिक उपहार एक कलीसिया कार्यालय का हवाला नहीं देते हैं, लेकिन किसी क्षेत्र में सेवा करने की इच्छा और क्षमता के लिए है।

डीकन। सभी मसीही "दास" हैं (उनका एक विशेष कार्य है), लेकिन केवल कुछ मसीही "डीकन" होने के लिए नियुक्त किए जा सकते हैं (उनके पास एक विशिष्ट कार्यालय है)।²⁰ मसीही कलीसिया में, अध्यक्ष का कलीसिया कार्यालय अनिवार्य नहीं है और ज्यादातर मामलों में आवश्यक भी नहीं है! A.D. 30-32 के बीच, यरूशलेम के स्थानीय कलीसिया में एक विशिष्ट आवश्यकता उत्पन्न हुई। गरीब विधवाओं की मदद करने की मसीही सेवकाई में, यूनानी बोलने वाली विधवाएँ किसी अज्ञात कारण से उपेक्षित थीं। इसलिए यरूशलेम में कलीसिया ने आधिकारिक तौर पर सात लोगों को चुना और इस विशिष्ट समस्या पर अपना ध्यान देने और इस विशिष्ट आवश्यकता को पूरा करने के लिए नियुक्त किया। प्रेरितों 6:1-7 के अनुसार, इन लोगों ने तब तक सेवा की, जब तक कि यह आवश्यकता स्पष्ट रूप से पूरी नहीं हुई।

कुछ समय बाद, उनमें से एक जो फिलिप्पी कहलाता था, को बुलाया गया था जो अब यरूशलेम में एक डीकन के रूप में सेवा नहीं कर रहा था, लेकिन सामरिया में एक प्रचारक के रूप में सेवा कर रहा था। 60-61 ईसवी में, वहां पूरी बाइबल में केवल दो और स्थानीय कलीसिया के डीकन के कलीसिया कार्यालय का वर्णन है जिनका नाम फिलिप्पी और इफिसुस है (फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:8-13)।

डीकन को स्पष्ट रूप से प्राचीनों के कलीसिया कार्यालय से अलग किया जाता है। एक डीकन के रूप में चुने जाने के लिए, उन्हें कुछ विशिष्ट बाइबल योग्यताओं को पूरा करना था (प्रेरितों 6:3)। हालाँकि, डीकन के विशिष्ट कार्यों का वर्णन नहीं किया गया है, वे निश्चित रूप से स्थानीय कलीसिया के अगुवे नहीं थे और उन्होंने वरिष्ठों के कार्यों का प्रदर्शन नहीं किया था (प्रेरितों 6:4)। इसलिए "डीकन की समिति" कभी "प्राचीनों की समिति" की जगह नहीं ले सकती है।

(3) क्या मसीही कलीसिया में कोई डीकन था?

²⁰ **एक कार्यालय।** अगुवों की नियुक्ति करके उन्हें एक कार्यालय दिया जाता है। एक कार्यालय एक सार्वजनिक कार्य या सेवकाई है जिसमें मसीह और कलीसिया के वरिष्ठ किसी को बुलाते हैं और उसे नियुक्त करते हैं (शामिल करते हैं, उसे नियुक्त करते हैं)। कलीसिया में कार्यालयों के उदाहरण हैं: वरिष्ठ (याजक), मिशनरी (एक बाहर भेजे गए), उपदेशक, पासबान/चरवाहा, सुसमाचारवादी, शिक्षक, अध्यक्ष, समूह अगुवे, युवा अगुवे, आदि। वरिष्ठों के इन कार्यालयों के आलावा ये कार्यालय कलीसिया के अगुवे नहीं हैं, लेकिन वरिष्ठों के नेतृत्व में अपने कार्यों में कार्य करना चाहिए! बाइबल में सभी वरिष्ठ पुरुष हैं।

रोमियों 16:1 पुरुष रूप "डायकोनोस" का उपयोग करता है, न कि महिला रूप: "डाइकोनोसिस"। कुछ मसीही इस शब्द का अनुवाद "डीकन"(का कार्यालय) करना चाहते हैं। लेकिन कहीं भी बाइबल किसी भी कलीसिया के कार्यालय में एक महिला की बात नहीं करती है। महिलाओं को कलीसिया में "प्राचीनों" के रूप में नियुक्त नहीं किया गया था और "डीकन" के रूप में भी नहीं।

1 तीमुथियुस 3:11 में, "इन महिलाओं की तरह" (यूनानी: गुनाइकस होसायटोस) शब्द डीकन के कार्यालय का उल्लेख नहीं कर सकता है, जिसे "डीकन" शब्द की आवश्यकता होती है (जापानी, टैस डी डायकोनस)। यह शब्द भी "डीकन की पत्नियों" के समान नहीं है, जिसे भी एक और शब्द की आवश्यकता होगी जो कि यूनानी (यूनानी: गुनाइकस ऑटोन / ऐकोन्टेस) में है। इसलिए, हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि 1 तीमुथियुस अध्याय 3 में उल्लेखित महिलाएं संभवतः महिलाओं का एक अलग समूह हैं जो कार्य करती हैं, न कि सेवकाई, बल्कि इफिसस के कलीसिया में एक विशेष सेवा के रूप में, 1 तीमुथियुस 5:3-16 स्पष्ट रूप से बताते हैं।

(4) मसीही कलीसिया में महिलाओं से संबंधित निष्कर्ष

हालाँकि गलातियों 3:28 सिखाता है कि यीशु मसीह के माध्यम से पुरुष और महिला दोनों समान रूप से "परमेश्वर की संतानें" हैं, उत्पत्ति अध्याय 1 से 3, 1 कुरिन्थियों 11 और 14, इफिसियों 5, कलुस्सियों 3, 1 तीमुथियुस 2, 3 और 5, तीतुस 2 और 1 पतरस 3 सिखाता है कि सृष्टि में पुरुषों और महिलाओं के लिए परमेश्वर की योजना और नियम (बाइबल की शुरुआत से) रचना में (बाइबल के अंत तक) निश्चित रूप से अलग हैं। यद्यपि पुरुष और महिलाएं परमेश्वर की नजर में समान रूप से कीमती हैं, परमेश्वर ने पुरुषों और महिलाओं को विवाह संबंधों के साथ-साथ कलीसिया संबंधों में भी अलग-अलग कार्य सौंपे हैं।

मसीहियों को दो कार्यों से बचना चाहिए:

- जब बाइबल में ऐसा करने की कोई आज्ञा नहीं है, तो उन्हें कलीसिया कार्यालय में महिलाओं को विधिवत अगुवा बनाने से बचना चाहिए!
- और उन्हें बहुत महत्वपूर्ण और मूल्यवान सेवाओं की अनदेखी करने से बचना चाहिए जो कलीसिया को प्रस्तुत करने में सक्षम, धर्मनिष्ठ और सतर्क महिलाएं हैं!

16:5

खोज 2. रोम में मसीही कलीसिया एक साथ कैसे मिले।

रोमियों के अध्याय 16 के सभी साक्ष्य "घरेलु कलीसिया" ("घरेलु सदस्यता") की दिशा में हैं। रोम में मसीही कलीसिया कई घरेलु कलीसियाओं में एक साथ मिले। रोमियों 16:5 के अनुसार, प्रिस्का और अक्विला के घर में एक कलीसिया थी (1 कुरिन्थियों 16:19; कुलुस्सियों 4:15; फिलेमोन 2)। यह घरेलु कलीसिया (ग्रीक: ekklésia) अपने स्वयं के घर के लोगों तक सीमित नहीं हो सकता है (प्रेरितों 10: 2; 11:14; 16: 15,31; 18: 8; 1 कुरिन्थियों 1:16; 1 तीमुथियुस 3: 4; ; 5:13; 2 तीमुथियुस 1:16), लेकिन कई अलग-अलग परिवारों या घरों में शामिल होना चाहिए जो कलीसिया की गतिविधियों के लिए एक साथ मिले थे। रोम में अन्य घरेलु कलीसियाएँ भी थी: "नमस्ते ... उनके साथ भाइयो" (रोमियों 16:14)। "उनके साथ के सब पवित्र लोगों को नमस्कार" (रोमियों 16:15)। यह घरेलु कलीसिया नाम से उल्लेखित लोगों से जुड़ा था। इसलिए रोम के कलीसिया में कई घरेलु कलीसिया शामिल होंगी।

कदम 3. प्रश्न

व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आइये रोमियों 16:1-27 में पायी जाने वाली सच्चाइयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होने दें कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

16:7

प्रश्न 1. अन्दुनीकुस और यूनियास प्रेरित थे या नहीं?

ध्यान दें।

(1) वे साथी देशवासी थे।

अन्दुनीकुस और यूनियास पौलुस के रिश्तेदार (लूका 1:36; यूहन्ना 18:26) हो सकते थे, लेकिन इसके बजाय वह उसके साथी देशवासी थे (रोमियों 9:3; 16:7, 11, 21)। यह सोचने का कोई कारण नहीं है कि यूनियास नाम के अंत को एक महिला को निरूपित करना चाहिए, क्योंकि पत्रुबास और हिर्मास को "भाई" (रोमियों 16:14) कहा जाता है और यह भी भविष्यवक्ता एलिय्याह और यिर्मयाह (यूनानी: एलियास और जेरेमिस) पुरुष थे (मत्ती 16:14)। अन्दुनीकुस और यूनियास एक अन्य कारावास में पौलुस के साथी-कैदी भी थे। यूलिया हालांकि एक महिला थी (जूलियस मर्दाना है) (रोमियों 16:15)।

(2) वे प्रेरितों के बीच उत्कृष्ट थे।

उन्हें "प्रेरितों के बीच उत्कृष्ट" कहा जाता है (ग्रीक: एपिसोड) (रोमियों 16:7) (या मत्ती 27:16 में "कुख्यात")। शब्द "प्रेरित" (ग्रीक: अपोस्टोलोस) का अर्थ है "एक मिशन पर भेजा हुआ व्यक्ति (कार्य) (ग्रीक: अपॉस्टलो)" और मसीह के प्रेरितों को संदर्भित करता है (मरकुस 3:14-15; 1 कुरिन्थियों 9:1) या कलीसियाओं के प्रेरितों को (प्रेरितों 14:14; फिलिप्पियों 2:25)।

हो सकता है कि वे 72 के समूह से संबंधित थे जो बाहर भेजे गए थे (ग्रीक: एपोस्टेलो) (एनोरिस्ट सक्रिय) (लूका 10:1) या कलीसियाओं के प्रेरितों के समूह के रूप में बरनबास, इपफ्रुदीतुस, अपुल्लोस, सिलवानुस एन तीमुथियुस। उन सभी ने सुसमाचार का प्रचार किया और उनको कलीसियाओं द्वारा भेजे गए लोगों के रूप में वर्णित किया जा सकता है। आज ऐसे लोगों को "कलीसिया के स्थापक" या "कलीसिया के निर्माणकर्ता" कहा जाता है।

16:10

प्रश्न 2. परमेश्वर द्वारा परीक्षण और स्वीकृत होने का क्या मतलब है?

ध्यान दें।

(1) कठिनाइयों के क्षेत्र में स्वीकृत।

एक मसीही को जीवन में आने वाली कठिनाइयों के क्षेत्र में परीक्षण और स्वीकृत होने की आवश्यकता है। रोमियों 16:10

में, अपुल्लोस को "मसीह में परीक्षण किया हुआ और स्वीकृत" के रूप में वर्णित किया गया है। एक मसीही को कब परखा और स्वीकृत किया जाता है? परमेश्वर विशेष रूप से मसीहियों का परीक्षण करने और उनके मसीही चरित्र को विकसित करने के लिए कठिनाइयों, परीक्षणों, प्रलोभनों और कष्टों का उपयोग करता है (तुलना करें रोमियों 5:3-4; याकूब 1:2-4)। जब इस तरह के "विश्वास के परीक्षण" के बीच एक मसीही (यूनानी: डोकीमियन टेस पिस्टोस) (याकूब 1:3) मसीह और मसीही विश्वास के प्रति वफादार रहता है, तो वह परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से जांचा जाता है, परीक्षा उत्तीर्ण की है और परमेश्वर द्वारा स्वीकृत होता है। (यूनानी: डोकिमोस)। इस तरह के एक मसीही को यह जानकर संतोष हो सकता है कि परमेश्वर उससे प्रसन्न हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। एक मसीही को अपने जीवन की सभी कठिनाइयों के बीच परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहना चाहिए। तभी उसे परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त होती है।

(2) व्यवहार के क्षेत्र में स्वीकृति।

मसीही सभाओं में व्यवहार के क्षेत्र में एक मसीही का परमेश्वर द्वारा परीक्षण और स्वीकृत करने की आवश्यकता होती है। 1कुरिन्थियों 11:19-22 में, पौलुस कहता है, "इसमें कोई संदेह नहीं है कि आपके बीच यह दर्शाने के लिए मतभेद हैं कि आप में से कौन सा परमेश्वर को स्वीकार्य है। जब आप एक साथ आते हैं, तो क्या यह प्रभु का भोज नहीं है?" प्रभु का भोज प्रेम भोजन (ग्रीक: अगापे) के साथ मिलकर मनाया जाता था, यानी एक ऐसा भोजन जिसमें कलीसिया के मसीही एक साथ खाना खाते थे। कुछ मसीही स्वार्थी थे, अपना स्वयं का भोजन लाए और दूसरों की प्रतीक्षा किए बिना खा लिया और जो भोजन नहीं लाये थे उनके साथ बांटे बिना। दूसरों ने दुर्व्यवहार किया और यहां तक कि नशे में भी हो गए। परमेश्वर मसीही सभाओं में उनके व्यवहार और सामान्य जीवन में उनके व्यवहार के माध्यम से मसीहियों का परीक्षण करता है। एक मसीही को सभी परिस्थितियों में एक मसीही के रूप में व्यवहार करना चाहिए। तभी उसे परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त होती है।

(3) आत्मिक प्रशिक्षण और अनुशासन के क्षेत्र में स्वीकृति।

एक मसीही को आत्मिक प्रशिक्षण और अनुशासन के क्षेत्र में परमेश्वर द्वारा परीक्षण किये जाने और स्वीकृत होने की आवश्यकता है। 1कुरिन्थियों 9:24-27 में, पौलुस खेलों से चित्रों का उपयोग करके मसीहियों को प्रेरित करता है कि वे खुद को कड़े प्रशिक्षण के तहत रखें, लक्ष्यहीन रूप से न चलें और मुक्केबाजी में हवा में हाथ न मारें। वे कहते हैं, "हर कोई जो खेल में प्रतिस्पर्धा करता है वह कड़े अभ्यास में जाता है" (ग्रीक: एग्रेकुटोओमाई, शाब्दिक: आंतरिक आत्म-नियंत्रण, विशेष रूप से यौन निरंतरता)। "मैं अपने शरीर को हराता हूँ" (ग्रीक: उपोपिआजो, का शाब्दिक अर्थ: "खुद को आंखों के नीचे हराता हूँ", खुद लगाए गए अनुशासन के लिए एक अभिव्यक्ति) और इसे अपना गुलाम बनाऊँ (ग्रीक: डोलगोजो, शाब्दिक रूप से: "इसे हार मानने में मजबूर करना"), ताकि दूसरों को उपदेश दूँ, मैं स्वयं पुरस्कार के लिए अयोग्य नहीं रहूँगा (ग्रीक: एडोकिमोस) (1कुरिन्थियों 9:25,27)।" परमेश्वर द्वारा परीक्षित और स्वीकृत होना, परमेश्वर द्वारा अयोग्य होने के विपरीत है। परमेश्वर द्वारा अयोग्य न होने के लिए, प्रत्येक मसीही को स्वयं को कठोर आत्मिक प्रशिक्षण के तहत जाना चाहिए और एक स्पष्ट लक्ष्य की ओर चलना चाहिए। तभी उसे पुरस्कार मिलता है- परमेश्वर की स्वीकृति।

(4) बाइबल की व्याख्या करने के क्षेत्र में स्वीकृति।

एक मसीही को भी सही तरीके से बाइबल की व्याख्या करने के क्षेत्र में परमेश्वर द्वारा परीक्षित और स्वीकृत होने की आवश्यकता है। 2तीमुथियुस 2:15 में, पौलुस का तीमुथियुस से कहना है, "अपने आप को परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करने के लिए अपने आप से सबसे अच्छा करो (स्वीकृत: यूरोपीय (डोकीमोस), एक काम करने वाले को शर्मिंदा होने की आवश्यकता नहीं है (ग्रीक: एपिस्कून्तोस) और जो सही ढंग से सत्य के वचन का संचालन करता है (ग्रीक: ओर्थोटोमेओ, शाब्दिक: सत्य के शब्द

को सीधे काटना)।²¹ बाइबल पढ़ाने वाले व्यक्ति को सही ढंग से बाइबल की व्याख्या करनी चाहिए (तीतुस 1:9)! वह परमेश्वर के वचन को विकृत नहीं कर सकता (2कुरिन्थियों 4:2)। इसलिए कलीसियाओं के अगुवों और बाइबल के शिक्षकों को बाइबल के नियम²¹ में अच्छी तरह से प्रशिक्षित होना चाहिए (2कुरिन्थियों 4:2)। केवल जब कोई मसीही बाइबल की सही व्याख्या करता है, तो क्या वह परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करता है!

(5) मसीही सेवकाई के क्षेत्र में स्वीकृति।

एक मसीही को अपनी सेवकाई के क्षेत्र में परमेश्वर द्वारा परीक्षित और स्वीकृत होने की आवश्यकता होती है। 2कुरिन्थियों 10:12-18 में, पौलुस कहता है, "हम हिम्मत नहीं करते... खुद की तुलना कुछ ऐसे लोगों से करें जो खुद की तारीफ करते हैं... हम अपने घमंड को उस क्षेत्र में सीमित कर देंगे जिसे परमेश्वर ने हमें सौंपा है।... हम दूसरों द्वारा किए गए काम का घमंड करके अपनी सीमा से बाहर नहीं जाते हैं।... यह वह नहीं है जो स्वयं की सराहना करता है जो स्वीकृत है (ग्रीक: डोकिमोस), लेकिन वह है जिसकी प्रभु सराहना करता है।" पौलुस ने पहली बार कुरिन्थियों में सुसमाचार का प्रचार किया था और कुरिन्थियों में मसीही कलीसिया की स्थापना की थी।

बाद में, कुछ झूठे शिक्षक और यहाँ तक कि झूठे तथाकथित प्रेरितों ने भी आकर मसीहियों को अपने से दूर पौलुस को प्रभावित करने की कोशिश की। उन्होंने कुरिन्थियों की कलीसिया के बारे में दावा किया जैसे कि यह उनकी सेवकाई थी और पौलुस की तुलना में कुरिन्थियों के मसीहियों के लिए स्वयं की प्रशंसा करना महत्वपूर्ण था। पौलुस ने बस उत्तर दिया कि परमेश्वर उन झूठे प्रेरितों की सेवकाई का परीक्षण करेंगे और फलस्वरूप उन्हें स्वीकृति नहीं मिलेगी। भले ही ये झूठे प्रेरित खुद की तारीफ करते हों, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर उनकी तारीफ करता है! यह "वह नहीं है जो स्वयं की सराहना करता है जो स्वीकृत है (ग्रीक: डोकिमोस), लेकिन वह है जिसकी परमेश्वर सराहना करता है!" मसीही अगुवों को एहसास होना चाहिए कि परमेश्वर निश्चित रूप से उनकी सेवकाई का परीक्षण करेंगे और या तो उन्हें अयोग्य ठहराएंगे या उनकी स्वीकृति देंगे। मसीही अगुवों को अपनी सेवकाई को अपने विचारों के अनुसार नहीं, बल्कि संपूर्ण बाइबल के अनुसार करना चाहिए, स्वतंत्र रूप से नहीं बल्कि परमेश्वर की पूर्ण निर्भरता में करना चाहिए। तभी उन्हें परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त होती है!

16:16

प्रश्न 3. मसीहियों के पवित्र चुम्बन की व्याख्या कैसे करनी चाहिए?

ध्यान दें। रोमियों 16:16 कहता है, "एक दूसरे का अभिवादन एक पवित्र चुम्बन के साथ करो": (ग्रीक: फिल्माति हैगीओ)। नए नियम से पता चलता है कि मसीहियों में एक दूसरे के एक चुम्बन के साथ स्वागत करने की प्रथा थी।

(1) मसीही चुम्बन स्नेह की एक उपयुक्त अभिव्यक्ति थी।

लूका 7:36-50 (45) के अनुसार, जब शमौन फरीसी ने रात का भोजन करने के लिए यीशु को आमंत्रित किया, उसने यीशु को चुम्बन नहीं दिया, जो कि उन दिनों में रिवाज था। लेकिन जहां वे खा रहे थे पापी स्त्री आयी और यीशु के पैर का चुम्बन नहीं रोका! यह पद्यांश दर्शाता है कि स्नेह को व्यक्त किया जाना चाहिए, उदाहरण के लिए, स्नेह की कुछ निशानी द्वारा। यीशु के

²¹ निम्नलिखित शिक्षाओं के व्याख्यात्मक नियम :

- बाइबिल की शिक्षा (नियमावली 3, अध्याय 29)
- प्रकाशित्वक्य की पुस्तक (नियमावली 1, अध्याय 10)
- दृष्टान्त(नियमावली 9, परिशिष्ट)

समय के दौरान, चुंबन स्नेह की निशानी थी। हमारे दिन में, दुनिया के विभिन्न देशों में मसीहियों को यह तय करना चाहिए कि वे अपनी संस्कृति के भीतर अपने स्नेह को कैसे उपयुक्त तरीके से व्यक्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ संस्कृतियों में, मसीही पुरुष एक दूसरे को गले मिलते हैं। अन्य संस्कृतियों में, पुरुष और महिला एक दूसरे को छू नहीं सकते हैं या अकेले होने पर एक दूसरे से बात नहीं कर सकते हैं।

(2) मसीही चुंबन स्नेह की एक ईमानदार अभिव्यक्ति है।

लूका 22:47-48 के अनुसार यहूदा ने एक चुंबन के द्वारा उसके दुश्मनों के लिए यीशु के साथ विश्वासघात। यहूदा का चुंबन निष्ठाहीन और विश्वासघात का एक चुंबन था। ये पद्यांश बताता है की चुंबन या मसीही स्नेह की कोई और अभिव्यक्ति वास्तविक और ईमानदार होनी चाहिए।

(3) मसीही चुंबन स्नेह का एक पवित्र अभिव्यक्ति है।

रोमियों 16:16 और 2कुरिन्थियों 13:12 के मुताबिक, प्रेरित पौलुस से एक दूसरे का एक पवित्र चुम्बन के साथ स्वागत करने के लिए आग्रह किया। "पवित्र" शब्द का अर्थ बुराई से अलग और परमेश्वर के लिए आरक्षित है। इसलिए, एक पवित्र चुम्बन का मतलब हमेशा तीन दलों का शामिल होना है: - दो लोग जो एक दूसरे को चूमते हैं और परमेश्वर जो देखता है और सब कुछ जानता है कि किस खातिर चुंबन दिया जाता है! एक तरफ चुंबन एक गलत इच्छा या मकसद से नहीं आ सकते हैं। दूसरी ओर चुंबन भावना रहित, और उदासीन और अर्थ के बिना नहीं हो सकता। मसीही चुंबन का अर्थ होना आवश्यक है: परमेश्वर के प्रेम और प्रतिबद्धता की अभिव्यक्ति।

(4) मसीही चुंबन स्नेह की एक आम अभिव्यक्ति थी।

1थिस्सलुनिकियों 5:26 के अनुसार, पवित्र चुम्बन मसीही परिवार के सभी सदस्यों के लिए है। हो सकता है कि मसीही उन सदस्यों के प्रति स्नेह प्रदर्शित न करें, जिन्हें वे किसी कारण से पसंद नहीं करते हैं! पवित्र चुम्बन पक्षपात के बिना हर मसीही को दी जानी चाहिए। यह पद्यांश बताता है कि चुंबन मसीही भाइयों और बहनों के बीच सामंजस्य और शांति बनाए रखता है।

(5) मसीही चुंबन स्नेह की एक प्यारी अभिव्यक्ति थी।

1पतरस 5:14 के अनुसार, मसीहियों को प्यार के एक चुंबन के साथ एक-दूसरे का अभिवादन करना चाहिए। मसीही चुंबन एक दूसरे के लिए प्रेम की प्रतिबद्धता का एक संकेत के रूप में है जैसा मसीह ने हमसे प्रेम किया (यूहन्ना 13:34-35) और जैसा 1 कुरिन्थियों 13 प्यार करने के लिए सिखाता है।

(6) मसीही चुंबन के इतिहास।

इस बात के प्रमाण है की पवित्र चुम्बन पश्चिमी कलीसिया में 13 वीं सदी तक आम मसीही द्वारा उपयोग में पारित किया जाता था। आज भी यह कॉप्टिक मसीही कलीसिया में जारी है! कुछ संस्कृतियों में अन्य संस्कृतियों की तुलना में विभिन्न लिंगों के बीच संपर्क अधिक सख्ती से नियमित है। मसीही चुंबन का सही प्रयोग यह होगा की दुनिया के हर देश में मसीहियों को यह तय करना चाहिए कि क्या एक दूसरे से अपने मसीही स्नेह व्यक्त करने के लिए एक उपयुक्त तरीका क्या होगा।

16:17-18

प्रश्न 4. मसीहियों को झूठे शिक्षकों से कैसे संबंधित होना चाहिए?

ध्यान दें। रोमियों 16:17-18 कहता है, "मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पायी है, फूट डालने और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, लेकिन अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे-सादे मन लोगों को बहका देते हैं।" उन लोगों के लिए देखें जो विभाजन का कारण बनते हैं (ग्रीक: डाइकोस्टैसिया) और आपके रास्ते में बाधाएं डालते हैं जो आपके द्वारा सीखे गए शिक्षण के विपरीत हैं। इनसे दूर रहें। ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की सेवा नहीं कर रहे हैं, लेकिन उनकी अपनी भूख की (शाब्दिक अर्थ है: स्वयं के पेट का दास होना)। चिकनी-चुपड़ी बातों और चापलूसी के द्वारा वे भोले (निर्दोष, भदे) (ग्रीक: अकाकोस) लोगों के दिमाग को धोखा देते हैं।"

(1) झूठे शिक्षक और उनकी विधियाँ।

यह कहीं भी नहीं निहित है कि ये लोग रोम में कलीसिया के सदस्य थे, क्योंकि पौलुस रोम में मसीहियों की आज्ञाकारिता की सराहना करता है (रोमियों 16:19)। इसके बजाय, वे शायद बाहरी थे, यात्रा करने वाले झूठे शिक्षक और प्रचारक। कुछ लोग स्वतंत्र विचारक (उदार) हो सकते हैं, जो परमेश्वर के नियम को पूरी तरह से खारीज करते हैं और सिखाते हैं कि लोग जितना चाहें उतना पाप कर सकते हैं (रोमियों 6:1)। अन्य लोग व्यवस्थायी हो सकते हैं जो सिखाते हैं कि लोगों को खतना करना कराना चाहिए और बचाया जाने के लिए मूसा के औपचारिक व्यवस्था को बनाए रखना चाहिए (15:1)। वे अपने धर्म के लिए प्रचार करते हैं, ऐसा करने के लिए घूस देते हैं और अपने धार्मिक नेताओं की स्वीकृति प्राप्त करते हैं। वे लोगों को अपनी झूठी शिक्षाओं पर विश्वास कराने में अनुभव रखते हैं।²² बाइबल की शिक्षाओं को यीशु मसीह के विरोध में मोड़ना उनकी विशेषता है। वे "सिखाने के उस रूप के प्रति आज्ञाकारी नहीं हैं जो मसीह ने उन्हें सौंपा था" (रोमियों 6:17)।

(2) मसीहियों को झूठे शिक्षकों और प्रचारकों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।

पौलुस यह नहीं कहते हैं कि मसीहियों को इन झूठे शिक्षकों का विरोध करना चाहिए, क्योंकि वे मसीही कलीसिया के सामान्य सदस्यों के लिए बहुत मजबूत थे। इसके बजाय वह कहता है कि हर समय (ग्रीक: स्कोपो) इन पर नज़र रखो, यह है कि, पहचानने की ये पुरुषों और महिलाओं कौन है ताकि इनसे बचा जा सके! प्रेरित पौलुस मसीहियों को इन झूठे शिक्षकों (भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों) से "दूर रखने" की आज्ञा देता है (रोमियों 16:17)!

प्रेरित यूहन्ना ने भी मसीहियों को अपने घर में झूठे शिक्षकों को न ले जाने और उनका स्वागत न करने की आज्ञा दी, क्योंकि जो कोई भी ऐसे शिक्षक का घर में स्वागत करता है वह झूठे शिक्षक के दुष्ट कार्य में भाग लेता है" (2यूहन्ना 10-11)। अंत में, प्रेरित पौलुस उन लोगों के बारे में कहते हैं जो भी सुसमाचार को विकृत करके मसीही को भ्रम में डालते हैं, "भले ही स्वर्ग का एक स्वर्गदूत²³" को दूसरे सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए (बाइबल में प्रेरितों द्वारा प्रचारित सुसमाचार के अलावा), उसे सदा के लिए धिक्कार दिया जाए (आरोपित)(गलातियों 1:6-9)!

16:25-26

प्रश्न 5. रहस्य क्या था?

ध्यान दें।

(1) छिपा हुआ रहस्य।

²² जहोवा विटनेस, मोरमोंस तथा गैर मसीही पंथों के बारे में विचार करें

²³ उदाहरण के लिए इस्लाम में "जिब्राएल फरिश्ते" की क्या भूमिका है

"एक रहस्य" एक सच्चाई है जो अज्ञात होती है जब तक यह प्रकट नहीं की जाती।

रहस्य पहले एक व्यक्ति था जो अज्ञात रहेगा यदि परमेश्वर ने उसे प्रकट नहीं किया है। पूरे पुराने नियम की अवधि के दौरान यह एक रहस्य (एक रहस्य) था कि वास्तविक "इस्राएल" याकूब (उत्पत्ति 32:28) नहीं था और यहूदी राष्ट्र भी नहीं था (निर्गमन 4:22), लेकिन "प्रभु का दास", अर्थात्, यीशु मसीह। "तुम मेरे दास, इस्राएल हो, जिसमें मैं अपनी शोभा बढ़ाऊंगा" (यशायाह 49:3)! इस दास के माध्यम से "प्रभु अपने द्वारा रखे गए इस्राएल को वापस लाएगा" (बचे हुए), उसे (अन्यजातियों) राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश बनाओ और पृथ्वी के सिरों तक परमेश्वर का उद्धार लाओ" (यशायाह 49:6)

उसके बाद रहस्य उसके लोगों में परमेश्वर है, "वह रहस्य जिसे युगों-युगों और पीढ़ियों से छिपा कर रखा गया है, लेकिन अब मसीहियों के लिए इसका खुलासा किया गया है: तुम में मसीह" (ग्रीक: एन) (बहुवचन, मसीही कलीसिया) (कुलुस्सियों 1:25-27)। स्वर्ग में अपने स्वर्गारोहण के बाद यीशु मसीह ने वादा किया था कि पवित्र आत्मा उनके शिष्यों (मसीहियों) "में" और उनके "साथ" रहेगा। पवित्र आत्मा स्वयं यीशु मसीह से कम नहीं है, जो अनाथों के रूप में शिष्यों को पीछे नहीं छोड़ते थे, लेकिन उनके पास आते थे (यूहन्ना 14:16-18; तुलना करें रोमियों 8:9-10; 2कुरिन्थियों 3:17)!

रहस्य आखिरकार वही लोग हैं। पूरे पुराने नियम की अवधि के दौरान यह एक रहस्य था कि सुसमाचार के माध्यम से गैर-यहूदी विश्वासी (अन्यजातियाँ) इस्राएल के साथ-साथ एक शरीर (कलीसिया) के सदस्यों और मसीह यीशु के वादे में एक साथ साझा करने के लिए वारिस होंगे: (इफिसियों 3:2-6; तुलना करें 2 कुरिन्थियों 1:20)। परमेश्वर के पुराने नियम के लोग "इस्राएल" (इस्राएल के भीतर विश्वासियों) को समाप्त या प्रतिस्थापित नहीं किया गया है, लेकिन जारी रखा गया है (छाया के अनुरूप वास्तविकताओं के उच्च तल पर) (कुलुस्सियों 2:17) और पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों के सभी मसीहियों को शामिल करने के लिए विस्तारित किया गया!

गैर-यहूदी विश्वासी एक दिन बड़ी संख्या में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिन से परमेश्वर का राज्य जोश के साथ आगे बढ़ रहा है और जोशीले पुरुष उत्सुकता से इसे अधिकार में ले रहे हैं (मत्ती 11:12)। मसीह के दूसरे आगमन (दुनिया के अंत) के पहले आगमन से लेकर परमेश्वर के राज्य (राजा) के सुसमाचार को पूरी दुनिया में सभी राष्ट्रों के लिए एक गवाही के रूप में प्रचार किया जाएगा (मत्ती 24:14)।

विश्वासी गैर-यहूदी, विश्वासी यहूदियों के सभी परमेश्वर के वादों (2 कुरिन्थियों 1:20) के एक साथ वारिस होंगे और वे यहूदी विश्वासियों के साथ एक समान शरीर (कलीसिया) के सदस्य होंगे। (इफिसियों 2:14-22; 3:2-6)। विश्वास करने वाले यहूदी अब केवल परमेश्वर के चुने हुए लोग (चुनाव) नहीं हैं (व्यवस्था 7:6-10), लेकिन सभी राष्ट्रों के यीशु मसीह में विश्वासियों ने मिलकर परमेश्वर के लोगों का निर्माण किया। प्रेरित पतरस इस प्रकार कहता है, "पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है" (1पतरस 2:9-10; तुलना करें रोमियों 10:12 और गलातियों 3:28)।

(2) रहस्य का खुलासा किया गया है।

हालाँकि इस रहस्य का पहले भी पुराने नियम के "भविष्यद्वाणी की पुस्तकों" में वादा किया गया था (रोमियों 1:2; 16:26), यह "लंबे समय तक अतीत में छिपा रहा" (रोमियों 16:25)। हालाँकि परमेश्वर की उद्धार कि अनन्त योजना में दुनिया के हर

देश के लोग बड़ी संख्या में शामिल थे (उत्पत्ति 12:3; 22:18; यशायाह 42:6; 49:6), यह वादा यीशु मसीह के पहले आगमन पर पूरा होने लगा। यीशु मसीह को सूली पर चढ़ाए जाने और मृतकों के पुनरुत्थान के बाद ही पापों का प्रायश्चित किया गया था, नए नियम का दौर शुरू हुआ। धरती पर मौजूद हर जनजाति, भाषा, लोग और राष्ट्र के लोग अब यीशु मसीह पर विश्वास कर रहे हैं, उसकी आज्ञा मान रहे हैं (रोमियों 16:26) और परमेश्वर के राज्य में जा रहे हैं (मत्ती 8:12)।

रोमियों को पत्र में एक कलीसिया को संबोधित किया गया था जिसमें विश्वासी यहूदी और विश्वासी अन्यजाति दोनों को सम्मिलित किया गया था, जिन्होंने बाइबल के परमेश्वर की आराधना और सेवा की थी। इस तरह बाइबल का एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा हमेशा के लिए महिमावान हो जाता है (रोमियों 16:27)!

चरण 4. लागू करना।

अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 16:1-27 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें।

(स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 16: 1-27 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

16:1. अपनी मण्डली का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति के साथ मिलकर अनुशंसा पत्र भेजें।

16:2. एक यात्री मसीही की कुछ भी मदद करिये जो आपसे हो सकती है।

16:3. स्वतंत्र और अलग होने के बजाय अन्य मसीहियों के साथ एक साथी कार्यकर्ता बनें।

16:5. अपने घर को घरेलु कलीसिया के लिए उपलब्ध कराएं।

16:7. उन मसीहियों को याद रखें जो जेल में हैं (इब्रानियों 13: 3) और उनके लिए प्रार्थना करें (प्रेरित 12: 5)।

16:10. इस तथ्य का स्वागत करें कि परमेश्वर आपको स्वीकार करने के लिए कठिनाइयों के माध्यम से आपका परीक्षण करता है।

16:16. अपने मसीही स्नेह को दिखाने के तरीके खोजें जो आपकी संस्कृति में उपयुक्त हों।

16:17. उन लोगों पर नज़र रखें जो झूठे शिक्षक हैं और अपने घरों में उनका स्वागत ना करें।

16:19. बुराई क्या है, इसके बारे में भोले बने रहो। इसलिए बुरे टेलीविजन कार्यक्रम या फिल्में न देखें, बुरी किताबों और पत्रिकाओं को न पढ़ें और अपनी आंखों, कानों और दिमाग को हर उस चीज से दूर रखें जो आपकी मासूमियत को बुराई के साथ दूर ले जाएगी।

16:20. हालाँकि शैतान को हरा दिया गया है (मत्ती 12:28-29; यूहन्ना 12:31), फिर भी उसके पास बुराई करने की बहुत ताकत है

(तुलना करें 1 पतरस 5:8)। इसलिए लगातार उसका प्रतिरोध करता है (1 पतरस 5: 9; याकूब 4: 7)। मसीह के दूसरे आगमन

पर, शैतान को अंततः उखाड़ फेंका जाएगा और नरक में डाल दिया जाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 2: 8; प्रकाशितवाक्य 20:10)।

2. रोमियों 16: 1-27 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं अपना घर मसीहियों को मिलने के लिए उपलब्ध कराना चाहता हूँ।

मैं अपने अन्य भाइयों और बहनों से उचित स्नेह दिखाना सीखना चाहता हूँ।

चरण 5. प्रार्थना।

प्रतिउत्तर

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 16:1-27 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5

प्रार्थना (8 मिनट)

[मध्यस्थता]

दूसरों के लिये प्रार्थना

दो या तीन समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिये और संसार भर के लोगों के लिये प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6

तैयारी (2 मिनट)

[निर्धारित कार्य]

अगले अध्याय के लिये

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 16:1-27 प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन।
3. परमेश्वर के राज्य के विषय पर प्रचार करने हेतु अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। अपने शांत समय के नोट्स, अपने स्मरणीय नोट्स, अपने बाइबल के अध्ययन के नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

बढ़ना जारी है

1. शांत समय।

यीशु मसीह (शांत समय) के साथ व्यक्तिगत संगति का नियमित समय जारी रखें। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें (नियमावली 1, पूरक 1 देखें)। बाइबल पढ़ने के कार्यक्रम का उपयोग करने का एक अच्छा तरीका है (नियमावली 1 देखें, पूरक 2)। अपने शांत समय के नोट्स बनाना जारी रखें।

2. स्मरण करना।

अपने बाइबल पढ़ने और बाइबल अध्ययन को याद रखने के लिए अपनी खुद की नई बाइबल के वचनों का चयन करना जारी रखें। नियमित रूप से महत्वपूर्ण बाइबल वचनों को याद रखें (नियमावली 1 देखें, पूरक 5)। और हर दिन पिछली 5 याद

किये गए बाइबल वचन की समीक्षा करना जारी रखें।

3. बाइबल अध्ययन।

बाइबल अध्ययन करना जारी रखें (तुलना करें नियमावली 1, पूरक 4)। अपनी स्वयं की बाइबल पुस्तक का चयन करें और पुस्तक का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का उपयोग करें। पुराने नियम में कुछ पुस्तकों का अध्ययन करने से पहले आपको नए नियम में सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों का अध्ययन करने की सलाह दी जाती है, क्योंकि पुराने नियम की व्याख्या नए नियम के प्रकाशन की रोशनी में की जानी चाहिए (तुलना करें लूका 24:25,25,44-45)।

4. प्रार्थना।

हर हफ्ते किसी न किसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना जारी रखें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।

5. मसीही संगति।

मण्डली में अन्य विश्वासियों के साथ मिलना जारी रखें (या तो एक घरेलू कलीसिया समूह या बड़ी कलीसिया की बैठक में)।

6. फल देने वाला।

बहुत फल और स्थायी फल (यूहन्ना 15:5,8,16) देना जारी रखें। यीशु मसीह के लिए गवाह (तुलना करें मत्ती 10:32; 1 पतरस 3:15-16)। विभिन्न तरीकों से सुसमाचार फैलाएं। अपने आस-पास के लोगों को यीशु मसीह के करीब आने के लिए प्रभावित करने के लिए दृढ़ संकल्पित रहें। सभी देशों से शिष्य बनाओ (मत्ती 28: 18-20)।

7. शिष्यत्व।

यीशु मसीह का अनुसरण करना जारी रखें, उनसे सीखें और उनके शब्दों का पालन करें (तुलना करें मत्ती 7:24-27)।

नये समूह शुरू करें

जब भी आपने विश्वासियों के समूह का प्रशिक्षण पूरा किया है, तो दो काम करें:

1. अपने छात्रों को एक नया Dota समूह (घरेलू संगति / कलीसिया) शुरू करने के लिए प्रेरित करें

जिन्हें आपने प्रशिक्षित किया है उन विश्वासियों के इस समूह को चुनौती दें, नए विश्वासियों के अपने छोटे समूह को शुरू करने के लिए, जो आत्मिक रूप से बढ़ना चाहते हैं। उन्हें इस संपूर्ण पाठ्यक्रम का उपयोग करने दें या उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए इस पाठ्यक्रम का एक हिस्सा बनाएं।

नियमित रूप से नए शिष्यत्व समूह के अगुवों को प्रशिक्षित और प्रोत्साहित करना जारी रखें।

2. खुद एक नया Dota समूह शुरू करें।

खुद का एक नया डोटा समूह बनाने के लिए प्रेरित, आमंत्रित और प्रार्थना के साथ कुछ लोगो का चयन करें। उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए इस संपूर्ण पाठ्यक्रम या इस पाठ्यक्रम का एक हिस्सा बनाएं। डोटा पाठ्यक्रम में निम्नलिखित तीन भाग होते हैं:

जाओ और चेले बनाओ।
जाओ और मसीह की कलीसिया बनाओ।
जाओ और परमेश्वर के राज्य के बारे में सुसमाचार प्रचार करो।

शिष्य के नियमावली 1 से 4 में 48 अध्याय।
कलीसिया नियमावली 5 से 8 में 48 अध्याय।
राज्य नियमावली 9 से 12 में 48 अध्याय।

[यीशु के दृष्टान्त]
विश्वासयोग्य दास और दुष्ट दास

**मत्ती 24:45-51 और लूका 12:42-48 में “विश्वासयोग्य दास और दुष्ट दास” का दृष्टान्त
परमेश्वर के राज्य में सेवा
के बारे में बताते हैं।**

पढ़ें मत्ती 24:45-51 और लूका 12:42-48।

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

दासों का सरदार। कई सेवकों या दासों का स्वामी एक लम्बी यात्रा पर निकलता है। जाने से पहले, वह अपने सबसे विश्वासयोग्य दास को अन्य दासों के ऊपर सरदार या प्रबंधक ठहराता है। नए नियुक्त प्रबंधक के रूप में, यह दास न केवल अन्य दासों के काम की देखरेख करता है, बल्कि इस बात का भी विशेष रूप से ध्यान रखता है कि उन्हें किसी चीज़ की कमी न हो। जब दासों की देख-रेख करने वाला कोई प्रबंधक या सरदार नहीं होता है, तो उनके लिए अपने काम को ईमानदारी या प्रतिष्ठित रूप से करना बहुत मुश्किल होता है।

स्वामी का वापस लौटना। ऐसा एकदम अचानक होता है। न केवल दिन बल्कि सटीक घंटे भी पूरी तरह से अज्ञात है! एक प्रबंधक के रूप में कार्य करने वाले दास को या तो विश्वासयोग्य या दुष्ट दास के रूप में चित्रित किया जाता है। दुष्ट दास की तुलना में विश्वासयोग्य दास के ऊपर स्वामी की वापसी का पूरी तरह से अलग प्रभाव पड़ेगा।

विश्वासयोग्य दास की प्रशंसा। यदि प्रबंधक के रूप में अपनी क्षमता के अनुसार यह दास अपने कार्य में विश्वासयोग्य रहता है और अपने स्वामी की इच्छा को पूरा करने के लिए उत्सुक रहता है, तो स्वामी वापस लौटने पर उसे अपनी सारी संपत्ति का अधिकारी बना देगा। अपने स्वामी के वापस लौट आने तक यह दास हर समय अपने मालिक की इच्छा को पूरा कर रहा है और पूरी विश्वासयोग्यता से अपने स्वामी के अन्य सेवकों की अच्छे से देखभाल भी कर रहा है।

दुष्ट दास के लिए दण्ड। हालाँकि, यदि प्रबंधक के रूप में अपनी क्षमता से यह दास अपने कार्य में विश्वासयोग्य नहीं रहता, तो वह दण्ड का भागी होगा। उसने जानबूझकर अपने मन में विचार किया कि वह लापरवाही से अपने काम को करेगा जैसा कि वह करता आ रहा था। उसने सोचा कि, क्योंकि उसके स्वामी को लौटने में बहुत समय लगेगा, इसलिए उसने समय को मौज-मस्ती में बिताया। उसने सिर्फ मौज-मस्ती ही नहीं की। बल्कि उसने अन्य सेवकों की पीड़ा को भी बढ़ाया। उसने अपने कार्य के भार को अन्य सेवकों में बाँट दिया और उन्हें पीटने लगा, कि वे उससे डरकर उसके अधीन रहकर कार्य करें। और उसने पियक्कड़ों के साथ खाने-पीने और मौज-मस्ती में अपना समय बिताया।

अपने वापस आने पर स्वामी उस दुष्ट दास का भाग (Greek: dichotomeó) कपटियों के संग ठहराएगा और उसे कठोर दण्ड देगा, ताकि इस बात को स्मरण रखा जाये कि स्वामी उन दासों के साथ कैसा व्यवहार करता है जो अपने कार्य में विश्वासयोग्य नहीं रहते। उसके स्वामी ने उसे अविश्वासियों के साथ उस कष्टदायी स्थान पर रखा जहाँ अशान्ति, रोना और दांत पीसना होगा। क्योंकि उस दास ने अपने स्वामी के भरोसे को तोड़ा था और यह उसके स्वामी को स्वीकार्य नहीं था, इसलिए उसके स्वामी ने उसे नरक में डाल दिया (प्रकाशितवाक्य यह 21:8; मत्ती 25:46 से तुलना करें)।

2. सन्दर्भ की जांच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

खोज व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका 12:35-41 में पायी जाती है।

यीशु ने इन पदों में सदा तैयार रहो वाले दृष्टान्त को बताया। तब पतरस ने पूछा, “हे प्रभु, क्या यह दृष्टान्त तू हम ही से या सबसे कहता है?” पतरस यह जानने के लिए बहुत ही उत्सुक है। लेकिन यीशु ने उसे इसका सीधा उत्तर नहीं दिया। और यह बात लूका 13:23-24 में फिर से होती है। शायद यीशु ने यह कहा होगा, “कभी भी भली जिज्ञासा से उत्पन्न होने वाले सवालों को पूछने में हिचकिचाना नहीं चाहिए। आपको ऐसा क्या करना चाहिए कि आप एक विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास होने के लिए मेहनत करें, और सौंपे गए कार्य को पूरा करने के लिए उसका प्रबंधन अच्छे से करें।” यह समझाने के लिए कि इन बातों का क्या अर्थ है, यीशु ने अन्य दासों के प्रबंधक के रूप में, विश्वासयोग्य या दुष्ट दास के दृष्टान्त को बताया।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 12:42-46 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और अनुप्रयोग लूका 12:47-48 में दिया गया है।

इसमें लिखा है, “वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता है और तैयार नहीं रहता ओर उसकी इच्छा के अनुसार नहीं चलता, वह बहुत मार खायेगा। लेकिन, जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे, वह थोड़ी मार खाएगा। इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत लिया जाएगा।” स्वामी की वापसी पर, वह अपने दासों या प्रबंधकों का उनके निर्धारित कार्य के अनुसार उनका पूर्ण न्याय करेगा। वह विश्वासयोग्य दासों को पुरस्कृत करेगा (लूका 19:17,19), लेकिन वह दुष्ट दासों को दंडित करेगा (लूका 12:47-48)। हालाँकि कुछ दासों को कम दंडित किया जाएगा, क्योंकि वे स्वामी की इच्छा को नहीं जानते थे, फिर भी उन्होंने सजा के लायक काम किये। अन्य दासों को कड़ी सजा दी जाएगी क्योंकि वे न केवल स्वामी की इच्छा को जानते थे बल्कि उसे परिभाषित भी करते थे और उन्होंने सजा के योग्य कार्य किये।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

सिखाएँ। यीशु ने किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं दिया।

4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहिचानना।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?

मत्ती 24:45-51 और लूका 12:42-46 में “विश्वासयोग्य दास और दुष्ट दास” का दृष्टान्त परमेश्वर के राज्य में सेवा के बारे में बताते हैं।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। “मसीहियों को जानबूझकर गैर-जिम्मेदारी से कार्य नहीं करने चाहिए और न ही उन्हें वही कार्य करने चाहिए जो उन्हें अपने जीवन में करने पसंद है। उन्हें जानबूझकर जिम्मेदारी के साथ काम करना चाहिए, अपने परमेश्वर द्वारा दिए गए कार्यों को गंभीरता से लेना चाहिए और लोगों, गतिविधियों, समय, अवसरों आदि के प्रति विश्वासयोग्य और बुद्धिमान प्रबंधक बनने की कोशिश करनी चाहिए, जो परमेश्वर ने उन्हें सौंपा है।” परमेश्वर प्रत्येक मसीही दास को अपने द्वारा सौंपे गए कार्यों के लिए जिम्मेदार और उत्तरदायी ठहराएगा।

सेवा परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग ईमानदारी से अपने परमेश्वर द्वारा सौंपे गए कार्यों के प्रति क्रियान्वित रहते हैं।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिए समान्तर या प्रक गद्यांशों से करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के प्रत्येक गद्यांशों में से जो कुछ भी पढ़ाया जाता है, उसकी तुलना में विश्वासयोग्य दास और दुष्ट दास का दृष्टान्त क्या सिखाता है?

(1) दास और उसका कार्य।

प्रत्येक दास को एक निर्धारित कार्य सौंपा जाता है। मरकुस 13:34 में लिखा है, “यह उस मनुष्य की दशा है, जो परदेश जाते समय अपना घर छोड़ जाए, और अपने दासों को अधिकार दे : और हर एक को उसका काम जाता दे।”

प्रत्येक दास को विश्वासयोग्य बने रहना चाहिए। 1 कुरिन्थियों 4:1-2 में लिखा है, “मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझें। फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि विश्वासयोग्य निकले।”

कोई भी दास नहीं जानता कि उसका स्वामी कब वापस आएगा और उसकी सेवा का मूल्यांकन करेगा। मरकुस 13:31-33, 35 में लिखा है, “आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। उस दिन या उस समय के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र (अपनी मानवीय देह में); परन्तु केवल पिता। देखो, जागते ओर प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा। इसलिए, जागते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, साँझ को या आधी रात को, या मुर्गे के बांग देने के समय या भोर को।”

(2) दास और उत्तरदायित्व

दास का उत्तरदायित्व उसको सौंपे गए कामों पर निर्भर करता है। यह इस बात का अनुपात है कि उसके पास कितना ज्ञान है और उसने अपने अवसरों के साथ क्या किया।

पढ़ें लैव्यव्यवस्था 26:1-46 आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता।

परमेश्वर आज्ञाकारियों को पुरस्कृत करेगा और अनाज्ञाकारियों को दण्ड देगा।

पढ़ें गिनती 15:22-31; भजन संहिता 19:12-13 । अनजाने में या उपेक्षा-पूर्ण अनाज्ञाकारिता।

अनजाने में किए गए पापों का प्रायश्चित्त करना चाहिए, लेकिन जानबूझकर और उपेक्षा-पूर्ण पापों को गंभीर रूप से दंडित किया जाएगा। मसीहियों को प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर उन्हें इच्छापूर्ण पापों से दूर रखें। वे अपने छिपे हुए दोषों और त्रुटियों की क्षमा के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।

पढ़ें लूका 12:47-48; 23:34; प्रेरितों के काम 3:17; 1 तीमुथियुस 1:13 । अज्ञानता या ज्ञान और अनाज्ञाकारिता।

परमेश्वर की इच्छा के बारे में दास कितना जानता था, उसके अनुसार उसे और उसकी अनाज्ञाकारिता को दंडित किया जाएगा। संक्षेप में, “इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जायेगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत लिया जायेगा” (लूका 12:48ब)।

पढ़ें आमोस 3:2; मत्ती 10:15; 11:20-24 । ईश्वरीय चुनाव कभी भी मानवीय ज़िम्मेदारी से अलग नहीं हो सकता है।

इस्राएल को भी, जिसे परमेश्वर ने पृथ्वी के सभी परिवारों में से अपने विशेष लोगों के रूप में चुना था, उसके सभी पापों के लिए दंडित किया जाएगा। जिन शहरों ने यीशु मसीह की उपस्थिति, उपदेश और आश्चर्यकर्मों का अनुभव किया, लेकिन पश्चाताप नहीं किया, वे दुष्ट शहरों की तुलना में अधिक गंभीर रूप से दंडित होंगे, जिन्होंने ऐसे विशेषाधिकारों का अनुभव नहीं किया है।

(3) दास और अनाज्ञाकारिता

उस दास को, जो अपने स्वामी की इच्छा को नहीं जानता, उसे दंडित क्यों किया जाना चाहिए?

पढ़ें रोमियों 1:18-21; 2:14-16 । अज्ञान कभी भी निरंकुश नहीं होता है! कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि उसे परमेश्वर या परमेश्वर की इच्छा का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि पर अपने अस्तित्व और सामर्थ्य और उसने सभी मनुष्यों के हृदय और विवेक में अपनी नैतिक इच्छा शक्ति (अच्छाई और बुराई) को प्रगट किया है। परमेश्वर लोगों का उनके ज्ञान और व्यवहार के अनुसार पूर्ण न्याय करेगा।

पढ़ें यूहन्ना 3:16-18,36; रोमियों 8:1; 1 कुरिन्थियों 3:14; सभोपदेशक 12:14; याकूब 2:14-17; गिनती 16:1-35; 3 यूहन्ना 9 । उद्धार का आधार विश्वास है। परमेश्वर सभी लोगों का न्याय अपने ऊपर विश्वास और संदेश ओर स्वयं पर अविश्वास के अनुसार करेगा। मसीहियों का न्याय, उनके अच्छे कामों, व्यवस्था को बनाए रखने, और धार्मिक (अपने धार्मिक कर्तव्यों को निभाने से) होकर रहने के द्वारा नहीं होगा, बल्कि केवल यीशु मसीह और उद्धार के उसके सम्पूर्ण कार्यों पर विश्वास करने के अनुसार होगा। लेकिन अंतिम न्याय का आधार कार्य है। लोगों द्वारा धार्मिकता के साथ जीवन को व्यतीत करने के द्वारा विश्वास का जीवन दर्शाया जाता है। मसीहियों को उनके धार्मिक कार्यों के अनुसार पुरस्कृत किया जाएगा।

इसी तरह, दूसरे दिखाते हैं कि वे कैसे अधर्म में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। परमेश्वर के लोगों के बीच हमेशा से दुष्ट प्रबंधक रहे हैं, जैसे लेवी दातान और उसके सहयोगी, या कलीसिया का अगुवा दियुत्रिफेस की तरह, जो उनमें बड़ा बनना चाहता था, जिसका प्रेरित यूहन्ना और परमेश्वर के सहकर्मियों से कुछ लेना-देना नहीं था ओर उसने उनका विरोध किया। वे परमेश्वर के न्याय से नहीं बचेंगे।

(4) दास और दूसरा आगमन

मसीही दास अपने स्वामी के आगमन से किस प्रकार सम्बन्धित हैं?

पढ़ें 1थिस्सलुनीकियों 5:1-3। यीशु मसीह का दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा। कोई भी मनुष्य उस क्षणिक घटना से बच नहीं पाएगा!

पढ़ें 2थिस्सलुनीकियों 2:1-2; 3:6-12। मसीहियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन का इंतजार करते समय घबराना नहीं चाहिए, जैसा कि थिस्सलुनीके के लोगों ने किया।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 3:14-22। मसीहियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन का इंतजार करते समय गुनगुना नहीं रहना चाहिए जैसा कि लौदीकीया के लोगों ने किया था।

पढ़ें प्रकाशितवाक्य 2:8-11 मसीहियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन का इंतजार विश्वासयोग्य और स्थिर रहकर करना चाहिए, जैसा कि स्मरना के लोगों ने किया। दूसरे आगमन का इंतजार करने का एकमात्र सही तरीका यह है कि हम यीशु मसीह की ईमानदारी से सेवा करते रहें!

6. बाइबल में सेवा का सारांश।

परिशिष्ट 17 देखें।

[यीशु के दृष्टान्त]

दस मुहरें

लूका 19:11-27 में “दस मुहरों” का दृष्टान्त

परमेश्वर के राज्य में पुरुस्कार

के बारे में बताते हैं।

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों की उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेंगे (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें लूका 19:11-27

1. दृष्टान्त की स्वाभाविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगे।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

राजपद पाने के लिए दूर देश को जाने वाला धनी मनुष्य। राजपद पाने के लिए रोम जाना यीशु के दिनों में कोई असामान्य बात नहीं थी। इस कहानी में, इस धनी व्यक्ति ने पहले से ही ऊँचे पद का पदभार संभाल रखा था, क्योंकि उसके पास पहले से ही प्रजा और बहुत से दास थे।

उसने अपने दस दासों को बुलाकर प्रत्येक को एक-एक मुहर दीं। यह धनी व्यक्ति चाहता था कि उसके दास काम करने के लिए इस धन का उपयोग करें। एक “मुहर” एक यूनानी सिक्के और एक सौ द्राखमा (चाँदी के सिक्के) के बराबर थी, और एक द्राखमा एक दिन के काम लिए एक दिन की मजदूरी थी। तोड़ों के दृष्टान्त के विपरीत इस धनी ने अपने प्रत्येक दास को एक बराबर ही धनराशि दी।

सौंपा गया कार्य (काम)। उस धनी मनुष्य ने अपने दासों को बुलाकर उन्हें यह आज्ञा दी कि, “मेरे लौट आने तक इस धन से लेन-देन करो।” हालाँकि एक मुहर एक तोड़े की तुलना में बहुत छोटी थी, लेकिन इस दृष्टान्त में धन पर ज़ोर नहीं दिया गया है, बल्कि धन के साथ क्या किया जाता है, इस बात पर ज़ोर दिया गया है। धनी मनुष्य के राजपद पाकर वापस आने के समय से पहले धनराशि को काम में लगाना बहुत ज़रूरी है।

उसके नगर के रहनेवाले कुछ लोगों ने उससे बैर रखा और उसे अस्वीकार कर दिया। यीशु के दिनों में यह बात भी असामान्य नहीं थी। कुछ लोगों ने सामर्थ्य और प्रसिद्धि पाने की इच्छा रखी और अपने पद के प्रभाव को सुरक्षित रखने के प्रयास के लिए रोम की यात्रा की। हालाँकि, एक ही देश में रहते हुए कुछ अन्य लोग ऐसे भी थे जिन्हें अपने ऊपर होने वाले अत्याचार का डर था। इसलिए वे अक्सर रोम में अपना एक प्रतिनिधि मण्डल भेजते थे ताकि उस मनुष्य के राजपद पाने के प्रयासों को विफल किया जा सके। ऐसा मसीह के आने के ठीक पहले इतिहास में, हाइरनस द्वितीय और अरिस्टोबुलस के साथ-साथ आर्केलास के साथ हुआ था।

राजपद पाकर लौट आने पर उसने अपने विश्वासयोग्य दासों को पुरस्कृत लिया। राजपद पाकर इस धनी ने अपने दासों को बुलाया ताकि वे आकर इसका हिसाब दें कि प्रत्येक को दी गयी एक-एक मुहर का उन्होंने क्या किया। तब पहले दास ने विनम्रतापूर्वक बताया कि हे स्वामी मैंने तेरी मुहर से दस और मुहरें कमाई हैं। इसी प्रकार दूसरे दास ने भी आकर बताया कि, हे स्वामी मैंने पाँच और मुहरें कमाई हैं। उस स्वामी ने अपने विश्वासयोग्य दासों की सराहना की और उनके द्वारा कमाए गए लाभ के ठीक बराबर उन्हें और कार्य सौंपा। उन्हें क्रमशः दस और पाँच नगरों के काम पर अधिकार दिया।

राजपद पाकर लौटने पर स्वामी ने अपने अविश्वासी दास को दण्डित किया और उन बैरियों को जो नहीं चाहते थे कि वह उन पर राज्य करें, उन्हें मरवा डाला। तोड़ों के दृष्टान्त में जिस प्रकार उस दास ने अपने तोड़े को किसी काम में नहीं लिया, वह दुष्ट और आलसी दास था। उसने अपने स्वामी पर कठोर और अनुचित होने का भी आरोप लगाया। और इसलिए उसके स्वामी ने उसी के मुँह से निकले शब्दों के कारण उसे दोषी ठहराया। यदि यह सेवक वास्तव में यह मानता कि उसका स्वामी कठोर और अनुचित है, तो वह अपने स्वामी से बहुत डरा हुआ होता और दण्ड से बचने के लिए उसने बहुत मेहनत की होती। लेकिन उसने जो कहा उस बात पर उसने स्वयं ही विश्वास नहीं किया। यह बात साबित करती है कि उस दास ने सच नहीं बोला, बल्कि अपनी लापरवाही और आलस्य के कारण उसने अपने स्वामी को ही दोषी ठहराने का प्रयास किया।

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

परिचय। दृष्टान्त की “कहानी” के संदर्भ में दृष्टान्त की “परिस्थिति” और “व्याख्या या अनुप्रयोग” हो सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के माहौल या उपलक्ष्य के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस माहौल में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति कहानी प्रायः कहानी के पहले पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के बाद में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका 19:1-11 में पाई जाती है।

यीशु ने दस मुहरों के दृष्टान्त को जक्कई के घर के आस-पास उपस्थित लोगों को बताया (लूका 19:2)। वहाँ उपस्थित कुछ लोग कुड़कुड़ाकर यीशु की आलोचना करने लगे, और कहने लगे कि वह एक पापी मनुष्य के यहाँ अतिथि बनकर जा रहा है, जो पहले ही भ्रष्ट चुंगी लेनेवालों का सरदार है (लूका 19:7), जबकि अन्य लोग यीशु को यह कहता सुन बहुत आनंदित थे कि “वह खोये हुए लोगों को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है” (लूका 19:10)। यीशु ने यह दृष्टान्त लोगों से इसलिए कहा,

क्योंकि वे सोचते थे, कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट होने वाला है (लूका 19:11)। यीशु के समय में यहूदी निरंतर परमेश्वर के राज्य के प्रगट होने की बात जो रहे थे (यूहन्ना 6:15)। वे ऐसा मानते थे कि परमेश्वर का राज्य एक बाहरी सांसारिक राज्य के सामान होगा जो यरूशलेम और यहूदियों के केंद्र के रूप में होगा, और उन्हें ऐसा प्रतीत होता था कि परमेश्वर का राज्य बस अभी प्रगट होने वाला है। यहाँ तक कि यीशु के चेलों को भी ऐसा ही लगता था (मरकुस 10:35-45; प्रेरितों के काम 1:6)।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 19:12-27 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग कहानी में दिया गया है।

यह परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित है और विशेष रूप से यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर क्या होने के विषय में है। इसकी परिस्थिति बताती है कि इस दृष्टान्त को कुछ लोगों की सामान्य अपेक्षाओं को देखते हुए बताया गया होगा, क्योंकि उनका ऐसा मानना था कि परमेश्वर का राज्य बस अभी प्रगट होने वाला है (लूका 19:11)।

यीशु का उद्देश्य प्रगट होने वाले परमेश्वर के राज्य के बारे में कुछ हानिकारक विचारों को प्रभावित करना था :

मत्ती 8:11-12 और 21:42-44 के अनुसार, उसने यह प्रचार किया कि परमेश्वर का राज्य इस्राएल के एक राष्ट्र तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उसने इसमें दुनिया के सभी राष्ट्रों को शामिल किया था। इस दृष्टान्त में कहीं भी इस्राएल राष्ट्र की राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का कोई संकेत नहीं है।

लूका 19 के अनुसार, अपने चरण में परमेश्वर के राज्य की बाहरी अभिव्यक्ति में तत्काल भविष्य की बात नहीं बताई गई। राजा के रूप में उसके (यानी प्रभु यीशु मसीह के) आगमन से पहले काफी लम्बा समय बीत जाएगा। इसलिए उस समय के दौरान स्वामी द्वारा सेवकों को जो भी काम सौंपा गया है, उसे काम में लाना चाहिए।

मत्ती 25 और लूका 19 के अनुसार, प्रत्येक सेवक को परमेश्वर द्वारा प्रदत्त अपने कर्तव्यों के प्रदर्शन में विश्वासयोग्य और मेहनती होना चाहिए। अंतिम न्याय और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में अपने अंतिम रूप में परमेश्वर के राज्य की स्थापना के लिए, विश्वास और परिश्रम को पुरस्कृत किया जाएगा, जबकि अविश्वासी और लापरवाह लोगों को दण्डित किया जाएगा। परमेश्वर का राज्य पहले से ही मौजूद है (मत्ती 12:28) और इसलिए अब हमें पहले से ही सौंपे गए ज़िम्मेदारियों का फायदा उठाना चाहिए।

दृष्टान्त की पहली व्याख्या या अनुप्रयोग लूका 19:26 में पाई जाती है, “मैं तुमसे कहता हूँ, कि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा; और जिसके पास नहीं, उससे वह भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा।” अपने दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह अपने सभी सेवकों के साथ सभी बातों का लेखा लेगा। तोड़ों के दृष्टान्त के समान ही, इसके अनुप्रयोग में बहुत महत्वपूर्ण सिद्धान्त सीख मिलती है: जो भी मनुष्य उसे सौंपी गई क्षमताओं (तोड़े या मुहरों के सामान) और अवसरों का फायदा उठाएगा और इन बातों का अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करेगा, उसे पुरस्कृत किया जाएगा। लेकिन जो कोई भी अपनी क्षमताओं और अवसरों का फायदा उठाने में असफल रहा और फलस्वरूप उसे कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ, उसे दण्डित किया जाएगा। परमेश्वर ने हमें जो भी कुछ सौंपा है, उसका उपयोग करने की उपेक्षा करने से, हम वह सब कुछ खो देंगे जो मूल रूप से हमें सौंपा गया था। केवल तोड़ों और योग्यता का उपयोग करने से, मनुष्य अपने आत्मिक धन को बढ़ाएगा!²⁴

²⁴ जो भी कोई व्यक्ति शिष्यता समूह, बाइबल अध्ययन समूह, या कलीसिया के अन्य सेवा कार्यों में भाग लेने वाले अवसरों का लाभ उठाने में असफल रहता है, तो अंततः उसके पास जो कुछ है, वह सब खो देगा!

दृष्टान्त की दूसरी व्याख्या या अनुप्रयोग लूका 19:27 में पाई जाती है। अपने दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह अपने सभी लोगों (पृथ्वी पर सभी लोगों) का न्याय करेगा। जिस किसी ने भी अपने ऊपर यीशु मसीह को राजा होने से अस्वीकार कर दिया उसे कठोर दण्ड दिया जाएगा। यूहन्ना 3:18,36 और 2थिस्सलुनीकियों 1:7-10 के अनुसार, विशेषकर सुसमाचार (यीशु मसीह के सुसमाचार) को अस्वीकार करने पर कठोर दण्ड दिया जाएगा। वे शत्रु, जो अपने ऊपर यीशु मसीह को राजा नहीं बनाना चाहते, वे दण्ड (उसके क्रोध, अस्वीकृति और नरक में दण्ड) के पात्र हैं। प्रत्येक व्यक्ति जो पाप का कारण बनता है और बुराई²⁵ करता है उसे परमेश्वर के राज्य से बाहर निकाल दिया जाएगा और आग के कुण्ड (नरक) में डाल दिया जाएगा (मत्ती 13: 40-42)।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र-बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

धनी मनुष्य राजपद प्राप्त करता है। यह एक प्रासंगिक विवरण है, क्योंकि यह यीशु की ओर संकेत करता है। यीशु दृष्टान्त की प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग करके यह प्रकट कर रहा था कि, अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद, वह स्वर्ग में परमपिता परमेश्वर के पास जाएगा, जहाँ वह सम्पूर्ण सृष्टि पर अधिकार प्राप्त करेगा! उसे अपने उद्धार के निपुण कार्य के लिए पुरस्कार के रूप में यह राज प्राप्त होगा (मत्ती 28:18; फिलिप्पियों 2:5-11; प्रकाशितवाक्य 5:1-14)। राजाओं के राजा के रूप में, यीशु मसीह स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठेंगे और वह कलीसिया के हित में सम्पूर्ण सृष्टि पर शासन करेंगे (इफिसियों 1:20-23; प्रकाशितवाक्य 1:5)।

उसने अपने दस दासों में प्रत्येक को एक-एक मुहर को दिया। महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि प्रत्येक दास को कितना प्राप्त हुआ, बल्कि यह, कि प्रत्येक दास को एक ही राशि मिली, अर्थात् एक मुहर! यीशु यह नहीं समझाते, कि एक मुहर का क्या अर्थ है। बल्कि यह निश्चित रूप से यीशु मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच अपने सेवकों को सौंपे गए कार्य का प्रतिनिधित्व करता है। तोड़ों के दृष्टान्त के विपरीत, राजा अपने प्रत्येक विश्वासी दास को उतने ही धन से पुरस्कृत करता है, जितना उसने कमाया। इससे यह पता चलता है कि दास वे लोग हैं जिन्हें एक विशेष कार्य सौंपा गया है, और जिसमें प्रत्येक दास के लिए यह कार्य एक समान ही कार्य है। यह निश्चित रूप से उस सौंपे गए कार्य का प्रतीक है, जिसे यीशु ने संसार में अपने प्रत्येक सेवक को सौंपा था। उस सन्दर्भ के प्रकाश में, जिसमें यीशु ने कहा, “मनुष्य का पुत्र खोये हुआओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है”, मुहर संसार में खोए हुए लोगों को सुसमाचार सुनाने और उन्हें चेला बनाने के कार्य का प्रतिनिधित्व कर सकती है। लेकिन फिर भी, हम इस बात को इस तरह नहीं देख सकते, क्योंकि यीशु इस दृष्टान्त में मुहर के अर्थ को नहीं बताते हैं, इसलिए मुहर का एक विशेष अर्थ मानना गलत होगा। जोर इस बात पर नहीं है कि उनके सेवकों को

²⁵ लौटरी लगने के बारे में सोचना, जुआ खेलना, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, कैसीनो खेलना, नशीले पदार्थों के वितरण और आदान-प्रदान करना, अश्लील चित्र या वीडियो देखना, मनुष्यों को बंधुआ बनाना, प्रेम-प्रसंग की चाहत रखने वाले लड़के, बाल-मजदूरी और बाल-सैनिक आदि।

क्या सौंपा गया था, बल्कि इस बात पर है कि उन्हें क्या काम सौंपा गया था।

सौंपा गया काम (कार्य)। यह विवरण प्रासंगिक है, क्योंकि यह केंद्रीय बिन्दु या दृष्टान्त के मुख्य संदेश की ओर इशारा करता है। धनी मनुष्य ने अपने दासों को आदेश दिया, "मेरे लौट आने तक लेन-देन करना।" हालाँकि एक मुहर एक तोड़े से बहुत छोटी थी, इस कहानी में जोर धन की मात्रा पर नहीं, बल्कि धन के साथ क्या किया जाता है उस बात पर जोर दिया गया है। धन का उपयोग उस समय तक काम करना चाहिए, जब तक धनी मनुष्य राजपद पाकर लौट न आए! परमेश्वर के राज्य के लोगों को यीशु मसीह द्वारा उन्हें जो कुछ भी सौंपा गया है उसका उपयोग करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। उन्हें जो सौंपा गया है, उसे अप्रयुक्त नहीं छोड़ना चाहिए। उन्हें अपने सौंपे गए कार्य को पूरी लगन और परिश्रम से करना चाहिए। यदि, उदाहरण के लिए, "मुहर" सुसमाचार की उद्घोषणा का प्रतिनिधित्व करती है, तो कार्य सुसमाचार का पालन करना और संसार में खोए हुए सुसमाचार की घोषणा करना है। और अगर "मुहर" समाज में किसी कार्य या समारोह में परमेश्वर की सेवा करने के कार्य का प्रतिनिधित्व करती है (उदाहरण के लिए, एक दुकानदार या डॉक्टर होने के नाते), तो उस सौंपे गए कार्य को पूरी ईमानदारी और लगन से पूरा किया जाना चाहिए।

कुछ लोगों ने उस धनी मनुष्य से घृणा की और उसे अस्वीकार कर दिया, लेकिन फिर भी उसे राजपद मिला! तोड़ों के दृष्टान्त में, यीशु केवल दासों की बात करते हैं, लेकिन मुहरों के दृष्टान्त में, वह नगर के रहने वालों (लोगों) (लूका 19:14) की भी बात करता है। यह प्रासंगिक विवरण है, क्योंकि यीशु अंततः यहूदी और और अन्यजातियों पर अगुवाई के प्रयासों का उल्लेख कर रहे थे ताकि वह उसके राजाओं के राजा बनने से हताश हो सके।²⁶ यहूदियों ने यीशु को मार डालने के लिए षड्यंत्र बनाया और रोमियों ने वास्तव में उसे क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला (प्रेरितों के काम 2:23)। हालाँकि, यीशु को "राजाओं का राजा" बनने से रोकने की उनकी तमाम प्रयास विफल रहे (प्रकाशितवाक्य 1:5; 19:16)। यीशु मसीह ने सम्पूर्ण सृष्टि पर राज करने का अधिकार प्राप्त किया (प्रेरितों के काम 2:24)। यीशु मसीह स्वयं "राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया" (भजन 118: 22-23; मत्ती 21:42)।

राजपद पाकर लौटने पर, उसने अपने सेवकों और अन्य लोगों को पुरस्कृत किया या दण्डित किया। धनी मनुष्य का राजपद पाकर राजा लौटना, यीशु मसीह के महिमान्वित दूसरे आगमन प्रतीक है। अंतिम न्याय के दिन में, वह अपने विश्वासयोग्य दासों को उनकी विश्वासयोग्यता के अनुपात में पुरस्कृत करेगा (1 कुरिन्थियों 3:11-15)। उन्हें नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में अधिक से अधिक सेवा प्रदान करने का अवसर दिया जाएगा।

अंतिम न्याय के दिन में, संसार के सभी लोगों (रहने वाले लोगों) का यीशु मसीह में उनके विश्वास या उनके अविश्वास (या अन्य देवताओं और धर्मों में झूठे विश्वास) के अनुसार उनका न्याय किया जाएगा। वह हर एक का उनके कामों के अनुसार न्याय करेगा : कि उन्हें जो कुछ उन्हें सौंपा गया था, उसके साथ उन्होंने क्या किया (रोमियों 2:6)। इस दृष्टान्त का वास्तविक अर्थ यह है कि दुनिया में हर एक व्यक्ति को जो कुछ भी यीशु मसीह ने उसे सौंपा है उसका सर्वोत्तम संभव उपयोग करना चाहिए (इफिसियों 5:15-16 से तुलना करें), चाहे वह यीशु मसीह को स्वीकार करे या न करे। इसके आलावा संदर्भ के प्रकाश में, लोगों को उत्सुकता से उद्धार के सुसमाचार का उपयोग करना चाहिए, जो उन्हें प्रचार किया गया है।

²⁶ आज देशों के उन नेताओं के बारे में सोचें जो सुसमाचार के प्रसार में बाधा डालने और मसीहियों को अपने देश के से बाहर करने के लिए हर तरह के उपाय करते हैं। ऐसे लोगों की मानसिकता यीशु मसीह और मसीहियों के प्रति अक्सर उत्पीड़न को उत्पन्न करती है, और उनकी घृणा यहाँ तक होती है कि वह हत्या में बदल जाती है।

राजा के निकट खड़े लोग (पद 24)। वे कहानी में के लोग हैं न कि कहानी सुनने वाले लोग। साथ ही, पद 26-27 में बोलने वाला मनुष्य राजा है, न कि प्रभु यीशु। फिर भी, जो कहा जाता है वह यीशु मसीह के मन की बातों की ओर इशारा करता है। मत्ती 13:41 में वे स्वर्गदूत हैं जो यीशु मसीह के निर्णयों का पालन करते हैं।

4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य सन्देश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात्, एक केन्द्र-बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 19:11-27 में दस मुहर का दृष्टान्त “परमेश्वर के राज्य में पुरस्कार” के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। “लोगों को यीशु मसीह ने जो कुछ भी सौंपा है, उसका सर्वोत्तम संभव उपयोग करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। परमेश्वर विश्वासयोग्यता और परिश्रम को पुरस्कृत करेगा, और वह अविश्वासी और लापरवाह लोगों को दण्डित करेगा!” संदर्भ के प्रकाश में, विश्वास में यह भी शामिल है कि कोई व्यक्ति यीशु मसीह और सुसमाचार के विषय में कैसी प्रतिक्रिया देता है। एक पूर्व भ्रष्ट चुंगी लेनेवाले को बचाने के लिए यीशु की आलोचना करने के बजाय, प्रत्येक व्यक्ति को यीशु मसीह इस बात में प्रतिक्रिया देनी चाहिए कि, वह खोये हुएों को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया।

निःस्वार्थ सेवा, परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग यीशु मसीह द्वारा सौंपे गयी चीजों को अपने लिए न बचाकर सेवा करते हैं। वे इसे काम करने के लिए लेन-देन करते हैं और जो कुछ उन्हें सौंपा गया, उसको बढ़ाने का हर संभव प्रयास करते हैं। यदि सुसमाचार प्रचार करने का कार्य किसी व्यक्ति को सौंपा गया है, तो उसे यीशु के नक्शेकदम पर चलना चाहिए और खोए हुएों को ढूँढ़ने और उनको बचाने के लिए बाहर जाना चाहिए। यदि अलग कार्य है, तो भी उसे बाहर जाना चाहिए और समाज में प्रभाव डालने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए और अपनी उपलब्धियों के फलों को बढ़ाना चाहिए।

यीशु मसीह उन लोगों से यह वायदा करते हैं कि, जो उसे और उसके सन्देश (बाइबल) को स्वीकार करते हैं, वे आत्मिक रूप से समृद्ध हो जाएंगे! लेकिन वह उन लोगों के लिए यह भी चेतावनी देता है कि, जो उसे और उसके सन्देश को अस्वीकार करते हैं, वे आत्मिक रूप से गरीब हो जाएंगे। अपने कार्यों की उपेक्षा करके, वे अंततः सब कुछ खो देंगे!

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक

वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के प्रत्येक गद्यांशों में से जो कुछ भी पढ़ाया जाता है, उसकी तुलना में दृष्टान्त क्या सिखाता है?

दाख की बारी में मजदूरों का दृष्टान्त, तोड़ों का दृष्टान्त, और दस मुहर के दृष्टान्त का मुख्य सन्देश यीशु मसीह के दूसरे आगमन से सम्बन्धित हैं। सभी लोगों (और निश्चित रूप से सभी विश्वासियों) को यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि जो कुछ भी मसीह ने उन्हें सौंपा है या जिन पर उन्हें उसने भण्डारी ठहराया है, उन सभी का लेखा-जोखा उन्हें उसे देना होगा।

हालाँकि, इनमें से प्रत्येक दृष्टान्त का एक महत्वपूर्ण अर्थ है, लेकिन अलग सत्य को भी सिखाता है:

(1) दाख की बारी के मजदूरों का दृष्टान्त।

पढ़ें मत्ती 20:1-16। इस दृष्टान्त में, एक गृहस्थ ने दिन के अलग-अलग समय में मजदूरों को काम पर रखा था, लेकिन दिन के अन्त में, उसने उन सभी को बिलकुल एक ही समान मजदूरी दी। हालाँकि मजदूरों ने अलग-अलग मात्रा में काम किया, फिर भी अंत में, वह सभी को एक ही समान मजदूरी देता है।

दृष्टान्त सिखाता है कि परमेश्वर का पुरस्कार इस बात पर आधारित नहीं है कि परमेश्वर किसी व्यक्ति को कब बुलाता है या व्यक्ति कितने समय से विश्वासी है। परमेश्वर अपनी कृपा से हर उस व्यक्ति को अनन्त जीवन देता है जो उसके पास आता है, चाहे वह पहले प्रभु के पास आये या बाद में। परमेश्वर सभी विश्वास करने वाले लोगों का समान रूप से उद्धार करता है, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह अपने जीवन के किस स्तर पर परिवर्तित होकर प्रभु पर विश्वास करता है (लूका 23:40-43)! जिन मजदूरों को दिन के अंत में काम पर रखा गया था, उन्हें दिन के आरंभ में काम पर रखे गए लोगों के समान ही मजदूरी मिली क्योंकि उन सभी ने काम पर रखे गए समय के लिए पूरी ईमानदारी और लगन से काम किया।

(2) तोड़ों का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 25:14-30। इस दृष्टान्त में, एक स्वामी ने अपने तीनों दासों को अलग-अलग धनराशि दी, लेकिन उसके लौटने पर उसने काम करने वाले दासों को एक ही जैसे पुरस्कारों से पुरस्कृत किया, बाद में इस बात को खोजने पर यह ज्ञात हुआ कि जो भी दोनों को सौंपा गया था, वह उसका दोगुना हो गया।

दृष्टान्त सिखाता है कि परमेश्वर के पुरस्कार दासों की विभिन्न क्षमताओं और जीवन में अलग-अलग अवसरों के कारण सफलता या परिणामों की विभिन्न योग्यताओं पर आधारित नहीं होते, बल्कि दासों की विश्वासयोग्यता और परिश्रम पर आधारित होते हैं, भले ही उनमें से प्रत्येक को कितनी भी क्षमताएँ और अवसर सौंपे हों! परमेश्वर अनुग्रहकारी रूप से विश्वासयोग्य और परिश्रमी व्यक्ति को पुरस्कार देते हैं। अधिक प्रतिभाओं (तोड़ों) और अधिक परिणामों वाले सेवक को कम प्रतिभाओं (तोड़ों) और कम परिणामों वाले दासों की तुलना में अधिक पुरस्कार नहीं मिलेगा, क्योंकि दोनों ही समान रूप से विश्वासयोग्य बने रहे।

(3) दस मुहर का दृष्टान्त।

पढ़ें लूका 19:11-27। इस दृष्टान्त में धनी मनुष्य ने दस दासों में हर एक को एक समान ही धनराशि दी, लेकिन उसके लौटने

पर उन्होंने अलग-अलग पुरस्कारों के साथ उनके काम को पुरस्कृत किया, बाद में इस बात को खोजने पर यह ज्ञात हुआ कि कुछ ने दूसरों की तुलना में अधिक लाभ कमाया था।

दृष्टान्त सिखाता है कि परमेश्वर के पुरस्कार, विभिन्न क्षमताओं और अवसरों को देखते हुए, दासों के विश्वास और परिश्रम के विभिन्न अंशों पर आधारित होते हैं। विश्वास और परिश्रम की अलग-अलग उपलब्धियों (डिग्री) के लिए अलग-अलग पुरस्कार हैं! जिस दास में अधिक विश्वासयोग्यता और अधिक परिश्रम हैं, उसे भी एक बड़ी जिम्मेदारी दी जाएगी (1 कुरिन्थियों 3:12-15 से तुलना करें)।

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षाओं का सारांश।

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में पुरस्कारों के बारे में दृष्टान्तों की मुख्य शिक्षाएँ या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और वह हमें क्या *बनना* या क्या *करना* सिखाते हैं?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर कैसा है।

अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर अनुग्रह के द्वारा प्रत्येक मसीही विश्वासी को पुरस्कृत करेंगे। हालाँकि, ये सभी पुरस्कार इसलिए नहीं दिए गए कि मसीही जन उनके काबिल हैं या उन्होंने इन्हें अर्जित किया है, बल्कि इसलिए कि सब कुछ परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह पर आधारित है। इफिसियों 2:10 के अनुसार, यहाँ तक कि "जो कार्य" मसीही जन करते हैं, वे परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित होते हैं।

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें किसके समान बनना है।

सही दृष्टिकोण या भावना के साथ परमेश्वर की सेवा करना और विश्वासयोग्यता और लगन से परमेश्वर की सेवा करना महत्वपूर्ण है :

परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग आत्मिक मामलों²⁷ के सम्बन्ध में काम के लिए मजदूरी की भावना के शिकार होने से बचते हैं, और इसके बजाय कि वे जिसे भी उपयुक्त समझे उसे पुरस्कार देने वाले लोगों को पुरस्कृत करने के लिए परमेश्वर के ईश्वरीय अधिकार को मान्यता देते हैं।

परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग उन क्षमताओं और अवसरों के सम्बन्ध में विश्वासयोग्य और मेहनती हैं, जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें सौंपे हैं। परमेश्वर सफलता या परिणामों को पुरस्कृत नहीं करते, बल्कि वह विश्वासयोग्य और परिश्रमी लोगों को पुरस्कृत करता है।

परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग यह सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव प्रयास करते हैं कि उन्हें क्या सौंपा गया है, अर्थात् वे यथासंभव विश्वासयोग्य और मेहनती होते हैं। परमेश्वर विश्वास और परिश्रम की विभिन्न उपलब्धियों (डिग्री) को अलग-अलग पुरस्कार देते हैं।

(3) परमेश्वर के राज्य में एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त।

²⁷ अन्य धर्म यह सिखाते हैं – बौद्ध धर्म के अनुसार निर्वाण में जाना, हिन्दू धर्म के मोक्ष प्राप्त करना और इस्लाम में जन्नत में पुरस्कार पाना आदि।

“क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा: परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा” (मत्ती 25:29)। परमेश्वर ने हमें जो सौंपा है, यदि हम उसका उपयोग नहीं करते हैं, तो हम वह सब कुछ खो देंगे जो मूल रूप से हमें सौंपा गया था। लेकिन जब हम परमेश्वर द्वारा सौंपे गए वरदानों का उपयोग करते हैं, तब हमारी आत्मिक बढ़ोतरी होगी और हम धनवान बन जाएँगे!

/ यीशु के दृष्टान्त /
अंजीर के पेड़ से शिक्षा और सदा तैयार रहो

मत्ती 24:32-35 में “अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त”
और लूका 12:35-40 में “सदा तैयार रहो का दृष्टान्त”
परमेश्वर के राज्य में जागते रहने
के बारे में शिक्षा देते हैं

क. अंजीर का पेड़

पढ़ें मत्ती 24:32-35.

1. दृष्टान्त की स्वभाविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े वास्तविक तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

यह दृष्टान्त वास्तव में एक कहानी-चित्रण से अधिक एक उदाहरणात्मक तुलना है।

वृक्षा। यीशु ने अंजीर के पेड़ के बारे में जो कहा, वह शायद सदाबहार पेड़ों के अपवाद के साथ अन्य पेड़ों के बारे में भी कहा गया होगा (लूका 21:29)।

पत्ते बाहर निकलते हैं। जब एक वृक्ष की अपनी कलियों, टहनियों और नई पत्तियों को अंकुरित करना शुरू करता है, तो सब आप ही जान लेते हैं कि ग्रीष्मकाल निकट है।

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती अध्याय 24:1-31 में पायी जाती है।

मत्ती 24 और 25 में आखिरी समय के लिए यीशु के शिक्षण शामिल हैं। इन दोनों अध्यायों का संदेश यह है कि मसीहियों को न्याय करने वाले और पुरस्कार देने वाले के रूप में मसीह के दूसरे आगमन के लिए जागते रहना चाहिए। इन अध्यायों की भविष्यवाणियों में निकट भविष्य में होने वाली घटनाओं और अंत समय में होने वाली घटनाओं दोनों का संदर्भ पाया जाता है। यह शिक्षण यरूशलेम पर आने वाले न्याय और दूसरे आगमन पर पूरी दुनिया के अंतिम न्याय से आपस में जुड़े हुए हैं। यरूशलेम के ऊपर आने वाला संकट एक ऐसे उदाहरण के रूप में कार्य करता है, जो कि अंत के समय के क्लेश का

चित्रण है।

मत्ती 24:1-3 । स्थिति । इस शिक्षण की स्थिति चेलों के दो प्रश्न हैं : “मंदिर का विनाश कब होगा?” और “मसीह के आने और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?”

मत्ती 24:4-14 । पीड़ाओं का आरम्भ। सभी प्रकार के क्लेश, जैसे युद्ध, अकाल और भूकम्प, जगत के सभी देशों में सुसमाचार के प्रचार के साथ होंगे। यह सब अन्त से पहले होगा।

मत्ती 24:15-28 । यरूशलेम के क्लेश के कारण महान क्लेश । यीशु ने कहा कि जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणा वाली वस्तु को पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखो, तब यरूशलेम में क्लेश होगा। यह तब पूरा हुआ जब रोम की सेनाओं ने अपने सम्राट की मूर्तियों को ले जाकर मंदिर में खड़ा कर दिया और 70वीं ईसवी में यरूशलेम शहर को भी नष्ट कर दिया (लूका 21:20)।

हालाँकि, यीशु ने कहा था कि यरूशलेम के विनाश के समय तुरन्त इस काल का अन्त न होगा। महान क्लेश के समय मानव जाति के पूरे इतिहास में असमान, महान संकट का समय होगा। वास्तविक मसीहियों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि झूठे मसीहा या झूठे भविष्यद्वक्ता अपनी झूठी शिक्षाओं और चमत्कारों को दिखाकर उन्हें भटका नहीं सकते हैं।

मत्ती 24:29-31. मसीह का दिखाई देना। मसीह का दूसरा आगमन अचानक और पूरी तरह से अप्रत्याशित होगा। यह एक छोर से दूसरे छोर तक एक बिजली के समान हर जगह दिखाई देगा। तुरही के बड़े शब्द के कारण यह हर जगह सुनाई देगा, और मसीह अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे चारों दिशा से उसके चुने हुएों को इकट्ठा करेंगे (यानी सभी सच्चे मसीहियों को)।

मत्ती 24:32-35. अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त। जब चले उन पराकाष्ठा की घटनाओं की श्रृंखला में “उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखें”, तो वे जान जाएँगे कि यरूशलेम और मंदिर का विनाश निकट है। लेकिन “जब तक यह बातें (मसीह के पहले और दूसरे के बीच में) निश्चित रूप से पूरी न हो लें, तब तक पीढ़ी (यहूदी राष्ट्र के रूप में इस तरह के लोग) का अन्त नहीं होगा।”

मत्ती 24:36-44. हमेशा जागते और तैयार रहने की ज़रूरत। नूह के समय में बाढ़ अचानक और अनपेक्षित थी। मसीह का दूसरा आगमन भी इसी तरह अचानक और अनपेक्षित होगा। मसीह का आना पूरी तरह से अपूर्वानुमेय है। किसी को भी उस दिन या उस घड़ी का पता नहीं है! अपने दूसरे आगमन पर, मसीह निश्चित रूप से अनन्त संगति में हर व्यक्ति का स्वागत नहीं करेगा। मसीही हवा में प्रभु से मिलेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:17) और अपने दूसरे आगमन (2 थिस्सलुनीकियों 1:10) में चमत्कार करने के लिए स्वर्गदूतों द्वारा बादलों में छीन लिया जाएगा या बादलों में कैद कर लिया जाएगा। लेकिन अविश्वासियों को पीछे छोड़ दिया जाएगा (छोड़ दिया) (मत्ती 24:40-41)। यीशु मसीह के दूसरे आगमन के दिन उनके इस शानदार और हर्षित स्वागत में कोई हिस्सा नहीं होगा, लेकिन बाद में उसी दिन स्वर्गदूत उन्हें मसीह के सिंहासन के सामने न्याय (नाश) करने के लिए प्रेरित करेंगे (मत्ती 25:31-33)।

मत्ती 24:45-51। विश्वासयोग्य और अविश्वस्योग्य दास का दृष्टान्त (लूका 12:41-48)। जागते और तैयार रहने का अर्थ है परमेश्वर के राज्य में विश्वासयोग्य और मेहनती सेवा।

मत्ती 25:1-13। दस कुँवारियों का दृष्टान्त। प्रतिदिन जागते और तैयार रहना प्रत्येक मसीही के लिए आवश्यक है, क्योंकि मसीह के दूसरे आगमन का समय पूरी तरह से अज्ञात है।

मत्ती 25:14-30। तोड़ों का दृष्टान्त। मसीह के दूसरे आगमन से पहले प्रत्येक मसीही को परमेश्वर द्वारा दिए गए तोड़ों और अवसरों का उपयोग करने में विश्वास और परिश्रम करना और अंतिम न्याय का दिन आवश्यक है।

मत्ती 25:31-46। भेड़ों और बकरियों का दृष्टान्त। यह मसीह के दूसरे आगमन पर सच्चे मसीहियों और गैर-मसीहियों के अंतिम न्याय का वर्णन करता है।

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 24:32 में पाई जाती है।

नवोदित अंजीर के पेड़ के दृष्टान्त की भाषा शायद यशायाह 34:4 में निहित है, “आकाश की पूरी सेना गल जाएगी, आकाश को खर्रे की तरह लपेटकर रख दिया जाएगा। जैसे अंगूर की बेल के पत्ते और अंजीर के फल सूखकर गिर जाते हैं, वैसे ही आकाश की सेना मुरझाकर गिर जाएगी।” प्रकृति के दायरे में आक्षेप (तुलना करें इब्रानियों 12: 26-27) की तुलना अंजीर के पेड़ से गिरने वाले पत्तों से की जाती है। यीशु ने अपने दूसरे आगमन से पहले आकाश की शक्तियों के हिलने के रूप में महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में बात की थी। अंजीर का पेड़ एक प्रतीक हो सकता है जो एक आंधी से हिल जाता है। अब वह उसी पेड़ के बारे में एक दृष्टान्त से शिक्षा देता है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग को मत्ती 24:33-35 में दिया गया है।

मत्ती 23:37-24:3 में, यीशु ने मंदिर सहित यरूशलेम के विनाश के बारे में बताया। उनके चेलों ने उनसे दो सवाल पूछे। यीशु के चेलों का पहला सवाल था, “यह कब होगा?” और दूसरा सवाल था, “तैरे आने का और जगत के अंत का क्या चिन्ह होगा?” “और” के लिए ग्रीक शब्द “kai” है और इसका अर्थ है “यह कहना चाहते हैं” (अर्थात्) (कहा जाता है: kai explicative)। यह तीसरा प्रश्न नहीं है, लेकिन यह बताता है कि “यीशु मसीह का आना” “दुनिया का अंत” होगा! मसीह के दूसरे आगमन के बाद इस पृथ्वी पर अधिक घटनाएँ नहीं होंगी²⁸। नवोदित अंजीर के पेड़ के दृष्टान्त की व्याख्या सीधे इन दो प्रश्नों से सम्बन्धित है: स्पष्टीकरण का पहला भाग (मत्ती 24:33) पहले प्रश्न से और स्पष्टीकरण का दूसरा भाग (मत्ती 24: 34-35) दूसरे प्रश्न से सम्बन्धित है।

चेलों का पहला प्रश्न है, “यह कब होगा?” इस सवाल का यीशु²⁹ यह जवाब देते हैं, “जब तुम इन सब बातों को देखो, वह निकट है, वरन् द्वार पर है” (मत्ती 24:33)। यीशु अपने चेलों से बात कर रहे थे। शब्द “जब तुम (बहुवचन, चले) इन सब बातों को देखो”, यीशु द्वारा बताए गयी विभिन्न भविष्यद्वाणियों की पूर्ति का उल्लेख करता है, जिन घटनाओं के साक्षी अभी तक उसके चेले रहे हैं! यीशु ने मंदिर सहित यरूशलेम के विनाश की भविष्यद्वाणी की। उसने भविष्यद्वाणी की थी कि मंदिर के पत्थर पर पत्थर भी न छोटेगा; जो ढाया न जाएगा। वे यह सब अपनी आँखों से देखेंगे: झूठे मसीह (मसीहा) और झूठे भविष्यद्वाक्ता उठ खड़े होंगे, लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा, जगह-जगह अकाल और भूकम्प आदि की चर्चा सुनोगे। यीशु ने इन सभी घटनाओं को “पीड़ाओं का आरम्भ” कहा (मत्ती 24:4-8)।

इस तरह की घटनाएँ 70 ईसवी में यरूशलेम के पतन से पहले ओर उसके सम्बन्ध में पहले हो चुकी है। यहाँ तक कि “उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को मंदिर के पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखो” (मत्ती 24:15-20) की भविष्यद्वाणी भी अपने ही

²⁸ उदाहरण के लिए सहस्राब्दी साम्राज्य (औषध विज्ञान का)।

²⁹ यीशु ने 30 A.D में ये शब्द बोले थे।

समय में पूरी हो चुकी है। 70 ईसवी में रोम की सेनाओं को उनके स्थानों पर उनके राजा की मूर्ति के चित्रों को ले जाने, मंदिर में खड़े रहने और मंदिर और यरूशलेम के विनाश का उल्लेख किया गया है (लूका 21:20)। इसलिए, मत्ती 24:33 का यह अर्थ निकालना स्वभाविक है कि जब मसीह के चेले इन सब बातों को होते हुए देखें, तो उन्हें पता होना चाहिए कि “यरूशलेम और उसके मंदिर का विनाश”, बहुत निकट है!

चेलों का दूसरा प्रश्न है, “तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?” यीशु ने इस प्रश्न का जवाब दिया, “जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा।” शब्द “चिन्ह” (ग्रीक: *sémaion*) यहाँ एक ऐसी घटना को दर्शाता है जो सृष्टि में या इतिहास में घटित होती है, लेकिन जो अपने आप को दूर करने की ओर इशारा करती है।³⁰ चेलों ने पूछा कि इतिहास की कौन सी घटनाएँ मसीह के दूसरे आगमन और जगत के अन्त का चिन्ह होगी? यरूशलेम के विनाश और विशेष रूप से मंदिर के विनाश के बारे में चेलों ने यीशु द्वारा कहे गए शब्दों की व्याख्या की थी जिसका अर्थ है “जगत का अन्त।” उनका ऐसा मानना आंशिक रूप से गलत था:

यीशु ने कहा कि एक तरफ यरूशलेम और उसके मंदिर के बीच की लंबी अवधि और दूसरी तरफ आने वाले मसीह के दूसरे युग के अंत के बीच हस्तक्षेप होगा।

यीशु ने समझाया कि उसके पहले आगमन (यरूशलेम और मंदिर को नष्ट करने) और उसके दूसरे आगमन (इस वर्तमान दुनिया का अंत होगा) के बीच लंबी अवधि के दौरान, मसीह के साथ मसीहियों के संबंध होने के कारण उन्हें सताया और मार डाला जाएगा, और सभी देश उनसे ईर्ष्या करेंगे। कई झूठे भविष्यवक्ता (मसीही धर्म से भी और अन्यजाति और राजनीतिक दलों से) कई उठ खड़े होंगे और धोखा देंगे। कई नाम के मसीही विश्वास से दूर हो जाएँगे, कलीसिया छोड़ देंगे और यहां तक कि एक-दूसरे के साथ विश्वासघात भी करेंगे। दुष्टता बढ़ेगी और प्रेम ठंडा पड़ जाएगा। लेकिन अंत आने से पहले, राज्य का सुसमाचार (अर्थात्, यीशु मसीह का राज्य) दुनिया के हर देश में सुनाया जाएगा (मत्ती 24:14)!

यह स्पष्ट है कि ये घटनाएँ जो दूसरे आगमन तक होती हैं, उन्हें मसीह के चेलों के छोटे समूह ने नहीं देखा। शब्द, “जब तुम (बारह शिष्य) इन सब बातों को होते हुए देखो” (मत्ती 24:33), केवल उन बातों का उल्लेख करते हैं जिन्हें यीशु मसीह के चेलों द्वारा देखा गया। और शब्द, “जब तक ये सब बातें पूरी नहीं हो जाती” उन बातों का उल्लेख करते हैं जो मसीह के दूसरे आगमन तक सदियों तक होती रहेंगी! वे समान बातों का संदर्भ नहीं देते हैं!

मत्ती 24:35 इस वर्तमान स्वर्ग और पृथ्वी (उत्पत्ति 1 की सृष्टि) के अंत की ओर इशारा करता है। मत्ती 24:36 - 25:46 भी मसीह के दूसरे आगमन के आसपास की घटनाओं को संदर्भित करता है। इसलिए, संदर्भ से पता चलता है कि मत्ती 24:34 में “ये सभी बातें” शब्द यीशु के पहले और दूसरे आगमन के बीच सदियों के दौरान होने वाली बातों के साथ-साथ दूसरे आगमन के समय में भी होगी!

शब्द “इस पीढ़ी” को समकालीनों के एक समूह तक सीमित करने की आवश्यकता नहीं है, न तो यीशु के समय में, न

³⁰ यूहन्ना के सुसमाचार में चिन्ह: पानी का दाखरस में बदलना एक चिन्ह था कि यीशु अनन्त जीवन का स्रोत है (यूहन्ना 2:11; 4:14)। बीमारों की चंगाई यह चिन्ह थी कि यीशु प्रभु का सेवक है (यूहन्ना 6:2; मत्ती 8:17)। 5000 लोगों को आश्चर्यकर्म के द्वारा भोजन इस बात का चिन्ह था कि यीशु जीवन की रोटी है (यूहन्ना 6: 14,26)। जन्म के अंधे व्यक्ति को चंगाई मिलना इस बात का चिन्ह थी कि यीशु दुनिया का प्रकाश है (यूहन्ना 9:16)। लाज़र का पुनरुत्थान इस बात का चिन्ह था कि यीशु पुनरुत्थान और जीवन है (यूहन्ना 11:47)। बंद दरवाजों के माध्यम से चलना इस बात का संकेत था कि यीशु के पास “दाऊद की कुंजी” है और वह उन दरवाजों को बंद कर देता है जिन्हें कोई नहीं खोल सकता है और ऐसे दरवाजे खोलता है जिन्हें कोई बंद नहीं कर सकता है। (प्रकाशितवाक्य 3: 7-8) (तुलना करें यूहन्ना 20:30-31)।

वर्तमान इक्कीसवीं सदी में! यह एक ऐसे अर्थ का उल्लेख कर सकता है जो इससे बढ़कर है और इसका अर्थ है "इस तरह के लोग", उदाहरण के लिए, "यहूदी, किसी भी समय या किसी भी उम्र में" (व्यवस्थाविवरण 32:5,20; भजन संहिता 12:7; 78:8; ; प्रेरितों 2:40; फिलिप्पियों 2:15; इब्रानियों 3:10)। इसलिए, मत्ती 24:34 में "पीढ़ी" शब्द का यह अर्थ भी हो सकता है। यीशु ने घोषणा की कि यहूदी राष्ट्र तब तक नहीं टलेगा जब तक कि दूसरे आगमन तक सब बातें पूरी न हो जायें (यिर्मयाह 31:36)। इस्राएल ने, अपने सभी विशेषाधिकारों के बावजूद, अपने मसीहा को अस्वीकार कर दिया था। इसलिए यह स्वभाविक लग सकता है कि उन्हें एक राष्ट्र के रूप में मिटा दिया जाएगा। हालाँकि, यीशु ने भविष्यद्वाणी की थी कि दूसरे आगमन तक यहूदी एक राष्ट्र के रूप में मौजूद रहेंगे।

प्रेरित पौलुस ने भी भविष्यद्वाणी की थी कि हर युग में इस्राएल राष्ट्र के एक चुनावी हिस्से (अवशेष) को बचाया जाएगा, जैसे कि अन्यजातियों से चुना गया हिस्सा बचाया जाएगा (रोमियों 11:1-2,25-26)। हालाँकि यीशु के चेले इन सब बातों को नहीं देखते, फिर भी ये सारी बातें जरूर होंगी! हालाँकि वर्तमान स्वर्ग और पृथ्वी टलने जा रहे हैं, यीशु के शब्द कभी भी नहीं टलेंगे (मत्ती 24:35)। यीशु के वचन वह आधार हैं जिस पर परमेश्वर की सन्तानें अपना विश्वास स्थापित करते हैं!

निष्कर्ष: मत्ती 24:33 मत्ती 24:3 अ में यीशु के चेलों द्वारा पूछे गए प्रश्न का जवाब है। और मत्ती 24:34, मत्ती 24:3 ब का जवाब है।

मत्ती और मरकुस की व्याख्या या अनुप्रयोग यूहन्ना से भिन्न है। जबकि मत्ती और मरकुस अंत समय में पूरी दुनिया के पतन के एक प्रकार के रूप में यरूशलेम के पतन की बात करते हैं, लूका अन्त में यरूशलेम के पतन (लूका 21:20-24) और दुनिया के पतन के बीच अंतर करता है (लूका 21: 25-28)। जबकि मत्ती और मरकुस में "महान क्लेश" (मत्ती 24:21,29; मरकुस 13:19,24) शब्दों का दोहरा संदर्भ है अर्थात् यरूशलेम के पतन पर क्या होगा (मत्ती 24:15-20 ; मरकुस 13:14-18) और मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले क्या होगा (मत्ती 24: 21-31; मरकुस 13:19-27), लूका में वे केवल यरूशलेम के पतन पर क्या होगा इसका उल्लेख किया गया है (लूका 21:23)!

इसलिए, लूका में, वाक्य "जब तुम इन सब बातों को होते हुए देखो" (लूका 21:31) केवल उन घटनाओं को संदर्भित करता है जो यीशु के दूसरे आगमन के संबंध में होगा जैसा कि लूका 21:25-28 में लिखा हुआ है और जो केवल उस समय रहने वाले लोग देख सकेंगे। लूका के अनुसार, जब ये सब बातें होंगी, तो अंत समय में रहने वाले मसीही जान लेंगे कि "परमेश्वर का राज्य निकट है", अर्थात्, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में परमेश्वर का राज्य अपनी अंतिम महिमा और वास्तविकता बनने की ओर है। फिर भी, तीनों सुसमाचार कहते हैं कि "यह पीढ़ी", यानी "एक राष्ट्र के रूप में यहूदी लोग" तब तक अस्तित्व में नहीं आएंगे जब तक कि ये बातें पूरी न हो जायें।

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें। यह दृष्टान्त वास्तव में एक कहानी-चित्रण से अधिक एक उदाहरणात्मक तुलना है जिसमें कुछ विवरण अप्रासंगिक हो सकते हैं।

4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य सन्देश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र-बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 24:32-35 में “अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त” और लूका 12:35-40 में सदा तैयार रहो का दृष्टान्त “परमेश्वर के राज्य में जागते रहने” के बारे में शिक्षा देते हैं।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। “मसीह की भविष्यवाणियां उन बातों के बारे में हैं जो उसके पहले और दूसरे आगमन के बीच की अवधि में घटित होंगी और निश्चित रूप से मसीहियों को यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए जागते और तैयार रहना चाहिए!”

जागते रहना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोगों का मानना है कि मसीह की भविष्यवाणियां उसके दूसरे आगमन के संबंध में हैं और इसलिए वह दूसरे आगमन के लिए सतर्क और तैयार हैं।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या परक गद्यांशों से करें।

अध्याय 45 देखें

6. दृष्टान्त के मुख्य उपदेशों को संक्षेप में बताइए।

अध्याय 45 देखें

ख. सदा तैयार रहने वाले दास

पढ़ें लूका 12:35-40

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

सेवा के लिए तैयार रहें। मूल शब्द का शाब्दिक अर्थ है, “तुम्हारी कमर बंधी रहे”। सामान्य लोगों के साथ-साथ दासों ने भी लंबे समय तक लहराने वाले वस्त्र पहने। जब वे भागते या काम करते थे, तो उसे वे एक कमरबंध से बांध दिया करते थे, ताकि उनके कपड़े कामों में बाधा न डालें (प्रेरितों के काम 7:58)। प्रतीकात्मक रूप से, इस चित्र का अर्थ है, “सेवा के लिए तैयार रहना”।

तुम्हारे लिए जलते रहें। जब उनका स्वामी दूर एक विवाह में भाग ले रहा था, तब दासों को पता नहीं था कि वह कब

लौटेगा। विवाह की दावत में कई दिन या पूरे हफ्ते लग सकते थे (न्यायियों 14:17)। इस कहानी में, दासों ने उससे उस रात लौटने की उम्मीद की। इसलिए, जब वे लौटा तो अपने स्वामी की सेवा के लिए तैयार रहने के लिए वे जागते रहे। अपने दीपक जलाने के लिए भी तैयार रहने की आवश्यकता की ओर इशारा किया।

रात्रि का दूसरा और तीसरा पहर। यहूदियों ने रात को तीन पहर में विभाजित किया (न्यायियों 7:19)। रोमियों ने रात को चार पहरों में विभाजित किया (मत्ती 14:25; मरकुस 13:35)। लूका ने संभवतः रोमियों के पहर के चार विभाजन का पालन किया, क्योंकि वह आमतौर पर मरकुस और मत्ती के सुसमाचारों का अनुसरण करता है (लूका 12:38)³¹

स्वामी अपने दासों की प्रतीक्षा करेगा। यह बहुत असामान्य है! सामान्य जीवन में, एक स्वामी अपने दासों की प्रतीक्षा नहीं करेगा, लेकिन दासों को हमेशा अपने स्वामी की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। दो बार, "यह उनके लिए अच्छा होगा" कहकर, कहानी ऐसे दासों को दो बार आशीर्वाद देती है (लूका 12: 37-38)! साथ ही यह कथन अद्भुत है!

घर का स्वामी और चोर। अगर स्वामी को चोर के आने का पता हो तो वह चोर को अपने घर में नहीं घुसने देता। केवल घर के वह स्वामी, जो आने वाले चोरों के लिए तैयार नहीं हैं, कोई तैयारी नहीं करेंगे।

2. संदर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

खोज व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका 12:13-34 में पायी जाती है।

यीशु ने अमीर मूर्ख के दृष्टान्त को बताया था। इसके बाद उसने जीवन की भौतिक आवश्यकताओं के बारे में चिंता न करने की चेतावनी दी, क्योंकि परमेश्वर पिता अपने लोगों की पृथ्वी पर देखभाल करता है और उन्हें अपना राज्य देने में प्रसन्न होता है! इसलिए यीशु उनसे विनती करता है कि वे अपनी भौतिक संपत्ति का उपयोग पृथ्वी पर परमेश्वर राज्य को आगे बढ़ाने के लिए करें, और सांसारिक संपत्ति पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाय स्वर्गीय खजाने पर अपने मन को लगायें। सांसारिक खजाने का उपयोग तब तक किया जा सकता है जब तक कि वे समाप्त न हो जाए, या इसे चुराया या कीड़े द्वारा नष्ट न किया जाये, लेकिन स्वर्गीय खजाने को कभी भी समाप्त नहीं किया जा सकता है, न ही इसे चुराया या नष्ट नहीं किया जा सकता है! यीशु ने सिखाया, “जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा मन भी होगा” (मत्ती 6:21)!

इस बिंदु पर, यीशु ने चौकस दासों के दृष्टान्त को बताया। यह दृष्टान्त मूर्ख धनवान के दृष्टान्त के ठीक विपरीत है। मूर्ख धनवान ने अपना हृदय और मन पृथ्वी के नाशवान खजाने पर लगाया हुआ था, लेकिन चौकस सेवकों ने स्वर्ग के अनन्त खजाने पर अपना हृदय और मन लगाया हुआ था।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 12:35-38 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग लूका 12:39-40 में दिया गया है।

पद 39 एक दृष्टान्त या व्याख्या के भाग में एक दृष्टान्त है। यद्यपि घर के स्वामी को पता नहीं है कि चोर कब आने वाला है,

³¹ मरकुस रचित सुसमाचार को रोम में प्रेरित पतरस के सहकर्मी मरकुस (1 पतरस 5:13) ने लिखा था और रोमियों को निर्देशित किया गया था। मत्ती (63-66 A.D.) और लूका (60-61 A.D.) ने मरकुस (44-46 A.D.) पर अपने सुसमाचारों को आधारित किया।

उसे अपनी संपत्ति की रक्षा के लिए हर समय तैयार रहना चाहिए। इसी तरह, यीशु के चेलों को उसके दूसरे आगमन के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए! यीशु मसीह उस घड़ी आएगा जिसकी कोई⁵ भी उम्मीद नहीं करेगा!

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

यीशु किसी विशेष अर्थ का विवरण नहीं देते हैं। इसलिए विवरण को संदर्भ से समझने की आवश्यकता है।

तुम्हारी कमर बंधी रहे, ओर तुम्हारे दिए जलते रहें। यह विवरण प्रासंगिक है, क्योंकि यह सीधे केंद्र बिंदु या दृष्टान्त के मुख्य संदेश की ओर इशारा करता है, अर्थात् यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए लगातार तैयार रहना।

दूसरा या तीसरा पहर। यीशु इस विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। क्योंकि विवाह अभी भी रात की पहली घड़ी के दौरान चल रही थी, सेवकों ने उससे उसके बाद लौटने की उम्मीद की, लेकिन वास्तव में कब, कोई नहीं जानता था। यह अब तक प्रासंगिक है कि पृथ्वी पर कोई भी उस समय को नहीं जानता जब यीशु मसीह सभी लोगों का न्याय करने के लिए इस पृथ्वी पर वापस आएगा (मत्ती 24:36; प्रेरितों के काम 1:7; 1 थिस्सलुनीकियों 5:1-3)!

स्वामी अपने दासों की प्रतीक्षा करेगा। यह प्रासंगिक है! यद्यपि साधारण जीवन में, एक स्वामी अपने दासों का कभी इंतजार नहीं करेगा, यीशु मसीह ने न केवल पृथ्वी पर आने के दौरान ऐसा किया था (मरकुस 10:45; लूका 22:27; यूहन्ना 13:1-15), लेकिन वह ऐसा पृथ्वी पर अपने दूसरे आगमन के समय में भी करेगा! एक तरीके से जो उसकी महिमा और गौरव के साथ सामंजस्य स्थापित करता है, यीशु मसीह उन लोगों की सेवा करेगा जो विश्वासयोग्य रहे हैं। उदाहरण के लिए, वह प्रत्येक सच्चे मसीही जन की सच्ची आत्माओं को अपने स्वयं के समान बनाने के लिए उनके जीवन में उद्धार के अपने काम को पूरा करेगा (1 यूहन्ना 3:2; तुलना करें 2 पतरस 1:4) और उनके तुच्छ शरीर उसकी महिमान्वित पुनर्जीवित देह के सामान होंगे (फिलिप्पियों 3:21)। और वह उन्हें नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में ले जाएगा, जहाँ वे उसकी उपस्थिति में उसके साथ हमेशा के लिए रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 21:1-3)!

मालिक चोर के आने के लिए तैयार रहेगा। यह एक प्रासंगिक विवरण है, क्योंकि यह सीधे इस दृष्टान्त के अनुप्रयोग की ओर इशारा करता है।

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानना।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 12:35-40 में “सदा तैयार रहो का दृष्टान्त” परमेश्वर के राज्य में जागते रहो के बारे में बताते हैं

दृष्टान्त का मुख्य संदेश दस कुँवारियों के दृष्टान्त के समान है। “मसीहियों को सदैव यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए सतर्क, जागते और तैयार रहना चाहिए।”

जागते और तैयार रहना परमेश्वर के राज्य की दो मूलभूत विशेषताएं हैं। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग लगातार अपने स्वामी, यीशु मसीह को स्वीकार और उनकी सेवा करने के लिए तैयार रहेंगे।

[सेवा]

बाइबल में पाई जाने वाली सेवा

खोजें और चर्चा करें। बाइबल सेवा के बारे में क्या सिखाती है?

1. मसीहियों को सेवा क्यों करनी चाहिए?

पढ़ें मत्ती 20:25-28; फिलिप्पियों 2: 5-7; 1 कुरिन्थियों 9: 19-23; 1 पतरस 4: 10-11; यूहन्ना 12:26

ध्यान दें। सेवा करना परमेश्वर के राज्य में महानता का सही पैमाना है (मत्ती 20:25-28)। मसीह के सामान सेवा करना; यीशु मसीह के आदर्शों का अनुसरण करना है (फिलिप्पियों 2:5-7)। यीशु मसीह के लिए लोगों को जितने का सेवा एकमात्र तरीका है (1 कुरिन्थियों 9:19-23)। सेवा करना परमेश्वर की महिमा करना है (1 पतरस 4:10-11)। अंततः, सेवा करने से पुरस्कार मिलेगा (यूहन्ना 12:26)।

2. मसीहियों को किसकी सेवा करनी चाहिये?

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 4:1-2; इब्रानियों 6:10; लूका 16:13; गलातियों 1:10; 2 कुरिन्थियों 4:5; इफिसियों 6:5-8; रोमियों 14:13-18

ध्यान दें। मसीहियों को यीशु मसीह की सेवा करनी चाहिए (1 कुरिन्थियों 4: 1-2) । मसीहियों को दूसरे लोगों की सेवा करनी चाहिए (इब्रानियों 6:10)। वे मसीह की आज्ञाओं के अनुसार लोगों की सेवा करके यीशु मसीह की सेवा करते हैं। लूका 16:13 सिखाता है कि एक ही समय में दो अलग-अलग स्वामी की सेवा करना असंभव है। मसीही लोग अपनी इच्छानुसार नहीं, बल्कि लोगों की जरूरत के अनुसार सेवा करते हैं (गलातियों 1:10)। मसीही लोगों की सेवा अपने लिए नहीं, बल्कि यीशु और उसकी महिमा के लिए करते हैं (2 कुरिन्थियों 4: 5)। मसीही उनको दिए गए अधिकार के तहत लोगों की सेवा करते हैं (इफिसियों 6:5-8)। मसीही जन व्यवस्था की पत्री के अनुसार नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और शक्ति के माध्यम से सेवा करते हैं (रोमियों 14: 13-18)।

3. मसीहियों को किन क्षेत्रों में सेवा करनी चाहिए?

पढ़ें मत्ती 24:45-51; 2 कुरिन्थियों 8:1-4; 5:18-21; प्रेरितों के काम 6:1-4; लूका 1:74-75; मत्ती 25:14-30; 1 पतरस 4:10-11

ध्यान दें। मसीही सही समय पर अपने घर के लोगों को भोजन देकर सेवा करते हैं (मत्ती 24:45-51)। मसीही हर जगह जरूरतमंद मसीहियों को उदारतापूर्वक भौतिक वस्तुएं देकर सेवा करते हैं (2 कुरिन्थियों 8:1-4)। मसीही हर जगह गैर-मसीहियों को सुसमाचार का प्रचार करके सेवा करते हैं (2 कुरिन्थियों 5:18-21)। मसीही जन परमेश्वर के वचनों को मसीहियों को पढ़ाकर और वचनों के द्वारा उनका निर्माण करते हैं (प्रेरितों के काम 6:1-4)। मसीही अपने पूरे जीवनकाल में बिना किसी

डर और पवित्रता और धार्मिकता से उसकी आराधना करके आत्मिक रूप से प्रभु की सेवा करते हैं (लूका 1:74-75)। मसीही अपनी उन प्रतिभाओं, अर्थात् क्षमताओं और अवसरों का प्रयोग करते हैं, जिसे मसीह ने उन्हें सौंपा है और इस प्रकार की अन्य प्रतिभाओं को प्राप्त करते हैं (मत्ती 25:14-30)। मसीही लोग कलीसिया को निर्माण करने के लिए जो भी आत्मिक वरदान प्राप्त करते हैं उसका उपयोग करके वे सेवा करते हैं (1 पतरस 4:10-11)।

4. मसीही कैसे सेवक बनते हैं?

पढ़ें यूहन्ना 12:26; रोमियों 12:1; मरकुस 13:34; लूका 16:10-13; 1 तीमुथियुस 3:10; 2 कुरिन्थियों 11:23-28; इब्रानियों 6:10; 10:32-34; 2 कुरिन्थियों 6:3-10; प्रेरितों के काम 20:19

ध्यान दें यीशु मसीह का चेले के रूप में अनुसरण करके एक व्यक्ति सेवक बन जाता है (लूका 9:23; यूहन्ना 12:26)। एक व्यक्ति स्वयं को प्रभु के लिए उपलब्ध कराकर सेवक बन जाता है (रोमियों 12:1)। यीशु मसीह ने उसे कौन सा काम सौंपा है, यह निर्धारित करके एक व्यक्ति सेवक बन जाता है (मरकुस 13:34)। एक व्यक्ति तब सेवक बन जाता है जब वह अपने सौंपे गए कार्य को ईमानदारी से पूरा करता है (लूका 16:10-13)। अगुवाई की उत्तरदायी के क्षेत्र में (एक कार्य, कार्यालय, स्थान) एक व्यक्ति केवल तभी सेवक बन सकता है जब उसके स्वयं के जीवन और छोटे कार्य करने में उसका परीक्षण किया गया हो (1 तीमुथियुस 3:10)। एक व्यक्ति तब एक सेवक होता है जब वह मसीह के लिए कड़ा परिश्रम करता है, मसीह के लिए पीड़ित होने के लिए तैयार है, और कलीसिया की देखभाल के दैनिक दबाव का सामना करता है (2 कुरिन्थियों 11:23-28)। एक व्यक्ति तब एक सेवक होता है जब वह अन्य पीड़ित मसीहियों की मदद करता है और उनके पक्ष में खड़ा होता है (इब्रानियों 6:10; 10:32-34)। एक व्यक्ति तब एक सेवक होता है जब वह सभी प्रकार के कष्टों में दृढ़ बना रहता है (2 कुरिन्थियों 6:3-10)। एक व्यक्ति तब एक सेवक है जब वह सफलता में दीन बना रहता है (प्रेरितों के काम 20:19)।

/यीशु मसीह/
यीशु मसीह का दूसरा आगमन

खोज और चर्चा करें। बाइबल हमें परमेश्वर के दूसरे आगमन के बारे में क्या बताती है?

क. मसीहियों को विश्वातयोग्य और सतर्क होना चाहिए

मत्ती अध्याय 24 का संदेश यह है कि मसीहियों को सतर्क रहना चाहिए और अपनी दृष्टि मसीह के दूसरे आगमन पर रखनी चाहिए, जो न्याय करता है और प्रतिफल देता है। इन अध्यायों में भविष्यवाणियाँ एक ओर मसीह के चेलों के निकट भविष्य और दूसरी ओर अंतिम समय में होने वाली घटनाओं का उल्लेख करती हैं। यरूशलेम पर आने वाला न्याय (शिष्यों के निकट भविष्य में) और मसीह के दूसरे आगमन पर (अंतिम समय में) पूरी दुनिया का अंतिम न्याय "अंतिम बातों" के विषय में एक शिक्षण में एक साथ बुने हुए हैं। यरूशलेम के ऊपर आने वाला विनाश भविष्य की वास्तविकता के दृष्टांत (प्रकार) के रूप में कार्य करता है, जो अंतिम समय (विरोधी-प्रकार) में पूरी दुनिया पर आने वाला निश्चित विनाश है।

(1) मत्ती 23:37 - 24:3. अवसर।

इस शिक्षण का अवसर यरूशलेम पर यीशु मसीह का विलाप और शिष्यों के दो प्रश्न थे।

(2) मत्ती 24:4-14. संकट का आरम्भ।

कई क्लेश (जैसे युद्ध, अकाल और भूकंप) दुनिया के सभी देशों को राज्य के सुसमाचार की घोषणा के साथ-साथ होंगे। ये सभी चीजें होनी हैं, परन्तु ये क्लेश (यूहन्ना 16:33; तुलना करें प्रकाशितवाक्य 7:14) अभी अंत नहीं हैं। मत्ती 24:4-14 यीशु के पहले आगमन और दूसरे आगमन के बीच लंबी अवधि का एक भाग है।

(3) मत्ती 24:15-20. यरूशलेम का क्लेश।

नए नियम की अवधि के अंत में महान क्लेश, निकट भविष्य में यरूशलेम के क्लेश से पहले होगा।

पद्य 15 में यीशु दानियेल में घृणा के विषय में भविष्यवाणी को संदर्भित करता है जो उस उजाड़ का कारण है होती है जो पवित्र स्थान (मंदिर) (दानियेल 9:27)³² में खड़ी होगी।

यरूशलेम और यहूदिया के इस क्लेश के विषय में दानियेल की भविष्यवाणी 167 ई.पू. में पूरी हुई थी। जब सेल्यूकस राजा, एंटीओकस चतुर्थ एपिफेनेस यरूशलेम के लूटने और मंदिर के अपवित्र होने करने का कारण बना। अज्ञात-लेखकीय पुस्तक, 1 मक्काबीस 1:41-57 में इस घटना का वर्णन इस प्रकार है:

[41] तब राजा ने अपने पूरे राज्य को लिखा कि सभी एकता में आ जाएँ,
[42] और प्रत्येक को अपने रीति-रिवाजों को छोड़ देना चाहिए।

³² दानियेल 9:27 "और वह प्रधान 'एक सप्ताह' के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बान्धेगा, परन्तु 'आधे सप्ताह' के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा; और कंगूरे पर उजाड़ने वाली घृणित वस्तुएं दिखाई देंगी और निश्चय से ठनी हुई बात के समाप्त होने तक परमेश्वर का क्रोध उजाड़ने वाले पर पड़ा रहेगा।"

[43] सभी अन्यजातियों ने राजा की आज्ञा स्वीकार कर ली। इस्राएल से भी बहुतों ने खुशी से उसका धर्म अपनाया; उन्होंने मूर्तियों की बलि दी और सब्त के दिन को अपवित्र किया।

[44] और राजा ने दूतों द्वारा यरूशलेम और यहूदा के शहरों को पत्र भेजे; उसने उन्हें वहाँ से अपरिचित रीति-रिवाजों का पालन करने का,

[45] प्रभु के भवन में होमबलि और बलिदान और पेय भेटों को छोड़ने, सब्त और पर्वों को अपवित्र करने,

[46] प्रभु के भवन और याजकों को अपवित्र करने का,

[47] मूर्तियों के लिए ऊँचे स्थान और मंदिर और मठ का निर्माण करने, सूअर और अशुद्ध जानवरों को बलिदान करने

[48] और अपने बेटों को खतनारहित छोड़ने का निर्देश दिया।

उन्हें हर अशुद्ध और अपवित्र चीज से स्वयं को घृणित बनाना था,

[49] ताकि वे व्यवस्था को भूल जाएं और सभी अध्यादेशों को बदल दें।

[50] "और जो राजा की आज्ञा नहीं मानेगा वह मार दिया जाएगा।"

[51] ऐसे शब्दों में उसने अपने पूरे राज्य को लिखा। और उसने सभी लोगों के ऊपर निरीक्षक नियुक्त किए और यहूदा के शहरों को शहर से शहर, बलिदान करने की आज्ञा दी।

[52] बहुत से लोग, सभी जिन्होंने व्यवस्था को छोड़ दिया, उनके साथ जुड़ गए, और उन्होंने क्षेत्र में दुष्टता की;

[53] उन्होंने इस्राइल को उनके पास शरण के हर स्थान में छिपा दिया।

[54] अब किसलेव के पंद्रहवें दिन, एक सौ पैंतालीसवें वर्ष में (312 ई.पू. में सेल्यूकस के राजवंश आरम्भ से गणना की गई, इस प्रकार दिसंबर 167 ई.पू.), उन्होंने होमबलि की वेदी उजाड़ दिया (तुलना करें मत्ती 24:15)। उन्होंने यहूदा के आसपास के शहरों में ऊँचे स्थान भी बनवाए।

[55] और ऊँचे स्थानों के द्वारा पर और गलियों में धूप जलाई।

[56] व्यवस्था की पुस्तकें (जैसे बाईबल) जो उन्हें मिलीं, उन्हें टुकड़ों में फाड़ दिया और आग से जला दिया।

[57] जहाँ किसी के पास वाचा की पुस्तक पाई गई, या यदि किसी को व्यवस्था का पालन करता हुआ पाया गया, तो राजा के आदेश अनुसार उसे मृत्यु दंड दिया गया।

मत्ती 24:15-20 में यीशु कहता है कि दानिय्येल की यह भविष्यद्वाणी (एक महान क्लेश के विषय में) दूसरी बार पूरी होगी। तब यह विशेष रूप से उस समय यरूशलेम में मंदिर और लोगों पर ध्यान देगी।

यरूशलेम का यह दूसरा महान क्लेश 70 ई.पू. में पूरा हुआ था जब रोमी सम्राट, टाइटस ने यरूशलेम को घेर लिया और जीत लिया। अन्यजाति सैनिकों ने यरूशलेम में और मंदिर में उन मानकों को अंजाम दिया, जिन पर रोमी मूर्तियों को दर्शाया गया था (इस प्रकार, एक और घृणित काम जिसके कारण सब उजाड़ हुआ) (लूका 21:20-24)³³।

हालाँकि, यीशु का कहना था कि 70 ई.पू. में यरूशलेम और मंदिर का यह क्लेश इस युग का अंत नहीं होगा (अर्थात् यह नए नियम की अवधि का पूरा अंत नहीं होगा, जो कि मसीह के दूसरे आगमन के साथ समाप्त होना है), क्योंकि यरूशलेम को अन्यजातियों द्वारा रौंदा जाएगा (लंबे समय तक), जब तक कि अन्यजातियों का समय पूरा नहीं होगा (लूका 21:24; तुलना करें रोमियों 11:25; प्रकाशितवाक्य 11:2)।

यरूशलेम के ये क्लेश (दूसरी शताब्दी ई.पू. और पहली शताब्दी ई.स. में) बाद में हुए दुनिया के इतिहास में हुए क्लेशों (भयावहता) के पूर्वाभास हैं (तुलना करें मत्ती 24:4-14)। मसीह के पहले आगमन से दूसरे मसीह के आने तक मसीहियों का उत्पीड़न और सताव जारी रहेगा। यही कारण है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यीशु के प्रथम आगमन और यीशु के

³³ लूका 21:20-24 20 जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है। 21 तब जो यहूदिया में हों वह पहाड़ों पर भाग जाएं, और जो यरूशलेम के भीतर हों वे बाहर निकल जाएं; और जो गावों में हों वे उस में न जाएं। 22 क्योंकि यह पलटा लेने के ऐसे दिन होंगे, जिन में लिखी हुई सब बातें पूरी हो जाएंगी। 23 उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उन के लिये हाय, हाय, क्योंकि देश में बड़ा क्लेश और इन लोगों पर बड़ी आपत्ति होगी। 24 वे तलवार के कौर हो जाएंगे, और सब देशों के लोगों में बन्धुए होकर पहुंचाए जाएंगे, और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा।

दूसरे आगमन के बीच की अवधि को "महान क्लेश" कहती है (प्रकाशितवाक्य 7:9,14)³⁴।

(4) मत्ती 24:21-26. मसीह के दूसरे आगमन से कुछ समय पहले का महान क्लेश।

नए नियम की अवधि के आरम्भ में यरूशलेम का क्लेश महान था, परन्तु नए नियम की अवधि के अंत का क्लेश मानव इतिहास में सबसे बड़ा क्लेश होगा (पद्य 21)! पूरी दुनिया में मसीहियों पर अत्याचार और सताव होगा। यह अंतिम महान क्लेश सभी पहले आए क्लेशों का अंत होगा (तुलना करें मत्ती 24:4-14)। यह नए नियम की अवधि को समाप्त करेगा।

इस अंतिम महान क्लेश के दौरान कई झूठे भविष्यद्वक्ता और झूठे मसीहा होंगे जो मसीहियों को धोखा देने के लिए महान चमत्कार करेंगे। हालाँकि, यीशु मसीह स्पष्ट रूप से कहते हैं कि चुने हुए मसीहियों को धोखा देना असंभव है (मत्ती 24:24; तुलना करें उहन्ना 17:12)³⁵। परन्तु मसीही निश्चित रूप से महान क्लेश से गुजरेंगे।³⁶

(5) मत्ती 24:27-31. मसीह का दूसरा आगमन।

यह अंतिम महान क्लेश मसीह के दूसरे आगमन द्वारा समाप्त किया जाएगा।

- दूसरा आगमन हर जगह दिखाई देगा, जैसे बिजली पूर्व से पश्चिम तक दिखती है (मत्ती 24:27; तुलना करें वचन 29)।
- दूसरा आगमन हर जगह सुनाई देगा, प्रभु के जोर से आदेश और तुरही की एक जोरदार आवाज के कारण जो सभी मृतकों को उनकी कब्र में फिर से जीवित करेगी (मत्ती 24:31; यूहन्ना 5:28-29; 1 थिस्सलुनिकियों 4:16)।
- दूसरा आगमन हर किसी के द्वारा अनुभव किया जाएगा: स्वर्गदूत चुने हुएों को (वास्तविक मसीही) हवा में यीशु मसीह का स्वागत करने के लिए इकट्ठा करेंगे (मत्ती 24:40क, 41क; सीएफ. 1 थिस्सलुनिकियों 4:17; 2 थिस्सलुनिकियों 1:10), परन्तु सभी गैर-मसीहियों और अविश्वासियों को पहले ब्रह्मांड में निकायों के हिंसक झटकों का अनुभव करने के लिए छोड़ देंगे (इब्रानियों 12:26-27; प्रकाशितवाक्य 6:12-17) और बाद में मसीह के फैसले से पहले हवा में सिंहासन के लिए चलाए जाने के बाद; वही अंतिम दिन (मत्ती 24: 40 ब, 41ख; तुलना करें मत्ती 25: 31-33; प्रकाशितवाक्य 20: 11-12)।
- दूसरा आगमन खगोलीय पिंडों को हिला देगा। वे दूर भाग जाएंगे, एक गर्जन के साथ गायब हो जाएंगे और तत्त्व आग से नष्ट कर दिए जाएंगे (मत्ती 24:29; 2 पतरस 3:10-13; प्रकाशितवाक्य 6:12-17; प्रकाशितवाक्य 20:11)। इस प्रकार लोगों का अंतिम न्याय ऊपरी जगहों (जैसे वायु) में होगा (मत्ती 24:31; मत्ती 25:31-32; 1 थिस्सलुनिकियों 4:17) और ब्रह्मांड और पुरानी पृथ्वी के अंतिम न्याय के साथ होगा।
- दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा (मत्ती 24:36)।

(6) मत्ती 24:32-35. अंजीर के पेड़ का दृष्टांत।

नियमावली 12, पूरक 16 में इस दृष्टांत की व्याख्या देखें। जब चले (यीशु मसीह के) इन सभी चीजों को होते हुए देखते हैं, जो कि यरूशलेम में मंदिर को उजाड़ बनाने वाली घृणा के रूप में सामने आने का कारण होंगी (1शताब्दी ईस्वी में),

³⁴ प्रकाशितवाक्य 7: 9,14 9 इस के बाद मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने, और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिये हुए सिंहासन के साम्हने और मेम्मे के साम्हने खड़ी है। 14 मैं ने उस से कहा; हे स्वामी, तू ही जानता है: उस ने मुझ से कहा; ये वे हैं, जो उस बड़े क्लेश में से निकल कर आए हैं; इन्होंने अपने अपने वस्त्र मेम्मे के लहू में धो कर श्वेत किए हैं।

³⁵ यूहन्ना 17:12 12 जब मैं उन के साथ था, तो मैं ने तेरे उस नाम से, जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा की, मैं ने उन की चौकसी की और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से कोई नाश न हुआ, इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो।

³⁶ ऐतिहासिक प्रगति प्रणाली की शिक्षा अपने अनुयायियों आकर्षक है, क्योंकि वह सिखाती है कि कलीसिया महान क्लेश से नहीं गुजरेगी। यह हालाँकि सच नहीं है!

तब उन्हें (शिष्यों को) पता चलेगा कि मंदिर का विनाश निकट है। यह मसीह का उसके शिष्यों के पहले प्रश्न का उत्तर है (मत्ती 24:3क)।

(7) मत्ती 24:36-44. मसीहियों को हमेशा सतर्क और तैयार रहना चाहिए।

नूह के दिनों में बाढ़ अचानक, अप्रत्याशित और सभी द्वारा अनुभव की गई थी! इसी प्रकार, मसीह का दूसरा आगमन अचानक, अप्रत्याशित और सभी द्वारा अनुभव किया जाएगा! दूसरा आगमन पूरी रीति से गैर-मसीहियों और मसीहियों दोनों के लिए एक जैसा अप्रत्याशित होगा। किसी को पता नहीं चलेगा कि यह कब होगा।

अपने दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह अपनी अनंत और हमेशा की शानदार उपस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत नहीं करेगा, क्योंकि मसीही स्वीकार किए जाएंगे और गैर-मसीही पीछे छूट जाएंगे (मत्ती 24:40-41)!

(8) मत्ती 24:45-51. मसीहियों को विश्वासयोग्य सेवक होना चाहिए।

विश्वासयोग्य और बुद्धिमान सेवक के दृष्टान्त से पता चलता है कि क्योंकि मसीही दूसरे आगमन के समय को नहीं जानते हैं, इसलिए जब मसीह आए तो वह अवश्य उन्हें राज्य में काम करता हुआ पाए!

(9) परमेश्वर के राज्य के विषय में अलग-अलग अपेक्षाएँ।

जबकि यहूदियों को अपेक्षा थी कि राज्य इस्राएल तक सीमित रहेगा (यहेजकेल 37:21-28; मत्ती 20:21; यूहन्ना 6:15; प्रेरितों 1:6), यीशु मसीह अपनी शिक्षाओं और दृष्टान्तों में निम्नलिखित स्पष्ट करता है:

- परमेश्वर का राज्य उसके पहले आगमन के साथ आ चुका है (मरकुस 1:14-15; मत्ती 12:28-29)।
- राज्य में सभी देशों के लोग सम्मिलित हैं (मत्ती 8:11-12; मत्ती 21:42-44)।
- राज्य का सुसमाचार (लूका 16:16; प्रेरितों 8:12; 19:8; 20:24-25; 28:23, 31) अनुग्रह का सुसमाचार है और सभी देशों को घोषित किया जाएगा (मत्ती 24:14)।
- राज्य एक वास्तविक, परन्तु आध्यात्मिक राज्य है, लोगों के हृदयों और जीवन में यीशु मसीह का एक शासन है (लूका 17:20-21; यूहन्ना 18:36)।
- राज्य निरन्तर बढ़ता है (मरकुस 4:26-32) जब तक कि वह अपने अंतिम पूर्ण चरण (नया आकाश और नई पृथ्वी) को उसके दूसरे आगमन (मत्ती 13:36-43; 2 पतरस 3:10-13) पर प्राप्त नहीं कर लेता।

ख. स्वर्ग में मध्यवर्ती अवस्था

1. पृथ्वी पर मानव शरीर में क्षणिक जीवन।

पृथ्वी पर क्षणिक जीवन स्वर्ग में अनन्त जीवन के विपरीत है। बाइबल में इसे इस प्रकार दर्शाया गया है:

- अब्राहम (2000 ई.पू.), एक विदेशी देश में तम्बू में एक विदेशी और अजनबी के रूप में रहता था, स्वर्गीय येरुशलम के लिए तत्पर था (प्रतीक: नींव वाला शहर, जिसका वास्तुकार और बनाने वाला परमेश्वर है) (इब्रानियों 11:8-16)।
- सांसारिक तम्बू (मिलाप का तम्बू) (1446 ई.पू.) रेगिस्तान में से होकर यात्रा के दौरान परमेश्वर के भवन के रूप में सेवा करता था और मोरिया पहाड़ पर निर्मित मंदिर निर्माण या उससे भी बेहतर स्वर्गीय मंदिर के विपरीत था (इब्रानी 8:5)।
- तंबुओं का पर्व (1446 ई.पू.) जिसके दौरान लोग तम्बू / झोपड़ियों में रहते थे, यह रेगिस्तान से होकर अपनी चालीस

वर्षों की यात्रा के दौरान इस्राएलियों का तंबूओं में रहने वाले जीवन का स्मरण था। यह वादा किए गए दूध और शहद बहने वाले देश के स्थायी घरों में रहने के विपरीत था जो कि परमेश्वर के लोगों की अनन्त विरासत का रूप है।

- यीशु मसीह का नश्वर मानव शरीर और पृथ्वी पर उसका जीवन (उसका देहधारण: "वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच अपना तम्बू खड़ा किया") (यूनानी: एस्केनोसन) (यूहन्ना 1:14) उसके पुनर्जीवित महिमामय शरीर (यूहन्ना 2:19-22) और स्वर्ग में परमेश्वर के साथ उसके अनंत काल के विपरीत है (यूहन्ना 1:1; 12:27-28; 20:17)।
- पृथ्वी पर मसीही अपने तम्बू (अपने शरीर) में निवास करता है जब तक कि उसे मृत्यु द्वारा नष्ट नहीं कर दिया जाता है (यूनानी: एनालू) (फिलिप्पियों 1:23; 2 तीमोथियुस 4:6) या (यूनानी:काटालू) (2 कुरिन्थियों 5:1)।

2. स्वर्ग में एक महिमामय मानव शरीर के बिना मानव आत्मा की मध्यवर्ती अवस्था।

"धन्य हैं वे मृतक जो प्रभु में मर जाते हैं ... वे अपने श्रम से विश्राम करेंगे, क्योंकि उनके कर्म (पृथ्वी पर) उनका अनुसरण करेंगे (प्रकाशितवाक्य 14:13; तुलना करें 1 कुरिन्थियों 3:12-15)।

मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच की मध्यवर्ती अवस्था का वर्णन 2 कुरिन्थियों 5:1-10 और फिलिप्पियों 1:21-25 में किया गया है। प्रेरित पौलुस, मरने से पहले ही, मसीह के शीघ्र दूसरे आगमन की चाहत रखता है, क्योंकि वह "नग्न" पाए जाने के लिए तत्पर नहीं है। वह नहीं चाहता कि उसके कपड़े उतारे जाएँ। (यूनानी: एकदूसास्थाई) (यानी मानव शरीर के बिना एक मानव आत्मा होना), परन्तु "कपड़े पहने हुए हो" (यूनानी: एप+एंडूसास्थाई) (2 कुरिन्थियों 5:4)।

क्योंकि मरना जीवन की एक वास्तविकता है, वह "संसार को छोड़ने और मसीह के साथ रहने की इच्छा करता है, जो कि कहीं अधिक बेहतर है" (फिलिप्पियों 1:23)। उसे एहसास होता है कि "मांस / शरीर में रहना ईसाइयों के लिए अधिक आवश्यक है जो उसे सौंपा गया है (फिलिप्पियों 1:24)। उसे एहसास है कि "जब तक वह शरीर में घर पर है, वह प्रभु से दूर है" (2 कुरिन्थियों 5:6)। वह इन दो विचारों के बीच फँसा हुआ है, परन्तु फिर भी वह "शरीर से दूर (यूनानी: एकदेमेसाई एक) और घर पर प्रभु के साथ रहना पसंद करता है" (यूनानी: एन्डेमेसाई परोस) (2 कुरिन्थियों 5:8)।

अब जब वह अपने शरीर में रहता है, तो वह "अपने स्वर्गीय शरीर (अर्थात उसका पुनर्जीवित शरीर) को पहनने (शाब्दिक: कपड़ों के ऊपर कपड़े पहनने) की इच्छा रखता है, ताकि जो नश्वर (पूरी तरह से) शरीर है वह जीवन द्वारा समाप्त हो जाए (यूनानी: काटापिनो) (अनिश्चित काल) (2 कुरिन्थियों 5:2-4)। परमेश्वर एक मसीही के नश्वर शरीर का कब्र में परित्याग नहीं करेगा (तुलना करें। प्रेरितों 2:23-28)। कुछ भी और कोई भी एक मसीही (या यहाँ तक कि उसके मृत शरीर, कब्र में उसकी धूल) को मसीह में परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता है (रोमियों 8:38-39)। पुनर्जीवित शरीर को "परमेश्वर की ओर से भवन" कहा जाता है, "स्वर्ग में एक अनन्त घर, जो मानव हाथों द्वारा नहीं बनाया गया है" (2 कुरिन्थियों 5:1)। यह कहना है, एक मसीही के पुनर्जीवित शरीर को मानव माता-पिता के माध्यम से नहीं बनाया गया है (तुलना करें। मत्ती 22:30), लेकिन विशेष रूप से परमेश्वर के द्वारा। नया अमर पुनर्जीवित शरीर पुराने नश्वर शरीर को पूरी रीति से निगल जाएगा। यह निचे पहने कपड़ों के ऊपर ओवरकोट के रूप में (2 कुरिन्थियों 5:2-4) नश्वर धूल को ढक लेगा (यूनानी: एप + एंडुमाई)! पुनर्जीवित शरीर एक नया निर्मित शरीर नहीं होगा। यह मूल शरीर (तत्व, धूल) होगा जिसे ढक लिया गया होगा, अर्थात पूरी रीति से नवीनीकृत! पुनर्जीवित शरीर यीशु मसीह के महिमामय पुनर्जीवित शरीर के समान होगा (फिलिप्पियों 3:20-21)! वह "अमर" (तुलना करें प्रकाशितवाक्य 21:4), "महिमामय, शक्तिशाली और आत्मिक" होगा

(1 कुरिन्थियों 15:42-44)।

पौलुस स्वर्ग में मध्यवर्ती अवस्था के दौरान किसी प्रकार के "शरीर" का उल्लेख नहीं करता है, क्योंकि वह "बिना कपड़ों के" है (उसके पास केवल एक मानवीय आत्मा है, परन्तु एक मानव शरीर के बिना)। वह मसीह के दूसरे आगमन पर मृतकों के पुनरुत्थान पर पुनर्जीवित शरीर का उल्लेख करता है। तब वह अपने स्वर्गीय निवास को "पहन" लेया। वह मसीह से एक महिमामय पुनर्जीवित शरीर प्राप्त करेगा।

3. स्वर्ग में एक महिमामय मानवीय आत्मा के साथ अवस्था।

जिस क्षण एक मसीही की मृत्यु हो जाती है, उसकी असिद्ध मानवीय आत्मा यीशु मसीह की सिद्ध मानवीय आत्मा के समान हो जाती है (1 यूहन्ना 3:1-3)।

मृत के पुनरुत्थान पर महिमामय मानवीय आत्मा को महिमामय पुनर्जीवित शरीर के साथ एक सच्चरित्र संघ में फिर से एकीकृत किया गया है। पुनर्जीवित मसीही "एक जीवन देने वाली आत्मा" होगा जिसमें पुनरुत्थान किए गए मसीह की पूर्ण समानता होगी। इसका अर्थ है कि मसीही आत्मिक और शारीरिक रूप से पूर्ण रीति और सिद्धता से पवित्र आत्मा के नेतृत्व में होंगे और पवित्र आत्मा के द्वारा चलाए जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:45-50: तुलना करें। गलातियों 5:16,18,25)।

परमेश्वर इस महिमामय भविष्य के लिए मसीहियों को वर्तमान समय में पवित्र आत्मा के रूप में जमा किया गया आश्वासन देकर तैयार करता है कि यह निश्चित रूप से होगा (2 कुरिन्थियों 1:22; 5:5)!

परन्तु यीशु मसीह कब और कैसे लौटेगा?

ग. मसीह के दूसरे आगमन के चिन्ह

1. यीशु "अंतिम बातों" के विषय में बोलता है (मत्ती 24:1-3)

(1) दो प्रश्न।

चेलों ने यीशु से मानव इतिहास में घटने वाली अंतिम बातों के विषय में दो प्रश्न किए: "मंदिर और यरूशलेम का विनाश कब होगा?" (मत्ती 24:1-3क) और "किस चिन्ह (एकवचन) से हम तेरी वापसी और (बेहतर: अर्थात्) युग के अंत को पहचानेंगे?" (मत्ती 24:3ख)। शिष्यों ने सोचा कि येरुशलम को युग के अंत में (यानी इस वर्तमान दुनिया में मानव इतिहास का अंत) नष्ट कर दिया जाएगा। हालाँकि, यीशु का भविष्यसूचक उत्तर एक ओर उन घटनाओं की ओर संकेत करता है, जो निकट भविष्य में घटित होंगी (येरुशलम का क्लेश) और दूसरी ओर ऐसी घटनाओं की ओर जो अंत के समय में होंगी (उसके आगमन से पहले महान क्लेश)।

(2) यीशु के अपने शिष्यों के पहले प्रश्न का उत्तर (मत्ती 24:15-20 तुलना करें। लूका 21:7, 20-24क)।

उन्होंने यरूशलेम के बड़े क्लेश की बात की, जो 70 ई.पू. में हुआ था। उसने कहा कि दानिय्येल के समय में यरुशलम के क्लेश ने 70 ई.पू. में येरुशलम पर आ रही तबाही का और इसी प्रकार के अन्य संकट का भी पूर्वाभास किया जो दुनिया के भविष्य के इतिहास के अंत में होगा (पढ़ें मत्ती 24:4-14)। इसने उस अंतिम तबाही का चित्रण किया जो अंत के समय

में पूरी दुनिया के ऊपर आ जाएगी! पुराने नियम की कई "छायाओं" की तुलना करें, जो नए नियम की "वास्तविकताओं" की ओर संकेत करती हैं (कुलुस्सियों 2:16-17)।

चेलों के दूसरे प्रश्न में "और" शब्द का यूनानी में अर्थ है "यानी" या "अर्थात्"³⁷। इस प्रकार, "इस युग का अंत" यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर होगा! दूसरे आगमन और अंत के बीच 1000 वर्ष की एक और अवधि नहीं होगी!

(3) यीशु के अपने शिष्यों के दूसरे प्रश्न का उत्तर (मत्ती 24:21-31)।

चिन्ह (एकवचन) बादलों पर मसीह का दृश्यमान और सुनाई देने योग्य वास्तविक दूसरा आगमन होगा (मत्ती 24:29ख-31)। परन्तु उसके आगमन से जल्द पहले "अंतिम महान क्लेश" होगा (मत्ती 24:21-29क)। यह सभी समयों का सबसे बुरा क्लेश होने के साथ-साथ क्लेश की सभी पिछली अवधियों का अंत होगा (मत्ती 24:4-14)।

आखिरी बातों के विषय में अपने शिक्षण में यीशु ने पहली सदी ई.पू. में यरूशलेम के क्लेश और उसके दूसरे आगमन से पहले के अंतिम महान क्लेश को जोड़ा है।

2. बहुत से चिन्ह होंगे (मत्ती 24:4-14)।

यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहले बहुत से चिन्ह होंगे जो इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि यह वर्तमान दुनिया समाप्त हो रही है:

- (1) झूठे मसीह (मसीहा के रूप)
- (2) दूसरे धर्मों के झूठे भविष्यद्वक्ता।
- (3) युद्ध
- (4) भुख
- (5) भूकम्प
- (6) गैर-मसीहियों द्वारा वास्तविक मसीहियों पर अत्याचार
- (7) नाममात्र मसीहियों द्वारा धर्मत्याग (कलीसियाओं का खाली होना)
- (8) परमेश्वर की आज्ञाओं की अवमानना
- (9) प्रेम ठंडा पड़ना

ये सभी घटनाएँ होनी हैं, परन्तु ये अंत का संकेत नहीं देतीं (मत्ती 24:6)। वे मात्र "प्रसव पीड़ा का आरम्भ" हैं (मत्ती 24:8)। ये चिन्ह दुनिया के सभी देशों को सुसमाचार की घोषणा के द्वारा साथ भी हैं (मत्ती 24:14; मत्ती मत्ती 4:23; प्रेरितों 20:24-25)।

ये सभी चिन्ह (घटनाएँ) 70 ई.प. में "यरूशलेम के विनाश" से आरम्भ होकर तब तक होंगी "जब तक अन्यजातियों का समय पूरा नहीं हो जाता" (लूका 21:20, 24ख), अर्थात् यीशु मसीह के पहले आगमन से लेकर यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक।

³⁷ यूनानी: कई, अर्थप्रकाशक, यानी एक शब्द या वाक्यांश "कई" के माध्यम से दूसरे शब्द या वाक्यांश के साथ जुड़ा है, यह समझाने के उद्देश्य से कि इससे पहले क्या आता है। इसे शब्दों के साथ अनुवादित किया जाना चाहिए: "और इसलिए", "यानी", "अर्थात्" (मत्ती 8:33; 24:3; यूहन्ना 9:37)।

3. तीन बहुत स्पष्ट चिन्ह होंगे (मत्ती 24:14, 21-31)

(1) एक बहुत लंबी अवधि।

सबसे पहले सभी राष्ट्रों को गवाही के रूप में राज्य के सुसमाचार को घोषित करने की बहुत लंबी अवधि होगी (मत्ती 24:14)।

(2) एक बहुत छोटी अवधि।

यह महान क्लेश की एक छोटी अवधि के बाद का समय होगा। यह अंतिम मसीह विरोधी के तहत अंतिम क्लेश होगा (मत्ती 24:21-29क)।

इन दो चिन्हों का उपयोग दूसरे आगमन के समय की गणना करने के लिए नहीं किया जा सकता है (मत्ती 24:36, 42)।

(3) दूसरा आगमन।

अंत में बादलों पर यीशु मसीह की विस्मयकारी वापसी होगी (मत्ती 24:29ख-31)। यह घटना सभी के लिए अचानक और अप्रत्याशित होगी! यह दुनिया और उसके इतिहास के अंत का "चिन्ह (निर्णायक)" है (मत्ती 24:3)।

घ. एक बहुत लंबी अवधि

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक एक इतिहास की पुस्तक नहीं है जो कालानुक्रमिक क्रम में लिखी गई है, परन्तु सात समांतर खंडों में एक सर्वनाश है और प्रत्येक खंड "चित्रों और चिन्हों में वर्णन करता है" (यूनानी: सेमार्नो) (अनिश्चित काल) (प्रकाशितवाक्य 1:1)³⁸ संपूर्ण नया नियम यीशु मसीह के पहले आगमन से लेकर यीशु के दूसरे आगमन और परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण के आने तक की अवधि।

1. नए नियम की लंबी अवधि को "1000" और "3½" संख्याओं द्वारा प्रतीकित किया गया है।³⁹

(1) प्रतीकात्मक 1000 वर्ष की अवधि।

बाइबल में संख्या "3" त्रिएक परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करती है (तुलना करें मत्ती 28:19)। बाइबल में "10" संख्या पृथ्वी पर लोगों के सम्बन्ध में पूर्णता का प्रतिनिधित्व करती है और बाइबल में संख्या "1000" (10x10x10) त्रिएक परमेश्वर द्वारा निर्धारित पूर्णता का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार, संख्या "1000 वर्ष" का शाब्दिक होने का अभिप्राय नहीं है, परन्तु पृथ्वी पर परमेश्वर की योजना पूरी होने के लिए उसके द्वारा सभी पीढ़ियों में बीते समय (सीएफ. भजन 90:1 -4; भजन 105:8) की निर्धारित अवधि का प्रतिनिधित्व करता है (तुलना करें यशायाह 14:24, 26, 27)।

प्रकाशितवाक्य 20 प्रकाशितवाक्य 17-19, प्रकाशितवाक्य 12-14 और प्रकाशितवाक्य 8-11 के समानांतर है। 1000 वर्ष की अवधि:

- मसीह के पहले आगमन पर शैतान की बन्धुआई के साथ आरम्भ होती है (तुलना करें तुलना करें मत्ती 12:28-29;

³⁸ प्रकाशितवाक्य 1:11 "(चित्रों और संकेतों में) दिखाता है कि जल्द ही क्या होने वाला है"।

³⁹ प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में सभी संख्याएं प्रतीकात्मक रूप से शाब्दिक वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो संख्या की शाब्दिकता से बढ़कर है। नियमावली 1, पाठ 10, कुंजी 5 देखें।

लूका 10:17-20; यूहन्ना 12:31-32; कुलुस्सियों 1:13; 2:15, इब्रानियों 2:14; 1 यूहन्ना 3:8; प्रकाशितवाक्य 12:5-12; प्रकाशितवाक्य 20:1-3)

- और शैतान की रिहाई के साथ समाप्त होती है, अंतिम लड़ाई (प्रकाशितवाक्य 20:7-10; प्रकाशितवाक्य 19:11-21; प्रकाशितवाक्य 11:7), मृतकों में से पुनरुत्थान और उसके दूसरे आगमन पर अंतिम न्याय (प्रकाशितवाक्य 20:11-15)।

इस प्रकार, 1000 वर्ष की अवधि प्रतीकात्मक रूप से मसीह के पहले आगमन से मसीह के दूसरे आगमन तक पूरे नए नियम की अवधि का प्रतिनिधित्व करती है।

(2) प्रतीकात्मक 3½ समय अवधि, या 42 महीने या 1260 दिन।

बाइबल में "3½" संख्या का भी शाब्दिक होने का अभिप्राय नहीं है, परन्तु बाइबल में दिए "क्लेश की अवधि" का प्रतिनिधित्व करता है (1 राजाओं 17:1; दानियेल 7:25; 9:27; 12:7; लूका 4:25; याकूब 5:17)⁴⁰। यहाँ यह नए नियम की लंबी अवधि को "महान क्लेश की अवधि" के रूप में संदर्भित करता है (प्रकाशितवाक्य 7:14)।

प्रकाशितवाक्य 11 प्रकाशितवाक्य 12-14 के समानांतर है।

लंबी अवधि:

- यीशु मसीह और कलीसिया के पहले आगमन पर आरम्भ होती है (यहाँ प्रतीक है: "महिला") जिसका "लंबी अवधि" (प्रकाशितवाक्य 12:5-6) के दौरान रेगिस्तान में ध्यान रखा गया है।
- और कलीसिया के विरुद्ध महान सताव पर समाप्त होती है (यहाँ प्रतीक है "दो गवाह") (प्रकाशितवाक्य 11:7-10), मसीह के दूसरे आगमन पर मृतकों का पुनरुत्थान (प्रकाशितवाक्य 11:11-12) अंतिम न्याय (प्रकाशितवाक्य 11:18; 14:14-20) और अपने अंतिम चरण में परमेश्वर के राज्य की स्थापना (प्रकाशितवाक्य 11:15)।

"3½" संख्या बताती है कि पूरे नए नियम की अवधि के दौरान, शैतान और उसके सहयोगी: मसीह विरोधी, झूठे भविष्यद्वक्ता और वेश्याएं उसके बुरे अधिकार की इस अवधि को ईश्वरीय संख्या "7" तक लंबा करने का प्रयास करेंगे, परन्तु (संख्या "3½") के आधे रास्ते तक पहुँचने पर ही उसे अचानक और अप्रत्याशित रूप से छोटा कर दिया गया!

इस प्रकार, 3½ बार, या 42 महीने, या 1260 दिनों की अवधि प्रतीकात्मक रूप से मसीह के पहले आगमन से उसके दूसरे आगमन तक की पूरे नए नियम की अवधि का प्रतिनिधित्व करती है।

2. बहुत लंबी अवधि आरम्भ में शैतान को बाँध दिया गया है (प्रकाशितवाक्य 20:1-6)

(1) अपने पहले आगमन पर यीशु मसीह शैतान के कार्यों को नष्ट करने के उद्देश्य से आया था (यूहन्ना 3:8; इब्रानियों 2:14)।

अपनी मृत्यु और जी उठने के द्वारा उद्धार के अपने पूर्ण कार्य के माध्यम से यीशु मसीह ने शैतान (प्रतीक: "मजबूत आदमी") को "बाँध" (यूनानी: डियो) (अनिश्चित काल सक्रिय) दिया (मत्ती 12:29)। उसने बुराई करने हेतु शैतान की शक्तियों पर अंकुश / कटौती लगाई और उनको अति सीमित कर दिया। अपनी मृत्यु के माध्यम से उसने शैतानी शक्तियों

⁴⁰ संख्या 3½ उद्धार के इतिहास में "विभिन्न" उत्पीड़न की अवधियों का प्रतीक है।

और सांसारिक प्राधिकारियों को निरस्त किया और उन पर जयवन्त हुआ (कुलुस्सियों 2:15)। उसने अपनी उन्नति प्राप्ति के द्वारा (क्रूस पर, उसके पुनरुत्थान के द्वारा, उसके स्वर्गारोहण द्वारा और स्वर्ग में अपनी सिंहासन प्राप्ति के द्वारा) उसने दुनिया के राजकुमार (यूनानी: हो आर्कोन) को (शैतान) (ध्यान दें: राजा नहीं) (यूनानी: बासीलियस) उसके पूर्व पद और शक्ति से हटा दिया और दुनिया भर के लोगों को अपनी ओर खींचता है (यूहन्ना 12:31-32)।

(2) शैतान के पास अभी भी बुराई करने की बहुत शक्ति है।

वह अभी भी क्रांतिल और सभी झूठों का पिता है (यूहन्ना 8:44; 2 कुरिन्थियों 4:3-4), परन्तु "उसे राष्ट्रों को और धोखा देने से रोकने के लिए तब तक बाँध दिया गया है (यूनानी: डियो) (अनिश्चित काल सक्रिय) (मत्ती 12:29 में दिया जैसा वचन) जब तक (प्रतीकात्मक) हजार वर्ष समाप्त न हो जाएँ" (प्रकाशितवाक्य 20:2-3)।

3. बहुत लंबी अवधि के दौरान सुसमाचार घोषित किया गया है (मत्ती 24:14)

(1) 1000 वर्षों की इस प्रतीकात्मक अवधि के दौरान शैतान "अब राष्ट्रों को धोखा नहीं दे सकता" (प्रकाशितवाक्य 20:3)।

यीशु के पहले आगमन से पहले शैतान ने राष्ट्रों को अपने नियंत्रण में रखा (दानियेल 10:12-13,20)। परन्तु मसीह के पहले आगमन के बाद, चुने हुएों को उसके प्रभुत्व से बचाया गया और मसीह के राज्य में लाया गया है (कुलुस्सियों 1:13)। मसीह के पहले आगमन से पहले, शैतान ने परमेश्वर के सिंहासन के सामने विश्वासियों पर दोष लगाया (अय्यूब अध्याय 1 और 2), क्योंकि उनके पापों का अभी तक प्रायश्चित नहीं किया गया था। परन्तु मसीह के पहले आगमन के बाद, शैतान अब परमेश्वर के सामने विश्वासियों पर दोष नहीं लगा सकता है (प्रकाशितवाक्य 12:7-12; रोमियों 3:23-26; रोमियों 8:33-34), क्योंकि यीशु ने उनके पापों के लिए प्रायश्चित किया है (रोमियों 3:24-25; प्रकाशितवाक्य 12:11)।

शैतान अब राष्ट्रों को धोखा / भटका (यूनानी: प्लानाओ) (अनिश्चित काल सक्रिय) नहीं सकता है, अर्थात्, वह अब यीशु मसीह (और मसीहियों) को दुनिया के सभी राष्ट्रों में सुसमाचार की घोषणा करने और सभी राष्ट्रों के भीतर शिष्य बनाने से रोक नहीं सकता है! यीशु ने सिखाया कि: "और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा" (मत्ती 24:14) (भविष्य काल केवल भविष्य की भविष्यद्वाणी ही नहीं, परन्तु पूर्ण निश्चितता व्यक्त करता है)! सभी देशों में चले बनाए जाएँगे (मत्ती 28:18-20)! इस वर्तमान दुनिया का अंत इस प्रकार तब होगा जब परमेश्वर के अनुसार सभी देशों (यूनानी: एथने) (लोगों के समूह, जैसे व्यवसायी, छात्र, धार्मिक समूह, आदि) को सुसमाचार की घोषणा कर दी जाएगी!

(2) 1000 वर्षों की इस प्रतीकात्मक अवधि के दौरान यीशु मसीह विजय प्राप्त करते हुए विजेता के रूप में बढ़ता है (प्रकाशितवाक्य 6:1-2; तुलना करें मत्ती 28:18)।

वह पूरी दुनिया में राज्य के बेटों को बोता है (मत्ती 13:37-38)। वह अपनी गेहूँ को खलिहान में इकट्ठा करता है (मत्ती 3:12क)। वह सभी राष्ट्रों के लोगों को अपनी ओर खींचता है (यूहन्ना 12:32; तुलना करें फिलिप्पियों 2:9-11)।

सारांश में, बाइबल का परमेश्वर, दुनिया के सभी देशों के लोगों को अगणनीय संख्या में शैतान के प्रभुत्व (यानी बुरी दुनिया के राज्य) से मसीह के राज्य में लाता है (कुलुस्सियों 1:13)। इस प्रकार, यीशु मसीह अपनी कलीसिया का निर्माण करता

है और नरक के द्वार उस पर प्रबल नहीं हो पाएंगे (मत्ती 16:18)!

(3) "1000 वर्ष" या "3½ समय" की इस प्रतीकात्मक अवधि के दौरान शैतान और उसके सहयोगी मसीहियों और मसीह की कलीसिया का विरोध करेंगे।

नए नियम की लंबी अवधि के दौरान, "अज़गर समुद्र के किनारे पर खड़ा है", जबकि पशु समुद्र से बाहर आता है (प्रकाशितवाक्य 12:17; 13:1)। "अज़गर" शैतान को दर्शाता है (प्रकाशितवाक्य 12:9)। "समुद्र" दुनिया के देशों को दर्शाता है (सीएफ. दानियेल 7:2-3)। और "पशु" अपने विभिन्न रूपों में मसीह विरोधी को दर्शाता है। मसीह विरोधी दुनिया के देशों से उभरेंगे और शैतान उन्हें अपनी शक्ति, अपना सिंहासन और अपना महान अधिकार देगा (प्रकाशितवाक्य 13:2)। परन्तु शैतान को "समुद्र के किनारे" पर एक ओर कर दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि अविश्वासी राष्ट्रों को प्रभावित करने की उसकी क्षमता पर कठोरता से अंकुश लगाया गया है।

इतिहास में गैर-मसीहियों (बहुवचन) ने नए नियम की लंबी अवधि के दौरान बाइबल के परमेश्वर की आराधना को रौंदा (चित्र: "वे मंदिर के बाहरी आँगन और पवित्र शहर को रौंदते हैं") (प्रकाशितवाक्य 11:2ख) और मसीह विरोधी लोग "परमेश्वर" होने का दावा करते हैं (प्रकाशितवाक्य 13:3-6, 11-14क) और यहाँ तक कि दुनिया में एक संगठित साक्षी संस्थान के रूप में (प्रतीक: "दो गवाह") (प्रकाशितवाक्य 11:1-2क, 3; तुलना करें 2 कुरिन्थियों 6:16) मसीही कलीसिया (प्रतीक: "परमेश्वर का मंदिर") पर आक्रमण करते हैं (प्रकाशितवाक्य 11:1)।

नए नियम की अवधि के दौरान शैतान अपने सहयोगियों के माध्यम से केवल अपने दुष्ट "दुनिया के राज्य" पर शासन करता है:

- "समुद्र से बाहर आता हुआ पशु" (मसीह विरोधी) मसीहियों के विरुद्ध शैतान की राजनीतिक शक्तियों को प्रदर्शित करता है (प्रकाशितवाक्य 13:1-10)
- "पृथ्वी से बाहर आता हुआ पशु" (या झूठा भविष्यद्वक्ता) मसीहियों के विरुद्ध शैतान की धार्मिक शक्तियों को प्रदर्शित करता है (प्रकाशितवाक्य 13:11-18)
- "महान वेश्या" (बाबूल) मसीहियों के विरुद्ध शैतान की सांस्कृतिक और नैतिक शक्तियों को प्रदर्शित करता है (प्रकाशितवाक्य 17:1-18)
- जो लोग "पशु का चिन्ह" प्राप्त करते हैं (या "गेहूं के बीच जंगली बीज") (मत्ती 13:38) वे मसीहियों के विरुद्ध शैतान के अनुयायियों को प्रदर्शित करते हैं (प्रकाशितवाक्य 14:9)।

नए नियम की पूरी अवधि के दौरान "पूर्ण दुनिया (मसीही विरोधी) दुष्ट के नियंत्रण में हैं" (1 यूहन्ना 5:19), क्योंकि यीशु मसीह ("वह जो अनंतकाल के लिए परमेश्वर से जन्मा था") (यूनानी: गेजिनेमेनोस) (वर्तमान काल) उसको (मसीही "जो हमेशा के लिए परमेश्वर द्वारा जन्मा है") (यूनानी: जिनेथिस (अनिश्चितकाल समय) सुरक्षित रखता है और दुष्ट (शैतान) नुकसान नहीं पहुँचा सकता / मसीही को पकड़ नहीं सकता है (यूनानी: हाप्टोमाई) (वर्तमान काल) (1 यूहन्ना 5:18)!

दुनिया में नए नियम की लंबी अवधि के दौरान शत्रु (शैतान) "दुष्ट के पुत्रों को" दुनिया के मसीहियों के बीच (साथ में नहीं) बोता है (यूनानी: ऐना मेसोन टू सीटू) (मत्ती 24:25, 30, 41)। परमेश्वर का वर्तमान राज्य (या कलीसिया) इसलिए मिश्रित

है। इसलिए इस प्रकार वर्तमान कलीसिया में कई "नामधारी-मसीही" या "सांस्कृतिक-मसीही" हैं!⁴¹

4. बहुत लंबी अवधि के अंत में शैतान को छोड़ दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:3ख, 7)।

यीशु मसीह के दूसरे आगमन से कुछ समय पहले, शैतान को उसकी "बन्धुआई" (अंकुश, नियंत्रित, सीमित) की स्थिति से मुक्त कर दिया जाएगा और वह मसीही कलीसिया के विरुद्ध "युद्ध (अंतिम)" के लिए दुष्ट दुनिया को इकट्ठा करेगा।

ड. बहुत छोटी अवधि

आरम्भ। इस दुनिया के इतिहास के अंत में शैतान का "बन्धुआई" से मुक्त होना बहुत छोटी अवधि का आरम्भ है (तुलना करें मत्ती 24:22)। इस छोटी अवधि को "3½ दिन" द्वारा प्रतीकित किया गया है (प्रकाशितवाक्य 11:9, 11)। तब अंतिम मसीही विरोधी "दो गवाहों" (एक गवाही संस्थान के रूप में मसीही कलीसिया का प्रतीक) को नष्ट कर देगा। शैतान "राष्ट्रों" को धोखा देगा और उन्हें मानव इतिहास में अंतिम लड़ाई के लिए इकट्ठा करेगा (प्रकाशितवाक्य 20:7-8)। "राष्ट्र" उन सभी देशों के सभी लोगों के लिए एक प्रतीक है जो यीशु मसीह में विश्वास नहीं करते हैं (गैर-मसीही, अविश्वासी) (मत्ती 24:29)।

समय की इस बहुत ही छोटी अवधि के दौरान, निम्नलिखित घटनाएँ घटित होंगी:

- अंतिम मसीही विरोधी का शासनकाल
- अंतिम महाक्लेश
- अंतिम लड़ाई

इस छोटी अवधि का अंत मसीह का अचानक और अप्रत्याशित दूसरा आगमन, मृतकों का पुनरुत्थान (प्रकाशितवाक्य 11:11), विश्वासियों का मसीह से मिलने और उसका स्वागत करने के लिए हवा में उठाया जाना, उनके शत्रुओं द्वारा देखते हुए (प्रकाशितवाक्य 11:12), अंतिम न्याय (प्रकाशितवाक्य 11:18; 14:6-12) और अपने अंतिम चरण में (नया आकाश और नई पृथ्वी) परमेश्वर के राज्य की स्थापना है (प्रकाशितवाक्य 11:18; 14:1-5; 21:1-2) जहाँ केवल धार्मिकता का वास होगा (2 पतरस 3:13)।

1. अंतिम मसीह विरोधी का शासनकाल (2 थिस्सलुनिकियों 2:1-12)

(1) अंतिम मसीह विरोधी को कौन रोके हुए है ?

यद्यपि पूरे विश्व इतिहास में कई मसीह विरोधी पैदा होते हैं (1 यूहन्ना 2:18; 4:3), एक अंतिम मसीह विरोधी (2 थिस्सलुनिकियों 2:3ख) होगा। लंबी अवधि के दौरान इस अंतिम मसीह विरोधी (नियम-विरुद्धी आदमी) का आना किसी "चीज़" या "व्यक्ति" द्वारा रोका जा रहा है (2 थिस्सलुनिकियों 2:6-8)। संभवतः यह दुनिया में "नियम" और "कानून और व्यवस्था चलाने वाले" का संदर्भ है।

जब दुनिया में कानून लागू नहीं होगा, तो अंतिम मसीह विरोधी (प्रतीक: रसातल से बाहर निकला पशु) दुनिया में एक संगठित गवाही संस्थान (प्रतीक: दो गवाह) के रूप में कलीसिया को नष्ट करने के लिए आएगा (प्रकाशितवाक्य 11:7)।

⁴¹ "सांस्कृतिक-मसीही" स्वयं को "मसीही" कहते हैं क्योंकि उनके माता-पिता मसीही हैं या क्योंकि उनके देश को मसीही संस्कृति विरासत में मिली है, जैसे कई सांस्कृतिक हिंदू और सांस्कृतिक मुस्लिमान हैं। किसी भी मामले में, उन्होंने नया जन्म प्राप्त नहीं किया है (यूहन्ना 3:7)।

(2) अंतिम मसीह विरोधी बाइबल के परमेश्वर का विरोध करेगा और स्वयं को प्रत्येक उस चीज से ऊँचा करेगा जिसे "भगवान" कहा जाता है या जिसकी पूजा की जाती है।

वह स्वयं को संगठित मसीही कलीसिया (प्रतीक: परमेश्वर का मंदिर) में स्थापित करेगा, स्वयं को परमेश्वर घोषित करेगा (2 थिस्सलुनिकियों 2:4; प्रकाशितवाक्य 13:14ख-15) और वहाँ अपने झूठ फैलाएगा (2 थिस्सलुनिकियों 2:9-12)। सच्चे मसीही उसका विरोध करते रहेंगे (याकूब 4:7) और उसकी उपासना करने और उसकी सेवा करने से इनकार कर देंगे। परन्तु इससे मसीहियों के विरुद्ध अंतिम महान क्लेश होगा और अंतिम लड़ाई होगी (पढ़ें प्रकाशितवाक्य 13:11-17)।

(3) मसीह विरोधी 3½ दिनों की प्रतीकात्मक अवधि के लिए अपनी बुरी शक्ति का प्रयोग करेगा।

संख्या "3½" शाब्दिक नहीं है, परन्तु बाइबल में बताई गई "बड़े उत्पीड़न की अवधि" को प्रदर्शित करती है (1 राजाओं 17:1; दानियेल 7:25; 9:27; 12:7; लूका 4:25; याकूब 5:17; प्रकाशितवाक्य 11:2-3,9,11; 12:6,14; 13:5)। संख्या 3½ से पता चलता है कि मसीह विरोधी उत्पीड़न की अवधि को ईश्वरीय संख्या 7 तक बढ़ाने का प्रयास करेगा, परन्तु आधे रास्ते (संख्या 3½) उसे अचानक और अप्रत्याशित रूप से रोक दिया जाएगा!

मसीह विरोधी उच्चतम संख्या 666 तक पहुँचने में सक्षम है (प्रकाशितवाक्य 13:18) (इसका प्रतीक है कि मसीह विरोधी "केवल एक आदमी है और पूरी तरह से परमेश्वर जैसा बनने में विफल होगा" (777)!) उसके सभी प्रयास विफल हो जाएंगे!

2. मसीहियों का अंतिम महाक्लेश (मत्ती 24:21-26)

हालाँकि, पूरे इतिहास में मसीही संकट और क्लेशों का अनुभव करेंगे (यूहन्ना 16:33; 2 तीमुथियुस 3:12; प्रकाशितवाक्य 7:14), दुनिया के इतिहास के अंत में एक अंतिम महाक्लेश होगा (मत्ती 24:21-26; प्रकाशितवाक्य 3:10)।

(1) "अंतिम दिनों" की कुछ विशेषताएँ।

लोग सुरक्षा को हलके में लेंगे, लापरवाही से रहेंगे और भौतिकवाद की उपासना करेंगे (मत्ती 24:37-39)। लोग स्वयं के प्रेमी, धन के प्रेमी, बुराई के प्रेमी और परमेश्वर के प्रेमी होने के बजाय आनंद के प्रेमी होंगे। वे घमंडी, अभिमानी, हृदयहीन, न क्षमा करनेवाले, निंदक (अपमानजनक), बिना आत्म-नियंत्रण और क्रूर होंगे। वे विश्वासघाती, उतावले और अहंकारी होंगे (2 तीमुथियुस 3:1-5)। नाममात्र मसीही यीशु मसीह में अपने विश्वास का त्याग करेंगे और दुष्ट आत्माओं द्वारा पाखंडी झूठे लोगों के माध्यम से सिखाई गई चीजों और धोखा देनेवाली आत्माओं का पालन करेंगे (1 तीमुथियुस 4:1-2)। कई नामधारी मसीही अपने मसीही विश्वास से दूर हो जाएंगे (2 थिस्सलुनिकियों 2:3क)।

(2) अंतिम मसीह विरोधी दुनिया और कलीसिया को जीत लेगा।

परमेश्वर सभी देशों और सभी लोगों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए अंतिम मसीह विरोधी को अनुमति दे देगा। परमेश्वर उसे मसीहियों के विरुद्ध युद्ध करने और एक विशेष अर्थ में उन्हें "जितने" की अनुमति भी देगा (प्रकाशितवाक्य 11:7; 13:7-8; तुलना करें अय्यूब अध्याय 1-2)। यह संभवतः एक संगठित साक्षी संस्थान के रूप में मसीही कलीसिया के विनाश (दिखने वाली कलीसियाएँ और अन्य मसीही संगठनों के विनाश) को संदर्भित करता है। यह पृथ्वी पर प्रत्येक

मसीही के विनाश का उल्लेख नहीं करता है। मसीह के दूसरे आगमन पर पृथ्वी पर मसीही होंगे!

(3) मसीही महाक्लेश से होकर निकलेंगे।

यीशु मसीह (मत्ती 24:3-31) और प्रेरित पौलुस (2 थिस्सलुनीकियों 1:5-10; 2:1-8), पतरस (2 पतरस 3:3-13; तुलना करें 1 पतरस 1:6-7); और यूहन्ना (प्रकाशितवाक्य 13:5-10,15-18; 14:14-19) सर्वसम्मति से सिखाते हैं कि यीशु मसीह के एक और केवल एक दूसरे आगमन से पहले अंतिम समय में रहने वाले सभी मसीहियों को अवश्य अंतिम महाक्लेश से होकर जाना होगा! तब कुछ भी ऐसा नहीं होने वाला जो "कलीसिया का गुप्त स्वर्गारोहण" कहलाता है, जो कि महाक्लेश से पहले पृथ्वी से सभी मसीहियों को हटा देगा!

"उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा" (मत्ती 24:21)। झूठे मसीह (मसीहा) और अन्य धर्मों के झूठे भविष्यद्वक्ता प्रकट होंगे, मसीहियों को परखने और धोखा देने के लिए महान चिन्ह और चमत्कार करेंगे (मत्ती 24:24क)!

(4) परन्तु वास्तविक मसीहियों को डरने की आवश्यकता नहीं है!

वास्तविक मसीहियों को धोखा देना असंभव है (मत्ती 24:24ख)। मसीही इस दुष्ट दुनिया पर जयवंत होंगे क्योंकि उन्होंने नया जन्म पाया है और वे विश्वास करते हैं (1 यूहन्ना 5:4; प्रकाशितवाक्य 17:14)। प्रभु ने वादा किया: "मैं तुम्हें न कभी छोड़ूंगा; न मैं तुम्हें कभी त्यागूंगा।" इसलिए हम विश्वास के साथ कह सकते हैं, "प्रभु मेरा सहायक है; मैं नहीं डरूंगा। मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?" (इब्रानियों 13:5-6) मसीही अंत तक दृढ़ रहेंगे (मत्ती 24:13; रोमियों 11:20; 14:4)। परमेश्वर, जिसने उनमें एक अच्छा काम आरम्भ किया, वह उसे करता रहेगा और मसीह के दूसरे आगमन पर उसे पूर्ण रीति से पूरा करेगा (फिलिप्पियों 1:6)। कोई भी और कुछ भी वास्तविक मसीहियों को यीशु मसीह के हाथ से नहीं छीन सकता (यूहन्ना 10:28-30)। यीशु मसीह एक भी वास्तविक मसीही को नहीं खोएगा (यूहन्ना 18:9)। कोई भी और कुछ भी उन्हें उनके लिए परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता (रोमियों 8:37-39)। परन्तु "नामधारी-मसीही" या "सांस्कृतिक-मसीही" नया जन्म नहीं पाएँगे (तुलना करें यूहन्ना 3:3-8) और "मसीही विश्वास से पीछे हट जाएँगे या दूर हो जाएँगे" (एनआईवी: विद्रोही) (यूनानी: अपोस्टेसिस) (2 थिस्सलुनीकियों 2:3)।

(5) महाक्लेश की अवधि की लंबाई।

क्लेश की अवधि 3½ वर्ष की शाब्दिक अवधि तक नहीं रहेगी, क्योंकि संख्या "3½ दिन" (प्रकाशितवाक्य 11:9-12) इसकी लंबाई को निर्दिष्ट किए बिना "क्लेश की अवधि" का प्रतीकत्व (प्रदर्शित) करती है। फिर भी, यीशु सिखाता है कि क्लेश की अवधि "चुनों हुआओं के कारण कम कर दी जाएगी" (न्य-जन्म पाए मसीही) (मत्ती 24:22)।

3. मसीहियों के विरुद्ध अंतिम लड़ाई

इस छोटी अवधि (महाक्लेश) के अंत में, शैतान (गैर-मसीही) राष्ट्रों को धोखा देने के लिए और मसीहियों (प्रतीक: "संतों") के विरुद्ध अंतिम लड़ाई हेतु उन्हें इकट्ठा करने के लिए (प्रकाशितवाक्य 20:7-9क) पूरी पृथ्वी की चार पवन दिशाओं (प्रतीक: "पृथ्वी के चार कोने") में जाएगा।

अंतिम लड़ाई को अन्य बाइबल पद्यों में भी दर्शाया गया है (प्रकाशितवाक्य 16:12-16; 17:14; 19:17-19)। बाइबल

विशिष्ट राष्ट्रों को नाम से संदर्भित नहीं करती है, क्योंकि "गोग और मगोग" (तुलना करें यहेजकेल 38:2,15-16; यहेजकेल 19:17) "सभी देशों के अविश्वासियों" के प्रतीक हैं, जो पुराने नियम के प्रकाशन के दौरान भी परमेश्वर के लोगों (मसीह और मसीहियों) के शत्रु बन गए थे (यशायाह 24:21; मत्ती 24:9; प्रकाशितवाक्य 19:18)। यीशु मसीह का दूसरा आगमन इस अंतिम लड़ाई और महाक्लेश की अवधि को समाप्त करता है (प्रकाशितवाक्य 19:11-16, 20-21; 20:9ख-10)।

च. यीशु का अचानक से प्रकट होना

1. यीशु मसीह का केवल एक दूसरा आगमन होने वाला है (मत्ती 24:27-31)

(1) शब्द: "आगमन" और "प्रकट"।

यीशु और पौलुस दोनों ने "आगमन" (यूनानी: परसिआ) (मत्ती 24:39; 2 थिस्सलुनीकियों 2:1) और "प्रकट" (यूनानी: अपोकालुप्सिस) (लूका 17:30 ; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7) शब्दों का उपयोग एक ही घटना के लिए किया है।

(2) दृष्टान्तों में दूसरा आगमन।

दृष्टान्तों में (मत्ती 13:36-43; 25:10-13; 25:19) और बाइबल के सभी शिक्षण पद्यों में (मत्ती 16:27; 24:30-31; 25:31-32) यीशु मसीह का दूसरा आगमन एक एकल और सब-सम्मिलित (सब- एकत्रित) घटना है!

2. मसीह का दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा, सभी लोगों के लिए बहुत ही दिखने और सुनने योग्य होगा।

(1) मसीह का दूसरा आगमन अचानक और अप्रत्याशित होगा।

यह "रात में चोर के रूप में" होगा (1 थिस्सलुनीकियों 5:1-2; प्रेरितों 1:7)। कोई भी व्यक्ति उस दिन या समय का अनुमान नहीं लगा सकता है (मत्ती 24:36, 42)। जब मसीह लौटेगा तो अविश्वासी तैयार नहीं होंगे (मत्ती 24:37-41)। मसीहियों को तैयार होना चाहिए। फिर भी, मसीह तब वापस आएगा जब मसीही भी इसकी अपेक्षा नहीं करते होंगे (मत्ती 24:43-44)!

(2) मसीह का दूसरा आगमन अच्छे से दिखने योग्य होगा।

यह बिजली के समान होगा जो पृथ्वी पर पूर्व से पश्चिम तक दिखाई देती है (मत्ती 24:27-28)। पृथ्वी पर सभी लोग यीशु मसीह को आकाश के बादलों पर आता हुआ देखेंगे (मत्ती 24:30; प्रकाशितवाक्य 1:7)।

(3) मसीह का दूसरा आगमन अच्छे से सुनने योग्य होगा।

वह तुरही की एक जोरदार ध्वनी के समान होगा। पृथ्वी पर सभी लोग मसीह की ऊँची आज्ञा और प्रधान स्वर्गदूत की तुरही की ध्वनी को सुनेंगे (मत्ती 24:31; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16) जो सभी मृतकों को जगाएगी (यूहन्ना 5:28)। हर कोई उसी क्षण जान जाएगा कि यीशु मसीह कौन है।

(4) मसीह का दूसरा आगमन बड़े चिन्हों के साथ होगा।

मसीह शैतान और उसके सहयोगियों को अपनी मुँह की फूँक मारकर, अपने आगमन के वैभव के साथ उन्हें नष्ट करके (2

थिस्सलुनीकियों 2:8) और उन्हें स्वर्ग की आग से भस्म करके (प्रकाशितवाक्य 20:9ख) मसीहियों के विरुद्ध उनकी अंतिम लड़ाई को समाप्त कर देगा। वह उन सभी को नरक में फेंक देगा (प्रकाशितवाक्य 19:20-21; 20:9ख-10)।

एक बड़ा भूकंप होगा जो पहाड़ों, द्वीपों और आकाश को हटा देगा। ब्रह्मांड में पिंड जाते रहेंगे। इस प्रकार पुरानी सृष्टि सब कुछ के नवीकरण के लिए रास्ता बना देगी (मत्ती 24:29; इब्रानियों 1:10-12; प्रकाशितवाक्य 6:12-17; 16:17-21; 20:11; 21:1)!

इस प्रकार, उसके दूसरे आगमन पर तथाकथित दूसरी वापसी से पहले मसीह की कोई तथाकथित पहली गुप्त वापसी (कलीसिया का एक गुप्त रीति से उठाया जाना) नहीं होगी (जैसा कि डिस्पेंसेशनलिस्ट सिखाते हैं)!

3. मसीह के दूसरे आगमन के एक और केवल एक दिन में पाँच महत्वपूर्ण घटनाएँ होंगी:

- उन सभी का पुनरुत्थान जो पहले ही मर चुके थे
- जीवित मसीहियों का रूपांतरण
- सभी विश्वासियों द्वारा यीशु मसीह का स्वागत
- सभी लोगों का अंतिम न्याय
- सभी चीजों का नवीनीकरण

छ. पहली घटना

उन सभी का पुनरुत्थान जो पहले ही मर चुके थे

1. यीशु मसीह पहला है जो मरे हुएओं में से ज़िंदा किया गया है।

उद्धार के इतिहास में कई लोगों को मृतकों से ज़िंदा किया गया था (2 राजा 4:32-35; मत्ती 11:5; लूका 7:14-15; लूका 8:53-55; यूहन्ना 11:38-44; मत्ती 27:51-53; प्रेरितों 9:36-42; प्रेरितों 20:8-11), परन्तु वे बाद में फिर से मर गए! प्रभु यीशु मसीह वह एकमात्र था जिसे एक अविनाशी और महिमामय शरीर के साथ मृतकों में से पुनर्जीवित किया गया था। इसीलिए यीशु मसीह को "मृतकों का पहिलौठा" कहा जाता है (कुलुस्सियों 1:18)। "और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे। परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से; पहिला फल मसीह (2000 वर्ष पहले); फिर मसीह के आने पर उसके लोग। इस के बाद अन्त होगा ... "(1 कुरिन्थियों 15:22-24क)।

2. यूहन्ना रचित सुसमाचार में पहला और दूसरा पुनरुत्थान ।

यीशु ने यूहन्ना रचित सुसमाचार में दो पुनरुत्थान की बात की है:

मसीहियों का पहला पुनरुत्थान उनकी मानवीय आत्मा का पुनर्जनन होता है, जब भी वे सुसमाचार को मानते हैं। यह पूरे नए नियम की अवधि के दौरान हुआ है। "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। मैं तुम से सच सच कहता हूँ, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे,

और जो सुनेंगे वे जीएंगे" (यूहन्ना 5:24-25)। उनकी मृत आत्मा (प्राण) (इफिसियों 2:1) को जीवित बना दिया जाता है (इफिसियों 2:5), अर्थात्, नया जन्म (यूहन्ना 33:3-8)।

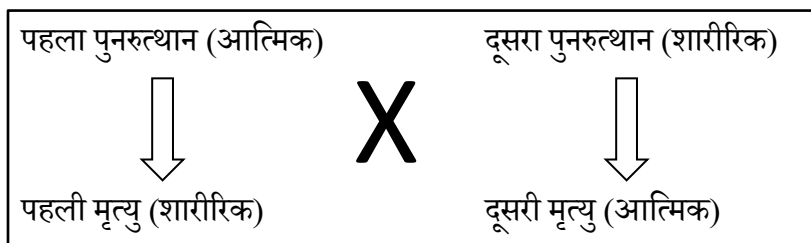
मसीहियों का **दूसरा पुनरुत्थान** यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर उनके मानव शरीर का पुनरुत्थान है। "वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे" (यूहन्ना 5:28-29)। यूहन्ना 5:28-29 यीशु के दूसरे आगमन पर सभी लोगों के शरीर के पुनरुत्थान और अंतिम न्याय की बात करता है। आत्मिक पुनरुत्थान और शारीरिक पुनरुत्थान दोनों ही शाब्दिक और वास्तविक घटनाएँ हैं!

3. प्रकाशितवाक्य में पहला और दूसरा पुनरुत्थान।

उसी प्रकार से, यीशु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में "पहले पुनरुत्थान" (मसीहियों का) और "दूसरी मृत्यु" (गैर-मसीहियों की) के विषय में बोलता है (प्रकाशितवाक्य 20:4-6) और इस रीति उसका "पहली मृत्यु" (सभी लोगों की) और "दूसरा पुनरुत्थान" (सभी लोगों का) से तात्पर्य था।

बाइबल मृतकों से दो शारीरिक पुनरुत्थान नहीं सिखाती है, परन्तु मसीह के दूसरे आगमन पर मृतकों का केवल एक पुनरुत्थान (यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 24:15; प्रकाशितवाक्य 20:12-13)।

प्रकाशितवाक्य 20:4-6 एक अलंकार (केइसमस)⁴² है!



"पहला पुनरुत्थान" और "दूसरी मृत्यु" शाब्दिक वास्तविक घटनाओं (आत्मिक अनंत जीवन और आत्मिक अनंत मृत्यु) के लिए प्रतीकात्मक / आलंकारिक अभिव्यक्ति हैं! "पहली मृत्यु" और "दूसरा पुनरुत्थान" इसी प्रकार शाब्दिक वास्तविक घटनाओं (अस्थायी शारीरिक मृत्यु और अनंत शारीरिक पुनरुत्थान) के लिए शाब्दिक अभिव्यक्ति हैं!

- मसीह के दूसरे आगमन से पहले केवल मसीहियों को स्वर्ग में स्थानांतरित किया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:4-6; तुलना करें प्रकाशितवाक्य 6:9-11; इब्रानियों 12:22-23)।
- मसीह के दूसरे आगमन के बाद केवल गैर-मसीहियों को नरक में डाल दिया जाएगा (मती 25:46)।

पहली मृत्यु (का तात्पर्य) केवल (मसीही) और गैर-मसीही दोनों की शारीरिक मृत्यु को संदर्भित करती है, जब वे मर जाते हैं और उनकी मानवीय आत्माएँ उनके मानव शरीर से अलग हो जाती हैं (सभोपदेशक 12:7)। "मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते" (1 कुरिन्थियों 15:50)। इसीलिए वर्तमान नाशवान शरीर को मरना होगा!

⁴² केइसमस। दूसरा वाक्यांश पहले वाक्यांश का उल्टा क्रम है।

पहला पुनरुत्थान एक शाब्दिक घटना के लिए एक आलंकारिक अभिव्यक्ति है, यानी, शरीर का पुनरुत्थान नहीं, बल्कि केवल (मात्र) मसीही की आत्मा (प्राण) (यूनानी: पसुचे) के पुनरुत्थान के लिए (प्रकाशितवाक्य 20:4), अर्थात्, स्वर्ग में परमेश्वर / मसीह की उपस्थिति में पृथ्वी पर मरने वाले व्यक्ति की आत्मा का स्थानांतरण (तुलना करें लूका 16:22; लूका 23:43; 2 कुरिन्थियों 5:1, 8; फिलिप्पियों 1:23; प्रकाशितवाक्य 20:4) यीशु के पहले और दूसरे आगमन के बीच की पूरी अवधि के दौरान।

1000 वर्षों की प्रतीकात्मक अवधि के दौरान, जब मसीही मरते हैं, "वे एक बार हमेशा के लिए जी लिए" (मसीह की उपस्थिति में)। (यूनानी: एजेसन <ज़ाओ)। यूनानी शब्द "एजेसन" (अनिश्चित काल) का अर्थ है: "वे एक बार सारे समय के लिए जीते हैं", (एनआईवी के बजाय: वे जीवन में आए) (जो बहुत अधिक शारीरिक पुनरुत्थान के रूप में दिखता है)। यह स्वर्ग की आत्मिक वास्तविकता में अद्वितीय आत्मिक पुनरुत्थान / स्थानांतरण का संदर्भ है, उनकी शारीरिक मृत्यु के बाद स्वर्गीय महिमा में उनके शाब्दिक आत्मिक जीवन का संदर्भ (सभोपदेशक 12:7; तुलना करें लूका 16:22; लूका 23:43; 2 कुरिन्थियों 5:1,8; फिलिप्पियों 1:23; कुलुस्सियों 3:3-4; 1 थिस्सलुनिकियों 4:14; 1 थिस्सलुनिकियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 14:13; प्रकाशितवाक्य 20:4)। इसे "पहला पुनरुत्थान" कहा जाता है। यह भौतिक पुनरुत्थान नहीं है, बल्कि आत्मिक पुनरुत्थान है।

गैर-मसीहियों की आत्माएँ "जीवित नहीं" (एनआईवी के बजाय: जीवन में नहीं आईं) (यानी मसीह की उपस्थिति में नहीं आईं), जब तक कि 1000 वर्ष समाप्त नहीं हुए (यूनानी: ऊक एजेसान अकरी टेलेस्ते ता चिलिआ एते)। उन्हें स्वर्ग में स्थानांतरित नहीं किया जाता है, परन्तु दूसरे आगमन तक नरक में रहेंगी, जब वे अंतिम न्याय में मसीह के सामने खड़ी होंगी (तुलना करें मरकुस 8:34-38; मरकुस 9:43-48; लूका 16:23; 2 पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 20:5 और मत्ती 25:31-33)।

यूनानी शब्द "एजेसान" (अनिश्चित काल) का अर्थ है: "वे एक बार हमेशा के लिए जिए", उनकी शारीरिक मृत्यु के बाद स्वर्गीय महिमा में उनके शाब्दिक आत्मिक जीवन का संदर्भ। उनकी मानव आत्मा / प्राण मृत शरीर से स्वर्ग में "स्थानांतरित" हो जाती है (सभोपदेशक 12:7)!

यूनानी शब्द "लीव" का एक ही अर्थ है:

- लूका 20:37-38. मसीह के पहले आगमन से पहले जीना। अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर (शारीरिक) मृतकों का परमेश्वर नहीं है (यूनानी: नेक्रोन), परन्तु (आत्मिक रूप से) जीवितों का है (यूनानी: ज़ोनटोन <ज़ाओ) (कृदंत, वर्तमान काल, सक्रिय)। परमेश्वर के विचार में, कलीसिया के आत्मिक पिता "जीवित" हैं (यूनानी: ज़ोसिन <ज़ाओ) (वर्तमान काल)।

- यूहन्ना 11:25. मसीह के पहले आगमन के बाद जीना। भले ही उसे (शारीरिक रूप से) एक बार मरना है (अनिश्चित काल), वह (उसकी आत्मा) निश्चित रूप से "जीएगी" (यूनानी: ज़ोसेताई <ज़ाओ) (भविष्य काल)।

- 1 थिस्सलुनिकियों 5:10. मसीह के दूसरे आगमन पर ज़िन्दा होना। "चाहे हम जाग रहे हैं (अभी भी जीवित हैं) (उसके दूसरे आगमन पर) या (हमारे शरीर) सो रहे हैं (मृत्यु में) (यूनानी: काथिउडो), हम (हमारी आत्माएँ और शरीर)"

जीएंगे "(यूनानी: जोसोमन <जाओ) (अनिश्चित काल) मिलकर (यूनानी: हम सून) मसीह के साथ।"

दूसरा पुनरुत्थान (तात्पर्य) मसीही और गैर-मसीही दोनों के शरीर के (एकल) शारीरिक पुनरुत्थान को संदर्भित करता है, साथ ही साथ (एक और केवल) मसीह के दूसरे आगमन पर (यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 24:15; प्रकाशितवाक्य 20:12a,13-14)। "क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान (शरीर) अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार (शरीर) अमरता को पहिन ले" (1 कुरिन्थियों 15:53)। मसीह में मारे गए मसीहियों की (आत्माएँ) यीशु के दूसरे आगमन पर उसके साथ लाई जाएंगी (1 थिस्सलुनीकियों 4:14)। और (मृतकों के शरीर) जो मसीह में सो गए हैं, पहले उठेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)। तब महिमामय मानव आत्मा (1 यूहन्ना 3:2) को एक अविनाशी एकता में महिमामय मानव शरीर के साथ फिर से एकीकृत किया जाएगा (फिलिप्पियों 3:21)। पुनर्जीवित मसीही "एक जीवन देने वाली आत्मा" होगा जो पुनरुत्थान किए गए मसीह की उसी परिपूर्ण समानता को लिए हुए होगा। इसका अर्थ यह है कि मसीही पूरी रीति से और सिद्धता से पवित्र आत्मा के नेतृत्व में होंगे और पवित्र आत्मा के चलाए चलेंगे (1 कुरिन्थियों 15:45-50 तुलना करें गलातियों 5:16,18, 25)। परमेश्वर इस महिमामय भविष्य के लिए मसीहियों को वर्तमान समय में पवित्र आत्मा देकर एक जमा राशि के रूप में तैयार कर रहा है जो आश्वासन देता है कि यह रूपान्तरण निश्चित रूप से होगा (2 कुरिन्थियों 1:22; 2 कुरिन्थियों 5:5)। आत्मिक पुनरुत्थान और शारीरिक पुनरुत्थान दोनों ही वास्तविक घटनाएँ हैं! मसीह के दूसरे आगमन के बाद और कोई पाप नहीं होगा (1 कुरिन्थियों 15:56-57), कोई मृत्यु या शोक या रोना या पीड़ा नहीं होगी, क्योंकि चीजों का पुराना क्रम जाता रहेगा (प्रकाशितवाक्य 21:4)।

दूसरी मृत्यु एक शाब्दिक घटना के लिए एक आलंकारिक अभिव्यक्ति है। यह शारीरिक मृत्यु को संदर्भित नहीं करती है (क्योंकि वह पहले से ही अतीत में हो चुकी है), परन्तु केवल गैर-मसीही की आत्मा और शरीर की (एकल) अनंत मृत्यु, अर्थात् अविश्वासी और अनाज्ञाकारक (अपवित्र और अधर्मी) की आत्मा (प्राण) और शरीर का नरक में स्थानांतरण (प्रतीक: जलती हुई गंधक की उग्र झील में अविश्वासी का फेंका जाना) (मत्ती 10:28; प्रकाशितवाक्य 2:11; प्रकाशितवाक्य 20:6,4; प्रकाशितवाक्य 21:8) अंतिम न्याय के दिन।

जबकि प्रकाशितवाक्य 20:4-6 मसीही और गैर-मसीही दोनों के पुनरुत्थान के विषय में बात करता है, 1 थिस्सलुनीकियों 4 और 1 कुरिन्थियों 15 केवल मसीहियों के पुनरुत्थान के विषय में बोलते हैं और गैर-मसीहियों के पुनरुत्थान के विषय में नहीं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीहियों के साथ गैर-मसीहियों को एक साथ (एक ही समय पर) पुनर्जीवित नहीं किया जाएगा (यूहन्ना 5:28-29)।

ज. दूसरी घटना

जीवित मसीहियों का रूपांतरण

यीशु मसीह के लौटने पर वे मसीही जो उस समय जीवित होंगे, उनके नश्वर शरीर (1 कुरिन्थियों 15:51-53) और असिद्ध आत्माएँ (तुलना करें रोमियों 8:29; इफिसियों 1:4) एक क्षण में बदल जाएंगे, पलक झपकते ही। "यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले" (1 कुरिन्थियों 15:51-53)।

झ. तीसरी घटना

सभी विश्वासियों द्वारा यीशु मसीह का स्वागत

1. पुनरुत्थान के बाद केवल मसीहियों को यीशु मसीह से मिलने और स्वागत करने के लिए आकाश में उठाया जाएगा (मत्ती 24:31,40क, 41क; तुलना करें लूका 16:22)।

सभी को दूसरे आगमन का अनुभव होगा। हालाँकि मसीही और गैर-मसीही एक साथ पुनर्जीवित होंगे (यूहन्ना 5:28-29), स्वर्गदूत सबसे पहले चुने हुए (यानी सभी वास्तविक मसीही) को इकट्ठा करेंगे, प्रभु यीशु मसीह से मिलने और उसका हवा में स्वागत करने के लिए (मत्ती 24:40क,41क; तुलना करें 1 थिस्सलुनिकियों 4:17; 2 थिस्सलुनिकियों 1:10)।

स्वर्गारोहण। स्वर्गदूत पुनर्जीवित और परिवर्तित मसीहियों को यीशु मसीह से बादलों पर एक साथ हवा में (1 थिस्सलुनिकियों 4:16-17) मिलने के लिए (यूनानी: ईस अपानटेसीन) "छीन लेंगे" (प्रकाशितवाक्य 12:5) या "पकड़ लेंगे / ले लेंगे" (1 थिस्सलुनिकियों 4:17) (यूनानी: हार्पाजो)। शब्द "छीन लेंगे" (यूनानी: हार्पाजो) (भविष्य काल) का अर्थ है "बल के साथ छीनना" (यूहन्ना 6:15; यूहन्ना 10:28; यहूदा 1:23; प्रकाशितवाक्य 12:5)। मसीहियों को स्वर्गदूतों के साथ "(यूनानी: पारालमबानोमाई) ले जाया जाएगा (मत्ती 24:31,40क-41क)। यह तथाकथित "कलीसिया या सभी नया जन्म लिए मसीहियों का उठाया जाना" है, जो कि मसीही के दूसरे आगमन से 3½ या 7 वर्ष पहले नहीं होगा, परन्तु मसीह के दूसरे आगमन पर होगा! इन सभी मसीहियों को "भेड़" (मत्ती 25:33), "उसकी गेहूँ" (मत्ती 3:12), "अच्छा बीज", "राज्य के बच्चे" या "धर्मी" कहा जाता है (मत्ती 13:36-43)। इस प्रकार, केवल पुनर्जीवित और रूपांतरित मसीही यीशु के दूसरे आगमन पर उसका हवा में स्वागत करेंगे।

"मिलने के लिए" अभिव्यक्ति (यूनानी: ईस अपानटेसिन)। यह लोगों के अपने घर को छोड़ने और एक महत्वपूर्ण व्यक्ति से मिलने और उसका स्वागत करने के लिए और फिर उनके साथ अपने घर लौटने के रिवाज को संदर्भित करता है (देखें प्रेरितों 28:15; मत्ती 25:10)।

मत्ती 25:6 कहता है, "आधी रात को धूम मची, कि देखो, दूल्हा आ रहा है! उस से भेंट करने के लिये चलो!" (यूनानी: इडो हो नुमफियोस, एक्सेरेचेस्ते ईस एपेंटेसिन ऑटू)। पद्य 10 कहता है: "जब वे तेल मोल लेने को जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुँचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ ब्याह के घर में चली गईं और द्वार बन्द किया गया।" शब्द: "ईस एपेंटेसिन" यीशु मसीह के दूसरे आगमन का उल्लेख करता है जो अचानक और अप्रत्याशित रूप से आएगा और ऐसे लोगों से मिलने जो उससे मिलने के लिए बाहर निकले हैं और उनसे जिन्होंने उससे मिलने में भाग नहीं लिया (देखें मत्ती 24:40-41) और शादी के भोज में भी हिस्सा नहीं लिया।

प्रेरितों 28:15 में शब्द "ईस एपेंटेसिन" रोम में विश्वासियों के लिए उपयोग किया गया है, जो रोम में वापिस आने से पहले पौलुस से मिलने और उसका स्वागत करने के लिए रोम से बाहर गए थे।

1 थिस्सलुनिकियों 4:16-17 में शब्द "ईस एपेंटेसिन" उन सभी मसीहियों के लिए उपयोग किए गए हैं जिन्हें यीशु के दूसरे आगमन पर उससे हवा में मिलने, स्वागत करने, महिमा करने और उस पर अचंभा करने के लिए पुरानी पृथ्वी से

छीन लिया गया था (उठा लिया गया) (यूनानी: हार्पाजो) (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-10) और इस अंतिम न्याय के दिन आंके जाने के लिए (मत्ती 25:31-33), साथ ही साथ इस पुरानी पृथ्वी के न्याय के साथ (मत्ती 24:29-31; रोमियों 8:19-23; 2 पतरस 3:10-13; देखें प्रकाशितवाक्य 6:12-17; 16:17-21; 20:11) इससे पहले कि वे यीशु मसीह के साथ (नए यरुशलेम के रूप में) मिलकर नई पृथ्वी पर उतरे (प्रकाशितवाक्य 21:1-2) मसीह के साथ हमेशा रहने के लिए (1 थिस्सलुनीकियों 4:18; 5:10; प्रकाशितवाक्य 21:3-5)!

महिमा और अचम्भा करना। यीशु मसीह हमेशा के लिए संतों में (परमेश्वर द्वारा अलग रखे गए) महिमावान होगा (यूनानी: एंडोक्साज़ोमाई) (अनिश्चित काल निष्क्रिय)। वे पूरी रीति से मसीह की विशेषताओं को प्रतिबिंबित करेंगे (देखें 2 कुरिन्थियों 3:18)। वह "तेरे कारण आनन्द से मगन होगा ... वह ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा" (सपन्याह 3:17; यशायाह 49:3 देखें)। परमेश्वर स्वयं को यीशु मसीह में उसके देह धारण, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और सिंहासन प्राप्ति में महिमावान करेगा (इब्रानी: पे'आर हिस्) (यशायाह 44:23; 49:3; प्रकाशितवाक्य 5:1-14) और "स्वयं को फिर से महिमावान" करेगा (यूनानी: पालिन डोक्साओ) (भविष्य काल) (यूहन्ना 12:20) यीशु मसीह में उसके दूसरे आगमन पर! यीशु मसीह एक बार फिर से सभी लोगों को आश्चर्यचकित कर देगा (यूनानी: थाउमाज़ो) (अनिश्चित काल निष्क्रिय) जो लोग विश्वास करते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 1:10)! वे उसकी प्रशंसा करेंगे। अंतिम न्याय के बाद केवल वे ही मसीह के साथ मिलकर नई पृथ्वी पर लौटेंगे!

2. बाद में उसी दिन गैर-मसीही अंतिम न्याय के लिए मसीह के सिंहासन के सामने एकत्रित किए जाएंगे (मत्ती 24:40ख, 41ख)।

सभी अविश्वासियों और गैर-मसीहियों को "पीछे छोड़ दिया जाएगा" (देखें मत्ती 24:40ख, 41ख) ताकि पहले आकाशीय पिंडों में हिंसक परिवर्तन को अनुभव करें / देखें (प्रकाशितवाक्य 6:12-17)। मसीह के स्वागत में उनका कोई हिस्सा नहीं होगा। बाद में दूसरे आगमन के दिन स्वर्गदूत उन्हें एक और अंतिम न्याय के लिए हवा में मसीह के न्याय के आसन के सामने एकत्रित करेंगे (मत्ती 24:40ख, 41ख; देखें मत्ती 25:31-33; प्रकाशितवाक्य 20:11-12)! उन्हें उग्र आग भट्टी में फेंक दिया जाएगा (मत्ती 13:40-42,48; मत्ती 25: 32-33)। अविश्वासियों और गैर-मसीहियों को "बकरियाँ" (मत्ती 25:33), "भूसी" (मत्ती 3:12), "जंगली दाने", "दुष्टों की संतान" या "पाप करने वाले लोग और जो बुराई करते हैं" कहा गया है (मत्ती 13:36-43)।

ज. चौथी घटना **सभी लोगों का अंतिम न्याय**

1. बाइबल केवल एक अंतिम न्याय के विषय में सिखाती है।

(1) हवा में केवल एक अंतिम न्याय।

यीशु मसीह के एकल और एक दूसरे आगमन पर मृतकों में से केवल एक पुनरुत्थान होगा (प्रेरित 24:33; यूहन्ना 5:28-29)। इसके तुरंत बाद उन सभी लोगों का एकल और एक अंतिम न्याय होगा जो कभी इतिहास में रहते थे (मत्ती 3:12; 13:30, 40-43; 19:28; 24:39-42; 25:31-46; लूका 17:30, 34-35)।

"सिंहासन" के लिए निम्नलिखित तीन शब्द एक और एक ही अंतिम न्याय दिन का संदर्भ देते हैं!

- "मसीह के न्याय आसन" के सामने विश्वासियों और अविश्वासियों का अंतिम न्याय (2 कुरिन्थियों 5:10)
- "मसीह के महिमामय सिंहासन" के सामने सभी राष्ट्रों (इस्राएल सहित) का न्याय (मत्ती 19:28; 25:25-7)
- "महान श्वेत सिंहासन" के सामने सभी पुनर्जीवित मृतकों का न्याय (प्रकाशितवाक्य 20:11-12)

जैसे यीशु मसीह के लिए विभिन्न अलग-अलग नाम अलग-अलग व्यक्तियों को संदर्भित नहीं करते हैं, उसी प्रकार अंतिम न्याय के लिए विभिन्न अलग-अलग नाम कई अलग-अलग न्यायों को संदर्भित नहीं करते हैं।

बाइबल में "सिंहासन" को ऊपरी क्षेत्रों में दर्शाया गया है (1 राजा 22:19; दानियेल 7:9-10; प्रकाशितवाक्य 4:2; 20:4; तुलना करें "हवा" 1 थिस्सलुनीकियों 4:17 में)।

(2) लोगों का उसके अनुसार अंतिम न्याय जो उन्होंने किया है।

अंतिम न्याय के दिन तक मसीही और गैर-मसीही एक दूसरे के बीच मिश्रित रहेंगे (मत्ती 13:30)। परन्तु अंतिम न्याय के दिन मसीहियों को गैर-मसीहियों से अलग कर दिया जाएगा (मत्ती 13:41-43; 25:32)।

हवा में यीशु मसीह के न्याय सिंहासन के सामने स्वर्गदूतों द्वारा सभी लोगों को इकट्ठा करने के बाद, यीशु मसीह अंतिम बात बोलेगा (यूहन्ना 5:22, 27)। वह सार्वजनिक रूप से सब कुछ प्रकट करेगा जो मसीही और गैर-मसीहियों ने किया है (सभोपदेशक 12:14; रोमियों 2:5-8)। सभी को उसे अपना लेखा देना होगा (इब्रानियों 4:13; तुलना करें मत्ती 10:26) चाहे वह यीशु मसीह से संबंधित हो या नहीं और चाहे वह उसके वचन का पालन करता है या नहीं। "तब वे (बकरियाँ) अनंत दण्ड के लिए चली जाएँगी, परन्तु अन्य (भेड़ें) अनन्त जीवन में जाएँगी" (मत्ती 25:46)।

जिनके नाम जीवन की पुस्तक में दर्ज किए गए हैं, केवल वे परमेश्वर के राज्य के अपने अंतिम चरण (नई पृथ्वी) को विरासत में प्राप्त करेंगे (मत्ती 25:34; प्रकाशितवाक्य 20:12,15)।

2. गैर-मसीहियों को सार्वजनिक रूप से दोषी ठहराया जाएगा।

(1) शारीरिक मृत्यु से पहले उन्हें व्यक्तिगत रूप से दोषी ठहराया जाता है।

जो लोग यीशु मसीह में विश्वास नहीं करते हैं (गैर-मसीही और अविश्वासी), उन्हें अंतिम न्याय के दिन सजा नहीं सुनाई जाएगी, क्योंकि बाइबल कहती है कि पृथ्वी पर मरने से पहले ही उन्हें दोषी ठहरा दिया गया है! उन्हें निम्नलिखित के लिए दोषी ठहराया गया (विनाश के लिए) है:

- उनका अविश्वास (यूहन्ना 3:18, 36; तुलना करें रोमियों 8:1)
- सही तरीके से जीने की उनकी उपेक्षा (मत्ती 25:41-46)
- अधर्मी कर्म जो उन्होंने किए हैं (2 थिस्सलुनीकियों 1:6, 8; प्रकाशितवाक्य 21:8)।

मसीह के दूसरे आगमन पर, यहाँ तक कि गैर-मसीही भी स्वयं का समर्पण करेंगे ("अपने घुटनों पर आएँगे") और स्वीकार करेंगे कि यीशु मसीह वास्तव में प्रभु था (फिलिप्पियों 2:11)! परन्तु तब उनके लिए बहुत देर हो जाएगी!

(2) उनके शारीरिक पुनरुत्थान के बाद सार्वजनिक रूप से उन्हें दोषी ठहराया जाता है।

उनकी शारीरिक मृत्यु पर उनकी आत्मा (प्राण) को उनके शरीर से अलग कर दिया जाता है और अधोलोक में डाल दिया

जाता है (तुलना करें लूका 16:23-26)। पुनरुत्थान के समय, उनके शरीर को मसीहियों के शरीर के साथ फिर से जीवित किया जाएगा (यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 24:15)। उन्हें ऊपरी क्षेत्रों में मसीह के न्याय के आसन के सामने लाया जाएगा (मत्ती 24:40ख-41ख) जहाँ उन्हें सार्वजनिक रूप से दोषी ठहराया जाएगा। उन्हें नरक की अनन्त आग की सजा दी जाएगी (मत्ती 3:12ख)। विशेष रूप से परमेश्वर की दृष्टि में जो सही है, उसे करने की उनकी उपेक्षा का खुले तौर पर उल्लेख किया जाएगा (पढ़ें मत्ती 25:41-46), ताकि सभी को पता चले कि परमेश्वर का न्याय पूरी रीति से धर्मी है (लूका 12:47-48; 2 थिस्सलुनीकियों 1:5-10; तुलना करें प्रकाशितवाक्य 15:3-4)।

(3) उन्हें नरक में अनंतकाल की सजा मिली है।

फिर उन्हें नरक में डाल दिया जाएगा जिनके पास आत्मा (प्राण) और शरीर हैं (मत्ती 10:28; 13:42; मरकुस 9:47-48; प्रकाशितवाक्य 20:15; प्रकाशितवाक्य 21:8)। नरक वह स्थान है जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार किया गया है (मत्ती 25:41; प्रकाशितवाक्य 20:10)। यह वह स्थान है जहाँ शैतान और लोग हमेशा परमेश्वर की उपस्थिति, प्रेम और महिमा से अलग रहते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। यह कभी न भुजने वाली आग में अनंतकाल का दंड और पीड़ा है (मत्ती 25:46; मरकुस 9:47-48; प्रकाशितवाक्य 21:8)।

इसका सटीक अर्थ क्या है, इसका खुलासा नहीं किया गया है। इब्रानी में शब्द "अनन्त" (इब्रानी: "ओलाम") का अर्थ है "एक लंबा समय", "एक जीवन की अवधि"। बाइबल का परमेश्वर किसी भी दर पर है "दयालु और अनुग्रहकारी, विलंब से क्रोध करनेवाला, प्रेम और विश्वास में लीन, उन हजारों लोगों से प्रेम बनाए हुए है जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं (निर्गमन 20:6), और दुष्टता, विद्रोह और पाप को क्षमा करनेवाला है। फिर भी वह दोषी को छोड़ता नहीं है" (जब तक कि उनके पापों का प्रायश्चित्त न हो गया हो) (निर्गमन 34:6-7)। उसका न्याय बिल्कुल धर्मी / न्यायपूर्ण होगा (लूका 12:47-48; प्रकाशितवाक्य 15:3-4)। कैसे "उसकी दया उसके न्याय पर विजय होगी" (याकूब 2:13) को प्रकट नहीं किया गया है।

3. मसीहियों को सार्वजनिक रूप से प्रतिफल दिया जाएगा।

(1) उन्हें उनकी मृत्यु से पहले व्यक्तिगत रूप से धर्मी ठहराया जाता है।

जो लोग यीशु मसीह में विश्वास करते हैं (मसीही, विश्वासी) वे पृथ्वी पर मरने से पहले ही बरी (धर्मी ठहराए, पूरी रीति से क्षमा) कर दिए जाते हैं (यूहन्ना 3:18क; रोमियों 3:22,24; रोमियों 5:1-2; रोमियों 8:1-2; इफिसियों 1:7-8; इब्रानियों 10:17-18)। मरने से पहले ही उनके पास अनन्त जीवन होता है (यूहन्ना 5:24-25; 10:28; 1 यूहन्ना 5:11-13)।

(2) उनके पुनरुत्थान के बाद वे सार्वजनिक रूप से धर्मी ठहराए जाते हैं।

अपनी शारीरिक मृत्यु पर मसीहियों की आत्मा (प्राण) को उनके शरीर से अलग किया जाता है और स्वर्गलोक में पहुँचा दिया जाता है (सभोपदेशक 12:7; लूका 16:22; 2 कुरिन्थियों 5:1, 7; फिलिप्पियों 1:23; इब्रानियों 12:23ख)।

यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर, मरे हुए मसीहियों की मानव आत्माएँ उसके साथ होंगी (1 थिस्सलुनीकियों 4:14), उनके शरीरों को गैर-मसीहियों के शरीरों के साथ ही फिर से जीवित किया जाएगा (यूहन्ना 5:28-29; प्रेरितों 24:15) और एक अविनाशी संघ में उनकी महिमामय मानव आत्माओं को उनके महिमामय मानव शरीर के साथ फिर से एकीकृत किया जाएगा। तब वे अपनी आत्मा (प्राण) और महिमामय शरीर के साथ यीशु मसीह का स्वागत करने और प्रशंसा करने

के लिए बादलों में उठाए जाएंगे और इसके न्याय के लिए कि वे पृथ्वी पर कैसे रहते थे।

साथ ही मसीहियों को इसका लेखा भी देना होगा कि वे परमेश्वर के वचन के अनुसार कैसे रहे हैं (2 कुरिन्थियों 5:10; इब्रानियों 4:13)। परन्तु उन्हें सार्वजनिक रूप से पूरी रीति से धर्मी घोषित किया जाएगा क्योंकि यीशु मसीह की धार्मिकता को उनमें लगाया (डाला) (2 कुरिन्थियों 5:21) और दिया गया (1 कुरिन्थियों 1:30) है। विशेषकर उनके धर्मी कामों को स्मरण किया जाएगा (मत्ती 24:34-40), ताकि सभी को पता चले कि परमेश्वर का न्याय पूरी तरह से धार्मिकता से है। सभी मसीही और सभी स्वर्गदूत उसके अंतिम न्याय में भी परमेश्वर की धार्मिकता के विषय में गाएंगे (प्रकाशितवाक्य 15:2-4; 16:5-7)।

(3) उन्हें परमेश्वर के राज्य के अपने अंतिम चरण में अनंत काल के लिए प्रतिफल दिया जाता है। प्रत्येक मसीही को उसके कर्मों / कार्यों (रोमियों 2:6; 1 कुरिन्थियों 3:12-15) के अनुसार प्रतिफल दिया जाएगा। वास्तविक मसीहियों को कभी दोषी नहीं ठहराया जायेगा (विनाश) (यूहन्ना 5:24; रोमियों 8:1; इब्रानियों 10:17-18) और वे कभी नाश नहीं होंगे (यूहन्ना 10:28)! वे परमेश्वर के राज्य को उसके अंतिम चरण में प्राप्त करेंगे (मत्ती 24:34)। अपने अंतिम चरण में परमेश्वर का राज्य प्रतीकात्मक रूप से "स्वर्गीय यरूशलेम" है जो कि अंतिम न्याय के बाद नई पृथ्वी पर "नए यरूशलेम" के रूप में उतरेगा (प्रकाशितवाक्य 21:1-2,9-10)।

(4) पश्चात्ताप करने और बचने का और अवसर नहीं होगा।

जिस क्षण यीशु मसीह लौटेगा, तब से पछताने और बचने का और अवसर नहीं होगा (मत्ती 25:10-13; तुलना करें नीतिवचन 27:1; 2 कुरिन्थियों 6:1-2)!

ट. पाँचवीं घटना

सभी चीजों का नवीनीकरण

1. मसीह के दूसरे आगमन पर सभी चीजों का नवीनीकरण होगा।

यीशु मसीह के आने के एक और एकल दूसरे आगमन पर सभी चीजों का नवीनीकरण होगा। प्रभु का आना (यूनानी: परूसिआ) (2 पतरस 3:4) अधर्मी लोगों के लिए न्याय और विनाश का दिन (2 पतरस 3:7; तुलना करें मत्ती 19:28-29) और "प्रभु का दिन" होगा (2 पतरस 3:10), जब सभी चीजों का पुनर्स्थापन (यूनानी: एपोकैटास्टासिस) होगा (प्रेरितों 3:21), जब नया आकाश और नई पृथ्वी अस्तित्व में आएँगे (2 पतरस 3:10-13)। इस प्रकार, मसीह के दूसरे आगमन और सभी चीजों के नवीकरण के बीच कोई तथाकथित "हज़ार वर्ष का राज्य" नहीं होगा!

2. ब्रह्मांड की वर्तमान स्थिति को समाप्त कर दिया जाएगा।

दूसरे आगमन का दिन इस वर्तमान पुरानी पृथ्वी के इतिहास में अंतिम दिन होगा। वर्तमान सृष्टि को उसकी हताशा / अर्थहीनता (यूनानी: माटेओट्स) और क्षय के बंधन (यूनानी: फथोरास) (रोमियों 8:19-22) से मुक्त किया जाएगा। पृथ्वी के ऊपर सब कुछ जैसे सूर्य, चंद्रमा और सितारे, और पृथ्वी पर सब कुछ जैसे पहाड़ों और द्वीपों को, "हिला" (मत्ती 24:29) या "कंपा" (यूनानी: सैलीओ) (इब्रानियों 12:26-27; प्रकाशितवाक्य 6:12-14; 16:17-21), "भगा" (यूनानी: फुगो) (प्रकाशितवाक्य 20:11), "लुप्त / एक गर्जन के साथ भेज" (यूनानी: परेरकोमाई) (2 पतरस 3:10; प्रकाशितवाक्य

21:1) दिया जाएगा। तत्व आग में पिघल जाएंगे (यूनानी: कौसो) और "विघटित" (ग्रीक: लुओ) हो जाएंगे और पृथ्वी और इसमें सब कुछ निश्चित रूप से "नंगे कर दिए जाएंगे" (अर्थात् ढूँढ़ लिए जाएंगे, प्रकाश द्वारा उजागर कर दिए जाएंगे) (यूनानी: हिउरिस्को) (भविष्य काल एक पूर्ण आश्वासन के रूप में) (2 पतरस 3:10)। सृष्टि और इतिहास में कुछ भी छिपा नहीं रह जाएगा (मत्ती 10:26; इब्रानियों 4:13)!

इस प्रकार उच्च क्षेत्रों (वायु) में लोगों का अंतिम न्याय (मत्ती 24:31; मत्ती 25:31-32; 1 थिस्सलोनिकियों 4:17) पुराने ब्रह्मांड और पुरानी पृथ्वी के अंतिम न्याय के साथ-साथ होगा!

3. सृष्टि को नवीकृत और सिद्ध किया जाएगा।

मसीह के दूसरे आगमन पर हर चीज का नवीनीकरण होगा (मत्ती 19:28; प्रेरितों 3:21, तुलना करें प्रकाशितवाक्य 21:5)। यीशु मसीह नए आकाश (अपने सभी सितारों के साथ ब्रह्मांड) और नई पृथ्वी (2 पतरस 3:13; तुलना करें यशायाह 65:17) की स्थापना करेगा। वह सब कुछ नया बना देगा (प्रकाशितवाक्य 21:5)! इस प्रकार, परमेश्वर का राज्य अपने अंतिम और सिद्ध चरण तक पहुँच जाएगा (मत्ती 25:34)। मसीही एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी, धार्मिकता के घर की ओर दृष्टि लगाए हुए हैं" (2 पतरस 3:13)।

4. मेमने का विवाह।

(1) मसीह के दूसरे आगमन से पहले कलीसिया स्वर्गीय यरूशलेम है जो मेमने के विवाह के लिए स्वयं को तैयार कर रही है।

पूरे नए नियम की अवधि के दौरान कलीसिया ने मेमने के साथ विवाह के लिए स्वयं को तैयार किया (इफिसियों 5:25-27)। मसीह के दूसरे आगमन से पहले कलीसिया को "स्वर्गीय यरूशलेम" कहा जाता है (गलातियों 4:24-27; इब्रानियों 11:10,13-16,39-40; 12:22-24; 13:14) (पढ़ें यशायाह 54:1-5,11-12)। कलीसिया उन लोगों का समुदाय है, जिनकी नागरिकता स्वर्ग में है (फिलिप्पियों 3:20), परन्तु जो पृथ्वी पर भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं के रूप में कार्य करते हैं (1 पतरस 2:9-10)। मसीहियों के जीवन "परमेश्वर में मसीह के साथ छिपे हुए" हैं (कुलुस्सियों 3:1-4)।

(2) मसीह के दूसरे आगमन और सभी लोगों के अंतिम न्याय के बाद कलीसिया को "नया यरूशलेम" या "मेमने की दुल्हन" कहा गया है।

वह नई पृथ्वी पर मसीह के साथ मिलकर ऊपरी क्षेत्रों (जहाँ अंतिम न्याय हुआ) से उतरती है (प्रकाशितवाक्य 21:1-2, 9-10)।

"नया यरूशलेम" पुराने नियम की अवधि (इब्रानियों 11:10,16) और नए नियम की अवधि (इब्रानियों 13:14) से विश्वासियों के पूर्ण समुदाय का प्रतीक है। यह सभी युगों में रही कलीसिया का प्रतीक है, अर्थात्, पुराने नियम की अवधि में कलीसिया (यूनानी: एकलीसिया) (भजन संहिता 107:32) और नए नियम की अवधि में कलीसिया (यूनानी: एकलीसिया) (मत्ती 16:18)। यह चुने हुए की पूर्ण "पूरी संख्या" (यूनानी: प्लेरोमा) के लिए एक प्रतीक है, जिन्हें सृष्टि और सभी चीजों के नवीकरण के बीच धोखा नहीं दिया जा सकता है (मत्ती 24:22, 24, 31; रोमियों 8:28-30, 33); रोमियों 11:4-6, 25-26)!

**(3) इस प्रकार यीशु मसीह का दूसरा आगमन “मेमने की शादी” के साथ पूरा होता है।
(प्रकाशितवाक्य 19:7-8)।**

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में सात समानांतर खंड हैं (1-3, 4-7, 8-11, 12-14, 15-16, 17-19 और 20-22)। यीशु मसीह का दूसरा आगमन “मेमने की शादी” के साथ पूरा होता है (प्रकाशितवाक्य 19:7-8)। मेमने की शादी से पता चलता है कि प्रकाशितवाक्य 21:1-2, 9-10 में प्रकाशितवाक्य 19:7-8 का समानांतर वर्णन है। इसके अलावा “अंतिम लड़ाई” से पता चलता है कि प्रकाशितवाक्य 20:7-10 में प्रकाशितवाक्य 19:11-21 का समानांतर विवरण है।

- प्रकाशितवाक्य 20:1-6 (लगभग हजार वर्ष की अवधि) कालानुक्रमिक रूप से प्रकाशितवाक्य 19:11-21 से पहले नहीं आता है, बल्कि कालानुक्रमिक रूप से उसके बाद आता है!
- प्रकाशितवाक्य अध्याय 17-19 इस प्रकार प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 के समानांतर हैं!

5. अनन्त काल।

(1) नई पृथ्वी पर परमेश्वर की वाचा अपनी पूर्णता तक पहुँचती है!

पुराने नियम में वाचा का आरम्भ हुआ: “मैं (परमेश्वर) तुम्हारे बीच में चलूँगा और तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा, और तुम (पुराने नियम के समय के विश्वासी) मेरे लोग होगे” (उत्पत्ति 17:7; निर्गमन 6:2-7; लैव्यव्यवस्था 26:12)।

नए नियम में परमेश्वर के विश्वासियों को समाप्त या प्रतिस्थापित नहीं किया गया है, परन्तु इस वाचा को पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों से यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले विश्वासियों को सम्मिलित करने के लिए जारी और विस्तारित (बड़ा) किया गया है (2 कुरिन्थियों 6:16)।

और मसीह के दूसरे आगमन पर यह वाचा पूर्णता और सिद्धता पर पहुँचती है, क्योंकि दुनिया के सभी देशों के मसीही “उसके लोग” (बहुवचन) होंगे और नई पृथ्वी पर उसकी उपस्थिति में रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 21:3)।

(2) नई पृथ्वी पर सभी लोग और सब कुछ पूरी रीति से सिद्ध होगा!

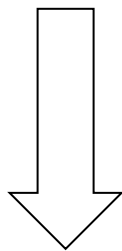
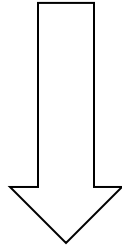
और अधिक आँसू, मृत्यु, शोक, रोना या दर्द नहीं होगा। सब कुछ नया बनाया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 21:4-5)। नई पृथ्वी खूब खिलेगी और बहुत फल देगी (प्रकाशितवाक्य 22:1-2; तुलना करें यशायाह 27:6)। जंगली जानवर नियंत्रित होंगे और घरेलू जानवरों के साथ शांति से रहेंगे। कोई भी दूसरे को नुकसान नहीं पहुँचाएगा (तुलना करें यशायाह 11:6-9)। नई पृथ्वी एक ऐसी जगह होगी, जहाँ केवल धार्मिकता बसती है (2 पतरस 3:13)!

(3) नई पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य पूर्णता और सिद्धता तक पहुँचता है (मत्ती 25:34; 1 कुरिन्थियों 15:23-28; प्रकाशितवाक्य 11:15-18)!

यीशु मसीह पुत्र के रूप में (मध्यस्थ के रूप में) राज्य (शासन) को पिता के रूप में परमेश्वर (1 कुरिन्थियों 15:24) को सौंप देगा (ग्रीक: पराडीडोमी) और स्वयं को (अपने मानव स्वभाव को) परमेश्वर पिता के अधीन करेगा (यूनानी-होपोटासो) जिसने अपना सब कुछ उसके अधीन किया था (मध्यस्थ के रूप में), ताकि पिता परमेश्वर सर्वप्रथम हो, अर्थात् यह है कि परमेश्वर (बिना मध्यस्थ) सीधे सब लोगों और चीजों पर शासन करे (1 कुरिन्थियों 15:24)। इसका अर्थ है कि उद्धार के इतिहास के दौरान परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ के रूप में यीशु मसीह का काम पूरा हो जाएगा।

परमेश्वर पिता और पुत्र परमेश्वर के *अलग-अलग कार्य* समाप्त हो जाएंगे। उनके पास समान कार्य होंगे। तब से "परमेश्वर और मेमना नए यरुशलेम का मंदिर और चिराग हैं" (प्रकाशितवाक्य 21:22-23)।

परन्तु यीशु मसीह का राज एक अनंतकाल का राज है (1 इतिहास 17:12ख, 14; यशायाह 9:6; 2 पतरस 1:11) और परमेश्वर के साथ मिलकर उसका राज हमेशा बना रहेगा (प्रकाशितवाक्य 11:15)! "परमेश्वर और मेमने का सिंहासन" हमेशा के लिए रहेगा (प्रकाशितवाक्य 22:1,3)।



ठ. दूसरे आगमन से पहले मसीहियों को कैसे रहना चाहिए

धीरज धरो और हृदय दृढ़ करो। तुम भी धीरज धरो, और अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का शुभागमन निकट है (याकूब 5:8)

अपनी परीक्षाओं में चौकस रहें। बहुत अधिक न खाएं और न पीयें और अपनी जीविका की चिंता न करें। चौकस रहो और प्रार्थना करो ताकि तुम उन परीक्षाओं से निकल सको (लूका 21:8-19) जो होने वाली है (क्लेश के समय में) ताकि तुम न्याय के सिंहासन के सामने खड़े होने के योग्य बन सको (लूका 21:34-36)

अपने जीवन में पवित्र और धर्मी बनो। परमेश्वर को एक दूसरे के प्रति आपके प्रेम को बढ़ाने और उमड़ने दो ताकि तुम दूसरे आगमन के समय परमेश्वर की उपस्थिति में दोषरहित और पवित्र पाए जा सको (1थिस्सलुनीकियों 3:12-13; 2पतरस 3:12-13)

अपने काम में विश्वासयोग्य बनो। यीशु द्वारा आपको दिए गए काम को विश्वासयोग्यता और बुद्धि से पूरा करें (मत्ती 24:45-47; लूका 12:42-48)

ड. उद्धार के इतिहास का अवलोकन

